

सूरह-27. अन-नम्ल

1031

पारा 19

आयतें-93

सूरह-27. अन-नम्ल

रुकूअ-7

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारवान, निहायत रहम वाला है। ता० सीन०। ये आयतें हैं कुरआन की और एक वाजेह किताब की। रहनुमाई और खुशखबरी ईमान वालों के लिए। जो नमाज कायम करते हैं और जकात देते हैं और वे आखिरत पर यकीन रखते हैं। जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके कामों को हमने उनके लिए खुशनुमा बना दिया है, पस वे भटक रहे हैं। ये लोग हैं जिनके लिए बुरी सजा है और वे आखिरत में सख्त खसारे (घाटे) में होंगे। और बेशक कुरआन तुम्हें एक हकीम (तत्वदर्शी) और अलीम (ज्ञानवान) की तरफ से दिया जा रहा है। (1-6)

जब आदमी के सामने हक आए और वह किसी तहफुज के बगैर उसका एतराफ कर ले तो इसका नतीजा यह होता है कि वह फौरन सही रुख पर चल पड़ता है। उसकी जिंदगी हर एतबार से दुरुस्त होती चली जाती है। इसके बरअक्स जो शख्स अपने आपको हक के मुताबिक ढालने के लिए तैयार न हो वह मजबूर होता है कि खुद हक को अपने मुताबिक ढाले। इसी नफिसयाती कैफियत का दूसरा नाम तज्ज़िने आमाल है।

ऐसा आदमी अपनी रविश को जाइज साबित करने के लिए खुदसाखा दलीलें तलाश करता है। ये दलीलें धीरे-धीरे उसके जेहन पर इस तरह छा जाती हैं कि वे उसे ऐन दुरुस्त मालूम होती हैं। अपना ग़लत अमल उसे अपनी झूठी तौजीहात (तर्कों) की रोशनी में सही नज़र आने लगता है।

जो लोग हक की दावत के बारे में संजीदा न हों वे हमेशा तज्ज़िने आमाल का शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोग ऐन अपनी नफिसयात के नतीजे में अपनी इस्लाह की तरफ से बिल्कुल गाफिल हो जाते हैं। अपने ग़लत को सही समझने की उन्हें यह भारी कीमत देनी पड़ती है कि वे ऐसे रास्ते पर चलते रहें जिसकी आखिरी मंजिल जहन्म के सिवा और कुछ नहीं।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لَأَهْلِيهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ ۖ أَوْ بَيِّنَاتٍ مِّنْ رَبِّهِ ۚ فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَ ۖ وَسُبحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٥

जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है। मैं वहां से कोई खबर लाता हूं या आग का कोई अंगारा लाता हूं ताकि तुम तापो। फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है। और पाक है अल्लाह जो सब है सारे जहान का। (7-8)

किबती की मौत के वाक्य के बाद हजरत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र से मदन चले गए

पारा 19

1032

सूरह-27. अन-नम्ल

थे। मदन का इलाका बहरे अहमर (लाल सागर) की उस शाख के मशिकी साहिल (पूर्वी तट) पर था जिसे खलीज अकबा कहा जाता है। हजरत मूसा ने यहां तकरीबन आठ साल गुजारे। इसके बाद वह अपनी अहलिया (पत्नी) के साथ मिस्र वापस जाने के लिए रवाना हुए। इस सफर में वह बहरे अहमर की दोनों शाखों के दरमियान उस पहाड़ के किनारे पहुंचे जिसका कदीम नाम तूर था और अब उसे जबल मूसा (Gebel Musa) कहा जाता है।

यह गालिबन सर्दियों की रात थी। हजरत मूसा को दूर पहाड़ पर एक आग सी चीज नज़र आई। वह उसकी तरफ रवाना हुए। मगर करीब पहुंच कर मालूम हुआ कि यह खुदा की तजल्ली (आलोक) थी न कि कोई इंसानी आग।

पहाड़ के ऊपर जहां हजरत मूसा ने रोशनी देखी थी वहां आज भी एक कदीम दरख्त मौजूद है। कहा जाता है कि यही वह दरख्त है जिसके ऊपर से हजरत मूसा को खुदा की आवाज सुनाई दी थी। यहां बाद को ईसाई हजरात ने गिरजा और खानकाह (आश्रम) तामीर कर दिया जो आज भी लोगों के लिए जियारतगाह बना हुआ है।

يُوسَىٰ إِنَّكَ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تُهْتَزُّ زَوَاجًا ۖ جَاءَ وَدِي مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِلَّا مَن ظَلَمَ ۖ ثُمَّ بَدَّلْ حِسًّا بُعْدَ سَوْءٍ ۖ فَإِنِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّجَ بَيْضًا ۖ مِّنْ غَيْرِ سَوْءٍ ۖ فِي تَسْرِئَاتٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ ۖ وَقُوْلُهُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فٰسِقِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ إِنَّا مَبْصُرَةٌ ۖ قَالُوا هَذَا إِسْرَءِيلُ ۖ وَجَدُوا بِهَا وَاسْتَبَقَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلُمًا وَعُلُوًّا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ١٤

ऐ मूसा यह मैं हूं अल्लाह, जबरदस्त हकीम (तत्वदर्शी)। और तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। फिर जब उसने उसे इस तरह हरकत करते देखा जैसे वह सांप हो तो वह पीछे को मुड़ा और पलट कर न देखा। ऐ मूसा, डरो नहीं मेरे हुज़ूर पैग़म्बर डरा नहीं करते। मगर जिसने ज्यादाती की। फिर उसने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल दिया। तो मैं बख़्शने वाला महारवान हूं। और तुम अपना हाथ अपने गिरेवान में डालो, वह किसी ऐब के बगैर सफेद निकलेगा। यह दोनों मिलकर नौ निशानियों के साथ फिरऔन और उसकी कौम के पास जाओ। बेशक वे नाफरमान लोग हैं। पस जब उनके पास हमारी वाजेह निशानियां आईं, उन्होंने कहा यह खुला हुआ जादू है। और उन्होंने उनका इंकार किया हालांकि उनके दिलों ने उनका यकीन कर लिया था, जुल्म और घमंड की वजह से। पस देखो कैसा बुरा अंजाम हुआ मुफ़्फ़िदों (उपद्रवियों) का। (9-14)

हजरत मूसा पहाड़ पर आग के लिए गए थे। मगर वहां पहुंच कर मालूम हुआ कि वह पैगम्बरी के लिए बुलाए गए हैं। अल्लाह तआला जब अपने किसी बंदे को खुसूसी अतिया देता है तो अचानक और गैर मुतवक्कअ (अप्रत्याशित) तौर पर देता है ताकि वह उसे बराहेरास्त अल्लाह की तरफ से समझे और उसके अंदर ज्यादा से ज्यादा शुक्र का जम्मा पैदा हो।

हजरत मूसा की कैम (बनी इस्राईल) अगरचे उस वक़्त के लिहाज से एक मुस्लिम कैम थी। मगर अब वह बिल्कुल बेजान हो चुकी थी। दूसरी तरफ उन्हें फिरऔन जैसे जाविर (दमनकारी) हुक्मरां के सामने तौहीद की दावत पेश करना था। इसलिए अल्लाह तआला ने आगाज ही में आपको असा का मोजिजा अता फरमा दिया। यह असा हजरत मूसा के लिए एक मुस्तकिल खुदाई ताक़त था। इसके ज़रिए से फिरऔन के मुम्बले में 9 मोजिजात जहिर हुए। बनी इस्राईल के लिए जाहिर होने वाले मोजिजात इनके अलावा थे।

हजरत मूसा के मोजिजात ने आखिरी हद तक आपकी सदाक़त साबित कर दी थी। इसके बावजूद फिरऔन और उसके साथियों ने आपका एतराफ नहीं किया। इसकी वजह उनका जुम्ह और घमंड था। फिरऔन और उसके साथी अपनी आजादी पर कैद लगाने के लिए तैयार न थे। मजीद यह कि वे जानते थे कि मूसा की बात मानना अपनी बड़ाई की नफी (नकार) करना है। और कौन है जो अपनी बड़ाई की नफी की कीमत पर सच्चाई को माने।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ۖ وَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عِلْمُنَا مَنطِقُ الطَّيْرِ وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۚ إِنَّ هَذَا هُوَ الْفَضْلُ الْبَهِينُ ۝

और हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अता किया। और उन दोनों ने कहा कि शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) अता फरमाई। और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ। और कहा कि ऐ लोगो, हमें परियों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर किस्म की चीज दी गई। वेशक यह खुला हुआ फल है। (15-16)

हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के पैगम्बर और बादशाह थे। आपके बेटे हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम भी पैगम्बर और बादशाह हुए। आपकी सल्तनत फिलिस्तीन और शर्क उर्दुन से लेकर शाम तक फैली हुई थी। आपको अल्लाह तआला ने मुखलिफ किस्म की संजती (औद्योगिक) मालुमात दी थीं। साथ ही, आपको मोजिजाती तौर पर कई चीजें अता हुई थीं। मसलन चिड़ियों की बोलियां समझना। और उन्हें तर्बियत देकर उन्हें ख़बर रसानी के लिए इस्तेमाल करना। हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम को अपने हमजमाना लोगों पर ग़ैर मामूली बरतरी हासिल थी। मगर इस बरतरी ने उनके अंदर सिर्फ तवाजोअ (विनम्रता) का जम्मा पैदा किया। उन्हें जो कुछ हासिल था उसे उन्होंने बराहेरास्त खुदा का अतिव्या करार दिया।

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम का जमाना सल्तनत 926 ई०पू० से लेकर 965 ई०पू०

तक है। इस लिहाज से आप तकरीबन चालीस साल हुक्मरां रहे।

وَحُشِرَ سُلَيْمَانُ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا تَوَاسَىٰ وَاِللَّامِلُ قَالَ نَمْلُهُ ۖ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَنَبَسِمًا ضَاكًّا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَن أَشْكُرَ نِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَن أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝

और सुलैमान के लिए उसका लश्कर जमा किया गया, जिन्न और इंसान और परिंदे, फिर उनकी जमाअतें बनाई जातीं, यहां तक कि जब वह चींटियों की वादी पर पहुंचे। एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियो, अपने सुराखों में दाखिल हो जाओ, कहीं सुलैमान और उसका लश्कर तुम्हें कुचल डालें और उन्हें ख़बर भी न हो। पस सुलैमान उसकी बात पर मुस्कराते हुए हंस पड़ा और कहा, ऐ मेरे ख मुझे तौफीक दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदेन पर किया है और यह कि मैं नेक काम करूं जो तुझे पसंद हो और अपनी रहमत से तू मुझे अपने नेक बंदों में दाखिल कर। (17-19)

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लश्कर में न सिर्फ इंसान थे। बल्कि जिन्नात और परिंदे भी आपकी फौज में शामिल थे। हजरत सुलैमान का लश्कर एक बार किसी वादी से गुजरा जहां चींटियां बहुत ज्यादा थीं। चींटियों ने ग़ैर मामूली तौर पर आपके लश्कर की अज़मत का एतराफ किया। चींटियों ने इस मैके पर जो गुप्तगु की उसे हजरत सुलैमान ने भी समझ लिया।

इस तरह का कोई वाकया एक आम इंसान को फख़ व ग़ुरूर में मुक्बिला करने के लिए काफी है। मगर हजरत सुलैमान अपने इस हाल को देखकर सरापा शुक्र बन गए। जो कुछ बजाहिर ख़ुद उन्हें हासिल था उसे उन्होंने पूरे तौर पर ख़ुदा के ख़ाने में डाल दिया। यही है सालेह (नेक) इंसान का तरीका।

وَنَفَقَدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَىٰ الْهُدَىٰ هَذَا أَمْ كَانَ مِنَ الْغَالِبِينَ ۝ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِي بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ۝ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ مَحْطُ بِهِ ۖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ۝ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَبْلُغُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا

सूरह-27. अन-नमल

1035

पारा 19

يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَرَبِّكَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَكْبَرُ لَهُمْ فَصَدَّاهُمْ عَنْ  
السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۝ أَلَا يَسْجُدُونَ لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ ۝ مَا تُعَلِّمُونَ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ  
الْعَظِيمِ ۝

और सुलैमान ने परियों का जायजा लिया तो कहा, क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ। क्या वह कहीं गायब हो गया है। मैं उसे सज़ा सजा दूँगा। या उसे जिव्ह कर दूँगा, या वह मेरे सामने कोई साफ़ हुज्जत लाए। ज्यादा देर नहीं गुज़ी थी कि उसने आकर कहा, कि मैं एक चीज की ख़बर लाया हूँ जिसकी आपको ख़बर न थी। और मैं सबा से एक यकीनी ख़बर लेकर आया हूँ। मैंने पाया कि एक औरत उन पर बादशाही करती है और उसे सब चीज मिली है। और उसका एक बड़ा तज़ है। मैंने उसे और उसकी कौम को पाया कि सूरज को सच्चा करते हैं अल्लाह के सिवा। और शैतान ने उनके आमाँल उनके लिए खुशनुमा बना दिए, फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया, पस वे राह नहीं पाते, कि वे अल्लाह को सच्चा न करें जो आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मालिक अर्थे अजीम (महान सिंहासन) का। (20-26)

सबा (Sabaeans) कद्रीम ज़माने की एक दैलतमंद कौम थी। उसका ज़माना 1100 ई०पू० से लेकर 1015 ई०पू० तक है। उसका मर्कज़ मआरिब (यमन) था। उस इलाके में आज भी उसके शानदार खंडहर पाए जाते हैं। हज़रत सुलैमान के ज़माने में यहाँ एक औरत (बिलकीस) की हुकूमत थी। ये लोग सूरज की परस्तिश करते थे। शैतान ने उन्हें सिखाया कि माबूद वही हो सकता है जो सबसे ज्यादा नुमायाँ (सुस्पष्ट) हो। सूरज चूँकि तमाम दिखाई देने वाली चीज़ों में सबसे ज्यादा नुमायाँ है इसलिए वही इस कबिल है कि उसे माबूद समझा जाए और उसकी परस्तिश की जाए।

हुदहुद के ज़रिये हज़रत सुलैमान को कैम सबा के बारे में मुफ़सल मालूमात हासिल हुई। यह हुदहुद ग़ालिबन आपकी परियों की फ़ौज से तअल्लुक रखता था और बाक़यदा तर्बियतयाफ़ता था।

قَالَ سَتَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۝ اذْهَبْ يَكْتُمِي هَذَا أَفَأَقْبَلُ إِلَيْهِ

पारा 19

1036

सूरह-27. अन-नमल

ثُمَّ تَوَلَّاهُمْ فَأَنْظَرُوا مَاذَا يَرْجِعُونَ ۝ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ إِنَّ إِلَىٰ إِلَهِي كَيْتَبٌ كَرِيمٌ ۝ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأُتُوْنِ مُسْلِمِينَ ۝ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ۝ قَالُوا نَحْنُ أَوْلَاؤُا قَوْمِكَ ۝ أُولَٰئِكَ أَشْدِيدُ ۝ وَالْأَمْرُ لِلْيَكِّ ۝ فَأَنْظَرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ۝ قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذْ دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَاجَهَا آذِنَةً ۝ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ ۝ فَنَظَرَنَّهُ بِمَا يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ۝

सुलैमान ने कहा, हम देखेंगे कि तुमने सच कहा या तुम झूठों में से हो। मेरा यह ख़त लेकर जाओ। फिर इसे उन लोगों की तरफ़ डाल दो। फिर उनसे हट जाना। फिर देखना कि वे क्या रद्देअमल प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं। मलिका सबा ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मेरी तरफ़ एक बाक़अत (प्रतिष्ठित) ख़त डाला गया है। वह सुलैमान की तरफ़ से है। और वह है शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है कि तुम मेरे मुकाबले में सरकशी न करो। और मुत्तीअ (आज़ाकारी) होकर मेरे पास आ जाओ। मलिका ने कहा कि ऐ दरबारियो, मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी मामले का फैसला नहीं करती जब तक तुम लोग मौजूद न हो। उन्होंने कहा, हम लोग जोरआवर हैं। और सज़ा लड़ाई वाले हैं। और फैसला आपके इख़्तियार में है। पस आप देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं। मलिका ने कहा कि बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे ख़राब कर देते हैं और उसके इज्जत वालों को जलील कर देते हैं। और यही ये लोग करेंगे। और मैं उनकी तरफ़ एक हदिया (उपहार) भेजती हूँ, फिर देखती हूँ कि सफ़ीर (दूत) क्या जवाब लाते हैं। (27-35)

हज़रत सुलैमान की कुव्वत व सल्लनत एक ख़ुदाई अतिया थी। इसी तरह आपने सबा की हुकूमत के साथ जो मामला किया वह भी एक ख़ुदाई मामला था। शाह अब्दुल कादिर देहलवी आयत 37 के जेल में लिखते हैं : 'और किसी पैग़म्बर ने इस तरह की बात नहीं फ़रमाई। सुलैमान को हक़ तआला की सल्लनत का जोर था जो यह फ़रमाया।'

मलिका सबा (बिलकीस) ने मामले को ख़ालिस हक्कीकतपसंदाना अंदाज़ से देखा। उसने यह राय कायम की कि अगर हम सुलैमान की ताक़त से टकराएँ तो ज्यादा इम्कान यह है कि हम हारेंगे और फिर हमारे साथ वही किया जाएगा जो हर ग़ालिब (विजित) कौम मग़लूब कौम के साथ करती है। इसके बरअक्स अगर हम इत्ताअत कुबूल कर लें तो हम तबाही से बच जाएँगे। ताहम मलिका ने इब्किदाई अंदाजे के लिए तोहफ़े भेजने का तरीका इख़्तियार किया।

ताकि मालूम हो जाए कि सुलैमान हमारी दौलत के ख्वाहिशमंद हैं। या इससे आगे उनका हमसे कोई उसूली मुतालाबा है।

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانُ قَالَ أَتَيْدُونَنِي بِمَالٍ فَمَا آتَاكَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا آتَاكَ بَلْ أَنْتُمْ بِمَهْدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَهُمْ بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ

फिर जब सफ़ीर (दूत) सुलैमान के पास पहुंचा, उसने कहा क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो। पर अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है। बल्कि तुम ही अपने तोहफे से खुश हो। उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर आएंगे जिनका मुकाबले वे न कर सकेंगे और हम उन्हें वहां से बेइज्जत करके निकाल देंगे। और वे ख़्वाब सम्मानहीन होंगे। (36-37)

हजरत सुलैमान को नुक़्बत और खुदा की मअरफ़त की शक़ल में जो कीमती दौलत मिली थी, उसके मुकाबले में हर दूसरी दौलत उनकी नज़र में हैब हो चुकी थी। चुनांचे मलिका सबा की तरफ से जब उनके पास सोने चांदी के तोहफे पहुंचे तो उन्होंने उनकी तरफ निगाह भी न की।

हजरत सुलैमान ने अपने अमल से मलिका सबा के सफ़ीरों को यह तास्सुर दिया कि मेरा मामला उसूली मामला है न कि मफ़ाद का मामला। मुफ़स्सिर इब्ने कसीर इसकी तशरीह में यह अल्फ़ाज लिखते हैं : 'क्या तुम माल देकर मुझे मुतअस्सिर करना चाहते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारे शिर्क पर छोड़ दूँ और तुम्हारी हुकूमत तुम्हारे पास रहने दूँ।'

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِي قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَّقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝ قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي أَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ

सुलैमान ने कहा ऐ दरबार वालो, तुम में से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) मेरे पास लाता है इससे पहले की वे लोग मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएँ। जिन्हीं में से एक देव ने कहा, मैं उसे आपके पास ले आऊंगा इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें,

और मैं इस पर कुदरत रखने वाला, अमानतदार हूँ। जिसके पास किताब का एक इल्म था उसने कहा, मैं आपके पलक झपकने से पहले उसे ला दूंगा। फिर जब उसने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा, यह मेरे ख का फजल है। ताकि वह मुझे जांचे कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्र। और जो शख्स शुक्र करे तो अपने ही लिए शुक्र करता है। और जो शख्स नाशुक्र करे तो मेरा ख बेनियाज (निस्पृह) है करम करने वाला है। (38-40)

हजरत सुलैमान के पास अगरचे ग़ैर मामूली ताक़त थी। मगर उन्होंने इस्तेमाले ताक़त के बजाए मुजहि़र ताक़त के जरिए कैमे सबा को ज़े करने का मंसूबा बनाया। चुनांचे आपने अपने खुसूसी कारिंदे के जरिए मलिका के तख़्त को मआरिब (Marib) के महल से यरोशलम (फिलिस्तीन) मंगवाया। तख़्त को मंगवाने का वाक्या ग़ालिबन उस वक़्त पेश आया जबकि तोहफे की वापसी के बाद मलिका सबा यमन से फिलिस्तीन के लिए ख़ाना हुई। ताकि वह हजरत सुलैमान के दरबार में पहुंच कर बराहेरास्त आपसे गुफ़्तगू करे। मलिका सबा का अपने ख़दम व हशम (सेवकों, दरबारियों) के साथ यह सफ़र यकीनन उस वक़्त हुआ होगा, जबकि उसके सिफ़ारती वफ़द ने वापस जाकर हजरत सुलैमान की हिक्मत की बातें और आपके ग़ैर मामूली किरदार की शहादत दी और आपकी ग़ैर मामूली अज्मत का हाल बयान किया।

मआरिब से यरोशलम का फ़सला तक्रीबन डेढ़ हजार मील है। यह लम्बा फ़सला इस तरह तै हुआ कि इधर हजरत सुलैमान की ज़बान से हुक्म के अल्फ़ाज निकले और उधर जरोजवाहर (रत्नों) से जड़ा हुआ तख़्त उनके सामने रखा हुआ मौजूद था। इस ग़ैर मामूली कुव्वत के बावजूद हजरत सुलैमान के अंदर फख़ का कोई ज़ब्बा पैदा नहीं हुआ। वह सर ता पा तवाजोअ (सर्वथा विनम्रता) बनकर खुदा के आगे झुके रहे।

قَالَ تَكْرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرَ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۖ وَأَوْتَيْنَا الْعِلْمَ مِّنْ قَبْلُهَا وَلَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۝ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً ۖ وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا ۖ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرَ ۖ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ۖ وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

सुलैमान ने कहा कि उसके तख़्त (सिंहासन) का रूप बदल दो, देखें वह समझ पाती है या उन लोगों में से हो जाती है जिन्हें समझ नहीं। पर जब वह आई तो कहा



सूरह-27. अन-नमल

1039

पारा 19

गया क्या तुम्हारा तख्त ऐसा ही है। उसने कहा, गोया कि यह वही है। और हमें इससे पहले मालूम हो चुका था। और हम फरमांबरदारों में थे। और उसे रोक रखा था उन चीजों ने जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजती थी। वह मुँक़िर लोगों में से थी। उससे कहा गया कि महल में दाखिल हो। पस जब उसने उसे देखा तो उसे ख्याल किया कि वह गहरा पानी है और अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं। सुलैमान ने कहा, यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया। और मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रबुल आलमीन पर ईमान लाई। (41-44)

मलिका सब अपने मुल्क से रवाना होकर बैतुल मक्दिस पहुंची। यहां वह हजरत सुलैमान के महल में दाखिल हुई तो बिल्कुल अंजान तौर पर उसके सामने एक तख्त लाया गया। और कहा गया कि देखो, क्या यह तुम्हारा तख्त है। यह देखकर वह खुदा की कुदरत पर हैरान रह गई कि अपने जिस तख्त को वह मआरिब के महल में महफूज करके आई थी वह पुरअसरार (करिश्माई) तौर पर डेढ़ हजार मील का फासला तै करके बैतुल मक्दिस पहुंच गया है।

हजरत सुलैमान के महल में दाखिल होकर मलिका सब एक ऐसे मकाम पर पहुंची जिसका फर्श साफ शफ़फ़ शीशे की मोटी तख्तियों से बनाया गया था और उसके नीचे पानी बह रहा था। मलिका जब चलते हुए यहां पहुंची तो उसे अचानक महसूस हुआ कि उसके आगे पानी का होज है। उस वक़्त उसने वही किया जो पानी में उतरने वाला हर आदमी करता है। यानी उसने गैर इरादी तौर पर अपने कपड़े उठा लिए।

इस तरह गोया अमली तजर्बे की जवान में उसे बताया गया कि ईसान जाहिर को देखकर फ़ेख़ खा जाता है। मगर अस्ल हकीक़त अक्सर उससे मुक़ल्लिफ़ होती है जो जहिरि आंखों से दिखाई देती है। आदमी जाहिरि तौर पर सूरज और चांद को नुमायां देखकर उनकी परस्तिश करने लगता है। हालांकि हकीक़ी खुदा वह है जो इन जवाहिर (फ़क़ट चीजों) से आगे है।

मलिका सब अब तक कौमी रिवायात के ज़ेअसर सूरज की परस्तिश कर रही थी। मगर हजरत सुलैमान के करीब पहुंच कर उसने जो कुछ सुना और जो कुछ देखा उसने उसके जेहन से गैर अल्लाह की अजमत का यकसर ख़ात्मा कर दिया। उसने दीने शिर्क को छोड़ दिया और दीने तौहीद को दिल व जान से इख़्तियार कर लिया।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ عِبُدُوا اللَّهَ وَادُّوا إِلَيْهِمْ فَرِيقًا يَخْتَصِمُونَ<sup>٤١</sup>  
 قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ<sup>٤٢</sup> قَالُوا طَائِفُ نَازِلِكَ وِبَيْنَ مَعَاكَ<sup>٤٣</sup> قَالَ طَائِفُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ<sup>٤٤</sup>

पारा 19

1040

सूरह-27. अन-नमल

और हमने समूद की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा, कि अल्लाह की इबादत करो, फिर वे दो फ़रीक (पक्ष) बनकर आपस में झगड़ने लगे। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी कर रहे हो। तुम अल्लाह से माफ़ी क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए। उन्होंने कहा, हम तो तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं। उसने कहा कि तुम्हारी बुरी किस्मत अल्लाह के पास है बल्कि तुम तो आजमाए जा रहे हो। (45-47)

हजरत सालेह अलैहिस्सलाम ने तौहीदे ख़ालिस की दावत शुरू की तो उनकी कौम दो तबकों में बंट गई। जो लोग कौम के बड़े थे वे अपनी बड़ाई में गुम रहे, और हजरत सालेह के बेआमेज (विशुद्ध) दीन को कुबूल करने के लिए तैयार न हुए। अलबत्ता छोटे लोगों में से कुछ अफ़राद निकले जिन्होंने आपकी पुकार पर लम्बैक कहा।

इन दोनों गिरोहों में इख़्तेलाफ़ी बहसें शुरू हो गईं। बड़े लोग पुरफ़ख़ अंदाज में कहते कि हम तुम्हारे मुँक़िर हैं। फिर हमारे इंकार की पादाश में जो अजाब तुम ला सकते हो ले आओ। कभी कोई मुसीबत पड़ती तो वे कह देते कि सालेह और उनके साथियों की नहूसत की वजह से यह बला हमारे ऊपर आई है। ये बातें वे हजरत सालेह और आपकी दावत की तहकीर (अनादर) के तौर पर कहते थे न कि संजीदा ख़्याल के तौर पर। उनकी अच्छी हालत और उनकी बुरी हालत दोनों खुदा की तरफ से थी। मगर अच्छी हालत से उन्होंने झूठे फख़ की ग़िजा ली और बुरी हालत से झूठी शिकायत की।

उनके दर्मियान हक के दाओ का उठना उनके लिए खुदा का एक इस्तेहान था। वे इस आजमाइश के मैदान में खड़े कर दिए गए थे कि वे हक को पहचान कर उसका साथ देते हैं या इसके मुकाबले में अंधे बहरे बने रहते हैं। मगर वे दूसरी-दूसरी बातों में उलझे रहे और अस्ल मामले को समझने से कासिर (असमर्थ) रहे।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ<sup>٤٥</sup> قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ<sup>٤٦</sup>  
 وَكَذَّبُوا أَكْثَرَهُمْ كَذَبًا كَرِيمًا<sup>٤٧</sup> قَالُوا لَنَشْعُرَنَّ<sup>٤٨</sup> فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ ذَٰلِكُمْ إِذَا رَأَوْهُمُ  
 دَخَرْتَهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ<sup>٤٩</sup> فَبَلَكَ بَيُّوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا<sup>٥٠</sup> إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ<sup>٥١</sup> وَانجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ<sup>٥٢</sup>

और शहर में नौ शख्स थे जो जमीन में फसाद करते थे और इस्लाह (सुधार) का काम न करते थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की कसम खाओ कि हम उसे और उसके लोगों को चुपके से हलाक कर देंगे। फिर उसके बली (संरक्षक) से कह देंगे कि हम उसके

सूरह-27. अन-नमल

1041

पारा 19

घर वालों की हलाकत के वक्त मौजूद न थे। और बेशक हम सच्चे हैं। और उन्होंने एक तदबीर (युक्ति) की और हमने भी एक तदबीर की और उन्हें ख़बर भी न हुई। पस देखो कैसा हुआ उनकी तदबीर का अंजाम। हमने उन्हें और उनकी पूरी कौम को हलाक कर दिया। पस ये हैं उनके घर वीरान पड़े हुए उनके जुल्म के सबब से। बेशक इसमें सबक है उन लोगों के लिए जो जानें। और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो डरते थे। (48-53)

कौम में नौ बड़े सरदार थे। वे अपने को बड़ा बाकी रखने के लिए हक को छोटा करने की कोशिश में लगे रहते थे। और इस किस्म की कोशिश बिला शुबह खुदा की जमीन में सबसे बड़ा फ़साद है।

इन सरदारों ने आखिरी मरहले में हजरत सालेह को हलाक करने की साजिश की। मगर क़ल इसके कि वे अपने खुफ़िया मंसूबे के मुताबिक हजरत सालेह के ख़िलाफ़ कोई इक़दाम करें, खुदा ने खुद उन्हें पकड़ लिया। वे अपनी सारी बड़ाई के बावजूद इस तरह बर्बाद कर दिए गए कि उनकी कदीम बस्तियों में अब सिर्फ उनके टूटे हुए खंडहर, उनकी यादगार बाकी रह गए हैं।

इस किस्म के तारीख़ी वाक़ेयात में ज़बरदस्त सबक छुपा हुआ है। मगर इस सबक को वही शख्स पाएगा जो इसे कानून इलाही से जोड़े। इसके बरअक्स जो लोग इसे असबावे तबीई (स्वाभाविक प्रक्रिया) से जोड़ें वे इससे कोई सबक हासिल नहीं कर सकते।

وَلَوْ طَا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْجَرُونَ ﴿١﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْبِيعَالَ  
شَهْوَةً مِنْ دُونِ الْبِسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّجْهَلُونَ ﴿٢﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ  
قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنْاسٌ يَبْتَغِ الْفَحْشَاءَ وَالْمُنْكَرَ  
إِلَّا أَمْرًا تَقْدَرُ لَهُمَا مِنَ الْغَيْرِينَ ﴿٣﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٤﴾  
قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۚ اللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥﴾

और लूत को जब उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम बेहयाई करते हो और तुम देखते हो। क्या तुम मर्दों के साथ शहवतरानी करते हो। औरतों को छोड़कर, बल्कि तुम लोग बेसमझ हो। फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग पाक साफ बनते हैं। फिर हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी सिवा उसकी बीवी के, जिसका पीछे रह जाना हमने तै कर दिया था। और हमने उन पर बरसाया एक हौलनाक बरसाना। पस कैसा बुरा बरसाव था उन पर जिन्हें आगाह किया जा चुका था, कहो हम्द है अल्लाह के लिए और

पारा 20

1042

सूरह-27. अन-नमल

सलाम उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने मुंतख़ब फरमाया। क्या अल्लाह बेहतर है या वे जिन्हें वे शरीक करते हैं। (54-59)

कैमे लूत अपनी लज्जतियत में हमजिंसी (समलैंगिकता) की हद तक पहुँच गई थी। हजरत लूत ने कौम के जमीर को झिंझोड़ते हुए कहा कि खुदा के बंदों, तुम्हें आख दी गई है कि देखो और भले बुरे की तमीज दी गई है कि पहचानो। फिर कैसे तुम वह काम करते हो जो खुली हुई बेहयाई का काम है।

कौम के पास इसका कोई जवाब न था। वे पैगम्बर की बात को दलील से रद्द नहीं कर सकते थे। इसलिए वे पैगम्बर के ख़िलाफ़ ज़ारिहियत पर आमादा हो गए। मगर जब यह नौबत आ जाए तो फिर बिला तारीख़ खुदा का फैसला आ जाता है। चुनांचे खुदा ने आतिश फ़ानी (विनाशक) मादूदा बरसाकर उन्हें हलाक कर दिया। इस खुदाई फैसले से हजरत लूत की बीवी भी न बची जो मुशिरकों से मिली हुई थी। खुदा का मामला हर शख्स से उसके जाती अमल की बुनियाद पर होता है न कि रिश्ते और तअल्लुक की बुनियाद पर।

तारीख़ के मचकूरा वाक़ेयात पर जो शख्स ग़ौर करेगा वह पुकार उठेगा कि उस खुदा का शुक्र है जिसने हर दौर में इंसान की रहनुमाई का इतिजाम किया और फिर उन बंदों की अक़ीदत से उसका सीना लबरेज हो जाएगा जिन्होंने अपनी जिंदगी कामिल तौर पर खुदा के हवाले करके खुदा के मंसूबए हिदायत की तक्मील की।

اَمْسُنْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَانْزِلْ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَالْتَبَثْ  
حَدَائِقَ ذَاتِ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُبْنِيَهَا ۖ إِيَّاهُ ۖ اللَّهُ مَعَ الْبُلْهُمِ  
قَوْمٌ يَعِدُونَ ۖ اَمْسُنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خَلْقَهَا أَنْهَرًا وَجَعَلَ  
لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۖ إِيَّاهُ ۖ اللَّهُ مَعَ الْكَاثِرِينَ  
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

भला वह कौन है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया। और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे रौनक वाले बाग़ उगाए। तुम्हारे वश में न था कि तुम इन दरख्तों को उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) है। बल्कि वे राह से इहिराफ करने वाले लोग हैं। भला किसने जमीन का ठहरने के लायक बनाया और उसके दर्मियान नदियां जारी कीं। और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए। और दो समुद्रों के दर्मियान पर्दा डाल दिया। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। बल्कि उनके अक्सर लोग नहीं जानते। (60-61)

कायनात नाकबिले कयास हद तक अजीम है। उसकी अमृत के आगे वे अल्पज सरासर नाकाफी हो जाते हैं जो गुमराहकुन इंसान उसकी ग़ैर खुदाई तौजीह के लिए बोलता रहा है। चाहे वे कदीम मुशरिक इंसान के बुत हों या जदीद मुल्हिद (नास्तिक) इंसान के वे नजरियात जो असबाब और इत्फाक़ात (संयोगों) की इस्तेहालों में बयान किए जाते हैं।

वेशुमार अजराम (आकाशीय पिंडों) को पैदा करके उन्हें अथाह खला (अंतरिक्ष) में मुतहर्कि करना, जमीन को निहायत आला एहतिमाम के जरिए ज़िंगी के मुवाफिक़ बनाना, पानी और नबातात (वनस्पति) जैसी नादिर चीजों को इतिहाई इफ़रात (बहुलता) के साथ वजूद में लाना, मुसलसल हरकत करती हुई जमीन पर कामिल सुकून के हालात पैदा करना, दरियाओं और पहाड़ों के जरिए जमीन को जाए रिहाइश (आवास-स्थल) बनाना, पानी के सतही तनाव (Surface tension) के कानून के जरिए खारी पानी और मीठे पानी को एक दूसरे से अलग रखना, ये और इस तरह के दूसरे वाक्यात इससे ज्यादा अजीम हैं कि कोई बुत इन्हें अंजाम दे या कोई अंधा तबीई (भौतिक) कानून इन्हें वजूद दे सके।

हकीकत यह है कि एक अल्लाह के सिवा दूसरी बुनियादों पर कायनात की तौजीह करना झूठी तौजीह को तौजीह के कायम मकाम बनाना है। यह इहिराफ़ (भटकाव) है न कि फ़िलवफ़अ केई तौजीह।

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ ذَكَرُوا ۖ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۖ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ اللَّهَ قُلُّ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

कौन है जो बेबस की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है। और तुम्हें जमीन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाता है। क्या अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) है। तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो। कौन है जो तुम्हें खुशकी और समुद्र के अंधेरों में रास्ता दिखाता है। और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को खुशख़बरी बनाकर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। अल्लाह बहुत बरतर है उससे जिन्हें वे शरीक ठहराते हैं। कौन है जो ख़ल्क (सृष्टि) की इत्तिदा करता है और फिर उसे दोहराता है। और कौन तुम्हें आसमानों और जमीन से रोजी देता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। कहो कि अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो। (62-64)

एक हाजतमंद की हाजत पूरी होना उस वक्त मुमकिन होता है जबकि तमाम कायनाती असबाब उसके साथ मुवाफिक़ करें। फिर एक क़ादिर मुतलक (सर्वशक्तिमान) खुदा के सिवा कौन है जो इतने बड़े पैमाने पर मुवाफिक़ (अनुकूल) असबाब को जमा कर सकता हो। इसी तरह एक कौम का हटना और दूसरी कौम का उसकी जगह लेना, समुद्री जहाज और मौजूदा जमाने में हवाई जहाज का इस्काते फ़ितरत से फ़ायदा उठाकर अंधेरे और उजाले में सफ़र करना, समुद्र से भाप का उठना और फिर बारिश बनकर बरसना, चीजों को अदम से वजूद में लाना और फिर उन्हें दुबारा पैदा करना। इंसान के लिए वसीअ पैमाने पर हर किस्म के रिज्क का बंदोबस्त करना, ये सब खुदाई सतह के काम हैं। और एक बरतर खुदा ही इन्हें अंजाम दे सकता है।

यही जमीन में जाहिर होने वाले तमाम वाक्यात का हाल है। यहां एक वाहिद वाक्ये को जहूर में लाने के लिए भी इतने वेशुमार अवामिल (कारक) दरकार होते हैं कि उसे वही हस्ती जहूर में ला सकती है जिसके कब्जे में सारी कायनात हो। फिर यह किस कद्र बेअक्ली की बात है कि आदमी एक खुदा के सिवा किसी और को अपने जन्माते अबदियत (बंदा होने की भावना) का मर्कज बनाए। वह एक खुदा के सिवा किसी और की परस्तिश करे।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسٌ مِنْهُمُ ۖ بَلْ أَذْرَكَ ۖ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۖ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا ۖ بَلْ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُنَا إِنَّا لِلْأُولَئِينَ ۖ لَكُنْزُجُونَ ۖ لَقَدْ وُعِدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۖ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

कहो कि अल्लाह के सिवा, आसमानों और जमीन में कोई ग़ैब (अप्रकट) का इल्म नहीं रखता। और वे नहीं जानते वे कब उठाए जाएंगे। बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म उलझ गया है। बल्कि वे उसकी तरफ से शक में हैं। बल्कि वे उससे अंधे हैं। और इंकार करने वालों ने कहा, क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे और हमारे बाप दादा भी, तो क्या हम जमीन से निकाले जाएंगे। इसका वादा हमें भी दिया गया और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी। यह महज अगलों की कहानियां हैं। कहो कि जमीन में चलो फ़िरो, पस देखो कि मुजरिमों का अंजाम क्या हुआ। (65-69)

किसी पैग़म्बर के मुखातब आख़िरत के सिरे से मुंकिर न थे। बल्कि वे उस तसव्वुरे आख़िरत के मुंकिर थे जिसे पैग़म्बर पेश करते थे। लोग यह यकीन किए हुए थे कि आख़िरत

**सूरह-27. अन-नमल**

1045

पारा 20

का मसला उनके अपने लिए नहीं है बल्कि दूसरों के लिए है। पैगम्बर ने बताया कि आखिरत तुम्हारे लिए भी वैसा ही एक संगीन मसला है जैसा कि वह दूसरों के लिए है। लोग समझते थे कि अपने बुजुर्गों से वाबस्तगी आखिरत में उनके लिए नजात का जरिया बन जाएगी। पैगम्बरों ने बताया कि आखिरत में सिर्फ खुदा की रहमत आदमी के काम आएगी न कि किसी बुजुर्ग से वाबस्तगी।

यही वजह है कि वे लोग आखिरत के बारे में एक किस्म की जेहनी उलझन में पड़े हुए थे। उनके कुछ सिरफिरे कभी ऐसे अल्फाज बोलते जैसे कि वे आखिरत के मुंकिर हों। मगर आम लोगों का हाल यह था कि वे नफसे आखिरत का इंकार नहीं करते थे। अलबत्ता पैगम्बर के तसव्वुरे आखिरत को मानने में जिंदगी की आजादियां खत्म होती थीं इसलिए उनका नफस इसे मानने के लिए तैयार न था। चुनांचे इसके जवाब में वे ऐसी बातें करते थे जैसे कि वे शक में हों। अपनी इसी जेहनी कैफियत की वजह से उन्होंने आखिरत के दलाइल पर कभी संजीदगी के साथ गौर नहीं किया। उसके बारे में वे अंधे बहरे बने रहे।

हकीकत यह है कि कैमोंका फैसला करने के लिए जो ताकतें दरकार हैं वे सिर्फ खुदाए आलिमुल ग़ैब को हासिल हैं। वह जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में भी अपना फैसला नाफिज करता है। और वही आखिरत में कुली तौर पर तमाम कैमों के ऊपर अपना फैसला नाफिज करता है।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَكْدُرُونَ ﴿٧٥﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧٦﴾ قُلْ عَلَىٰ أَن يَكُونَ رَدُّكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٧﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٩﴾ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٨٠﴾

और उन पर ग़म न करो और दिल तंग न हो उन तदबीरों पर जो वे कर रहे हैं। और वे कहते हैं कि यह वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। कहे कि जिस चीज की तुम जल्दी कर रहे हो शायद उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो। और बेशक तुम्हारा खब लोगों पर बड़े फल वाला है। मगर उनमें से अक्सर शुक्र नहीं करते। और बेशक तुम्हारा खब खूब जानता है जो उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो वे जाहिर करते हैं। और आसमानों और ज़मीन की कोई पोशीदा चीज नहीं है जो एक वाजेह किताब में दर्ज न हो।

(70-75)

‘ग़म न करो’ का मतलब हक के दाओ को ग़म से रोकना नहीं है। ग़म तो दाओ की

पारा 20

1046

**सूरह-27. अन-नमल**

गिजा है। यह दरअस्त हक की बेबसी की तरदीद (खंडन) है। इसका मतलब यह है कि सारे नामुवाफिक (प्रतिकूल) हालात के बावजूद आखिरकार बहरहाल हक को और हक का साथ देने वालों को कामयाबी हासिल होगी।

हक के दाओ (आह्वानकती) के मुखलिफिन जब हक के दाओ की मुखलिफत करते हैं तो वे समझते हैं कि वे एक शख्स की मुखलिफत कर रहे हैं। वे नहीं समझते कि यह खुद खुदा की मुखलिफत है न कि महज एक शख्स की मुखलिफत। यह सूतेखल सिर्फ उस वक्त तक बाकी रहती है जब तक इम्तेहान की मुदत खत्म न हुई हो। इम्तेहान की मुकररह मुदत खत्म होते ही खुदा की ताकतें जाहिर हो जाती हैं और वे मुखलिफिन का इस तरह ख़ाम्ता कर देती हैं जैसे कि कभी उनकी कोई हैसियत ही न थी। आदमी के लिए इससे बड़ी कोई नादानी नहीं कि वह आजमाइश की फुरसत को अपने लिए सरकशी की फुरसत के हममअना बना ले।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفُصَّلُ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٦﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٧﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَىٰ الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٨﴾ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٧٩﴾ وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ إِنَّ تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْمِعُونَ ﴿٨٠﴾

बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर बहुत सी चीजों को वाजेह कर रहा है जिनमें वे इखतेलाफ (मतभेद) रखते हैं। और वह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। बेशक तुम्हारा खब अपने हुक्म के जरिए उनके दर्मियान फैसला करेगा और वह जबरदस्त है, जानने वाला है। पस अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक तुम सरीह हक (सुस्पष्ट सत्य) पर हो। तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जबकि वे पीठ फेरकर चले जाएं। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से बचाकर रास्ता दिखाने वाले हो। तुम तो सिर्फ उन्हें सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर फरमांवरदार बन जाते हैं। (76-81)

इंसान एक ऐसी मख़बूक है जो आंख, कान और दिमाग की सलाहियतें रखता है। इन सलाहियतों को अगर खुले तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो वे बेखता (अचूक) तौर पर हकीकतों को देखने और पहचानने का जरिया बन सकती हैं। लेकिन अगर कोई शख्स अपने आपको किसी मस्नूई (बनावटी) तसव्वुर से मगलूब कर ले तो उसकी इदराक (भिन्नता) की



सूरह-27. अन-नमल

1047

पारा 20

सलाहियतें मुअत्तल (नष्ट) होकर रह जाती हैं। उसके सामने हकीकत बेनकाब सूरत में आती है मगर वह उससे इस तरह बेखबर रहता है जैसे कि वह अंधा बहरा हो। हकीकत यह है कि इस दुनिया में उसी शख्स को रास्ता दिखाया जा सकता है जो रास्ता देखना चाहे। जिसके अंदर खुद रास्ते की तड़प न हो उसके लिए किसी रहनुमा की रहनुमाई काम आने वाली नहीं।

हक़मरस्त बनने के लिए सबसे ज्यादा जो चीज दरकार है वह एतराफ (स्वीकार) है। इस दुनिया में उसी शख्स को हिदायत मिलती है जिसके अंदर यह माद्दा हो कि जो बात दलाइल से वाजेह हो जाए वह फौरन उसे मान ले और अपनी जिंदगी को उसकी मातहत में दे दे।

जो लोग खुदा की दावत के आगे न झुकें, उन्हें आखिरकार खुदा के फैसले के आगे झुकना पड़ता है। मगर उस वक्त का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

وَلَا ذَوْقَ الْقَوْلِ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ  
النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نُخْشِرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ  
يُكَذِّبُ بِلَايِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهُ قَالَ أَلَيْسَ لَكُمْ بُيُوتٌ  
وَلَمْ يُخَيِّطُوا بِهَا عِلْمًا أَمْ آذَانًا لَّمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا  
فَهُمْ لَا يَنْطِقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنَا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا  
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

और जब उन पर बात आ पड़ेगी तो हम उनके लिए जमीन से एक दाब्वह (जानवर) निकालेंगे जो उनसे कलाम करेगा। कि लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों का जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर उनकी जमाअतबंदी की जाएगी। यहां तक कि जब वे आ जाएंगे तो खुदा कहेगा कि तुमने मेरी आयतों को झुठलाया हालांकि तुम्हारा इल्म उनका अहाता न कर सका, या बोलो कि तुम क्या करते थे। और उन पर बात पूरी हो जाएगी इस सबब से कि उन्होंने जुल्म किया, पस वे कुछ न बोल सकेंगे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि लोग उसमें आराम करें। और दिन कि उसमें देखें। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यकीन करते हैं। (82-86)

जब अल्लाह तआला का यह फैसला होगा कि जमीन की मौजूदा तारीख खत्म कर दी जाए तो आखिरी तौर पर कुछ ग़ैर मामूली निशानियां जाहिर होंगी। उन्हीं में से एक दाब्वह (जानवर) का जुहूर है। इंसानी दाजियों की जबान से जो बात लोगों ने नहीं मानी उसका एलान एक ग़ैर इंसानी मख़बूक के जरिए से कराया जाएगा। ताहम यह इम्तेहान का वक्त खत्म होने का घंटा होगा न कि इम्तेहान का वक्त शुरू होने का एलान।

पारा 20

1048

सूरह-27. अन-नमल

कियामत में जब तमाम लोग हाजिर होंगे तो उनकी जमाअतें बनाई जाएंगी। मानने वाले एक तरफ कर दिए जाएंगे और न मानने वाले दूसरी तरफ। इसके बाद मुकिरीन से पूछा जाएगा कि तुम्हारे पास कौन सी इल्मी दलील थी जिसकी बिना पर तुमने सदाकत (सच्चाई) का इंकार किया। उस वक्त उनका लाजवाब होना साबित करेगा कि उनका इंकार महज जिद और तअस्सुब पर मबनी था। अगरचे अपने को बरहक जाहिर करने के लिए वे झूठे दलाइल पेश किया करते थे। उस वक्त उन पर खुलेगा कि दाओ के मलफूज (शाब्दिक) कलाम के अलावा रात और दिन भी ग़ैर मलफूज जबान में उन्हें अग्रे हक से मुतलअ (सूचित) कर रहे थे। रात की नींद गोया मौत की तमसील थी। और सुबह का जागना दुबारा जी उठने की तमसील। हक के एलान के इतने ग़ैर मामूली एहतिमाम के बावजूद वे हक की दरयापत से महरूम रहे।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا  
مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۖ وَكُلُّ أَتَوَةٍ دَاخِرِينَ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسِبُهَا جَمَلَةٌ وَهِيَ تَكُورُ  
مَرَّ السَّحَابِ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتَقَنَ كُلُّ شَيْءٍ ۖ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝  
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۖ وَهُمْ مِنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ۝ وَمَنْ  
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो घबरा उठेंगे जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं मगर वह जिसे अल्लाह चाहे। और सब चले आएंगे उसके आगे आजिजी से। और तुम पहाड़ों को देखकर गुमान करते हो कि वे जमे हुए हैं, और वे चलेंगे जैसे बादल चलें। यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज को मोहकम (सुदृढ़) किया है। बेशक वह जानता है जो तुम करते हो। जो शख्स भलाई लेकर आएगा तो उसके लिए इससे बेहतर है, और वे उस दिन घबराहट से महफूज होंगे। और जो शख्स बुराई लेकर आया तो ऐसे लोग औंधे मुंह आग में डाल दिए जाएंगे। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (87-90)

मौजूदा दुनिया में इंकार का अस्त सबब इंसान की बेखोफी है। यह दरअस्त बेखोफी की नफिसयात है जिसकी वजह से आदमी हक को नजरअंदाज करता है और इसके मुक़बले में सरकशी का रवैया इख़्तियार करता है। मगर जब इम्तेहान की मुद्दत खत्म होगी और इसकी अलामत के तौर पर सूर फूँक दिया जाएगा तो अचानक लोग महसूस करेंगे कि उनकी बेखोफी महज बेखबरी की बिना पर थी। उस दिन तमाम बड़ाइयां रेत की दीवार की तरह ढह जाएंगी।

सूरह-27. अन-नमल

1049

पारा 20

यह ऐसा सख्त लम्हा होगा कि इंसान तो दरकनार पहाड़ भी रेजा-रेजा हो जाएंगे। उस वक़्त सारा इज्ज एक तरफ़ हो जाएगी और सारी कुदरत दूसरी तरफ़।

उस दिन वे तमाम चीज़ें बिल्कुल ग़ैर अहम हो जाएंगी जिन्हें लोग दुनिया में अहम समझे हुए थे। उस दिन सारा वजन सिर्फ़ अमले सालेह में होगा। उस दिन, खोने वाले पाएंगे और पाने वाले अबदी (चिरस्थायी) तौर पर महरूम होकर रह जाएंगे।

إِنَّمَا أَمْرُهُ أَنْ تَعْبُدُوا رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدَةِ ۗ الَّذِي حَرَّمَ هَؤُلَاءِ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَ  
أَمْرُهُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ وَأَنْ أَتْلُوا الْقُرْآنَ ۚ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا  
يَهْتَدِىَ لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّٰ فَعَلَّ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۖ وَقُلِ الْحَمْدُ  
لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَتَعْرِفُونَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

मुझे यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसने इसे मोहतरम (आदरणीय) ठहराया और हर चीज़ उसी की है। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं फरमांबरदारी करने वालों में से बनूँ। और यह कि कुरआन को सुनाऊँ। फिर जो शख्स राह पर आएगा तो वह अपने लिए राह पर आएगा और जो गुमराह हुआ तो कह दो कि मैं तो सिर्फ़ डराने वालों में से हूँ। और कहो कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (91-93)

इस शहर (मक्का) का हवाला कुरआन के मुखातबे अब्ल की रियायत से है। ताहम यह एक उस्तूबे कलाम (शैली) की बात है। आयत का अस्त उद्देश्य इंसान को उस अबदी (शाश्वत) हकीकत की तरफ़ मुतवज्जह करना है कि उसके लिए एक ही सही रवैया है। और वह यह कि वह एक खुदा का इबादतगुजार बने।

दाओ (आह्वानकर्ता) का काम 'सुनाना' है। यानी अग्रे हक का एलान। आदमी को दाओ की लफ्ज़ी फुकर में मअनवी हकीकत का इदराक करना है। बेज़र दावत में खुदाई ताकत का जलवा देखना है। जो लोग इस सलाहियत का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो खुदा के अबदी इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

'खुदा अपनी निशानियाँ दिखाएगा' इस पेशीनगोई का एक पहलू कुरआन के मुखातबे अब्ल (क़ैशे मक्का) से तअल्लुक रखता है जिन्हें दौरे अब्ल में जंगे बद और फ़तह मक्का की सूरत में खुदा की निशानियाँ दिखाई गईं। इसका दूसरा पहलू वह है जिसका तअल्लुक कुरआन की अबदियत (शाश्वतता) से है। इस दूसरे एतबार से इस मौजूदा जमाने में जाहिर होने वाली साइंसी निशानियाँ भी इस ग़ैर मामूली पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के वसीअतर मिसदाक में शामिल हैं।

पारा 20

1050

सूरह-28. अल-क़सस

سُوْرَةُ الْقَصَصِ ۝ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۖ وَنُفْيَاكُمْ مِنْهَا وَأَنْتُمْ شَرِكٌ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طَسَمَ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ تَتْلُوْا عَلَيْهِ مِنْ نَّبَاٍ مُّوسَىٰ وَ  
فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَ  
جَعَلَ أَهْلَهَا شِيْعًا يَسْتَضِعُّ طَائِفَةً مِنْهُمْ يَتَّبِعُهُ ابْنَاءُ هُمْ وَيَسْتَجْبِي  
نِسَاءَهُمْ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضِعُوا  
فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ۝ وَنُكِّنَ لَهُمْ  
فِي الْأَرْضِ وَنُرِي فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ ۝

आयतें-88

सूरह-28. अल-क़सस

रुकूअ-9

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ता० सीन० मीम०। ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं। हम मूसा और फिरऔन का कुछ हाल तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। बेशक फिरऔन ने जमीन में सरकशी की। और उसने उसके वाशियों को गिरोहों में तक्सीम कर दिया। उनमें से एक गिरोह को उसने कमजोर कर रखा था। वह उनके लड़कों को जबह करता था और उनकी औरतों को जिंदा रखता था। बेशक वह फसाद करने वालों में से था। और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो जमीन में कमजारे कर दिए गए थे और उन्हें पेशवा (नायक) बनाएं और उन्हें वारिस बना दें और उन्हें जमीन में इक्तेदार (सत्ता) अता करें। और फिरऔन और हामान और उनकी फौजों को उनसे वही दिखा दें जिससे वे डरते थे। (1-6)

फिरऔन को यहां फसाद फित्तअर्ज (धरती पर उपद्रव) का मुजरिम बताया गया है।

फिरऔन का फसाद यह था कि उसने मिस्र की दो कैमों में इस्तिआज किया। किव्वती कैम जो उसकी अपनी कैम थी, उसे उसने हर क्रिस्म के मवाकेअ (अवसर) दिए। और बनी इस्राईल को न सिर्फ़ मवाकेअ से महरूम किया बल्कि उनके नौमोलूद (नवजात) लड़कों को कत्ल करना शुरू कर दिया ताकि धीरे-धीरे उनकी नस्ल का खात्मा हो जाए। फिरऔन का यह अमल फित्तरत के निजाम में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) थी। खुदा के कानून में निजामे फित्तरत से मुताबिकता का नाम इस्लाह है और निजामे फित्तरत में मुदाख़लत का नाम फसाद।

इज्त और बेइज्ती का फैसला खुदा की तरफ से होता है। खुदा ने उसके बरअसस फैसला किया जो फिरऔन ने फैसला किया था। खुदा ने फैसला किया कि वह बनी इस्राईल को इज्त और इस्तेदार दे और फिरऔन को उसकी फौजों के साथ हलाक कर दे। हज्रत मूसा के जरिए इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद फिरऔन ने अपने को मुस्तहिके अज़ाब साबित कर दिया। चुनांचे खुदा ने उसे समुद्र में डुबा कर हमेशा के लिए उसका खात्मा कर दिया। और बनी इस्राईल को मिस्र से ले जाकर शाम व फिलिस्तीन का हुकमरां (शासक) बना दिया।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ أَنِ ارْضِعِيْهِ ۖ فَإِذَا اخْفِيتْ عَلَيْهِ فَأَقْبِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝  
فَالْقِطْعَةُ الْفِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۖ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ۝ وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُوَّتْ عَيْنِيْ لِوَلَدِكْ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْتَفِعْنَا بِأُولَٰئِكَ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

और हमने मूसा की मां को इल्हाम (दिव्य संकेत) किया कि उसे दूध पिलाओ। फिर जब तुम्हें उसके बारे में डर हो तो तुम उसे दरिया में डाल दो। और न अंदेशा करो और न ग़मगीन हो। हम उसे तुम्हारे पास लौटा कर लाएंगे। और उसे पैगम्बरों में से बनाएंगे। फिर उसे फिरऔन के घर वालों ने उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन हो और ग़म का बाइस बने। वेशक फिरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे। और फिरऔन की बीवी ने कहा कि यह आंख की ठंडक है, मेरे लिए और तुम्हारे लिए। इसे क़त्ल न करो। क्या अजब कि यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेदा बना लें। और वे समझते न थे। (7-9)

हज्रत मूसा की पैदाइश के जमाने में बनी इस्राईल के लड़के हलाक किए जा रहे थे। इस बिना पर हज्रत मूसा की वालिदा परेशान हुई। उस वक़्त ग़ालिबन ख़ाब के जरिए आपकी वालिदा को यह तदबीर बताई गई कि वह आपको एक छोटी कश्ती में रखकर दरियाए नील में डाल दें। उन्होंने तीन माह बाद ऐसा ही किया। यह छोटी कश्ती बहते हुए फिरऔन के महल के सामने पहुंची। फिरऔन की बीवी (आसिया) एक नेकबख़्त (सदाचारी) ख़ातून थीं। उन्हें हज्रत मूसा के मासूम और पुरकशिश हुलिये को देखकर रहम आ गया। चुनांचे उनके मशिवरे पर हज्रत मूसा फिरऔन के महल में रख लिए गए।

रिवायतों में आता है कि फिरऔन की बीवी ने कहा कि यह बच्चा आंख की ठंडक है। फिरऔन ने जवाब दिया कि तुम्हारे लिए है न कि मेरे लिए। यह बात ग़ालिबन फिरऔन ने मर्द और औरत के फ़र्क पर कही होगी मगर बाद को वह ऐन वाक्या बन गई।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَرِحًا ۖ إِنَّهَا كَادَتْ لَتُبْدِيَ بِهِ لَوْ لَا أَنَّ رَبَّنَا عَلَىٰ قُلُوبِنَا إِتْقَانٌ ۖ وَقَالَتْ لِاخْتِمْهُ قُصِيْهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ۝ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ آتِيهِ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَهَا بَلَدٌ شَدِيدٌ ۚ وَاسْتَوَىٰ اثْنَيْنِ أَحَبَّاهُ ۚ وَلَكِنْ أَعْلَمُ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

और मूसा की मां का दिल बेचैन हो गया। करीब था कि वह उसे जाहिर कर दे अगर हम उसके दिल को न संभालते कि वह यकीन करने वालों में से रहे। और उसने उसकी बहिन से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा। तो वह उसे अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को ख़बर नहीं हुई। और हमने पहले ही मूसा से दाइयों को रोक रखा था। तो लड़की ने कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता दूँ जो इसे तुम्हारे लिए पालें और वे इसकी ख़ैरखाही करें। पस हमने उसे उसकी मां की तरफ लौटा दिया ताकि उसकी आंखें ठंडी हों। और वह ग़मगीन न हो। और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचा और पूरा हो गया तो हमने उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया और हम इसी तरह बदला देते हैं नेकी करने वालों को। (10-14)

हज्रत मूसा की हिफ़ाज़त को अल्लाह तआला ने तमामतर अपनी तरफ मंसूब किया है। हालांकि वाक्ये की तपसीलात बताती हैं कि पूरा वाक्या असबाब के तहत पेश आया। इससे मालूम होता है कि मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में अल्लाह तआला की मर्जी का जुहूर आम तौर पर असबाब के अंदाज में होता है न कि तिलिस्मात और ख़वारिक (अस्वाभाविकता) के अंग्रजमे

हज्रत मूसा बेबसी की हालत में दरिया की मौजों में डाले गए मगर वह पूरी तरह महफूज़ रहकर साहिल पर पहुंच गए। बादशाहे वक़्त ने उनके क़त्ल का मंसूबा बनाया मगर अल्लाह ने उसी बादशाह के जरिए आपकी परवरिश का इतिजाम किया। वह एक मामूली ख़ानदान में पैदा हुए मगर अल्लाह तआला ने उन्हें शाही महल से वाबस्ता करके आलातरीन सतह पर उनके लिए वक़्त के उलूम (ज्ञान) व आदाब सीखने का इतिजाम किया। यह एक मि साल है जो बताती है कि अल्लाह तआला की कुदरत लामहदूद (असीम) है। कोई नहीं जो उसके मंसूबे को जुहूर में आने से रोक सके।

सूरह-28. अल-क़सस

1053

पारा 20

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَى حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَرَهُ مُوسَى فَقَضَى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي آتَيْتُكَ عَلَىٰ ذِكْرِ أُكُنَّ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ۝

और शहर में वह ऐसे वक्त में दाखिल हुआ जबकि शहर वाले ग़फ़लत में थे तो उसने वहां दो आदमियों को लड़ते हुए पाया। एक उसकी अपनी कौम का था और दूसरा दुश्मनों में से था। तो जो उसकी कौम में से था उसने उसके खिलाफ मदद तलब की जो उसके दुश्मनों में से था। पस मूसा ने उसे धूसा मारा। फिर उसका काम तमाम कर दिया। मूसा ने कहा कि यह शैतान के काम से है। बेशक वह दुश्मन है, खुला गुमराह करने वाला। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया है। पस तू मुझे बख़्श दे तो खुदा ने उसे बख़्श दिया। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, जैसा तूने मेरे ऊपर फ़ल किया तो मैं कभी मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा। (15-17)

पैगम्बरी मिलने से पहले का वाक्या है, हजरत मूसा मिस्र के दारुस्सलतनत (राजधानी) में थे। एक रोज उन्होंने देखा कि एक क़िबती (मूल मिस्री) और एक इस्राईली लड़ रहे हैं। इस्राईली ने हजरत मूसा को अपना हमक़ीम समझ कर फुकारा कि ज़ल्लिम क़िबती के मुक़ाबले में मेरी मदद कीजिए। हजरत मूसा ने दोनों को अलग करना चाहा तो क़िबती आपसे उलझ गया। आपने दिफ़ाअ (आत्मरक्षा) के तौर पर उसे एक धूसा मारा। वह इत्तफ़ाक़न ऐसी जगह लगा कि क़िबती मर गया।

क़िबती कैम उस वक्त बनी इस्राईली पर सख़्त ज़्यादतियां कर रही थी। ऐसी हालत में हजरत मूसा अगर इस वाक्ये को कैमी मुक़्तए नज़र से देखते तो वह उसे मुजाहिदाना कारनामा करार देकर फ़ज़्र करते। मगर उन्हें क़िबती की मौत पर शदीद अपसोस हुआ। वह फ़ौन अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हुए और अल्लाह से माफी मांगने लगे।

‘अब मैं किसी मुजरिम की हिमायत नहीं करूंगा’ इसका मतलब यह है कि अब मैं बिला तहक्कीक किसी की हिमायत नहीं करूंगा। एक शख्स का बज़्रि मजज़ूम फ़िस्केसेतअल्लुक़ रखना या किसी को ज़ालिम बताकर उसके खिलाफ मदद मांगना यह साबित करने के लिए कभी नहीं कि फ़िलवक़अ थी दूसरा शख्स ज़ल्लिम है। और फ़र्याद करने वाला मजज़ूम।

पारा 20

1054

सूरह-28. अल-क़सस

इसलिए सही तरीका यह है कि ऐसे मौकों पर अस्ल मामले की तहक्कीक की जाए और सिर्फ उस वक्त किसी की हिमायत की जाए जबकि ग़ैर जानिबदाराना तहक्कीक में उसका मजज़ूम होना साबित हो जाए।

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ ۚ قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا ۖ قَالَ يَمُوسَى أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۖ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ ۚ قَالَ يَمُوسَى إِنَّ الْمَلَائِكَةَ آتِيْرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ ۖ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۚ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

फिर सुबह को वह शहर में उठा डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। तो देखा कि वही शख्स जिसने कल मदद मांगी थी, वही आज फिर उसे मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, बेशक तुम सरीह गुमराह हो। फिर जब उसने चाहा कि उसे पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था तो उसने कहा कि ऐ मूसा क्या तुम मुझे कल्ल करना चाहते हो जिस तरह तुमने कल एक शख्स को कल्ल किया। तो तुम ज़मीन में सरकश बनकर रहना चाहता हो। तुम सुलह करने वालों में से बनना नहीं चाहते। और एक शख्स शहर के किनारे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा ऐ मूसा, दरबार वाले मश्विरा कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें। पस तुम निकल जाओ, मैं तुम्हारे ख़ैरख़्वाहों में से हूँ। फिर वह वहां से निकला डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे ज़ालिम लोगों से नज़ात दे। (18-21)

अगले दिन वही इस्राईली दुबारा एक क़िबती से लड़ रहा था। यह इस बात का वाजेह करीना (संकेत) था कि वह एक झगड़लू क्रिस्म का आदमी है और रोज़ाना किसी न किसी से लड़ता रहता है। चुनांचे अपनी कौम का फर्द होने के बावजूद हजरत मूसा ने उसे मुजरिम ठहराया। मच़्दूरा इस्राईली का मुजरिम होना इस वाक्ये से मज़ीद साबित हो गया कि उस इस्राईली ने जब देखा कि हजरत मूसा आज उसकी मदद नहीं कर रहे हैं और उसकी उम्मीद के खिलाफ़ खुद उसी को बुरा कह रहे हैं तो वह कमीनेपन पर उतर आया। उसने ग़ैर



जिम्मेदाराना तौर पर कल के कल का राज खोल दिया जो अभी तक किसी के इल्म में न आया था।

इस्राईली की जवान से कातिल का नाम निकला तो बहुत से लोगों ने सुन लिया। चन्द दिन में उसकी खबर हर तरफ फैल गई। यहां तक कि हुक्मरानों में मूसा के कल के मश्वरे होने लगे। एक नेकबख्त आदमी को इसका पता चल गया। वह खुफिया तौर पर हजरत मूसा से मिला और कहा कि इस वक्त यही बेहतर है कि आप इस जगह को छोड़ दें। चुनांचे आप मिन्न से निकल कर मदन की तरफ रवाना हो गए। मदन खलीज अकबा के मरिबी साहिल (पश्चिमी तट) पर था और फिरऔन की सल्तनत के हुदूद (सीमाओं) से बाहर था।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۖ  
وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۖ وَوَجَدَ  
مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۚ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ  
يُصْدِرَ الرِّعَاءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ۚ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ  
رَبِّ إِنِّي لَمَّا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۖ

और जब उसने मदन का रुख किया तो उसने कहा, उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखा दे। और जब वह मदन के पानी पर पहुंचा तो वहां लोगों की एक जमाअत को पानी पिलाते हुए पाया। और उनसे अलग एक तरफ दो औरतों को देखा कि वे अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या माजरा है। उन्होंने कहा कि हम पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपनी बकरियां न हटा लें। और हमारा बाप बहुत बूढ़ा है तो उसने उनके जानवरों को पानी पिलाया। फिर साये की तरफ हट गया। फिर कहा कि ऐ मेरे रब, तू जो चीज मेरी तरफ उतारे मैं उसका मोहताज हूँ। (22-24)

हजरत मूसा का यह सफर गया नामालूम मजिल की तरफ सफर था। ऐसे हालात में मोमिन के दिल की जो कैफियत होती है वह पूरी तरह आपके ऊपर तारी थी। आप दुआओं के साथे में अपना कदम आगे बढ़ रहे थे। तकरीबन दस दिन के सफर के बाद मदन पहुंचे। गालिब गुमान है कि आप भूखे भी होंगे।

हजरत मूसा ने कमजोरों की हिमायत के जब्बे के तहत मदन की दोनों लड़कियों की मदद की। यह वाकया उनके लिए लड़कियों के वालिद तक पहुंचने का जरिया बना। यह बुर्जुा मदन बिन इब्राहीम की औलाद से थे और हजरत मूसा, इस्हाक बिन इब्राहीम की औलाद से। इस एतबार से दोनों में नस्ली कुरबत भी थी।

उस वक्त हजरत मूसा की जवान से यह दुआ निकली :

ऐ मेरे रब, तू जो चीज मेरी तरफ

उतारे मैं उसका मोहताज हूँ।' यह दुआ बताती है कि ऐसे वक्त में मोमिन का हाल क्या होता है। वह अपने मामले को तमामतर अल्लाह पर डाल देता है। उसे यकीन होता है कि बंदे को जो कुछ मिलता है खुदा से मिलता है, और खैर वही है जो उसे खुदा की तरफ से मिले।

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَتَشَاوَىٰ عَلَىٰ اسْتِخْيَارٍ ۖ قَالَتَانِ إِنِّي بَدْعُوكَ ۖ لِيَجْزِيَكَ أَجْرُ  
مَا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ ۖ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۖ قَالَ لَا تَخَفْ ۚ  
نَجُوتُ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ ۝ قَالَتِ إِحْدَاهُمَا يَٰبَتُّ اسْتَأْجِرْهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ  
مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ۖ ۝ قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَن أُتْلِكَ إِحْدَىٰ ابْنَتَيَّ  
هَاتَيْنِ عَلَىٰ أَن تَأْجُرَنِي ثَمَنِي ۖ فَإِنْ أَتَمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۖ وَمَا  
أُرِيدُ أَن أَسْأَلَكَ مِن شَيْءٍ ۖ إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ ۝ قَالَ  
ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّتَا الرَّجُلَيْنِ قَضَيْتُ ۖ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ  
مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۖ

फिर उन दोनों में से एक आई शर्म से चलती हुई। उसने कहा कि मेरा बाप आपको बुला रहा है कि आपने हमारी खातिर जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दे। फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा किस्सा बयान किया तो उसने कहा कि अदेशा न करो। तुमने जालिमों से नजात पाई। उनमें से एक ने कहा कि ऐ बाप इसे मुलाजिम रख लीजिए। बेहदरीन आदमी जिसे आप मुलाजिम रखें वही है जो मजबूत और अमानतदार हो। उसने कहा कि मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ कर दूँ। इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मुलाजिम करो। फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ से है। और मैं तुम पर मशक्कत डालना नहीं चाहता। ईशाअल्लाह तुम मुझे भला आदमी पाओगे। मूसा ने कहा कि यह बात मेरे और आपके दर्मियान तै है। इन दोनों मुददतों में से जो भी मैं पूरी करूँ तो मुझ पर कोई जबर न होगा। और अल्लाह हमारे कौल व करार पर गवाह है। (25-28)

लड़कियां उस दिन मअमूल से कुछ पहले पहुंच गईं। वालिद ने पूछा तो उन्होंने बताया कि आज एक मुसाफिर ने हमारी बकरियों को पहले ही पानी पिला दिया। लड़कियों के वालिद ने कहा कि फिर तुम उस मुसाफिर को घर क्यों न लाई कि वह हमारे साथ खाना खाए। चुनांचे एक लड़की दुबारा कुर्वे पर गई और हजरत मूसा को बुलाकर ले आई।

सूह-28. अल-कसस

1057

पारा 20

चन्द दिन के तजर्बे ने बताया कि हजरत मूसा महनती भी हैं और अमानतदार भी। चुनांचे मज्हूर बुर्जुा ने अपनी बेटी की राय से इत्फाक करते हुए हजरत मूसा को अपने यहां मुस्तकिल खिदमत के लिए रख लिया। हकीकत यह है कि यह दोनों सिफ़त, अमानत और कुत (Honesty & hard working) तमाम जरूरी सिफ़त की जामेअ हैं। आदमी के इंतखाब के लिए मेयार मुकरर होना हो तो इन दो लफ्जों से बेहतर कोई मेयार नहीं हो सकता।

बाद को मज्हूर बुर्जुा ने अपनी एक लड़की की शादी भी हजरत मूसा से कर दी। ताहम चूँकि उस वक़्त उन्हें अपने घर और जायदाद की देखभाल के लिए एक मर्द की शदीद जरूरत थी, उन्होंने हजरत मूसा को इस पर आमादा किया कि वह आठ साल या दस साल तक उनके यहां कियाम करें। इसके बाद वे जहां जाना चाहें जा सकते हैं।

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَىٰ الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۚ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿١٠﴾ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يُمُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿١١﴾ وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تُهَنِّئُ كَانَهَا جَانًّا وَلِيَ مَدْيَنًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يُمُوسَىٰ أُقْبِلْ وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ ﴿١٢﴾ أَسْلَكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّجَ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۚ وَآخِمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۖ فَذَٰلِكَ بُرْهَانُ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِيقِينَ ﴿١٣﴾

फिर मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और वह अपने घर वालों के साथ खाना हुआ तो उसने तूर की तरफ से एक आग देखी। उसने अपने घर वालों से कहा कि तुम ठहरो, मैंने एक आग देखी है। शायद मैं वहां से कोई खबर ले आऊं या आग का अंगारा ताकि तुम तापो। फिर जब वह वहां पहुंचा तो वादी के दाहिने किनारे से बरकत वाले खिते में दरख़्त से पुकारा गया कि ऐ मूसा, मैं अल्लाह हूं, सारे जहान का मालिक। और यह कि तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। तो जब उसने उसे हरकत करते हुए देखा कि गोया सांप हो, तो वह पीठ फेरकर भागा और उसने मुड़कर न देखा। ऐ मूसा आगे आओ और न डरो। तुम बिल्कुल महफूज हो। अपना हाथ गेबान में डालो, वह चमकता हुआ निकलेगा बहर किसी मरज के, और खौफ के वास्ते अपना बाजू अपनी तरफ मिला लो।

पारा 20

1058

सूह-28. अल-कसस

पस यह तुम्हारे रब की तरफ से दो सनदें हैं फिरऔन और उसके दरबारियों के पास जाने के लिए। बेशक वे नाफरमान लोग हैं। (29-32)

हजरत मूसा ग़ालिबन दस साल मदन में रहे। इस मुद्दत में साबिका फिरऔन मर गया और खानदाने फिरऔन का दूसरा शख्स मिस्र के तख़्त पर बैठा। अब आप अपनी बीवी (और तौरात के मुताबिक दो बच्चों) के साथ दुबारा मिस्र की तरफ खाना हुए। रास्ते में आप पर तूर का तजर्बा गुज़रा।

जिस खुदा ने सीना के पहाड़ पर एक इंसान से बराहेरास्त कलाम किया। वह खुदा तमाम इंसानों को भी बराहेरास्त आवाज देकर अपनी मर्जी से बाख़बर कर सकता है। मगर यह खुदा का तरीका नहीं। बराहेरास्त खिताब का मतलब पर्दे को हटा देना है, जबकि इस्तेहान की मस्तेहत चाहती है कि पर्दा लाजिमन बाकी रहे। चुनांचे खुदा अपना बराहेरास्त कलाम सिर्फ किसी मुंतख़ब इंसान के ऊपर उतारता है और बकिया लोगों को उसके जरिए से बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर अपना पैग़ाम पहुंचाता है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿٣٠﴾ وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْضَلُ مِنِّي رِسَالًا فَارْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۚ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿٣١﴾ قَالَ سَنُنْشِئُ عُصْدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِأَيِّتِنَا ۖ أَنتُمَا وَمَنْ آتَيْنَا بِالْعِلْمِ ۖ

मूसा ने कहा ऐ मेरे रब मैंने उनमें से एक शख्स को कल किया है तो मैं डरता हूं कि वे मुझे मार डालेंगे। और मेरा भाई हारून वह मुझसे ज्यादा फसीह (वाक-कुशल) है जवान में, पस तू उसे मेरे साथ मददगार की हैसियत से भेज कि वह मेरी ताईद करे। मैं डरता हूं कि वे लोग मुझे झुठला देंगे। फरमाया कि हम तुम्हारे भाई के जरिए तुम्हारे बाजू को मजबूत कर देंगे और हम तुम दोनों को ग़लबा देंगे तो वे तुम लोगों तक न पहुंच सकेंगे। हमारी निशानियों के साथ, तुम दोनों और तुम्हारी पैरवी करने वाले ही ग़ालिब रहेंगे। (33-35)

खुदा जब किसी को अपनी दावत के काम पर मामूर (नियुक्त) करता है तो लाजिमी तौर पर उसे वह तमाम असबाब भी देता है जो कारे दावत की मुवस्सिर अदायगी के लिए जरूरी हैं। चुनांचे हजरत मूसा को उनके हालात के लिहाज से विभिन्न चीजें दी गईं। आपको मामूरियत की सनद के तौर पर खारिके आदत (दिव्य) मौजिजे अता किए गए। आपको मददगार दिया गया जो हक के एलान के काम में आपका मुआविन (सहयोगी) हो। आपको

शख्सी हैबत दी गई ताकि फिरऔन की कौम आप पर हाथ डालने की जुरअत न करे। खुदा की तरफ से यह मुकद्दर कर दिया गया कि हज़रत मूसा और आपके साथियों (बनी इस्राईल) ही को आखिरी ग़लबा हासिल हो।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ بِبَنِي جَاءٍ بِالْهُدَى مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِي فَأَوْثَقْنِي فِيهَا مِنْ عَلَى الطُّيُنِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا نَعْلِمَ أَتْلُكُمُ إِلَى اللَّهِ مُوسَى وَإِنِّي لَأَكْذِبُ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۝

फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी वाजेह निशानियों के साथ पहुंचा, उन्होंने कहा कि यह महज गढ़ा हुआ जादू है। और यह बात हमने अपने अगले बाप दादा में नहीं सुनी। और मूसा ने कहा मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो उसकी तरफ से हिदायत लेकर आया है और जिसे आखिरत का घर मिलेगा। बेशक जालिम फलाह न पाएंगे। और फिरऔन ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी माबूद (पूज्य) को नहीं जानता। तो ऐ हामान मेरे लिए मिट्टी को आग दे, फिर मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं मूसा के रब को झांक कर देखूं, और मैं तो इसे एक झूठा आदमी समझता हूं। (36-38)

एक शख्स अपने को बड़ा समझता हो, उसके सामने एक बजाहिर मामूली आदमी आए और उस पर बराहेरास्त तंकीद करे तो वह फौरन बिफर उठता है। वह उसका इस्तहजा (परिहास) करता है और उसका मजाक उड़ाने के लिए तरह-तरह की बातें करता है। यही उस वक्त फिरऔन ने हज़रत मूसा के मुक़बले में किया।

‘मैं अपने सिवा कोई माबूद नहीं जानता’ कोई संजीदा जुमला नहीं है। इन अल्फाज से फिरऔन का मक़सद बयाने हकीकत नहीं बल्कि तहकीर मूसा है। इसी तरह फिरऔन ने जब अपने वजीर हामान से कहा कि पुख़्ता ईट तैयार करके एक ऊंची इमारत बनाओ ताकि मैं आसमान में झांक कर मूसा के ख़ुदा को देखूं, तो यह कोई संजीदा हुक्म नहीं था। इसका मतलब यह नहीं था कि वाक़ेयातन वह अपने वजीर के नाम एक तामीरी फरमान जारी कर रहा है। यह सिर्फ़ हज़रत मूसा का इस्तहजा (मज़क उड़ाना) था न कि फ़िल्वाक़अ तामीर मकान का कोई हुक्म।

وَأَسْتَكْبِرُ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُوا أَنَّهُمُ الْيَنَّا لَا يُرْجَعُونَ ۝ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ فَاظْطُرُّ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى الثَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ لَا يُنْصَرُونَ ۝ وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ هُمْ يُنْفَخُونَ مِنَ الْمَقْبُورِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

और उसने और उसकी फौजों ने ज़मीन में नाहक घमंड किया और उन्होंने समझा कि उन्हें हमारी तरफ लौट कर आना नहीं है। तो हमने उसे और उसकी फौजों को पकड़। फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया। तो देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। और हमने उन्हें सरदार बनाया कि आग की तरफ बुलाते हैं। और क़ियामत के दिन उन्हें मदद नहीं मिलेगी। और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी। और क़ियामत के दिन वे बदहाल लोगों में से होंगे, और हमने अगली उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी। लोगों के लिए बसीरत (सूझबूझ) का सामान, और हिदायत और रहमत ताकि वे नसीहत पकड़ें। (39-43)

हज़रत मूसा की तहरीक फर्दे इंसानी में रब्बानी इक्लाब बरपा करने की तहरीक थी। आपका मक़सद यह था कि आदमी अल्लाह से डरे और अल्लाह का बंदा बनकर दुनिया में ज़िंदगी गुजारे। आपका यही पैग़ाम दूसरे अफ़स़ाद के लिए भी था और यही उस फर्द के लिए भी जो मुल्क के तख़्त पर बैठा हुआ था।

यह एक आम बात है कि इख़्तियार व इक्तेदार पाकर आदमी घमंड की नफ़िसयात में मुब्तिला हो जाता है। यही फिरऔन का हाल भी था। हज़रत मूसा ने फिरऔन को डराया कि अगर तुम मुतकब्बिर (घमंडी) बनकर दुनिया में रहोगे तो ख़ुदा की पकड़ में आ जाओगे। मगर फिरऔन ने नसीहत कुबूल नहीं की। नतीजा यह हुआ कि उसे हलाक कर दिया गया।

फिरऔन क़दीम मुश्क़ाना (बहुदेववादी) तहज़ीब का इमाम था। मुश्क़ाना तहज़ीब में फिरऔन को ऊंचा मक़म हासिल था। मगर मुश्क़ाना तहज़ीब न सिर्फ़ मिन्न से बल्कि सारी दुनिया से ख़त्म हो गई। अब दुनिया की आबादी में ज्यादातर या तो मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई। और यह सबके सब मुतफ़िक्क़ तौर पर फिरऔन को लानतज्दा समझते हैं। अब दुनिया में कोई भी फिरऔन की अज़मत को मानने वाला नहीं।

وَمَا كُنْتَ بِمَجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۖ وَلَيْكَ آسْنَا أَفْرُونًا فَطَاوُلَ عَلَيْهِمُ الْعُمرُ وَمَا كُنْتَ تَأْوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَيْكَ كُنَّا مُرْسِلِينَ ۖ وَمَا كُنْتَ بِمَجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَهُمْ مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

और तुम पहाड़ के मरिबी (पश्चिमी) जानिब मौजूद न थे जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए और न तुम गवाहों में शामिल थे। लेकिन हमने बहुत सी नस्लें पैदा कीं फिर उन पर बहुत जमाना गुजर गया। और तुम मदन वालों में भी न रहते थे कि उन्हें हमारी आयतें सुनाते। मगर हम हैं पैग़म्बर भेजने वाले। और तुम तूर के किनारे न थे जब हमने मूसा को पुकारा, लेकिन यह तुम्हारे रब का इनाम है, ताकि तुम एक ऐसी कौम को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया ताकि वे नसीहत पकड़ें। (44-46)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरआन में हजरत मूसा के वाक्यात इस कद्र तपसील के साथ बयान कर रहे थे जैसे कि आप वहीं मौके पर खड़े हों और सब कुछ देख और सुन रहे हों। हालांकि वाक्यात यह है कि आप हजरत मूसा के दो हजार साल बाद मक्का में पैदा हुए। यह इस बात की वाजेह दलील थी कि कुरआन का कलाम खुदा का कलाम है क्योंकि कोई इंसान इस तरह के बयान पर कादिर नहीं हो सकता।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में आजकल की तरह किताबें नहीं होती थीं। उस वक़्त हजरत मूसा के वाक्यात का जिक्र यहूद की रै अरबी किताबों में था जिनके सिर्फ चन्द नुस्खे यहूदी इबादतख़ानों में महफूज थे और यकीनी तौर पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दस्तरस से बाहर थे। मजीद यह कि कुरआन के बयानात और यहूदी किताबों के बयानात में बहुत से निहायत बामअना फ़र्क हैं और करीना बताता है कि कुरआन का बयान ही ज्यादा सही है। मिसाल के तौर पर हजरत मूसा के हाथ से किखती की मौत कुरआन के बयान के मुताबिक बग़ैर इरादे के हुई। जबकि बाइबल हजरत मूसा के बारे में कहती है :

‘फिर उसने इधर-उधर निगाह की और जब देखा कि वहां कोई दूसरा आदमी नहीं है तो उस मिस्री को जान से मार कर उसे रेत में छुपा दिया।’ (ख़ुरज 2 : 12)

खुली हुई बात है कि हजरत मूसा जैसी मुक़द्दस शख़्सीयत से कुरआन का बयान मुताबिकत रखता है न कि तौरात का बयान। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम किस तरह इस पर कादिर हुए कि किसी जाहिरी वसीले के बग़ैर हजरत मूसा के वाक्यात इस कद्र सेहत के साथ कुरआन में पेश कर सकें। इसका कोई भी जवाब इसके सिवा नहीं हो सकता कि खुदाए आलिमुलबैब ने यह बातें आपके ऊपर बजरिये ‘वही’ (प्रकाशना) नाजिल फ़र्माई

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُمْ مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنُتَّبِعِ آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا بِكُلِّ كَفُورٍ ۝

और अगर ऐसा न होता कि उन पर उनके आमाल के सबब से कोई आफ़त आई तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और हम ईमान वालों में से होते। फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ (सत्य) आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसे वैसा मिला जैसा मूसा को मिला था। क्या लोगों ने उसका इंकार नहीं किया जो इससे पहले मूसा को दिया गया था, उन्होंने कहा कि दोनों जादू हैं एक दूसरे के मददगार, और उन्होंने कहा कि हम दोनों का इंकार करते हैं। (47-48)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने कदीम मिस्त्रियों के सामने अपना पैग़ामे रिसालत पेश किया तो इसी के साथ आपने मोजिजे भी दिखाए। मगर उन लोगों ने नहीं माना और कह दिया कि यह तो जादू है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कदीम अरब में दलाइल की बुनियाद पर हक़ की दावत पेश की तो उन्होंने कहा कि अगर यह पैग़म्बर हैं तो मूसा जैसे मोजिजे क्यों नहीं दिखाते।

ये सब रैर संजीदा जेहन से निकली हुई बातें हैं। मौजूदा दुनिया में हक़ को मानने के लिए सबसे जरूरी शर्त यह है कि आदमी संजीदा हो। जो शख़्स हक़ और नाहक के मामले में संजीदा न हो उसे कोई भी चीज़ हक़ के एतराफ़ पर मजबूर नहीं कर सकती। वह हर बार नए उज़ (बहाना) तलाश कर लेगा। वह हर बात के जवाब में नए अल्फ़ाज़ पा लेगा।

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعُهُ إِن كُنْتُمْ تَصِدِّقُونَ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا يُتَّبَعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ



وَصَلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

कहो कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनों से बेहतर हो, मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये लोग तुम्हारा कहा न कर सकें तो जान लो कि वे सिर्फ अपनी ख़्वाहिश की पैरवी कर रहे हैं। और उससे ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत के बग़ैर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे। बेशक अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। और हमने उन लोगों के लिए पे दर पे अपना कलाम भेजा ताकि वे नसीहत पकड़ें। (49-51)

हक के पैग़ाम को मानने या न मानने का जो अस्ल मेयार है वह यह है कि पैग़ाम को खुद उसके जाती जोहर की बुनियाद पर जांचा जाए। अगर वह अपनी जात पर बरतार सदाकत (सच्चाई) होना साबित कर रहा हो तो यही काफी है कि उसे मान लिया जाए। इसके बाद उसे मानने के लिए किसी और चीज की जरूरत नहीं।

सदाकत (सच्चाई) का जवाब सदाकत है। अगर आदमी सदाकत का इंकार करे और उसके जवाब में दूसरी आलातर (उच्चतर) सदाकत न पेश कर सके। तो इसका मतलब यह है कि वह ख़्वाहिशपरस्ती की वजह से उसका इंकार कर रहा है। जिन लोगों का यह हाल हो कि वे सदाकत को माकूलियत के जरिए रद्द न कर सकें और फिर भी ख़्वाहिश और तअस्सुब के ज़ेअसर उसे न मानें वे बदतरीन गुमराह लोग हैं। ऐसे लोग खुदा के यहां जालिमों में शुमार होंगे।

الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الرِّكَابُ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا أُنْتَلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا  
اٰمَنَّا بِهٖ اِنَّهٗ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَا اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ  
اٰجُرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ ﴿٥٤﴾ وَمِمَّا زَرَعْتُمْ  
يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاِذَا سَمِعُوا اللّٰغَ اَعْرَضُوْا عَنْهٗ وَقَالُوْا لَنَا اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ  
اَعْمَالُكُمْ سَلَمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِيْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ  
اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٧﴾

जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी है वे इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं। और जब वह उन्हें सुनाया जाता है तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए। बेशक यह हक (सत्य) है हमारे खब की तरफ से, हम तो पहले ही से इसे मानने वाले हैं। ये लोग हैं कि उन्हें उनका अज़्र (प्रतिफल) दोहरा दिया जाएगा इस पर कि इन्होंने सब्र किया। और वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें

से खर्च करते हैं और जब वे लम्ब (घटिया निरर्थक) बात सुनते हैं तो उससे एराज (उपेक्षा) करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल। तुम्हें सलाम, हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और वही ख़ूब जानता है जो हिदायत कुबूल करने वाले हैं। (52-56)

मानने की दो सूरतें हैं। एक यह कि हक है इसलिए मानना। दूसरे यह कि अपने गिरोह का है इसलिए मानना। इन दोनों में सिर्फ पहली किस्म के ईमान हैं जिन्हें हिदायत की तौफ़ीक मिलती है। और इसी किस्म के लोग थे जो दौरे अब्ल में कुरआन और पैग़म्बर पर ईमान लाए।

ईसाइयों और यहूदियों में एक तादाद थी जो कुरआन को सुनते ही उसकी मोमिन बन गई। ये वे लोग थे जो साबिक पैग़म्बरों की हक्की तालीमात पर क़यम थे। इसलिए उन्हें पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पहचानने में देर नहीं लगी। उन्होंने नए पैग़म्बर को भी उसी तरह पहचान लिया जिस तरह उन्होंने पिछले पैग़म्बरों को पहचाना था। मगर अपने आपको इस काबिल रखने के लिए उन्हें 'सब्र' के मरहलों से गुजरना पड़ा।

उन्होंने अपने ज़ेहन को उन असरात से पाक रखा जिसके बाद आदमी हक की मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) के लिए नाअहल हो जाता है। ये वे तारीख़ी और समाजी अवामिल (कारक) हैं जो आदमी के ज़ेहन में ख़ुदाई दीन को गिरोही दीन बना देते हैं। आदमी का यह हाल हो जाता है कि वह सिर्फ उस दीन को पहचान सके जो उसे अपने गिरोह से मिला हो। वह उस दीन को पहचानने में नाकाम रहे जो उसके अपने गिरोह के बाहर से उसके पास आए। इन असरात से महफूज़ रहने के लिए आदमी को ज़बरदस्त नफ़िसयाती (मानसिक, मनोवैज्ञानिक) कुर्बानी देनी पड़ती है। इसलिए इसे सब्र से ताबीर फरमाया। ऐसे लोगों को दोहरा अज़्र दिया जाएगा। एक उनकी इस कुर्बानी का कि उन्होंने अपने साबिका (पहले के) ईमान को गिरोही ईमान बनने नहीं दिया। और दूसरे उनकी जौहरशनासी का कि उनके सामने नया पैग़म्बर आया तो उन्होंने उसे पहचान लिया और उसके साथ हो गए।

जिन लोगों के अंदर हक शनासी का माद़दा हो उन्हीं के अंदर आला अख़्बाकी औसाफ़ (गुण) परवरिश पाते हैं। लोग उनके साथ बुराई करें तब भी वे लोगों के साथ भलाई करते हैं। वे दूसरों की मदद करते हैं ताकि खुदा उनकी मदद करे। उनका तरीका एराज (बचने) का तरीका होता है न कि लोगों से उलझने का तरीका।

وَقَالُوا اِنْ تَتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نَخْطِفُ مِنْ اَرْضِنَا ۖ وَاَلَمْ نَكُنْ لَهُمْ  
حَرَمًا مِّنْ اٰمِنًا يُجْبٰى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ رَّزَقًا مِّنْ لَّدُنَّا ۚ وَلٰكِنْ اَكْثَرُهُمْ  
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٨﴾

सूह-28. अल-क़सस

1065

पारा 20

और वे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ होकर इस हिदायत पर चलने लगे तो हम अपनी जमीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हमने उन्हें अमन व अमान वाले हरम में जगह नहीं दी। जहां हर क्रिम के फल खिंचे चले आते हैं, हमारी तरफ से रस्फ के तौर पर, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (57)

जिस निजाम से आदमी के फायदे वाबस्ता हो जाएं वह समझने लगता है कि मुझे जो कुछ मिल रहा है वह इसी निजाम की बदौलत मिल रहा है। आदमी सिर्फ हाल (वर्तमान) के फायदों को जानता है, वह मुस्तक़बिल (भविष्य) के फायदों को नहीं जानता।

यही मामला कदीम मक्का के मुश्रिकों का था। उन्होंने काबा में तमाम अरब कबीलों के बुत रख दिए थे। इस तरह उन्हें पूरे मुल्क की मजहबी सरदारी हासिल हो गई थी। इसी तरह उन बुतों के नाम पर जो नजराने आते थे वे भी उनकी मआश (जीविका) का खास जरिया थे।

मगर यह सिर्फ उनकी तंगनजरी थी। खुदा का रसूल उन्हें एक ऐसे दीन की तरफ बुला रहा था जो उन्हें आलम की इमामत (नेतृत्व) देने वाला था, और वे एक ऐसे दीन की खातिर उसे छोड़ रहे थे जिसके पास मुल्क के कबीलों की मामूली सरदारी के सिवा और कुछ न था।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا فِتْنًا مَسْكَنُهُمْ لَمْ تَسْكُنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝

और हमने कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं जो अपने सामाने मईशत (जीविका के साधनों) पर नज़ (गौरवांविता) थीं। पस ये हैं उनकी बस्तियां जो उनके बाद आबाद नहीं हुईं मगर बहुत कम, और हम ही उनके वारिस हुए और तेरा रब बस्तियों को हलाक करने वाला न था जब तक उनकी बड़ी बस्ती में किसी पैगम्बर को न भेज ले जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाए और हम हरगिज बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं मगर जबकि वहां के लोग जालिम हों। (58-59)

दुनिया में किसी को मादूदी इस्तहकाम (आर्थिक सम्पन्नता) हासिल हो तो वह बड़ाई के एहसास में मुब्तिला हो जाता है। हालांकि तारीख़ मुसलसल यह सबक दे रही है कि किसी भी शख्स या कैम का मादूदी इस्तहकाम मुस्तक़िल नहीं। जब भी किसी कैम ने हक (सत्य) को नजरअंदाज किया, सारी अम्मत के बावजूद वह हलाक कर दी गई।

अरब के भू-क्षेत्र में इस्लाम से पहले मुख़ालिफ़ कौमें उभरीं। मसलन आद, समूद, सबा, मदयन, कौमे लूत वगैरह। हर एक किब्र (अहं, बड़ाई) में मुब्तिला हो गई। मगर हर एक का

पारा 20

1066

सूह-28. अल-क़सस

किब्र जमाने ने बातिल कर दिया। और बिलआखिर उनकी हैसियत गुजरी हुई कहानी के सिवा और कुछ न रही। इन कौमों के खंडहर चारों तरफ फैले इंसानी अम्मतों की नफ़ी कर रहे थे।

इसके बावजूद पैगम्बरे इस्लाम के जमाने में जिन लोगों को बड़ाई हासिल थी उन्होंने पैगम्बर को इस तरह झुठला दिया जैसे कि माजी के वाक़ेयात में उनके हाल के लिए कोई नसीहत नहीं।

وَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتِهَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝

और जो चीज भी तुम्हें दी गई है तो वह बस दुनिया की ज़िंदगी का सामान और उसकी रौनक है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाकी रहने वाला है, फिर क्या तुम समझते नहीं। भला वह शख्स जिससे हमने अच्छा वादा किया है फिर वह उसे पाने वाला है, क्या उस शख्स जैसा हो सकता है जिसे हमने सिर्फ दुनियावी ज़िंदगी का फायदा दिया है, फिर कियामत के दिन वह हाज़िर किए जाने वालों में से है। (60-61)

दुनिया में आदमी के पास कितना ही ज्यादा साजोसामान हो, बहरहाल वह मौत के वक़्त आदमी का साथ छोड़ देता है। मौत के बाद जो चीज आदमी के साथ जाती है वे उसके नेक आमाल हैं न कि दुनियावी इज्जत और मादूदी साजोसामान।

ऐसी हालत में अक्लमंदी यह है कि आदमी चन्द दिन की कामयाबी के मुकाबले में अबदी कामयाबी को तरजीह दे। वह दुनिया की तामीर के बजाए आखिरत की तामीर की फ़िक्र करे।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَهُمْ كَبَاغَوَيْنَا تَبَارَكَ إِلَٰهُكَ أَيْنَ مَا كُنَّا لَا يَنْصُرُنَا إِلَّا بَنَاتُنَا إِنََّّا بِعَبَدُكَ ۝

और जिस दिन खुदा उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे वे शरीक जिनका तुम दावा करते थे। जिन पर बात साबित हो चुकी होगी वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब ये लोग हैं जिन्होंने हमें बहकाया। हमने उन्हें उसी तरह बहकाया जिस तरह हम खुद बहके थे। हम इनसे बरा-त (विरक्ति) करते हैं। ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे। (62-63)

यहां 'शरीक' से मुराद गुमराह लीडर हैं। यानी वे बड़े लोग जिनकी बात लोगों ने इस तरह

सूरह-28. अल-क़सस

1067

पारा 20

मानी जिस तरह खुदा की बात माननी चाहिए। कियामत में जब इन बड़ों का साथ देने वाले लोग अपना बुरा अंजाम देखेंगे तो उनका अजीब हाल होगा। वे पाएंगे कि जिन बड़ों से वाबस्ता होने पर वे फ़ख़्र करते थे, उन बड़ों ने उन्हें सिर्फ़ जहन्नम तक पहुंचाया है। उस वक़्त वे बेज़ार होकर उनसे कहेंगे कि हमारी बर्बादी के जिम्मेदार तुम हो। उनके बड़े जवाब देंगे कि तुम्हारी अपनी जात के सिवा कोई तुम्हारी बर्बादी का जिम्मेदार नहीं। अगरचे बजाहिर तुम हमारे कहने पर चले मगर हमारा साथ तुमने इसलिए दिया कि हमारी बात तुम्हारी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ थी। तुम दरहकीक़त अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले थे न कि हमारे पैरोकार। हम भी अपनी ख़्वाहिशात पर चले और तुम भी अपनी ख़्वाहिशात पर चले। अब दोनों को एक ही अंजाम भुगतना है। एक दूसरे को बुरा कहने से कोई फ़ायदा नहीं।

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمُ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَحْتَدِرُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَعِصِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَغُفِرَ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۝

और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ तो वे उन्हें पुकारेंगे तो वे उन्हें जवाब न देंगे। और वे अजाब को देखेंगे। काश वे हिदायत इस्तियार करने वाले होते। और जिस दिन खुदा उन्हें पुकारेगा और फरमाएगा कि तुमने पैग़ाम पहुंचाने वालों को क्या जवाब दिया था। फिर उस दिन उनकी तमाम बातें गुप्त हो जाएंगी। तो वे आपस में भी न पूछ सकेंगे। अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया तो उम्मीद है कि वह फ़लाह (कल्याण, सफ़लता) पाने वालों में से होगा। (64-67)

दुनिया में आदमी जब हक़ का इन्कार करता है तो वह किसी भरोसे पर हक़ का इन्कार करता है। आख़िरत में उससे कहा जाएगा कि जिनके भरोसे पर तुमने हक़ को नहीं माना था आज उन्हें बुलाओ ताकि वे तुम्हें हक़ के इन्कार के बुरे अंजाम से बचाएं। मगर यह खुदा के जुहूर का दिन होगा। और कौन है जो खुदा के मुकाबले में किसी की मदद कर सके।

दुनिया में आदमी किसी हाल में चुप नहीं होता। हर दलील को रद्द करने के लिए उसे यहां अस्मज़ मिल जाते हैं। मगर यह सारे अस्मज़ कियामत में बूढ़े अस्मज़ साबित हों। वहां आदमी अफ़सोस करेगा कि कितनी छोटी चीज़ की ख़ातिर उसने कितनी बड़ी चीज़ को खो दिया।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا

पारा 20

1068

सूरह-28. अल-क़सस

يَشْرِكُونَ ۝ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْخِزْيَةُ وَالْأُولَى وَالْأُولَى وَالْآخِرَةُ ۝ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

और तेरा रब पैदा करता है जो चाहे और वह पसंद करता है जिसे चाहे। उनके हाथ में नहीं है पसंद करना। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है दुनिया में और आख़िरत में। और उसी के लिए फैसला है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (68-70)

अल्लाह तआला इंसानों को पैदा करता है। फिर इंसानों में से किसी शख्स को वह किसी ख़ास काम के लिए मुंतख़ब कर लेता है। यह इतिखाब (चयन) उसके ज़ती तक्व़स की बिना पर नहीं होता। बल्कि खुदा के अपने फैसले के तहत होता है। इसलिए ऐसी शख्सियतों को मुकद्दस मान कर उन्हें खुदा का दर्जा देना सरासर बेबुनियाद है। खुदा की दुनिया में इसकी कोई गुंजाइश नहीं।

आदमी हक़ का इन्कार करने के लिए जबान से कुछ अल्फ़ज बोल देता है। मगर उसके दिल में कुछ और बात होती है। वह जाती मस्लेहतों की बिना पर हक़ को नहीं मानता और अल्फ़ज के ज़रिए यह जहिर करता है कि वह दलील और मावूलीयत की बिना पर उसका इन्कार कर रहा है। आख़िरत में यह पर्दा बाकी नहीं रहेगा। उस वक़्त खुले तौर पर मालूम हो जाएगा कि उसके दिल में कुछ और था मगर अपनी बड़ाई को बाकी रखने के लिए वह कुछ दूसरे अल्फ़ज बोलता रहा।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهُ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ أَوْ لَاسَمْعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهُ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِاللَّيْلِ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَوْ لَاسَمْعُونَ ۝ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

कहो कि बताओ, अगर अल्लाह कियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए। तो क्या तुम लोग सुनते नहीं। कहो कि बताओ अगर अल्लाह कियामत तक तुम पर हमेशा के

सूरह-28. अल-क़सस

1069

पारा 20

लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम सुकून हासिल करते हो। क्या तुम लोग देखते नहीं। और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और ताकि तुम उसका फल (जीविका) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (71-73)

जिस जमीन पर इंसान आबाद है उसके बेशुमार हैरतनाक पहलुओं में से एक हैरतनाक पहलू यह है कि वह मुसलसल सूरज के गिर्द घूम रही है। सूरज के गिर्द उसकी महवरी (धुरीय) गर्दिश इस तरह होती है कि हर चौबीस घंटे में इसका एक चक्कर पूरा हो जाता है। यही वजह है कि इसके ऊपर बार-बार रात और दिन आते रहते हैं। अगर जमीन की यह महवरी गर्दिश न हो तो जमीन के एक हिस्से में मुस्तकिल रात होगी और दूसरे हिस्से में मुस्तकिल दिन। इसका नतीजा यह होगा कि मौजूदा पुराहत जमीन इंसान के लिए एक नाकाबिले बयान अजाबखाना बन जाएगी।

ख़ला (अंतरिक्ष) में जमीन का इस तरह हददर्जा सेहत के साथ मुसलसल गर्दिश करना इतना बड़ा वाक्या है कि इस वाक्ये को ज़ुहूर में लाने के लिए तमाम ज़िन्न व इन्स की ताकतों भी नाकाफी हैं। क़दिर मुतलक ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जो इतने बड़े वाक्ये को ज़ुहूर में ला सके। ऐसी हालत में यह कितनी बड़ी गुमराही है कि इंसान अपने ख़ौफ व मुहब्बत के ज़ब्बात को एक ख़ुदा के सिवा किसी और के साथ वाबस्ता करे।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۖ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۖ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे। और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे। फिर लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील लाओ, तब वे जान लेंगे कि हक अल्लाह की तरफ है। और वे बातें उनसे गुम हो जाएंगी जो वे गढ़ते थे। (74-75)

पैगम्बर और पैगम्बर की सच्ची पैरवी करने वाले दाजी कियामत में ख़ुदा के गवाह बनाकर खड़े किए जाएंगे। जिन कौमों पर उन्होंने ख़ुदा का पैगाम पहुंचाने का फर्ज अंजाम दिया था उनके बारे में वे वहां बताएंगे कि पैगाम को सुनकर उन्होंने किस किस का रूढ़िअमल पेश किया। उस दिन उन लोगों के तमाम भरोसे ख़त्म हो जाएंगे जिन्होंने ग़ैर अल्लाह के एतमाद पर हक की दावत को नज़रअंदाज किया था। उस दिन उनका यह हाल होगा कि वे अपनी सफ़ाई पेश करना चाहें मगर वे अपनी सफ़ाई के लिए अल्सज़ न पाएंगे।

पारा 20

1070

सूरह-28. अल-क़सस

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ أَبْعَادُ الْعُصْبَةِ ۚ أُولِيَ الْقُوَّةُ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۖ وَابْتَغَىٰ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ وَأَحْسِنْ ۚ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفُسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۖ

क़ारून मूसा की कौम में से था। फिर वह उनके ख़िलाफ़ सरकश हो गया। और हमने उसे इतने ख़जाने दिए थे कि उनकी कुंजियां उठाने से कई ताकतवर मर्द थक जाते थे। जब उसकी कौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता। और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें आख़िरत के तालिब बनो। और दुनिया में से अपने हिस्से को न भूलो। और लोगों के साथ भलाई करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है। और जमीन में फ़साद के तालिब न बनो, अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (76-77)

क़ारून का नाम यहूदी किताबों में कोरह (Korah) आया है। वह बनी इस्राईल का एक फ़र्द था। मगर वह अपनी कौम से कटकर फिरज़ौन का वफ़ादार बन गया। इसकी उसे यह कीमत मिली कि वह फिरज़ौन का मुक़र्रब बन गया। उसने अपनी दुनियादाराना सलाहियत के जरिए इतना कमाया कि वह मिस्र का सबसे ज्यादा दौलतमंद शख्स बन गया। दौलत पाकर उसके अंदर शुक्र का ज़ब्बा उभरना चाहिए था। मगर दौलत ने उसके अंदर फ़ख़्र का ज़ब्बा पैदा किया। अपने मआशी वसाइल (आर्थिक संसाधनों) से उसे जो नेकी कमानी चाहिए थी वह नेकी उसने नहीं कमाई।

जमीन में फ़साद करना क्या है। इस आयत (77) के मुताबिक जमीन में फ़साद बरपा करने की एक सूरत यह है कि एक शख्स को ज्यादा दौलत मिले तो वह उसे सिर्फ अपनी जात के लिए ख़र्च करे। समुद्र में जमीन का पानी आकर जमा होता है तो समुद्र पानी को भाप की शक्ल में उड़ाकर दुबारा उसे पूरी जमीन पर फैला देता है। यह ख़ुदा की दुनिया में इस्लाह का एक नमूना है। यही चीज़ इंसान से इस तरह मल्लूब (अपेक्षित) है कि अगर किसी वजह से एक शख्स के पास ज्यादा दौलत इकट्ठा हो जाए तो उसे चाहिए कि वह उसे मुख़लिफ़ तरीकों से उन लोगों की तरफ लौटाए जिन्हें मआशी तक्सीम में कम हिस्सा मिला है। गोया जमाशुदा दौलत को गर्दिश में लाना इस्लाह है और जमाशुदा दौलत को जमा रखना फ़साद।



सूरह-28. अल-क़सस

1071

पारा 20

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۖ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ  
مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً ۖ وَأَكْثَرُ جَمْعًا  
وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

उसने कहा, यह माल मुझे एक इल्म की बिना पर मिला है जो मेरे पास है। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुका है जो उससे ज्यादा कुम्हट और जमीयत (जन-समूह) रखती थीं। और मुजरिमों से उनके गुनाह पूछे नहीं जाते। (78)

कारून का जो किरदार यहां बयान हुआ है यही हमेशा दौलत वालों का किरदार रहा है। दौलतमंद आदमी समझता है कि उसे जो कुछ मिला है वह उसके इल्म की बदौलत मिला है। मगर किसी दौलतमंद का इल्म उसे यह नहीं बताता कि तुमसे पहले भी बहुत से लोगों को दौलत मिली मगर उनकी दौलत उन्हें मौत या हलाकत से न बचा सकी। फिर तुम्हें वह किस तरह बचाने वाली साबित होगी।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَيْكِنَّا  
لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۖ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٥١﴾ وَقَالَ الَّذِينَ  
أُوتُوا الْعِلْمَ وَيُكَفِّرُ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ أَمَنَ بِعَمَلٍ صَالِحٍ ۖ وَ  
لَا يُكْفِيهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٥٢﴾

पस वह अपनी कौम के सामने अपनी पूरी आराइश (भब्यता) के साथ निकला। जो लोग हयाते दुनिया के तालिब थे उन्होंने कहा, काश हमें भी वही मिलता जो कारून को दिया गया है, बेशक वह बड़ी किस्मत वाला है, और जिन लोगों को इल्म मिला था उन्होंने कहा, तुम्हारा बुरा हो अल्लाह का सवाब बेहतर है उस शख्स के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे। और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र करने वाले हैं। (79-80)

जिस आदमी के पास दौलत हो उसके गिर्द लाजिमी तौर पर दुनिया की रैनक जमा हो जाती है। उसे देखकर बहुत से नादान लोग उसके ऊपर रश्क करने लगते हैं। मगर जिन लोगों को हकीकत का इल्म हासिल हो जाए उन्हें यह जानने में देर नहीं लगती कि यह महज चन्द दिन की रैनक है और जो चीज चन्द रोज़ हो उसकी कोई कीमत नहीं।

इस्मे हकीकत इस दुनिया में सबसे ज्यादा कीमती चीज है। मगर इस्मे हकीकत का

पारा 20

1072

सूरह-28. अल-क़सस

मालिक बनने के लिए सब्र की सलाहियत दरकार होती है। यानी ख़ारजी (वाह्य) हालात का दबाव कुकूल न करते हुए अपना ज़ेहन बनाना। जाहिरी चीजों से ग़ैर मुतअस्सिर रहकर सोचना। वक्ती कशिश की चीजों को नज़अदंज करके राय कायम करना। यह बिलाशुबह सब्र की मुश्किलतरीन किस्म है। मगर इसी मुश्किलतरीन इस्तेहान में पूरा उतरने के बाद आदमी को वह चीज मिलती है जिसे इल्म और हिक्मत (तत्वदर्शिता) कहा जाता है।

فَحَسَفْنَا لَهُ وَبَدَارِهِ الْأَرْضُ ۖ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ تَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ  
اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٥٣﴾ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ  
يَقُولُونَ وَيَكُنَّا اللَّهُ يَبْطِطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ  
لَوْ لَا أَنْ مِّنَ اللَّهِ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيَكُنَّا لَهُ لَا يَفْلَحُ الْكَافِرُونَ ﴿٥٤﴾

फिर हमने उसे और उसके घर को जमीन में धंसा दिया। फिर उसके लिए कोई जमाअत न उठी जो अल्लाह के मुकाबले में उसकी मदद करती। और न वह खुद ही अपने को बचा सका। और जो लोग कल उसके जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वे कहने लगे कि अफ़सोस, बेशक अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रिज्क कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी जमीन में धंसा देता। अफ़सोस, बेशक इंकार करने वाले फ़ाह (कल्याण, सफ़लता) नहीं पाएंगे। (81-82)

वाइबल के बयान के मुताबिक, हजरत मूसा ने क़रून के बुरे आमाल की वजह से उसके लिए बददुआ फ़रमाई और वह अपने साथियों और ख़जाने सहित जमीन में धंसा दिया गया। यह अल्लाह की तरफ से मुशाहिदाती (अवलोकनीय) सतह पर दिखाया गया कि खुदापरस्ती को छोड़कर दौलतपरस्ती इख़्तियार करने का आख़िरी अंजाम क्या होता है।

दुनिया का रिज्क दरअसल इस्तेहान का सामान है। यह हर आदमी को खुदा के फ़ैसले के तहत कम या ज्यादा दिया जाता है। आदमी को चाहिए कि रिज्क कम मिले तो सब्र करे। और अगर रिज्क ज्यादा मिले तो शुक्र करे। यही किसी इंसान के लिए नज़ात और कामयाबी का वाहिद रास्ता है।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا  
فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٥٥﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّمَّا وَمَنْ جَاءَ  
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٥٦﴾

सूरह-28. अल-असस

1073

पारा 20

यह आखिरत का घर हम उन लोगों को देंगे जो जमीन में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फसाद करना। और आखिरी अंजाम डरने वालों के लिए है। जो शस्त्र नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है और जो शस्त्र बुराई लेकर आएगा तो जो लोग बुराई करते हैं उन्हें वही मिलेगा जो उन्होंने किया। (83-84)

जन्नत की आबादी में बसने के काबिल वे लोग हैं जिनके सीने अपनी बड़ाई के एहसास से खाली हों। जो खुदा की बड़ाई को इस तरह पाएं कि अपनी तरफ उन्हें छोटाई के सिवा और कुछ नजर न आए।

फसाद यह है कि आदमी खुदा की स्कीम से मुवाफिक न करे। वह खुदा की दुनिया में खुदा की मर्जी के खिलाफ चलने लगे। जो लोग किन्न (बड़ाई) से खाली हो जाएं वे लाजिमी तौर पर फसाद से भी खाली हो जाते हैं। और जिन लोगों के अंदर ये आला औसाफ (सद्गुण) पैदा हो जाएं वही वे लोग हैं जो खुदा के अबदी बागों में बसाए जाएंगे।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ۚ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

वेशक जिसने तुम पर कुरआन को फर्ज किया है वह तुम्हें एक अच्छे अंजाम तक पहुंचा कर रहेगा। कहो कि मेरा रब खूब जानता है कि कौन हिदायत लेकर आया है और कौन खुली हुई गुमराही में है। और तुम्हें यह उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी। मगर तुम्हारे रब की महरबानी से। पस तुम मुंकिरों के मददगार न बनो। और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न दें जबकि वे तुम्हारी तरफ उतारी जा चुकी हैं। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ और मुश्रिकों में से न बनो। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। हर चीज हलाक (विनष्ट) होने वाली है सिवा उसकी जात के। फैसला उसी के लिए है और तुम लोग उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (85-88)

पैगम्बर का मामला हर एतबार से खुदाई मामला होता है। उसे पैगम्बरी किसी तलब के

पारा 20

1074

सूरह-29. अन-अनकबूत

बगैर यकतरफा तौर पर खुदा की तरफ से दी जाती है। वह अपने पूरे वजूद के साथ हक पर कायम होता है। वह मामूर (नियुक्त) होता है कि खालिस बेआमेज सदाकत (विशुद्ध सच्चाई) का एलान करे, चाहे वह लोगों को कितना ही नागवार हो। उसके लिए मुकद्दर होता है कि वह लाजिमी तौर पर अपनी मल्लूबा मंजिल तक पहुंचे और कोई रुकावट उसके लिए रुकावट न बनने पाए।

यही मामला पैगम्बर के बाद पैगम्बर की पैरवी में उठने वाले दाआ का होता है। वह जिस हद तक पैगम्बर की मुशाबिहत (समानता) करे उसी कदर वह खुदा के उन वादों का मुस्तहिक होता चला जाएगा जो उसने अपने पैगम्बरों से अपनी किताब में किए हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ۝ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ۝ أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ۚ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

आयतें-69

सूरह-29. अल-अनकबूत

रुकूअ-7

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। क्या लोग यह समझते हैं कि वे महज यह कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन्हें जांचा न जाएगा। और हमने उन लोगों को जांचा है जो इनसे पहले थे, पस अल्लाह उन लोगों को जानकर रहेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी जरूर मालूम करेगा। (1-3)

आदमी के मोमिन व मुस्लिम होने का फैसला सामान्य हालात में किए जाने वाले अमल पर नहीं होता। बल्कि उस अमल पर होता है जो आदमी गैर मामूली हालात में करता है। ये गैर मामूली हालात वे गैर मामूली मवाकेअ (अवसर) हैं जबकि यह खुल जाता है कि आदमी हकीकत में वह है या नहीं जिसका दावा वह अपने जाहिरी अमल से कर रहा है। जो लोग गैर मामूली हालात में ईमान व इस्लाम पर कायम रहने का सबूत दें वही खुदा के नजदीक हकीकी मअनों में मोमिन व मुस्लिम क़ार पाते हैं।

जांच में पूरा उतरना, बाअल्फाज दीगर, कुर्बानी की सतह पर ईमान व इस्लाम वाला बनना है। यानी जब आम लोग इंकार कर देते हैं उस वक्त तस्दीक करना। जब लोग शक करते हैं उस वक्त यकीन कर लेना। जब अपनी अना (अहंकार) को कुचलने की कीमत पर मोमिन बनना हो उस वक्त मोमिन बन जाना। जब न मान कर कुछ बिगड़ने वाला न हो उस वक्त मान लेना। जब हाथ रोकने के तकजे हों उस वक्त ख़ुर्व करना। जब फ़ार के हालात

सूरह-29. अन-अनकबूत

1075

पारा 20

हैं उस वक्त जमने का सुबूत देना। जब अपने आपको बचाने का वक्त हो उस वक्त अपने आपको हवाले कर देना। जब सरकशी का मौका हो उस वक्त सरे तस्लीमख़म कर देना। जब सब कुछ लुटा कर साथ देना हो उस वक्त साथ देना। ऐसे ग़ैर मामूली मौकों पर अंदर वाला इंसान बाहर आ जाता है। इसके बाद किसी के लिए यह मौका नहीं रहता कि वह फर्जी अल्फ़ज बोलकर अपने को वह ज़हिर करे जो कि हकीकत में वह नहीं है।

أَمْرُ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ④ مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑤ وَمَنْ جَاهَدْ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑥ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑦

क्या जो लोग बुराइयां कर रहे हैं वे समझते हैं कि वे हमसे बच जाएंगे। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। जो शख्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है तो अल्लाह का वादा जरूर आने वाला है। और वह सुनने वाला है, जानने वाला है। और जो शख्स मेहनत करे तो वह अपने ही लिए मेहनत करता है। बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज (निस्पृह) है। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया तो हम उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला देंगे। (4-7)

मोमिन बनना अक्सर हालात में जमाने के खिलाफ चलने के हममअना होता है। यह अकाबिरपरस्ती (व्यक्ति-पूजा) के माहौल में खुदापरस्त बनना है। ख़्वाहिश को ऊंचा मकाम देने के माहौल में उसूल को ऊंचा मकाम देना है। दुनियावी मफ़ाद के लिए जीने के माहौल में आखिरत के मफ़ाद के लिए जीने का हौसला करना है।

इस तरह की जिंदगी के लिए सख़्त मुजाहिदा (संघर्षशीलता) दरकार है। और इस सख़्त मुजाहिदे पर वही लोग कायम रह रह सकते हैं जो खुदा पर कामिल यकीन रखते हों। जो खुदा की तरफ से मिलने वाले इनाम ही को अपनी उम्मीदों का अस्त मर्कज बनाए हुए हों।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَنْتُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑧ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ⑨

पारा 20

1076

सूरह-29. अन-अनकबूत

और हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करे। और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज को मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे कोई इल्म नहीं तो उनकी इताअत (आज्ञापालन) न कर। तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते थे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए तो हम उन्हें नेक बंदों में दाख़िल करेंगे। (8-9)

इंसान पर तमाम मज़बूक़त में सबसे ज्यादा जिसका हक़ है वह उसके मां-बाप हैं। मगर हर चीज की एक हद होती है, इसी तरह मां-बाप के हुक्म की भी एक हद है। और हदीस के अल्फ़ज में वह हद यह है कि ख़लिक की नाफ़रमानी में किसी मज़बूक़ की इताअत नहीं।

मां-बाप के हुक्म उसी वक्त तक कबिले लिहज़ हैं जब तक वे खुदा के हुक्म से न टकराएं। मां-बाप का हुक्म जब खुदा के हुक्म से टकराने लगे तो उस वक्त मां-बाप का हुक्म न मानना उतना ही जरूरी हो जाएगा जितना आम हालात में मां-बाप का हुक्म मानना जरूरी होता है। इस्लाम में मां-बाप के हुक्म से मुराद मां-बाप की ख़िदमत है न कि मां-बाप की इबादत।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِّنَ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ⑩ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ⑪ وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُتَفَقِّهِينَ ⑫

और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम अल्लाह पर ईमान लाए। फिर जब अल्लाह की राह में उसे सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह के अजाब की तरह समझ लेता है। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से कोई मदद आ जाए तो वे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर नहीं जो लोगों के दिलों में है। और अल्लाह जरूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और वह ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़ि़न (पाखंडियों) को। (10-11)

एक शख्स अपने को मोमिन कहे। मगर उसका हाल यह हो कि जब मोमिन बनने में फ़ायदा हो तो वह बढ़-चढ़कर अपने मोमिन होने का इज़हार करे। मगर जब मोमिन बनने में दुनियावी नुक़सान नज़र आए तो वह फ़ौरन वापस जाने लगे। ऐसा आदमी क़ुरआन की इस्तिलाह (शब्दावली) में मुनाफ़िक़ है। ये वे लोग हैं जो बजाहिर मोमिन थे मगर वे अपने ईमान की कीमत देने के लिए तैयार नहीं हुए। वे ऐन उसी मक़ाम पर नाकाम हो गए जहां उन्हें सबसे ज्यादा कामयाबी का सुबूत देना चाहिए था।

सूरह-29. अन-अनकबूत

1077

पारा 20

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا  
هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ<sup>①</sup> وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ  
وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ<sup>②</sup> وَيَسْأَلُونَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ<sup>③</sup>

और मुंकिर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम हमारे रास्ते पर चलो और हम तुम्हारे गुनाहों को उठा लेंगे। और वे उनके गुनाहों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। बेशक वे झूठे हैं। और वे अपने बोझ उठाएंगे, और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी। और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं कियामत के दिन उसके बारे में उनसे पूछ होगी। (12-13)

इफ्तारा (झूठ गढ़ना) यह है कि आदमी खुद एक बात कहे और उसे खुदा की तरफ मंसूब कर दे। हर क्रिम की बिदात (कुरीतियाँ) और गलत ताबीरात इसमें दाखिल हैं। इस इफ्तारा की एक सूरत यह है कि इंकार करने वाले बड़े अपने छोटों से यह कहें कि तुम हमारे रास्ते पर चलते रहे, अगर खुदा के यहां इस पर पूछा गया तो हम इसके जिम्मेदार हैं। खुदा ने किसी को इस क्रिम का हक नहीं दिया है इसलिए ऐसी बात कहना खुदा पर झूठ बांधना है।

आदमी बहुत सी बातें सिर्फ कहने के लिए कह देता है। अगर वह उसके अंजाम को देख ले तो वह कभी ऐसे अल्फाज अपने मुंह से न निकाले। चुनांचे ये लोग जब कियामत की हौलनाकी को देखेंगे तो उस वक्त उनका हाल उससे बिल्कुल मुख्तलिफ होगा जो आज की दुनिया में उनका नजर आ रहा है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا<sup>①</sup>  
فَاَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ<sup>②</sup> فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ<sup>③</sup> وَ  
جَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ<sup>④</sup>

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा तो वह उनके अंदर पचास साल कम एक हजार साल रहा। फिर उन्हें तूफान ने पकड़ लिया और वे जालिम थे। फिर हमने नूह को और कशती वालों को बचा लिया। और हमने इस वाक्य को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (14-15)

हजरत नूह की उम्र साढ़े नौ सौ साल थी। नुबुव्वत से पहले भी आप एक सालह (नेक) इंसान थे और शरीअते आदम पर कायम थे। नुबुव्वत मिलने के बाद आप बाकायदा खुदा के दाजी बनकर अपनी कौम को डराते रहे। मगर सैंकड़ों साल की मेहनत के बावजूद कौम न

पारा 20

1078

सूरह-29. अन-अनकबूत

मानी। आखिरकार चन्द इस्लाहयाफता (ईमान वाले) अफ़ाद कोछेझर पूरी कैम एफ़ अजिम तूमन मेरफ़कर दी गई।

टर्की और रूस की सरहद पर मशरिकी अनातूलिया के पहाड़ी सिलसिले में एक ऊंची चोटी है जिसे अरारात (Ararat) कहा जाता है। इसकी बुलन्दी पांच हजार मीटर से ज्यादा है। इस पहाड़ के ऊपर से उड़ने वाले जहाजों का बयान है कि उन्होंने अरारात की बर्फ से ढकी हुई चोटी पर एक कशती जैसी चीज देखी है। चुनांचे उस कशती तक पहुंचने की कोशिशें जारी हैं। अहले इल्म का ख़्याल है कि यह वही चीज है जिसे मजहबी रिवायात में कशती नूह कहा जाता है।

अगर यह इत्तिला सही है तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने हजरत नूह की कशती को आज भी बाकी रखा है ताकि वह लोगों के लिए इस बात की निशानी हो कि खुदा के तूफान से बचने के लिए आदमी को 'पैगम्बर की कशती' दरकार है। कोई दूसरी चीज आदमी को खुदा के तूफान से बचाने वाली साबित नहीं हो सकती।

وَأَبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ  
تَعْلَمُونَ<sup>①</sup> إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ  
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَسْئَلُونَ لَكُمْ مِنْكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ  
وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ<sup>②</sup> وَإِنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّنْ  
قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ<sup>③</sup>

और इब्राहीम को जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज बुतों को पूजते हो और तुम झूठी बातें गढ़ते हो। अल्लाह के सिवा तुम जिनकी इबादत करते हो वे तुम्हें रिक्क देने का इस्तियार नहीं रखते। पस तुम अल्लाह के पास रिक्क तलाश करो और उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो। उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत सी कौम झुठला चुकी हैं। और रसूल पर साफ-साफ पहुंचा देने के सिवा कोई जिम्मेदारी नहीं। (16-18)

एक खुदा के सिवा जिसे भी आदमी अपने आला जब्बात का मर्कज बनाता है वह एक झूठ होता है। क्योंकि वह ग़ैर खुदा में खुदाई औसाफ को फर्ज करता है। वह बरतर सिफ़त जो सिर्फ खुदा के लिए ख़ास हैं उन्हें आदमी ग़ैर खुदा में फर्ज करता है, इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह किसी ग़ैर खुदा का परस्तार बने।

कदीम मुश्काना दौर में इंसान इस क्रिम की सिफ़त बुतों में फर्ज करता था, आज का



सूरह-29. अन-अनकबूत

1079

पारा 20

इंसान भी यही कर रहा है। अलबत्ता आज के इंसान के बुतों के नाम उनसे मुख़लिफ़ हैं जो क़दीम मुस्रिकों के हुआ करते थे। क़दीम व ज़दीद का फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि क़दीम इंसान अगर खेत की पैदावार को किसी मफ़रूजा देवता की महरबानी समझता था तो आज का इंसान इसके लिए ये अल्फ़ाज़ बोलता है हमारा ग्रीन रेवॉल्यूशन हमारी ऐग्रीकल्चर साइंस का करिश्मा है।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحُمُ مَنْ يَشَاءُ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ۝ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَكْسِبُونَ لَكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह ख़ल्क (सृष्टि) को शुरू करता है, फिर वह उसे दोहराएगा। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। कहो कि ज़मीन में चलो फिर देखो कि अल्लाह ने किस तरह ख़ल्क को शुरू किया, फिर वह उसे दुबारा उठाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। वह जिसे चाहेगा अज़ाब देगा और जिस पर चाहेगा रहम करेगा। और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। और तुम न ज़मीन में आजिज़ करने वाले हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इन्कार किया तो वही मेरी रहमत से महरूम हुए और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (19-23)

इंसान नहीं था, इसके बाद वह हो जाता है। फिर जो तख़लीक़ एक बार मुमकिन हो वह दूसरी बार क्यों मुमकिन न होगी। शाह अब्दुल क़ादिर देहलवी ने इस मौक़े पर यह बामअना नोट लिखा है : 'शुरू तो देखते हो, दोहराना इसी से समझ लो।'

हर आदमी अपनी जात में तख़लीक़े अब्दल (प्रथम सृजन) की एक मिसाल है। अगर आदमी को मज़ीद मिसालें दरकार हैं तो वह ख़ुदा की वसीअ दुनिया में मुतालआ और मुशाहिदा करे। वह देखेगा कि पूरी दुनिया इसी वाक्ये का ज़िंदा नमूना है। ख़ुदा ने अपनी दुनिया में ये नमूने इसलिए कायम किए कि इंसान तख़लीक़े सानी (दूसरे सृजन) के मामले को समझे और फिर वह अमल करे जो अगले हयात के मरहले में उसके काम आने वाला हो।

पारा 20

1080

सूरह-29. अन-अनकबूत

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ ۚ وَلَيَعْنُ بَعْضُكُم بَعْضًا ۚ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُحْشِرِينَ ۚ فَامِنْ لَهُ لُوطٌ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ الْبُرْهَانَةَ وَالْكِتَابَ وَاتَيْنَاهُ أُجْرَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝

फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा कि उसे कत्ल कर दो या उसे जला दो। तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए। और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के सिवा जो बुत बनाए हैं, बस वह तुम्हारे आपसी दुनिया के तअल्लुकात की वजह से है, फिर कियामत के दिन तुम में से हर एक दूसरे का इन्कार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा मददगार न होगा। फिर लूत ने उसे माना और कहा कि मैं अपने ख की तरफ़ हिज़रत करता हूं। बेशक वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और हमने अता किए उसे इस्हाक और याकूब और उसकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब रख दी। और हमने दुनिया में उसे अज़्र (प्रतिफल) अता किया और आख़िरत में यकीनन वह सालिहीन में से होगा। (24-27)

जो चीज़ किसी मआशिये में क़ैमी ख़ाज की हैसियत हासिल कर ले वह उसके हर फ़र्द की ज़रूरत बन जाती है। इसी की बुनियाद पर आपसी तअल्लुकात पैदा होते हैं। इसी से हर किस्म के मफ़ादात वाबस्ता होते हैं। इसी के एतबार से लोगों के दर्मियान किसी आदमी की कीमत मुफ़र्र होती है। क़दीम ज़माने में शिर्क की हैसियत इसी किस्म के क़ैमी ख़ाज की हो गई थी।

हज़रत इब्राहीम ने इराक के लोगों को बताया कि तुम जिस बुतपरस्ती को पकड़े हुए हो वह महज़ एक क़ैमी ख़ाज है न कि कोई वाकई सदाक़त। तुम्हारी मौजूदा ज़िंदगी के ख़त्म होते ही उसकी सारी अहमियत ख़त्म हो जाएगी। मगर सिर्फ़ एक आपके भतीजे लूत थे जिन्होंने आपका साथ दिया। कौम आपकी इतनी दुश्मन हुई कि उसने आपको आग में डाल दिया। ताहम अल्लाह ने आपको बचा लिया। आपको न सिर्फ़ आख़िरत का आला इनाम मिला

सूरह-29. अन-अनकबूत

1081

पारा 20

बल्कि आपको ऐसी सालाह औलाद दी गई जिसके अंदर चार हजार साल से नुबुव्वत का सिलसिला जारी है। आपके बेटे इस्हाक पैगम्बर थे। फिर उनके बेटे याकूब पैगम्बर हुए और इसके बाद हजरत ईसा तक मुसलसल इसी खानदान में पैगम्बरी का सिलसिला जारी रहा। हजरत इब्राहीम के एक और बेटे मदयान की नस्ल में हजरत शूऐब अलैहिस्सलाम पैदा हुए। इसी तरह आपके बेटे इस्माईल खुद पैगम्बर थे और इन्हीं की नस्ल में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए जिनकी पैगम्बरी कियामत तक जारी है।

हजरत इब्राहीम की इस तारीख में बातिलपरस्तों के लिए भी नसीहत है और उन लोगों के लिए भी रोशनी है जो हक की बुनियाद पर अपने आपको खड़ा करें।

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّمَا كُنْتُ نَذِيرٌ لَّكُم مَّا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٠﴾ إِنَّمَا كُنْتُ نَذِيرٌ لِّلرِّجَالِ وَتَقَطُّعُونَ السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيَكُمُ الْمُنْكَرَ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢١﴾ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٢٢﴾

और लूत को, जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया। क्या तुम मर्दों के पास जाते हो और राह मारते हो। और अपनी मजलिस में बुरा काम करते हो। पस उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उसने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का अजाब लाओ। लूत ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुफ़्फ़िद (उपद्रवी) लोगों के मुक़्क़बले में मेरी मदद फ़रमा। (28-30)

हजरत लूत बाबिल को छोड़कर उर्दुन के इलाके में आ गए थे। अल्लाह तआला ने उन्हें पैगम्बर बनाया और उन्हें कौमे लूत की इस्लाह के काम पर मुक़र्र किया। यह कौम बहरे मुर्दार (Dead Sea) के करीब सदूम के इलाके में रहती थी और हमजिंसी (समलैंगिकता) की ग़ैर फ़ितरी आदत में मुब्तिला थी। इसी निस्वत से दूसरी बुराइयां भी उनके अंदर आम हो चुकी थीं। मगर उन्होंने इस्लाह कुबूल न की।

‘अल्लाह का अजाब लाओ’ का अस्तल्ल रुख़ हजरत लूत की तरफ़ था न कि अल्लाह की तरफ़। उन्हीं हज़त लूत को इतना हमीर (तुच्छ) समझा कि उनके नजदीक यह नामुमकिन था कि उनकी बात न मानने से वे खुदा की पकड़ में आ जाएंगे। चुनांचे बतौर मजाक उन्होंने कहा कि अगर तुम वाकई सच्चे हो तो हमारे ऊपर खुदा का अजाब लाओ।

पारा 20

1082

सूरह-29. अन-अनकबूत

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٢٣﴾ قَالَ إِنْ فِيهَا لَوْطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا لَنَنْجِيَنَّكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَاءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجِيُونَ ﴿٢٥﴾ إِنَّا مُنْجِيُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٧﴾

और जब हमारे भेजे हुए इब्राहीम के पास बशारत लेकर पहुंचे, उन्होंने कहा कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं। बेशक इसके लोग सज़्ज जालिम हैं। इब्राहीम ने कहा कि इसमें तो लूत भी है। उन्होंने कहा कि हम ख़ूब जानते हैं कि वहां कौन है। हम उसे और उसके घर वालों को बचा लेंगे मगर उसकी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। फिर जब हमारे भेजे हुए लूत के पास आए तो वह उनसे परेशान हुआ और दिल तंग हुआ। और उन्होंने कहा कि तुम न डरो और न ग़म करो। हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे मगर तुम्हारी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। हम इस बस्ती के बाशिंदों पर एक आसमानी अजाब उनकी बदकारियों की सजा में नाज़िल करने वाले हैं। और हमने उस बस्ती के कुछ निशान रहने दिए हैं उन लोगों की इबरत (सीख) के लिए जो अक्ल रखते हैं। (31-35)

कौमे लूत का इलाक़ा (सदूम, अमूर) शदीद जलजले से तबाह कर दिया गया। वह सरसब्ज व शादाब वादी जहां चार हजार साल पहले यह कौम आबादी थी, अब वहां बहरे मुर्दार का कसीफ़ (मलिन) पानी फैला हुआ है।

क़ुरआन के बयान के मुताबिक़ तबाही का यह वाक्या ख़ुदा के फ़रिश्तोंके ज़रिए जुह्र में आया। मगर भूगोल और पुरातत्व विशेषज्ञों का कहना है कि इस इलाके में जब अरजी अमल (भू-प्रक्रिया) से पहाड़ उभरे तो इसी के साथ जमीन के एक हिस्से में ढाल (Escarpment) पैदा हो गया। बाद को इस ढाल के जुनूबी (दक्षिणी) हिस्से में समुद्र का पानी भर गया। इस तरह वह ख़ुशक हिस्सा पानी के नीचे आ गया जिसे अब बहरे मुर्दार का कम गहरा जुनूबी किनारा कहा जाता है। क़ुरआन में जो चीज़ ख़ुदाई निशान है वह ग़ैर क़ुरआनी मुशाहिदे (अवलोकन) में सिर्फ़ एक तबीई वाक्या (भौतिक घटना) नज़र आती है।

सूरह-29. अन-अनकबूत

1083

पारा 20

माहिरीन का ख्याल है कि इस बर्बादशुदा बस्ती के खंडहर अब भी समुद्र में पानी के नीचे पाए जाते हैं। बिलाशुबह इसमें बहुत बड़ी इब्रत (सीख) है। मगर यह इब्रत सिर्फ उन लोगों के लिए है जो बातों को उसकी गहराई के साथ समझने की कोशिश करें।

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ فَقَالَ يَقَوْمُ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَ  
لَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ ۖ فَآخَذَهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي  
دَارِهِمْ جُثَيِّينَ ۖ

और मदन की तरफ उनके भाई शुऐब को। पस उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। और आखिरत के दिन की उम्मीद रखो और जमीन में फसाद फैलाने वाले न बनो। तो उन्होंने उसे झुठला दिया। पस जलजले ने उन्हें आ पकड़ा। फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। (36-37)

हजरत शुऐब जिस कौम में आए वह एक तिजारत पेशा कौम थी। वे लोग माल की हिस्से में इतना बड़े कि धोखा और फरेब के जरिए माल कमाने लगे। यही उनका जमीन में फसाद करना था। जाइज तिजारत हुसूले मआश (जीविका) का इस्लाही तरीका है और धोखा और लूट खसोट हुसूले मआश का मुफ़सिदाना तरीका।

हजरत शुऐब ने कौम से कहा कि तुम दुनिया के पीछे आखिरत से गाफिल न हो जाओ। तुम लोग उस तरीके पर काम करो जिससे तुम आखिरत में अपने लिए अच्छे अंजाम की उम्मीद कर सको। मगर पैगम्बर की सारी कोशिशों के बावजूद कौम न मानी। यहां तक कि वह खुदा के कानून के मुताबिक हलाक कर दी गई। जिन घरों को उन्होंने अपने लिए जिंदगी का घर समझा था वह उनके लिए मौत का घर बन गया।

وَعَادًا وَشُعُودًا ۖ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَّسَلِكِهِمْ ۖ وَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ  
أَعْمَاءُ ۖ فَصَدَّكُمْ عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۖ

और आद और समूद को, और तुम पर हाल खुल चुका है उनके घरों से। और उनके आमांल को शैतान ने उनके लिए खुशनुमा बना दिया। फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया और वे होशियार लोग थे। (38)

आद और समूद को भी खुदा के अजाब ने पकड़ लिया। वे अपने दुनिया के मामलात में बहुत होशियार थे मगर वे आखिरत के मामले में बिल्कुल नादान निकले। उन्होंने पहाड़ों के जरिए घर बनाने के राज को जान लिया। मगर वे पैगम्बर के जरिए जिंदगी बनाने का राज न जान सके। इसकी वजह वह चीज थी जिसे तजर्बे आमांल कहा गया है। शैतान ने उन्हें

पारा 20

1084

सूरह-29. अन-अनकबूत

इस धोखे में रखा कि दुनिया की तामीर ही सारी तामीर है। अगर दुनिया को बना लिया तो इसके बाद कोई मसला मसला नहीं। मगर यह फरेब उनके काम न आया और न इस किस्म का फरेब आइंदा किसी के कुछ काम आने वाला है।

जुनुबी (दक्षिणी) अरब का इलाका जो अब यमन, अहक्फ और हज़्रमौत के नाम से जाना जाता है यही कद्रीम जमाने में आद का इलाका था। इसी तरह हिजाज के शिमाली (उत्तरी) हिस्से में राबिग से अकबह तक और मदीना और खैबर से तेमा और तबूक तक का इलाका वह था जिसमें समूद की आबादियां पाई जाती थीं।

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا فِي  
الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَاقِقِينَ ۖ فَكَلَّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا  
عَلَيْهِ حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّبْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا لَهُ  
الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ غَرَقْنَا ۖ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ  
يُظْلِمُونَ ۖ

और कारून को और फिरऔन को और हामान को और मूसा उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने जमीन में घमंड किया और वे हमसे भाग जाने वाले न थे। पस हमने हर एक को उसके गुनाह में पकड़ा। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी। और उनमें से कुछ को कड़क ने आ पकड़ा। और उनमें से कुछ को हमने जमीन में धंसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने गर्क कर दिया। और अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे खुद अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। (39-40)

अंबिया की मुखातब कौमों ने जब अपने नबी का इंकार किया तो उन्हें जमीनी और आसमानी अजाब से हलाक कर दिया गया। कौमे लूट पर हासिब (पत्थर बरसाने वाली तूफानी हवा) का अजाब आया। आद और समूद और असहावे मदन पर सइहह (बिजली और कड़क) का अजाब आया। कारून के लिए रूस्फ (जमीन में धंसा देने) का अजाब आया। फिरऔन और हामान के लिए गर्क (समुद्र के पानी में डुबा देने) का अजाब आया।

इन तमाम अजाबों का मुशतरक सबब लोगों का घमंड था। यानी हक की दावत को इसलिए न मानना कि उसे मानने से अपनी बड़ाई खत्म हो जाएगी।

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۖ اتَّخَذَتْ بِئْتًا  
وَلَئِنْ أَوْهَنَ الْبُيُوتُ لَبَيَّتُ الْعَنْكَبُوتُ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ  
سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ بِذُنُوبِهِمْ ۖ

सूरह-29. अन-अनकबूत

1085

पारा 21

مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ۝ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज बनाए हैं उनकी मिसाल मकड़ी की सी है। उसने एक घर बनाया। और बेशक तमाम घरों से ज्यादा कमजोर मकड़ी का घर है। काश कि लोग जानते। बेशक अल्लाह जानता है उन चीजों को जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं। और वह जबरदस्त है, हिम्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और ये मिसालें हैं जिन्हें हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और इन्हें वही लोग समझते हैं जो इल्म वाले हैं। अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बरहक पैदा किया है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (41-44)

यहां बताया गया है कि 'मकड़ी' के घर को देखकर जो शख्स हकीकत का सबक पा ले वही दरअसल आलिम है। इससे मालूम होता है कि खुदा के नजदीक सच्चे इल्म वाले कौन हैं। ये वे लोग नहीं हैं जो किताबी बहसों के माहिर बने हुए हों। बल्कि ये वे लोग हैं जो खुदा की दुनिया में फैली हुई कुदरती निशानियों से नसीहत की गिजा ले सकें। दुनिया के छोटे-छोटे वाक्यात जिनके जेहन में दाखिल होकर बड़े-बड़े सबक में तब्दील हो जाएं। यही इल्म जब आखिरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) तक पहुंच जाए तो इसी का दूसरा नाम ईमान है।

أَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ۝

तुम उस किताब को पढ़ो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और नमाज कयम करो। बेशक नमाज बेहयाई से और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज है। ओर अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (45)

'नमाज बुराई से रोकती है' का मतलब यह है कि कैफियते नमाज बुराई से रोकती है। अगर आदमी वाकेअतन खुदा के आगे रुकूअ और सज्दा करने वाला हो तो उसके अंदर जिम्मेदारी और तवाजेअ (विनम्रता) का एहसास पैदा हो जाता है। और जिम्मेदारी और तवाजेअ के एहसास से जो किरदार उभरता है वह यही होता है कि आदमी वह करता है जो उसे करना चाहिए और वह नहीं करता जो उसे नहीं करना चाहिए।

जिक्र से मुराद खुदा की याद है। जब आदमी को खुदा की कामिल मअरफत हासिल होती है। जब वह पूरी तरह खुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाता है तो इसका नतीजा यह होता

पारा 21

1086

सूरह-29. अन-अनकबूत

है कि उसके ऊपर खुदा का तसव्वुर छा जाता है। उसके अंदर खुदा की याद का चशमा बह पड़ता है। इस रूहानी दर्जे को पहुंच कर आदमी की जबान से खुदा के लिए जो आला कलिमात निकलते हैं उन्हीं का नाम जिक्र है। यह जिक्र बिलाशुबह आलातरीन इबादत है।

'वही' की तिलावत से मुराद 'वही' की तब्लीग है। यानी लोगों को कुरआन सुनाना और उसके जरिए से उन्हें खुदा की मर्जी से बाखबर करना। दावत व तब्लीग का यह काम बेहद सब्र आजमा काम है। इसमें अपने मुखलिफ़ीन का ख़ैरब्राह बनना पड़ता है। इसमें फरीके सानी (प्रतिपक्ष) की ज्यादातियों को यक़तरफ़ तौर पर नज़अंदाज़ करना पड़ता है। इसमें अपने मुखातबीन को मदऊ (जिन्हें दावत दी जाए) की नजर से देखना पड़ता है चाहे वे खुद दाओ (आह्वानकर्ता) के लिए रकीब व हरीफ (विरोधी, प्रतिपक्षी) बने हुए हों।

नमाज जिस तरह आम जिंदगी में एक मोमिन को बुराई से रोकती है, उसी तरह वह दाओ को ग़ैर दाअियाना रविश से बचाती है। खुदा का दाओ वही शख्स बन सकता है जिसके सीने में खुदा की याद समाई हुई हो, जो अपने पूरे वजूद के साथ खुदा के आगे झुकने वाला बन गया हो।

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا الْمَنَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِنَّا وَالْهُنَاءِ وَالْهُكْمِ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَمُسْلِمُونَ ۝

और तुम अहले किताब से बहस न करो मगर उस तरीके पर जो बेहतर है, मगर जो उनमें बेइसाफ़ हैं। और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज पर जो हमारी तरफ़ भेजी गई है। और उस पर जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई है। हमारा माबूद (पूज्य) और तुम्हारा माबूद एक है और हम उसी की फरमांबरदारी करने वाले हैं। (46)

दाओ के लिए सही तरीका यह है कि जो लोग बहस करें और उलझें उनसे वह सलाम करके जुदा हो जाए। और जो लोग संजीदा हों उन पर वह अग्रे हक़ को वाजेह करने की कोशिश करे। साथ ही, यह कि दावती कलाम को हकीमाना कलाम होना चाहिए। और हकीमाना कलाम की एक ख़ास पहचान यह है कि उसमें मदऊ की नफिसयात का पूरा लिहाज किया जाता है। दाओ अपनी बात को ऐसे उस्लूब (शैली) से कहता है कि मदऊ उसे अपने दिल की बात समझे न कि ग़ैर की बात समझ कर उससे भयभीत हो जाए। दाअियाना कलाम नासिहाना कलाम (उपदेश) होता है न कि मुनाजिराना कलाम (शास्त्राधी)।

وَكَذَلِكَ أُنْزِلَ إِلَيْكَ الْكِتَابُ ۖ وَالَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۖ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ۝



مَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكُمْ إِذَا لَأَرْتَابَ  
الْمُبْطِلُونَ ﴿٥٠﴾ بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَ  
مَا يُحَدِّثُ بِالْبَيِّنَاتِ إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٥١﴾

और इसी तरह हमने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। तो जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस पर ईमान लाते हैं। और इन लोगों में से भी कुछ ईमान लाते हैं। और हमारी आयतों का इंकार सिर्फ मुंकिर ही करते हैं। और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते थे। ऐसी हालत में बातिलपरस्त (असत्यवादी) लोग श्रवण में पड़ते। बल्कि ये खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन्हें इल्म अता हुआ है। और हमारी आयतों का इंकार नहीं करते मगर वे जो जालिम हैं। (47-49)

लोगों में दो किस्म के अफ़राद होते हैं। एक वे जिन्हें पहले से सच्चाई का इल्म हासिल होता है। और दूसरे वे लोग जो बजाहिर सच्चाई का इल्म नहीं रखते। ताहम ये दूसरी किस्म के लोग भी फितरत की सतह पर सच्चाई से आशना (भिन्न) होते हैं। पहले, अगर हमिले किताब हैं तो दूसरे, हमिले फितरत।

अगर लोग फिलवाकअ संजीदा हों तो वे फौरन हक को पहचान लेंगे। एक गिरोह अगर उसे किताबे आसानी की सतह पर पहचान लेगा तो दूसरा गिरोह किताबे फितरत की सतह पर। हर एक को सच्चाई की बात अपने दिल की बात नजर आएगी। मगर अक्सर हालात में लोग तरह-तरह की नफिसयाती पेचीदगी में मुब्तिला हो जाते हैं। इसकी वजह से उनके अंदर इंकार का मिजाज आ जाता है। वे सच्चाई का इंकार ही करते रहते हैं, चाहे उसकी पुष्ट पर कितने ही कराइन जमा हों और उसके हक में कितने ही ज्यादा दलाइल दे दिए जाएं।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٢﴾ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ  
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٣﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيِّنًا وَ  
بَيِّنَتُكُمْ شَهِيدًا يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ  
وَكَفَرُوا بِاللَّهِ وَلِئِكَ هُمُ الْخَائِرُونَ ﴿٥٤﴾

और वे कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ से निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं। कहो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। क्या उनके लिए यह काफी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है।

बेशक इसमें रहमत और याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य) पर ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह का इंकार किया वही ख़सारे (घाटे) में रहने वाले हैं। (50-52)

जो लोग कहते थे कि पैगम्बरे इस्लाम को उस तरह की निशानियां क्यों नहीं दी गईं जैसी निशानियां मिसाल के तौर पर मूसा को दी गई थीं। फरमाया कि निशानियां अल्लाह के पास हैं। यानी निशानियों (मोजिजे) का तअल्लुक खुदा से है न कि पैगम्बर से। पैगम्बर की दावत का अस्ल इहिसार दलाइल पर होता है। पैगम्बर हमेशा दलाइल के जोर पर अपनी दावत पेश करता है। अलबत्ता दूसरे मसालेह के तहत खुदा कभी किसी पैगम्बर को निशानी (मोजिजा) दे देता है और कभी नहीं देता।

ईमान एक शुकरी वाकया है। वही ईमान ईमान है जो दलील से मुतमइन होकर किसी बंदे के दिल में उभरा हो। जो शख्स दलील की रोशनी में जांच कर किसी चीज को माने वह हकपरस्त है और जो शख्स दूसरी गैर मुतअल्लिक बहसों निकाले वह बातिलपरस्त।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ وَ  
يَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٥﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ  
لَمُعِطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٦﴾ يَوْمَ يُغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ  
أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ دُوُّنُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٧﴾

और ये लोग तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और अगर एक वक्त मुकर्रर न होता तो उन पर अजाब आ जाता। और यकीनन वह उन पर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। वे तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। जिस दिन अजाब उन्हें ऊपर से ढांक लेगा और पांव के नीचे से भी, और कहेगा कि चखो उसे जो तुम करते थे। (53-55)

इंसान के आमाल ही उसकी जन्नत हैं और इंसान के आमाल ही उसकी दोजख़। एक शख्स जो इंकार और सरकशी का रवैया इख्तियार किए हुए हो, उसकी जिंदगी को अगर उसके मअनवी अंजाम के एतबार से देखना मुमकिन हो तो नजर आएगा कि उसके बुरे आमाल उसे अजाब बनकर घेरे हुए हैं। और सिर्फ इतनी सी देर है कि मौत आए और उसे उसकी बनाई हुई दुनिया में डाल दे।

इंसान की बहुत सी सरकशी सिर्फ अपनी हकीकत से बेख़बरी का नतीजा होती है। अगर उसकी यह बेख़बरी ख़त्म हो जाए तो अचानक वह बिल्कुल दूसरा इंसान बन जाएगा।

يُعَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْحَمَىٰ وَأَسْعَىٰ فَإِنِّي فَاغْبُدُونَ ۖ كُلُّ  
نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا  
الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَهُمْ مِنَ الْجَنَّاتِ عُرْفًا نَّجْوَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ  
خَالِدِينَ فِيهَا ۖ نِعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ ۖ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ  
يَتَوَكَّلُونَ ۖ وَكَأَيِّنْ مِنْ دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۗ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِنَّهَا  
لَكَنَّا ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ

ऐ मेरे बंदे जो ईमान लाए हो, बेशक मेरी जमीन वसीअ (विस्तृत) है तो तुम मेरी ही इबादत करो। हर जान को मौत का मजा चखना है। फिर तुम हमारी तरफ लौटाए जाओगे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन्हें हम जन्नत के बालाखानों (उच्च भवनों) में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। क्या ही अच्छा अज़्र है अमल करने वालों का। जिन्होंने सब्र किया और जो अपने खब पर भरोसा रखते हैं। और कितने जानवर हैं जो अपना रिस्क उठाए नहीं फिरते। अल्लाह उन्हें रिस्क देता है और तुम्हें भी। और वह सुनने वाला जानने वाला है। (56-60)

हिजरत एक एतबार से तरीकेकार की तब्दीली है। यह तब्दीली कभी मकामे अमल बदलने की सूरत में होती है, जैसे मक्का को छोड़कर मदीना जाना। कभी मैदाने अमल बदलने की सूरत में होती है, जैसे सुलह हुदैबिया के जरिए जंग के मैदान से हटकर दावत के मैदान में आना।

इन आयात में मक्का के अहले ईमान से कहा गया कि मक्का के लोग अगर तुम्हें सताते हैं तो तुम मक्का को छोड़कर दूसरे इलाके में चले जाओ और वहां अल्लाह की इबादत करो। इससे मालूम हुआ कि सब्र और तवक्कुल का मतलब इबादत पर जमना है न कि दुश्मन से टकराव पर जमना। अगर हर हाल में दुश्मन से टकराते रहना मक्सूद होता तो उनसे कहा जाता कि मुखालिफीन (विरोधियों) से लड़ते रहो और वहां से किसी हाल में कदम बाहर न निकालो।

وَلَيْنُ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَ سَحَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ  
لِيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ فَإِنِّي يُؤْفَكُونَ ۖ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ  
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۖ وَلَيْنُ سَأَلْتَهُمْ مَنْ

تَزَلَّ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَآخِيَاءُ الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لِيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ قُلِ  
الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۖ

और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने पैदा किया आसमानों और जमीन को, और मुसख़्खर किया सूरज को और चांद को, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां से फेर दिए जाते हैं। अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसका चाहता है रिस्क कुशादा कर देता है और जिसका चाहता है तंग कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उसने जमीन को जिंदा किया उसके मर जाने के बाद, तो जरूर वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहे कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है। बल्कि उनमें से अक्सर लोग नहीं समझते। (61-63)

जमीन व आसमान को पैदा करना इतना बड़ा वाक्या है कि एक क़दिर मुतलक (सर्वशक्तिमान) खुदा ही इसे अंजाम दे सकता है। सूरज और चांद की गर्दिश, बारिश का बरसना और जमीन से नबालात (पौध) का उगना ये सब इससे ज्यादा बड़े वाक्यात हैं कि कोई ग़ैर खुदा इन्हें वजूद में ला सके।

जो लोग किसी नौइयत के शिर्क में मुब्तिला हैं वे भी अपने मफरूजा (काल्पनिक) हस्तियों के बारे में यह अक़ीदा नहीं रखते कि वे इन अजीम वाक्यात को जहूर में लाए हैं। इसके बावजूद बहुत से लोग खुदा के सिवा दूसरों की इस उम्मीद में परस्तिश करते हैं कि वे उनका रिस्क बढ़ा दें। हालांकि जब हर किस्म के आला इस्त्रियारात सिर्फ खुदा को हासिल हैं तो दूसरा कौन है जो रिस्क की तक़सीम में असरअंदाज हो सके।

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ وَلَعِبٌ ۖ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ  
الْحَيَاةُ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۖ فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ  
الَّذِينَ هُ ۖ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۖ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ  
وَلِيَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۖ

और यह दुनिया की ज़िंदगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा। और आखिरत का घर ही अस्ल ज़िंदगी की जगह है, काश कि वे जानते। पस जब वे कश्ती में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नज़ात देकर खुशकी की तरफ ले जाता है तो वे फौन शिर्क करने

लगते हैं। ताकि हमने जो नेमत उन्हें दी है उसकी नाशुकी करें और चन्द दिन फायदा उठाएं। पस वे अनकरीब जान लेंगे। (64-66)

इंसान की गुमराही का अस्ल सबब यह है कि वह दुनिया की रैनकों और दुनिया के मसाइल में इतना गुम होता है कि इससे ऊपर उठकर सोच नहीं पाता। हकीकत को पाने के लिए अपने आपको जाहिर से ऊपर उठाना पड़ता है। बेशतर लोग अपने आपको जाहिर से उठा नहीं पाते इसलिए बेशतर लोग हकीकत को पाने वाले भी नहीं बनते।

दुनिया में आदमी को बार-बार ऐसे तजर्बात पेश आते रहते हैं जो उसे उसका इज्ज याद दिलाते हैं। उस वक्त उसके तमाम मस्कुई ख्यालात ख़ुम हो जाते हैं और हकीकती फ़ितरत वाला इंसान जाग उठता है। मगर जैसे ही हालात मोअतदिल (सहज) हुए वह दुबारा पहले की तरह ग़ाफ़िल और सरकश बन जाता है। इन्हीं नाजुक तजर्बात में से सफर का वह तजर्बा है जिसका जिक्र आयत में किया गया है।

आदमी को जानना चाहिए कि आजदी का यह मौअन्न उसे सिर्फ चन्द दिन की ज़िंगी तक हासिल है। मौत के बाद उसके सामने बिल्कुल दूसरी दुनिया होगी और बिल्कुल दूसरे मसाइल।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مَّا وَبَيْنَهُمَا يُخَافُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ<sup>٦٤</sup> وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ<sup>٦٥</sup> أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَشْوَى<sup>٦٦</sup> لِلْكَافِرِينَ<sup>٦٧</sup> وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَهُمْ صُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ<sup>٦٨</sup> الْمُحْسِنِينَ<sup>٦٩</sup>

क्या वे देखते नहीं कि हमने एक पुरअमन्न हरम बनाया। और उनके गिर्द व पेश (आस पास) लोग उचक लिए जाते हैं। तो क्या वे बातिल (असत्य) को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुकी करते हैं। और उस शख्स से बड़ा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या हक को झुठलाए जबकि वह उसके पास आ चुका। क्या मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग हमारी ख़ातिर मशक्कत उठाएंगे उन्हें हम अपने रास्ते दिखाएंगे। और यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है। (67-69)

मक्का का हरम अल्लाह तआला की एक अजीब नेमत है। अल्लाह ने लोगों के ऊपर उसका ऐसा रौब बिठा रखा है कि वहां पहुंच कर जालिम और सरकश भी अपना जुल्म और सरकशी भूल जाते हैं। हरम का यह तकद्दुस (पवित्रता) खुदा की क़ुदरत की एक निशानी

था। इसका तकाजा था कि लोगों के दिल खुदा के लिए झुक जाएं। मगर बातिलपरस्तों ने यह किया कि ग़ैर खुदा में खुदा के औसाफ फर्ज करके लोगों के जब्बाते परस्तिश को बिल्कुल ग़लत तौर पर उनकी तरफ फेर दिया। उनका मज़ीद जुल्म यह है कि अल्लाह के रसूल ने जब उन्हें नसीहत की कि इन मफरूजा (काल्पनिक) खुदाओं को छोड़ो और एक खुदा के आगे झुक जाओ तो वे रसूल के दुश्मन बन गए।

नाहकपरस्ती के माहौल में हकपरस्त बनना एक शदीद मुजाहिदे (संवर्षशीलता) का अमल है। इसमें मिली हुई चीज छिनती है। हासिलशुदा सुकून दरहम-बरहम हो जाता है। मगर इसी महरूम में एक अजीम याफ़्त (प्राप्ति) का राज छुपा हुआ है। और वह मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) और बसीरत (अन्तर्दृष्टि) है। ऐसे लोगों के लिए इंसानों के दरवाज बंद होते हैं। मगर उनके लिए खुदा के दरवाजे खुल जाते हैं। वे दुनिया से खोकर खुदा से पाने लगते हैं। वे माददी राहों से दूर होकर रब्बानी कैफ़ियात से करीब हो जाते हैं। जाहिदी चीजें उनसे ओझल होती हैं मगर मअनवी चीजें उन पर मुंकशिफ हो जाती हैं। उन पर वे गहरे भेद खुलने लगते हैं जिनकी बड़े-बड़े लोगों को खबर भी नहीं होती।

سُورَةُ الرُّومِ مَكِّيَّةٌ مِنْ مَكِّيَّةٍ سَبْعُ ثَمَانِينَ آيَةً وَفِيهَا ثَمَانُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ غُلِبَتِ الرُّومُ ۝ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلِبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ ۝ فِي بَضْعِ سِنِينَ ۝ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَفْقَرُ الْمُؤْمِنُونَ ۝ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ۝

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। रूमी पास के इलाके में मग़लूब (परास्त) हो गए, और वे अपनी मग़लूबियत के बाद अनकरीब ग़ालिब होंगे। चन्द वर्षों में। अल्लाह ही के हाथ में सब काम है, पहले भी और पीछे भी। और उस दिन ईमान वाले खुश होंगे, अल्लाह की मदद से। वह जिसकी चाहता है मदद करता है। और वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता। लेकिन अक्सर

लोग नहीं जानते। वे दुनिया की जिंदगी के सिर्फ जाहिर को जानते हैं, और वे आखिरत से बेखबर हैं। (1-7)

जुह्रे इस्लाम के वक्त दुनिया में दो बहुत बड़ी सल्तनतें थीं। एक मसीही रूमी सल्तनत। दूसरे मजूसी ईरानी सल्तनत। दोनों में हमेशा रकीबाना कशमकश जारी रहती थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के बाद 603 ई० का वाक्या है कि कुछ कमजोरियों से फायदा उठाकर ईरान ने रूमी सल्तनत पर हमला कर दिया। रूमियों को शिकस्त पर शिकस्त हुई। यहां तक कि 616 ई० तक यरोशलम सहित रूम की मशरिकी सल्तनत का बड़ा हिस्सा ईरानियों के कब्जे में चला गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबुव्वत 610 ई० में मिली और आपने मक्का में तौहीद की दावत का काम शुरू किया। इस लिहाज से यह ऐन वही जमाना था जबकि मक्का में तौहीद और शिर्क की कशमकश जारी थी। मक्का के मुशरिकीन ने सरहदी वाक्ये से फाल लेते हुए मुसलमानों से कहा कि हमारे मुशरिक भाइयों (मजूस) ने तुम्हारे अहले किताब भाइयों (मसीही) को शिकस्त दी है। इसी तरह हम भी तुम्हारा खात्मा कर देंगे।

उस वक्त कुरआन में हालात के सरासर खिलाफ यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) उतरी कि दस साल के अंदर रूमी दुबारा ईरानियों पर गालिब आ जाएंगे। रूमी इतिहासकार बताते हैं कि इसके जल्द ही बाद रूम के पराजित बादशाह (हिरकल) में पुरअसरार तौर पर तब्दीली पैदा होना शुरू गई। यहां तक कि 623 ई० में उसने ईरान पर जवाबी हमला किया। 624 ई० में उसने ईरान पर फैसलाकुन फतह हासिल की। 627 ई० तक उसने अपने सारे मक्जूजा इलाके ईरानियों से वापस ले लिए। कुरआन की पेशीनगोई लफ्ज-क्लफ्ज पूरी हुई। इससे साबित होता है कि कुरआन का मुसन्निफ (लेखक) खुदा है। खुदा के सिवा कोई भी मुस्तकबिल के बारे में इतना सही बयान नहीं दे सकता।

मजीद यह वाक्या बताता है कि हार और जीत बराबरास्त खुदा के इख्तियार में है। उसी के फैसले से किसी को इक्तेदार (सत्ता) मिलता है और किसी से इक्तेदार छिन जाता है। एक कैम का गिरना और दूसरी कैम का उठना बजाहिर आम दुनियावी वाक्या है। मगर इस जाहिर का एक बातिन (भीतर) है। हर वाक्ये के पीछे खुदा के फरिश्ते फैसलाकुन तौर पर काम कर रहे होते हैं, अगरचे वे आम इंसानी आंखों को दिखाई नहीं देते। इसी तरह मौजूदा आलमे जाहिर का भी एक बातिन (भीतर) है और वह आलमे आखिरत है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِي رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ۚ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا أَشْدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا

أَكْثَرِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ اسَاءُوا السُّوْأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

۝

क्या उन्होंने अपने जी में गौर नहीं किया, अल्लाह ने आसमानों और जमीन को और जो कुछ इनके दर्मियान है बरहक पैदा किया है। और सिर्फ एक मुकर्रर मुद्दत के लिए। और लोगों में बहुत से हैं जो अपने ख से मुलाकात के मुकिर हैं। क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले थे। वे उनसे ज्यादा ताकत रखते थे। और उन्होंने जमीन को जोता और उसे उससे ज्यादा आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया है। और उनके पास उनके रसूल वाजेह निशानियां लेकर आए। पस अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे खुद ही अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। फिर जिन लोगों ने बुरा काम किया था उनका अंजाम बुरा हुआ, इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और वे उनकी हंसी उड़ाते थे। (8-10)

खुदा किसी आदमी को जिन्न व फिन्न की सतह पर मिलता है। यानी आदमी सोच के जरिए से खुदा को पाता है। खुदा ने मौजूदा दुनिया में अपने दलाइल बिखेर दिए हैं, आदमी की अपनी जात में, बाहर की कायनात में और फिर पैगम्बर की तालीमात में। जो लोग इन खुदाई निशानियों में गौर करेंगे वही खुदा को पाएंगे।

दलील इस दुनिया में खुदा की नुमाइंदा (प्रतिनिधि) है। एक शख्स के सामने सच्ची दलील आए और वह उसे नजरअंदाज कर दे तो गोया कि उसने खुदा को नजरअंदाज किया। ऐसे लोगों के लिए खुदा के यहां अबदी महरूम के सिवा और कुछ नहीं।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا شُرَكَائِهِمْ كُفْرِينَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُؤْمِرُ بِتَعْفُوفِهِمْ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَائِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۝ فَسُبْحَنَ اللَّهِ حِينَ تَسْأَلُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ۝



सूरह-30. अर-रूम

1095

पारा 21

अल्लाह ख़ल्क (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है, फिर वही दुबारा उसे पैदा करेगा। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरतजदा रह जाएंगे। और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफारिशी न होगा और वे अपने शरीकों के मुंकिर हो जाएंगे। और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन सब लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। पस जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे एक बाग़ में मसरूर (प्रसन्न) होंगे। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया तो वे अजाब में पकड़े हुए होंगे। पस तुम पाक अल्लाह की याद करो जब तुम शाम करते हो और जब तुम सुबह करते हो। और असामानों और जमीन में उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है और तीसरे पहर और जब तुम ज़ुहर करते हो। (11-18)

एक मुकम्मल दुनिया का मौजूद होना पहली तख़्नीक (सृजन) का यकीनी सुबूत है। फिर जब पहली तख़्नीक मुमकिन है तो दूसरी तख़्नीक क्यों मुमकिन नहीं। जो शख्स मौजूदा दुनिया को माने और आख़िरत को न माने वह खुद अपनी मानी हुई बात के लाजिमी तकाज़े का इंकार कर रहा है।

‘मुजरिमीन’ से मुराद वे बड़े लोग हैं जिन्होंने इंकारे हक की मुहिम की कयादत की। जिन्होंने इंकारे हक के लिए दलाइल फ़राहम किए। क़ियामत का धमाका जब निजामे आलम को बदलेगा तो अचानक ये मुजरिमीन देखेंगे कि वे तमाम सहारे बिल्कुल बेबुनियाद थे जिन पर उन्हें बड़ा नाज था। वे तमाम अस्फ़ज झूठे अस्फ़ज साबित हुए जिन्हें वे अपने मैसिफ़ के हक में नाकाबिले तरदीद (अकाट्य) दलील समझते थे। अपनी उम्मीदों और खुशख़्वालिओं के बरअक्स जब वे इस सूरतेहाल को देखेंगे तो वे बिल्कुल हैरतजदा होकर रह जाएंगे।

क़ियामत में इंसानों की दो तक्सीम की जाएगी। एक, खुदा की हम्द व तस्बीह करने वाले लोग। दूसरे, हम्द व तस्बीह से ख़ाली लोग। खुदा की हम्द व तस्बीह करने वाले लोग वे हैं जो खुदा को इस तरह पाएं कि वह उनकी यादों में समा जाए। वह उनके दिमाग़ की सोच और उनकी ज़बान का तज़िकरा बन जाए। इसी हम्द व तस्बीह की एक मुतअय्यन सूत का नाम पांच वक्त की नमाज़ है। आयत में सुबह की तस्बीह से मुराद फ़ज़्र की नमाज़ है। शाम की तस्बीह में मग़रिब और इशा की नमाज़ें शामिल हैं। दोपहर ढलने के बाद की तस्बीह से मुराद ज़ुहर की नमाज़ है। और दिन के पिछले वक्त की तस्बीह से मुराद अम्र की नमाज़।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۖ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۖ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُفَكِّرُونَ ۝

पारा 21

1096

सूरह-30. अर-रूम

वह ज़िंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िंदा से निकालता है। और वह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िंदा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है। फिर यकायक तुम बशर इंसान बनकर फैल जाते हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो। और उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत रख दी। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (19-21)

मौजूदा दुनिया का एक अजीब व ग़रीब करिश्मा एक चीज़ का दूसरी चीज़ में तब्दील होना है। यहां अवृद्धिशील पदार्थ वृद्धिशील पदार्थ में तब्दील हो रहा है। यहां बेजान मिट्टी (दूसरे शब्दों में भूमि के तत्व) तब्दील होकर चलने और बोलने वाले इंसान की सूत इख़्तियार कर लेते हैं। मजौद यह कि यह सब कुछ हददर्जा बामअना तौर पर हो रहा है। मिसाल के तौर पर ‘मिट्टी’ जब तब्दील होकर इंसान बनती है तो उसका तकरीबन आधा हिस्सा मर्द की सूत में ढल जाता है और तकरीबन निस्फ़ (आधा) हिस्सा औरत की सूत में। इसी तक्सीम की बदौलत इंसानी तहज़ीब हज़ारों साल से क़यम है। यह तब्दीली और फिर मुनज्जम और मुतनासिब (संतुलित) तब्दीली इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि उसके पीछे एक कादिर मुतलक (सर्वशक्तिमान) खुदा की कारफरमाई मानी जाए।

हकीकत यह है कि आदमी अगर खुदा की तख़्नीक पर ग़ौर करे तो उसे ऐसा लगेगा जैसे हर चीज़ में खुदा का जलवा हो। हर चीज़ से खुदा झांक रहा हो।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

और उसकी निशानियों में से आसमानों और जमीन की पैदाइश और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे सोंगों का इज़्तेलाफ़ (अंतर) है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं इल्म वालों के लिए। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना और तुम्हारा उम्मेफ़ल (जीविका) को तलाश करना है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें

सूरह-30. अर-रूम

1097

पारा 21

बिजली दिखाता है, ख़ौफ़ के साथ और उम्मीद के साथ। और वह आसमान से पानी उतारता है फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। (22-24)

कायनात अपने पूरे वजूद के साथ खुदा की निशानी है। इसका अदम से वुजूद में आना खुदा की कुव्वते तख़लीक को बताता है। इसके अंदर बेशुमार तनव्वोअ (विविधता) खुदा की कुदरत की तरफ इशारा कर रही है। तमाम चीज़ों में हददर्जा मअनवियत (अर्थपूर्णता) खुदा की सिफ़ते रहमत का आइना है। बिजली जैसी तबाहक़ुन चीज़ों की मौजूदगी खुदा की सिफ़ते इत्क़ाम का तआरुफ़ है। ज़मीन का खुश्क हो जाने के बाद दुबारा हरा भरा हो जाना तख़लीके सानी (दुबारा पैदा करने) के इम्क़ान को बता रहा है।

ये सब खुदा की निशानियाँ हैं। मगर ये निशानियाँ सिर्फ़ उन लोगों के लिए हैं जो कायनात की ख़ामोश पुकार पर कान लगाएं। जो अपनी अक्ल और अपने इल्म को सही रुख़ पर इस्तेमाल करें।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَهٍ قَائِلُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से कायम है। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारेगा तो तुम उसी वक्त ज़मीन से निकल पड़ोगे। और आसमानों और ज़मीन में जो भी है उसी का है। सब उसी के ताबेअ (अधीन) हैं और वही है जो अब्बल बार पैदा करता है फिर वही दुबारा पैदा करेगा। और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है। और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए सबसे बरतार सिफ़त है। और वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

अथाह ख़ला में ज़मीन और सूरज और सव्यारों (ग्रहों) और सितारों का निज़ाम इस कदर हैरतनाक हद तक नादिर वाक़्या है कि वह खुद बोल रहा है कि वह किसी कायम रखने वाले की कुदरत से कायम है। और किसी चलाने वाले के ज़ोर पर चल रहा है। यह रैर मामूली मदद अगर एक लम्हा के लिए भी उससे जुदा हो तो वह बिल्कुल दरहम बरहम हो जाए। एक दुनिया में इस मामूली हवाई जहाज़ भी पायलोट का कंट्रोल खोने के बाद बर्बाद हो जाता है, फिर कायनात का इतना बड़ा कारख़ाना किसी कंट्रोलर के कंट्रोल के बग़ैर कैसे चल सकता है।

कायनात का ख़ालिक कायनात में अपनी कुदरत का जो मुजाहि़रा कर रहा है उसके

पारा 21

1098

सूरह-30. अर-रूम

लिहाज़ से उसके लिए यह काम आसानतर है कि वह इंसान को मौत के बाद दुबारा पैदा करे। तख़लीके अब्बल का जो मुजाहि़रा कायनात में हर आन हो रहा है उसके बाद तख़लीके सानी को मानना ऐसा ही है जैसे एक साबितशुदा चीज़ को मानना। कायनात में खुदा की कुदरत और उसकी हिक्मत का इज़हार इतनी आला सतह पर हो रहा है कि इसके बाद किसी भी कारनामे को खुदा की तरफ़ मंसूब करना कोई अनहोनी चीज़ नहीं।

ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ۖ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَآرَرِقُنْكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ بَلْ أَشَبَّهَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نُصِيرِينَ ۝

वह तुम्हारे लिए खुद तुम्हारी जात से एक मिसाल बयान करता है। क्या तुम्हारे गुलामों में कोई तुम्हारे उस माल में शरीक है जो हमने तुम्हें दिया है कि तुम और वह उसमें बराबर हों। और जिस तरह तुम अपनों का लिहाज़ करते हो उसी तरह उनका भी लिहाज़ करते हो। इस तरह हम आयतें खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। बल्कि अपनी जानों पर जुल्म करने वालों ने बग़ैर दलील अपने ख़यालात की पैरवी कर रखी है तो उसे कौन हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो। और कोई उनका मददगार नहीं। (28-29)

एक मुशतरक (साझा) माल या जायदाद हो तो उसमें उसके तमाम शरीकों का हक़ होता है और हर शरीक को दूसरे शरीक का लिहाज़ रखना पड़ता है। मगर खुदा का मामला इस किस्म का मामला नहीं। खुदा तंहा तमाम कायनात का मालिक है। खुदा के लिए सही मिसाल आका (स्वामी) और गुलाम की है न कि जायदाद के शरीकों की। खुदा और उसकी मख़्लूकात के दर्मियान ज़्यादा बड़े पैमाने पर वही निस्वत है जो एक आका और एक गुलाम के दर्मियान पाई जाती है। कोई शख्स अपने गुलाम या नौकर को अपने बराबर का दर्जा नहीं देता। इसी तरह कायनात में कोई भी नहीं है जिसे खुदा के साथ बराबरी की हैसियत हासिल हो। खुदा की तरफ़ सिर्फ़ आर्क़ाई है और बक़िया मख़्लूक़त की तरफ़ सिर्फ़ महकूमी और गुलामी।

मख़्लूक़त का अपने-अपने तख़लीकी निज़ाम का पाबंद होना बताता है कि खुदा और मख़्लूक़त के दर्मियान सही निस्वत आका और गुलाम की है। इसके सिवा जो निस्वत भी कायम की जाएगी उसकी बुनियाद महज़ इंसानी मफ़रूज़ पर होगी न कि किसी वाक़ई दलील पर।

فَأَقْمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ  
لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ مُنِيبِينَ  
إِلَيْهِ وَأَتَّقُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ  
وَكَانُوا شِعَاعًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝

पस तुम एकसू होकर अपना रुख इस दीन की तरफ रखो, अल्लाह की फितरत जिस पर उसने लोगों को बनाया है। उसके बनाए हुए को बदलना नहीं। यही सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। उसी की तरफ मुतवज्जह होकर और उसी से डरो और नमाज कायम करो और मुशिकीन में से न बनो जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया। और बहुत से गिरोह हो गए। हर गिरोह अपने तरीके पर नाजां (मग्न) है जो उसके पास है। (30-32)

अस्त दीन यह है। और वह हर पैगम्बर पर अपनी कामिल शक्त में उतरा है। वह है एक अल्लाह की तरफ रुजूअ (प्रवृत्त होना), एक अल्लाह का डर, एक अल्लाह की परस्तारी, हमह-तन एक अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो जाना, यही दीने फितरत है। यह दीन अबदी तौर पर हर इंसान की नफिसयात में समाया हुआ है। तमाम पैगम्बरों ने इसी एक दीन की तालीम दी। मगर उनके पैरोकारों की बाद की नस्लों ने एक दीन को कई दीन बना डाला। कई दीन हम्मा उन इज्मी (अतिरिक्त) बहसों से बनता है जो बाद के लोग पैगम्बरों की इब्तिदाई तालीमात में पैदा करते हैं। अक्काइ में नई ईजाद की गई मूशियाफियां, इबादात में खुदसाख्ता मसाइल, जमाने के ताम्पुर के तहत दीन की नई-नई तार्वीरें। यही वे चीजें हैं जो बाद के दौर में एक दीन को कई दीन बना देती हैं। जब ये इजाफे वजूद में आते हैं तो लोग अस्त दीन के बजाए अपने इन्हीं इजाफों पर सबसे ज्यादा ज़ोर देने लगते हैं जिनकी बदैलत वे दूसरे गिरोह से जुदा होकर अलग गिरोह बने हैं। एक गिरोह एक किस्म के इजाफे पर ज़ोर देता है, और दूसरा गिरोह दूसरे किस्म के इजाफे पर। इस तरह बिलआखिर यह नौबत आती है कि एक दीन को मानने वाले अमलन कई दीनी गिरोहों में बंट कर रह जाते हैं।

وَإِذْ آمَسَّ النَّاسُ ضُرْدَعُوا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَسْتَكْبِرُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ أَمْ أَرْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِإِثْمِهِمْ يُشْرِكُونَ ۝

और जब लोगों को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वे अपने रब को पुकारते हैं उसी की

तरफ मुतवज्जह होकर। फिर जब वह अपनी तरफ से उन्हें महरबानी चखाता है तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके मुंकिर हो जाएं। तो चन्द दिन फायदा उठा लो, अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। क्या हमने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उन्हें खुदा के साथ शिक्र करने को कह रही है। (33-35)

आम हालात में आदमी अपने को बाइख्तियार पाता है। इसलिए आम हालात में वह मस्तुई (बनावटी) तौर पर सरकश बना रहता है। मगर जब नाजुक हालात उसे उसकी बेबसी का तजर्बा कराते हैं, उस वक्त उसके जेहन के पर्दे हट जाते हैं। वह उस वक्त अस्ली इंसान (Man cut to size) बन जाता है जो कि वह हकीकतन है। उस वक्त वह अपनी आजिजना हैसियत का एतराफ करते हुए खुदा को पुकारने लगता है।

यह नफिसयात की सतह पर तौहीदे इलाह (एक ही पूज्य) का सुबूत है। इस तरह इंसान को उसके जाती तजुर्बों में हकीकत का चेहरा दिखाया जाता है। मगर आदमी इतना नादान है कि जैसे ही हालात बदले वह दुबारा पहले की तरह गफलत और सरकशी में मुब्तिला हो जाता है।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَمْزُقُونَ أَيِّدِيَهُمْ إِذَا هُمْ يَنْقُطُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ فَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسْكِينَ وَالْبَنِي السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَا آتَيْتُم مِّن رَّبِّ إِلَٰهِ بُؤًا فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرُبُّوا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ۝

और जब हम लोगों को महरबानी चखाते हैं तो वे उससे खुश हो जाते हैं। और अगर उनके आमाल के सबब से उन्हें कोई तकलीफ पहुंचती है तो यकायक वे मायूस हो जाते हैं। क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसे चाहे ज्यादा रोजी देता है और जिसे चाहे कम। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। पस रिश्तेदार को उसका हक दो और मिस्कीन को और मुसाफिर को। यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रिजा चाहते हैं और वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताकि लोगों के माल में शामिल होकर वह बढ़ जाए, तो अल्लाह के नजदीक वह नहीं बढ़ता। और जो जकात तुम दोगे अल्लाह की रिजा हासिल करने के लिए तो यही लोग हैं जो अल्लाह के यहां अपने माल को बढ़ाने वाले हैं। (36-39)

मोमिन राहत और मुसीबत दोनों को खुदा की तरफ से समझता है। इसलिए वह दोनों हालातों में खुदा की तरफ मुतवज्जह होता है। वह राहत में शुक्र करता है और मुसीबत में सब्र। इसके बरअक्स ग़ैर मोमिन का भरोसा अपने आप पर होता है। इसलिए वह अच्छे हालात में नाजा होता है और जब उसकी कृप्यतें जवाब दे जाएं तो वह मायूसी का शिकार हो जाता है। क्योंकि उसे महसूस होता है कि अब उसकी आखिरी हद आ गई। यह गोया फितरत की शहदत है जो बताती है कि पहला ज़ेन हकीमी ज़ेन है और दूसरा ज़ेन ग़ैर हकीमी ज़ेन।

मोमिन की एक पहचान यह है कि वह अपने माल को रियाए इलाही के लिए खर्च करता है। चुनांचे वह अपने माल में दूसरे जरूरतमंदों का भी हिस्सा लगाता है, चाहे वे उसके रिश्तेदार हों या ग़ैर रिश्तेदार। वह अपने माल को आखिरत का नफा कमाने के लिए खर्च करता है न कि सूद ख़ारों की तरह सिर्फ दुनिया का नफा कमाने के लिए।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ  
مَنْ يَفْعَلُ مِنْ ذَلِكُمْ مِنْ شَيْءٍ سُبْحَنَ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ① ظَهَرَ الْفَسَادُ  
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا  
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ② قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ  
مِنْ قَبْلُ ③ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ④

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर उसने तुम्हें रोजी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो। वह पाक है और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। खुशकी और तरी में फसाद फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से, ताकि अल्लाह मजा चखाए उन्हें उनके कुछ आमाल का, शायद की वे बाज आएँ। कहे कि जमीन में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो इससे पहले गुजरे हैं। उनमें से अक्सर मुशिरक (बहुदेववादी) थे। (40-42)

एक इंसान का पैदा होना, उसका सुबह व शाम का रिक मिलना, उस पर मौत वाकेअ होना, ये वाकेयात इतने अजीम हैं कि इनके जुहर के लिए कायनाती कुव्वत दरकार है। और खलिके कायनात के सिवा कोई भी मफरूज (काल्पनिक) हस्ती ऐसी नहीं जो इस किस्म की कायनाती कुव्वत रखती हो। हकीकत यह है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) अपनी दलील आप है और शिर्क (बहुदेववाद) अपनी तरदीद (रद्द) आप।

अगर इंसान एक खुदा को अपना माबूद बनाए तो सबका मर्कजे तवज्जोह एक होता है। इससे इंसानों के दर्मियान इत्तेहाद की फजा पैदा होती है। इसके बरअक्स जब दूसरे-दूसरे

माबूद बनाए जाने लगे तो बेशुमार चीजें मर्कजे तवज्जोह बन जाती हैं। इससे अप्फाद और कैमों में इनाद (द्वेष) और इस्तेलाफ पैदा होता है। खुशकी और समुद्र और फजा सब फसाद (उपद्रव, बिगाड़) से भर जाते हैं।

इंसान की बेराहरवी (पथभ्रष्टता) का मुस्तकिल अंजाम मौत के बाद सामने आने वाला है। मगर इंसान की बेराहरवी का वक्ती अंजाम इसी दुनिया में दिखाया जाता है ताकि लोगों को याददिहानी हो।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ  
يَوْمَئِذٍ يَصْدَّ عَنْ وَجْهِكَ مَنْ كَفَرَ ① فَعَلَيْهِمْ كُفْرُهُ ② وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا  
فَلَا نَفْسَ لَهُ يَهْدُوه ③ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَمْتُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ  
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ④

पस अपना रुख देने कयिम (सीधे-सहज धर्म) की तरफ सीधा रखो। इससे पहले कि अल्लाह की तरफ से ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं है। उस दिन लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। जिसने इंकार किया तो उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और जिसने नेक अमल किया तो ये लोग अपने ही लिए सामान कर रहे हैं। ताकि अल्लाह इमान लाने वालों को और नेक अमल करने वालों को अपने फल से जज (प्रतिफल) दे। बेशक अल्लाह मुंकिरों को पसंद नहीं करता। (43-45)

मौजूदा दुनिया में अच्छे और बुरे दोनों किस्म के लोग मिले हुए हैं। आखिरत इसलिए आएगी कि वह दोनों किस्म के लोगों को अलग-अलग कर दे। उस दिन खुदा का इनाम उन लोगों के लिए होगा जो मौजूदा दुनिया में सिर्फ खुदा वाले बनकर रहे। और जिन लोगों की दिलचस्पियां ग़ैर खुदा के साथ वाबस्ता रहीं वे वहां अबदी (चिरस्थायी) तौर पर खुदा की रहमतों से महरूम कर दिए जाएंगे।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّياحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلُكُ  
بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ① وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ② وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ  
رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَبُوا ③ وَكَانَ  
حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ④

और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवाएं भेजता है खुशखबरी देने के लिए और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत से नवाजे। और ताकि कश्तियां उसके हुक्म से चलें।



सूरह-30. अर-रूम

1103

पारा 21

और ताकि तुम उसका फल तलाश करो। और ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो। और हमने तुमसे पहले रसूलों को भेजा उनकी कौम की तरफ। पस वे उनके पास खुली निशानियां लेकर आए। तो हमने उन लोगों से इंतिकाम लिया जिन्होंने जुर्म किया था। और हम पर यह हक था कि हम मोमिनों की मदद करें। (46-47)

बारिश से पहले ठंडी हवाओं का आना इस बात का एलान है कि इस दुनिया का खुदा रहमतों वाला खुदा है। समुद्री जहाजरानी तमदुन (संस्कृति) के लिए इतिहाई अहम है। मगर समुद्री जहाजरानी उसी वक्त मुमकिन होती है जबकि हवा एक खास हद के अंदर रहे। इसी तरह मौजूदा जमाने में हवाई सफर का भी बहुत गहरा ताल्लुक इस इंतजाम से है कि खुदा ने जमीन की सतह के ऊपर हवा का दबीज (मोटा) गिलाफ कायम कर रखा है।

यह सारा एहतिमाम इसलिए किया गया है ताकि इंसान खुदा का शुक्रगुजार बंदा बनकर रहे। खुदा के पैगम्बर इन्हीं हकीकतों की तरफ लोगों को मुतवज्जह करने के लिए आए। फिर कुछ लोगों ने उन्हें माना, और कुछ लोगों ने उनका इंकार कर दिया। उस वक्त खुदा ने मानने वालों की मदद की और इंकार करने वालों को हलाक कर दिया। यही मामला दोनों किस्म के इंसानों के साथ आखिरत में ज्यादा बड़े पैमाने पर पेश आएगा।

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُ سَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۖ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُزَلَّ عَلَىٰ هُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَكِبُوسِينَ ۖ فَاَنْظُرْ إِلَىٰ آثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُخَيِّ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَلِكَ لَمَعْمَى الْمَوْتِ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَلَكِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفًى ۚ تَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۖ وَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتِ وَلَا تَسْمِعُ الصَّمَدَ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُعْجِزٍ عَنِ صَلَاتِهِمْ إِنَّهُمْ لَا يَسْمِعُونَ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ مِنْ رِأْسِنَا فِئَمُ مَسْلُومُونَ ۝

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। पस वे बादल को उठाती हैं। फिर अल्लाह उन्हें आसमान में फैला देता है जिस तरह चाहता है। और वह उन्हें तह-ब-तह करता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अंदर से निकलती है। फिर जब वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसे पहुंचा देता है तो यकायक वे खुश हो जाते हैं। और वे उसके

पारा 21

1104

सूरह-30. अर-रूम

नाजिल किए जाने से पहले, खुशी से पहले, नाउम्मीद थे। पस अल्लाह की रहमत के आसार (निशान) को देखो, वह किस तरह जमीन को जिंदा कर देता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक वही मुर्दों को जिंदा करने वाला है। और वह हर चीज पर कादिर है। और अगर हम एक हवा भेज दें, फिर वे खेती को जर्द हुई देखें तो इसके बाद वे इंकार करने लगेंगे। तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चले जा रहे हों। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकाल कर राह पर ला सकते हो। तुम सिर्फ उसे सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो। पस यही लोग इताअत (आज्ञापालन) करने वाले हैं। (48-53)

आदमी हक का रास्ता इख्तियार करे तो उसे अक्सर सख्त दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है, जैसा कि दीरे अव्वल में रसूल और असहाबे रसूल के साथ पेश आया। मगर इन हालात में किसी के लिए मायूस होने का सवाल नहीं। जो खुदा इतना रहीम है कि जब खेती को पानी की जरूरत होती है तो वह आलमी निजाम को मुतहरिक (सक्रिय) करके उसे सैराब करता है वह यकीनन अपने रास्ते पर चलने वालों की भी जरूर मदद फरमाएगा। ताहम यह मदद खुदा के अपने अंदाजे के मुताबिक आएगी। इसलिए अगर इसमें देर हो तो आदमी को मायूस और बददिल नहीं होना चाहिए।

खुदा की बात निहायत वाजेह और निहायत मुदल्लल (तर्कपूर्ण) बात है। मगर खुदा की बात का मोमिन वही बनेगा जो चीजों को गहराई के साथ देखे, जो बातों को ध्यान के साथ सुने। जिसके अंदर यह मिजाज हो कि जो बात समझ में आ जाए उसे मान ले, जिस रास्ते का सही होना मालूम हो जाए उस पर चलने लगे।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ ۖ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۖ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مُعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमजोरी से पैदा किया, फिर कमजोरी के बाद कुव्वत (शक्ति) दी, फिर कुव्वत के बाद कमजोरी और बुढ़ापा तारी कर दिया। वह जो चाहता है पैदा

सूरह-30. अर-रूम

1105

पारा 21

करता है। और वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, मुजरिम कसम खाकर कहेंगे कि वे एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। इस तरह वे फँरे जाते थे। और जिन लोगों को इल्म व ईमान अता हुआ था वे कहेंगे कि अल्लाह की किताब में तो तुम हश्श (जीवित हो उठने) के दिन तक पड़े रहे। पस यह हश्श (जीवित हो उठने) का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे। पस उस दिन जलियों को उनकी मअजस्त (सफ़ाई पेश करना) कुछ नफ़ा न देगी और न उनसे माफ़ी मांगने के लिए कहा जाएगा। (54-57)

इंसान पैदा होता है तो वह निहायत कमजोर बच्चा होता है। फिर दर्मियान में ताकत और जवानी के कुछ साल गुजरने के बाद दुबारा बुढ़ापे की कमजोरी आ जाती है। इसका मतलब यह है कि इंसान की ताकत उसकी अपनी नहीं है। वह उसे देने से मिलती है। यह देने वाले के इस्त्रियार में है कि वह जब चाहे दे और जब चाहे वापस ले ले।

दुनिया की ज़िंदगी में आदमी आख़िरत के लिए फ़िक्रमंद नहीं होता। क्योंकि क़ियामत उसे बहुत दूर की चीज मालूम होती है। मगर यह सिर्फ़ बेख़बरी की बात है। क़ियामत जब आएगी तो उसे ऐसा मालूम होगा कि बस एक घड़ी पिछली दुनिया में रहना हुआ था कि अगली दुनिया का मरहला पेश आ गया।

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَكِنْ جِثَّتْهُمْ بَايَةٌ  
يَقُولُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ۝ كَذَلِكَ يُطَعُّ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ  
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَ لَا يَسْتَحْفَتُكَ الَّذِينَ  
لَا يُوقِنُونَ ۝

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर किस्म की मिसालें बयान की हैं। और अगर तुम उनके पास कोई निशानी ले आओ तो जिन लोगों ने इन्कार किया है वे यही कहेंगे कि तुम सब बातिल (असत्य) पर हो। इस तरह अल्लाह मुहर कर देता है उन लोगों के दिलों पर जो नहीं जानते। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। और तुम्हें बेबरदाश्त न कर दें वे लोग जो यकीन नहीं रखते। (58-60)

मक्का में लोग कहते थे कि अगर तुम पैग़म्बर हो तो कोई ख़ारिके आदत (दिव्य) करिश्मा दिखाओ। मगर उनके इस मुतालबे को पूरा नहीं किया गया। इसकी वजह यह है कि ख़ारिके आदत करिश्मा अस्त मक्सद के एतबार से बेमयदा था। इस्लाम का मक्सद तो यह था कि लोगों के अमल में तब्दीली हो और अमल में तब्दीली फ़िक्र (विचार) की तब्दीली से आती है न कि ख़ारिके आदत करिश्मा दिखाकर लोगों को अचंभे में डाल देने से।

पारा 21

1106

सूरह-31. लुक्मान

चुनांचे क़ुरआन का सारा जोर इस्तदलाल (तर्क) पर है। वह दलील के जरिए इंसान के ज़ेहन को बदलना चाहता है। वह आदमी को इस काबिल बनाना चाहता है कि वाक़ेयात को सही रूख़ से देखे और मामलात पर सही राय कायम कर सके। हकीकत यह है कि इंसान का अस्त मसला सेहते फ़िक्र (सुविचारता) है। अगर आदमी के अंदर सही फ़िक्र न जागा हो तो करिश्मों और मोजिजों को देखकर दुबारा वह कोई नासमझी का लफ़्ज बोल देगा जिस तरह वह इससे पहले नासमझी के अल्फ़ाज बोलता रहा है।

लाइल्मी की बिना पर मुहर लगाना, सेहते फ़िक्र न होने की वजह से बातों को न समझना है। आदमी के अंदर राय कायम करने की सलाहियत न हो तो वह चीजों को उनके सही रूख़ से नहीं देख पाता। इस बिना पर वह चीजों से अपने लिए सही रहनुमाई भी हासिल नहीं कर पाता।

जो अल्लाह का बंदा बेआमेज (विशुद्ध) हक़ की दावत लेकर उठे उसे हमेशा लोगों की तरफ़ से हौसलाशिकन रद्देअमल का सामना पेश आता है। दाजी तमामतर आख़िरत की बात करता है जबकि लोगों का ज़ेहन दुनिया के मसाइल में उलझा हुआ होता है। इस बिना पर लोग दाजी की तहकीर (अनादर) करते हैं। वे उसे हर लिहाज से नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। यहां तक कि माहौल में दाजी की बात बेवजन बात मालूम होने लगती है।

यह सूरतेहाल मदरू के साथ दाजी को भी आजमाइश में डाल देती है। ऐसे वक़्त में दाजी के लिए ज़रूरी हो जाता है कि वह अपने यकीन को न खोए। अगर हालात के दबाव के तहत उसने अपने यकीन को खो दिया तो वह ऐसी बात बोलने लगेगा जो आम लोगों को शायद अहम मालूम हो मगर अल्लाह की नज़र में उससे ज्यादा ग़ैर अहम बात और कोई न होगी।

سُورَةُ بَقِيَّةٍ مَكِّيَّةٌ وَهُيَ أَرْبَعٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَأَنْتُمْ رُكُوعٌ  
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
الْمَ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝ هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ  
الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَى  
هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

आयतें-34

सूरह-31. लुक्मान

रुकूअ-4

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। ये पुरहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) किताब की आयतें हैं, हिदायत और रहमत नेकी करने वालों के लिए। जो कि नमाज़ कायम करते हैं और ज़कात अदा

करते हैं। और वे आखिरत पर यकीन रखते हैं। ये लोग अपने स्व के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। (1-5)

एहसान का अस्त मफहूम है, किसी काम को अच्छी तरह करना। मोहसिन के मअना हैं अच्छी तरह करने वाला। इस दुनिया में किसी काम के अच्छे होने का मेयार यह है कि वह हकीकत वाक्य के मुताबिक हो। इस एतबार से मोहसिन वह शख्स है जो हकीकत वाक्य का एतराफ करे, जिसका अमल वही हो जो होना चाहिए और वह न हो जो नहीं होना चाहिए।

जो लोग अपने आपको हकीकत वाक्य के मुताबिक ढालने का मिजाज रखें वही वे लोग हैं कि जब उनके सामने सदाकत (सच्चाई) आती है तो वे किसी नपिसयाती पेचीदगी में मुब्तिला हुए बगैर उसे मान लेते हैं। वे फौरन ही उसके अमली तकाजे पूरे करने लगते हैं। वे नमाजी बन जाते हैं जो खुदा का हक अदा करने की एक अलामत है। वे जफ़ात अदा करते हैं जो गोया माल के दायरे में बंदों का हक अदा करना है। वे दुनियापरस्ती को छोड़कर आखिरतपसंद बन जाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि कामयाबी और नाकामयाबी का फैसला आखिरकार जहां होना है वह आखिरत ही है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ  
وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۖ وَإِذْ أَنْتَلَىٰ عَلَيْهِ الْإِنشَاءُ وَلَىٰ  
مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشَّرَهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ  
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ فِيهَا  
خَالِدِينَ فِيهَا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

और लोगों में कोई ऐसा है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है जो ग़ाफिल करने वाली हैं। ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करे, बगैर किसी इल्म के। और उसकी हंसी उड़ाए। ऐसे लोगों के लिए जलील करने वाला अजाब है। और जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह तकबुर (घमंड) करता हुआ मुंह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में बहरापन है। तो उसे एक दर्दनाक अजाब की खुशख़बरी दे दो। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया। उनके लिए नेमत के बाग़ हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह का पुख़्ता वादा है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-9)

बातें दो किस्म की होती हैं। एक नसीहत दूसरे तफरीह। नसीहत की बात जिम्मेदारी का एहसास दिलाती है। वह आदमी से कुछ करने और कुछ न करने के लिए कहती है। इसलिए हर दौर में बहुत कम ऐसे लोग हुए हैं जो नसीहत की बातों से दिलचस्पी लें। इंसान का आम

मिजाज हमेशा यह रहा है कि वह तफरीह की बातों को ज्यादा पसंद करता है। वह नसीहत की 'किताब' के मुक़ाबले में उस किताब का ज्यादा ख़रीदार बनता है जिसमें उसके लिए ज़ेहन तफरीह का सामान हो और वह उससे कुछ करने के लिए न कहे।

जिस शख्स का हाल यह हो कि वह अपनी जात से आगे बढ़कर दूसरों को इस किस्म की तफरीही बातों में मशगूल करने लगे वह ज्यादा बड़ मुजरिम है। क्योंकि वह इस ज़ेहनी बेराहरवी (भटकाव) का कायद बना। उसने लोगों के ज़ेहन को बेफ़ायदा बातों में मशगूल करके उन्हें इस काबिल न रखा कि वे ज्यादा संजीदा बातों में ध्यान दे सकें।

सबसे बुरी नपिसयात घमंड की नपिसयात है। जो शख्स घमंड की नपिसयात में मुब्तिला हो उसके सामने हक आया मगर वह अपने को बुलन्द समझने की वजह से उसका एतराफ नहीं करेगा। वह उसे हिक़मत के साथ नज़रअंदाज करके आगे बढ़ जाएगा। इसके बरअक्स मामला अहले ईमान का है। उनका नसीहतपसंद मिजाज उन्हें मजबूर करता है कि वे सच्चाई का एतराफ करें, वे अपनी जिंदगी को तमामतर उसके हवाले कर दें।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ  
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ  
زَوْجٍ كَرِيمٍ ۖ هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ  
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया, ऐसे सुतूनों (स्तंभों) के बगैर जो तुम्हें नजर आए। और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए कि वे तुम्हें लेकर झुक न जाए। और उसमें हर किस्म के जानदार फैला दिए। और हमने आसमान से पानी उतारा फिर जमीन में हर किस्म की उमदा चीज़ें उगाईं। यह है अल्लाह की तज़लीक, तो तुम मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है। बल्कि जालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (10-11)

कायनात लामुतनाही (अनंत) ख़ला है। इसके अंदर बेशुमार निहायत बड़े-बड़े अजराम (आकाशीय पिंड) मुसलसल गर्दिश कर रहे हैं। इन अजराम का इस तरह ख़ला (अंतरिक्ष) में गर्दिश करते हुए कायम रहना दहशतनाक हद तक अजीब वाक्य है। फिर हमारी जमीन मौजूदा कायनात में एक इतिहाई विलक्षण ग्रह है जिसमें अनगिनत इतिजामात ने इसके ऊपर इंसानी जिंदगी को मुमकिन बना दिया है। इन्हीं इतिजामात में से चन्द ये हैं जमीन की सतह पर पहाड़ों के उभार से तवाजुन (संतुलन) कायम होना। फिर पानी और जिंदगी और नवातात (वनस्पति) जैसी अजीब चीज़ों की जमीन पर इफ़रात (बहुलता) के साथ मौजूदगी।

एक खुदाए बरतर के सिवा कोई नहीं जो इस अजीब निजाम को कायम रख सके। फिर

सूह-31. लुकमान

1109

पारा 21

इंसान के लिए कैसे जाइज हो सकता है कि वह खुदा के सिवा दूसरी चीजों को अपना मर्कजे परस्तिश बनाए।

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيْرٌ حَمِيْدٌ ۝ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيْرٌ حَمِيْدٌ ۝ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝

और हमने लुकमान को हिक्मत (तत्वज्ञान) अता फरमाई कि अल्लाह का शुक्र करो। और जो शरूस् शुक्र करेगा तो वह अपने ही लिए शुक्र करेगा और जो नाशुकी करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है खूबियों वाला है। और जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे, अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा जुल्म है। (12-13)

लुकमान हकीम की तारीखी हैसियत के बारे में अभी तक कतई मालूमात हासिल नहीं हो सकी हैं। ताहम वह एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और खुदापरस्त आदमी थे।

कुरआन बताता है कि लुकमान हकीम खुदा के एक शुक्रगुजार बंदे थे। और अपने बेटे को उन्होंने शिर्क से बचने की तल्कीन की। ये दोनों बातें एक हैं। तौहीद अल्लाह को अपना मोहसिन (उपकारक) समझने के एहसास से उभरती है। और शिर्क यह है कि आदमी अल्लाह के सिवा किसी और को अपना मोहसिन समझ ले और उसके लिए अपने एहसानमंदी के जबात न्यौछावर करने लगे। जब देने वाला सिर्फ एक है तो शुक्रगुजारी भी सिर्फ एक ही की होनी चाहिए।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَى وَهْنٍ وَفِصْلُهُ فِي ۝ عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَى الْمَصِيْرِ ۝ وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और हमने इंसान को उसके मां-बाप के मामले में ताकीद की। उसकी मां ने दुख पर दुख उठाकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ। कि तू मेरा शुक्र कर और अपने वालिदैन का। मेरी ही तरफ लौट कर आना है और अगर वे दोनों तुझ पर जोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज को शरीक ठहराए जो तुझे मालूम नहीं तो उनकी बात न मानना। और दुनिया में उनके साथ नेक बर्ताव करना। और तुम उस शरूस्

पारा 21

1110

सूह-31. लुकमान

के रास्ते की पैरवी करना जिसने मेरी तरफ रुजूअ किया है। फिर तुम सबको मेरे पास आना है। फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते रहे। (14-15)

खुदा के बाद इंसान के ऊपर सबसे ज्यादा हक मां-बाप का है। अलबत्ता अगर मां-बाप का हुक्म खुदा के हुक्म से टकराए तो उस वकत खुदा का हुक्म लेना है और मां-बाप का हुक्म छोड़ देना है। ताहम उस वकत भी यह जरूरी है कि मां-बाप की खिदमत को बदस्तूर जारी रखा जाए।

दो मुक़ल्लिफ तक्वजों में यह तवाजुन हिक्मते इस्लाम की आलातरीन शक्ल है। और इसी आला हिक्मत में तमाम आला कामयाबियों का राज छुपा हुआ है।

يُبْنَيْ إِنْهَا إِنْ تَكُ مُثْقَلًا حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ يَبْنَيْ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَآمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصِدٌ عَلَى مَا صَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَلَا تَصْغَرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝

يُبْنَيْ إِنْهَا إِنْ تَكُ مُثْقَلًا حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ يَبْنَيْ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَآمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصِدٌ عَلَى مَا صَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَلَا تَصْغَرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝

ऐ मेरे बेटे, कोई अमल अगर राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अंदर हो या आसमानों में हो या जमीन में हो, अल्लाह उसे हाजिर कर देगा। बेशक अल्लाह बारीकबी है, बाख़बर है। ऐ मेरे बेटे नमाज कायम करो, अच्छे काम की नसीहत करो और बुराई से रोको और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचे उस पर सन्न करो। बेशक यह हिम्मत के कामों में से है। और लोगों से बेरुखी न कर। और जमीन में अकड़ कर न चल। बेशक अल्लाह किसी अकड़ने वाले और फख्र करने वाले को पसंद नहीं करता। और अपनी चाल में मियानारवी (शालीनता) इख्तियार कर और अपनी आवाज को परत कर। बेशक सबसे बुरी आवाज गधे की आवाज है। (16-19)

मौजूदा जमाने में साइंस की तरक्की ने साबित किया है कि आइ और फसला इजमी (अतिरिक्त) अल्फाज हैं। एक्सरे किरणें जिस्म के अंदर तक देख लेती हैं। दूरबीन और खुरदबीन (Micro Scope) के जरिए वे चीजें दिखाई देने लगती हैं जो ख़ाली आंख से नजर नहीं आतीं। यह इम्कान जिसका तजर्बा हमें महदूद सतह पर हो रहा है यही खुदा के यहां लामहदूद (असीम) तौर पर मौजूद है।

दीन पर खुद अमल करना या दूसरों को दीन की तरफ बुलाना, दोनों ही सन्न चाहते हैं।



इसके लिए करने से पहले सोचना पड़ता है। नफस की ख्वाहिश पर चलने के बजाए नफस के खिलाफ चलना पड़ता है। अपनी बड़ाई को महफूज करने के बजाए अपनी बड़ाई को खो देना पड़ता है। दूसरों की तरफ से पेश आने वाली तकलीफों को यकतरफा तौर पर बर्दाश्त करना पड़ता है।

ये सब हौसलामंदी के काम हैं, और हौसलामंद किरदार (चरित्र) ही का दूसरा नाम इस्लामी किरदार है।

لَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعْمَةً ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِيرٍ ۝ وَاِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَّا اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَقْبُلُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءُنَا وَاُولٰٓئِكَ اَنَّ الشَّيْطٰنَ يَدْعُوهُمْ اِلَى عَذَابٍ سَعِيْرٍ ۝

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और उसने अपनी खुली और छुपी नेमतें तुम पर तमाम कर दीं। और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, किसी इल्म और किसी हिदायत और किसी रोशन किताब के बगैर। और जब उनसे कहा जाता है कि तुम पैरवी करो उस चीज की जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि नहीं, हम उस चीज की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या अगर शैतान उन्हें आग के अजाब की तरफ बुला रहा हो तब भी। (20-21)

मौजूदा दुनिया इस तरह बनी है कि वह इंसान के लिए कामिल तौर पर साजगार है। नीज यह कि मौजूदा दुनिया में हर वह चीज इफरात (बहुलता) के साथ मौजूद है जिसकी इंसान को जरूरत है। इसके बावजूद इंसान का यह हाल है कि वह खालिके कायनात का शुक्र नहीं करता। वह बेमअना बहसों पैदा करके चाहता है कि लोगों की तवज्जोह खुदा की तरफ से फेर दे।

इंसान के बेराह होने का सबब अक्सर हालात में यह होता है कि वह अपनी अक्ल को काम में नहीं लाता। वह रवाजे आम से हटकर नहीं सोचता। आदमी अगर रवाज से ऊपर उठ जाए तो खुदा की दी हुई अक्ल खुद उसे सही सम्त में रहनुमाई के लिए काफी हो जाए।

وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْر ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوْا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِذٰلِكَ الصُّدُوْرِ ۝ نُسَبِّحُكُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلَى

عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝

और जो शख्स अपना रुख अल्लाह की तरफ झुका दे और वह नेक अमल करने वाले भी हो तो उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। और अल्लाह ही की तरफ है तमाम मामलात का अंजामकार। और जिसने इंकार किया तो उसका इंकार तुम्हें गमगीन न करे। हमारी ही तरफ है उनकी वापसी। तो हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया। बेशक अल्लाह दिलों की बात से भी वाकिफ है। उन्हें हम थोड़ी मुद्दत फायदा देंगे। फिर उन्हें एक सख्त अजाब की तरफ खींच लाएंगे। (22-24)

हर आदमी का एक रुख होता है जिधर वह अपने पूरे फिक्री (वैचारिक) और अमली वजूद के साथ मुतवज्जह रहता है। मोमिन वह है जिसका रुख पूरी तरह खुदा की तरफ हो जाए। मोमिनाना जिंदगी दूसरे लफ्जों में खुदा रुखी (God-oriented) जिंदगी का नाम है। और गैर मोमिनाना जिंदगी गैर खुदा रुखी जिंदगी का।

जिस शख्स ने खुदा की तरफ रुख किया उसने सही मजिल की तरफ रुख किया। वह यकीनन अच्छे अंजाम को पहुंचेगा। इसके बरअक्स जो शख्स खुदा से गाफिल होकर किसी और तरफ मुतवज्जह हो जाए वह बेरुख और बेमजिल हो गया। उसे आज की वक्ती जिंदगी में कुछ फायदे हो सकते हैं। मगर आखिरत की मुस्तकिल जिंदगी में उसके लिए अजाब के सिवा और कुछ नहीं।

وَلَيْنَ سَآٓتُهُمْ مِّنْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَيَقُوْلُنَّ اَللّٰهُ فُلٌ اَحَدٌ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَمِيْدُ ۝ وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّ الْبَحْرِ يَدُّ مِنْ بَعْدِ سَبْعَةِ اَنْحٰرٍ تَاْتِفِدَتْ كُلُّمْتُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और जमीन को किसने पैदा किया, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। कहे कि सब तारीफ अल्लाह के लिए है, बल्कि उनमें से अक्सर नहीं जानते। अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जमीन में। बेशक अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, खूबियों वाला है। और अगर जमीन में जो दरख्त हैं वे कलम बन जाएं और समुद्र, सात अतिरिक्त समुद्रों के साथ, रोशनाई बन जाएं, तब भी अल्लाह की बातें खत्म न हों। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

कायनात इतनी वसीअ और इतनी अजीम है कि कोई भी शख्स होश व हवास के साथ यह दावा नहीं कर सकता कि इसे खुदा के सिवा किसी और ने बनाया है। मगर इस हकीकत

को मानने के बावजूद इंसान का हाल यह है कि वह खुदा के सिवा दूसरी चीजों को अज्मत का मकाम देता है। यही वह ग़ैर माकूल रखा है जिसका दूसरा नाम शिक है।

खुदा की अज्मत इससे ज्यादा है कि वह लफ्जों में बयान की जा सके। उलूमे तबीई (भौतिक विज्ञानों) की तारीख हजारों वर्ष के दायरे में फैली हुई है। मगर बेशुमार तहकीकात के बावजूद अभी तक किसी एक चीज के बारे में भी पूरी मालूमात हासिल न हो सकीं। इंसान को आज भी यह नहीं मालूम कि ख़ला (अंतरिक्ष) में कितने सितारे हैं। ज़मीन में नवातात (पेड़-पौधों) और हैवानात की कितनी किस्में हैं। दरख्त की एक पत्ती और रेत के एक ज़र्रे की माहियत (पूर्ण संरचना) क्या है। समुद्र के अंदर कितने अजायबात छुपे हुए हैं। गरज़ इस दुनिया की कोई भी छोटी या बड़ी चीज ऐसी नहीं जिसके बारे में इंसान को पूरी मालूमात हासिल हो चुकी हों। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि दरख्तों के कलम और समुद्रों की स्याही भी खुदा के अनगिनत करिश्मों को तहरीर करने के लिए काफी नहीं।

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَخْلُقُكُمْ إِلَّا كَفْئُ وَإِنْ اللَّهُ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

तुम सबका पैदा करना और जिंदा करना बस ऐसा ही है जैसा एक शख्स का। बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और उसने सूरज और चांद को काम में लगा दिया है। हर एक चलता है एक मुक़रर वक़्त तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। यह इस वजह से है कि अल्लाह ही हक़ है। और उसके सिवा जिन चीजों को वे पुकारते हैं वे बातिल हैं और बेशक अल्लाह बरतर (सर्वोच्च) है, बड़ा है। (28-30)

इंसान अपनी जात में इस बात का सुबूत है कि एक ज़िंदगी का वजूद में आना मुमकिन है। और जब एक ज़िंदगी का वजूद मुमकिन हो तो उसी किस्म की दूसरी ज़िंदगियों का वजूद में आना और भी मुमकिन हो जाता है। इसी तरह हर आदमी इस वाक्ये का तजर्बा कर रहा है कि वह एक आवाज को सुन सकता है। वह एक मंजर को देख सकता है और जब एक आवाज का सुना और एक मंजर का देखना मुमकिन हो तो बहुत सी आवाजों को सुना और बहुत से मनाजिर को देखना नामुमकिन क्यों होगा।

रात को दिन में दाख़िल करना और दिन को रात में दाख़िल करना किनाया (संकेत) की ज़बान में उस वाक्ये की तरफ इशारा है जिसे मौजूदा ज़माने में ज़मीन की महबूरी गर्दिश कहा

जाता है। अपने महवर (धुरी) पर कामिल सेहत के साथ ज़मीन की मुसलसल गर्दिश और इस तरह के दूसरे वाक्यात बताते हैं कि इस कायनात का ख़ालिक व मालिक नाक़बिले क़यास हद तक अजीम है। ऐसी हालत में उसके सिवा कौन है जिसकी इबादत की जाए। जिसे अपनी ज़िंजी में बड़ाई का मक़म दिया जाए। हकीकत यह है कि एक खुदा को छोड़कर जिसे भी अज्मत का मक़म दिया जाता है वह सिर्फ एक झूठ होता है। क्योंकि एक खुदा के सिवा किसी को कोई अज्मत हासिल नहीं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذَا غَشِيَ السَّحَابُ كَظْلًا دَعَا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝

क्या तुमने देखा नहीं कि कश्ती समुद्र में अल्लाह के फ़जल (अनुग्रह) से चलती है ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाए। बेशक इसमें निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब मौत उनके सर पर बादल की तरह छा जाती है, वे अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर खुशकी की तरफ ले आता है तो उनमें कुछ एतदाल (संतुलित मार्ग) पर रहते हैं। और हमारी निशानियों का इंकार वही लोग करते हैं जो बदअहद (वचन तोड़ने वाले) और नाशुक्रगुज़ार हैं। (31-32)

समुद्र में कोई चीज डाली जाए तो वह फ़ौरन डूब जाएगी। मगर अल्लाह तआला ने पानी को एक ख़ास कानून का पाबंद बना रखा है। इस वजह से कश्ती और जहाज अथाह समुद्रों में नहीं डूबते, वे इंसान को और उसके सामान को बहिफ़ाजत एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देते हैं। यह विलाशुबह एक अजीम निशानी है। मगर इस निशानी से सिर्फ साबिर और शाकिर इंसान सबक लेते हैं। साबिर वह है जो अपने आपको ग़लत एहसासात के ज़ेअसर जाने से रोके। और शाकिर वह है जो अपने बाहर पाई जाने वाली हकीकत का एतराफ़ कर सके।

ताहम जब समुद्र में तूफ़ान आता है तो आदमी को मालूम हो जाता है कि वह किस क़द्र बेबस है। उस वक़्त वह हर एक की बड़ाई को भूलकर सिर्फ खुदा को पुकारने लगता है। यह तजर्बा जो कश्ती के मुसाफ़ि़रों को पेश आता है उससे लोगों को सबक लेना चाहिए। मगर बहुत कम लोग हैं जो इन वाक्यात से सबक लें और हक़ और अदल की राह पर क़यम रहें। बेशतर लोगों का हाल यह है कि मुसीबत में पड़े तो खुदा को याद कर लिया और मुसीबत हटी तो दुबारा सरकश और एहसान फ़रामोश बन गए।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَأَخْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَكَ عَلِيمٌ سَاعِدٌ وَيُنْزِلُ الْغَيْثَ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

ऐ लोगो अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जबकि कोई बाप अपने बेटे की तरफ से बदला न देगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ से कुछ बदला देने वाला होगा। बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है तो दुनिया की जिंदगी तुम्हें धोखे में न डाले न धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। बेशक अल्लाह ही को कियामत का इल्म है और वही बारिश बरसाता है और वह जानता है जो कुछ रहम (गर्भ) में है। और कोई शख्स नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा। और कोई शख्स नहीं जानता कि वह किस जमीन में मरेगा। बेशक अल्लाह जानने वाला, बाख़बर है। (33-34)

मौजूदा दुनिया में इस्तेहान की मस्लेहत से लोगों को आजादी दी गई है। इस इस्तेहानी आजादी को आदमी हकीकी आजादी समझ लेता है। यही सबसे बड़ा धोखा है। तमाम इंसानी बुराइयां इसी धोखे की वजह से पैदा होती हैं। यहां बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि इंसान जो चाहे करे कोई उसे पकड़ने वाला नहीं। हालांकि आखिरकार आदमी के ऊपर इतना कठिन वक्त आने वाला है कि बाप बेटा भी एक दूसरे का साथ देने वाले न बन सकेंगे।

‘कियामत आने वाली है तो वह कब आएगी’ ऐसा सवाल करना अपनी हद से तजावुज करना है। इंसान अपनी करीबी और मालूम दुनिया के बारे में भी कल की खबर नहीं रखता। मसलन बारिश, पेट का बच्चा, मआशी मुस्तकबिल (आर्थिक भविष्य), मौत, इन चीजों के बारे में कोई कतई पेशीनगोई नहीं की जा सकती। ताहम इस इल्मी महदूदियत के बावजूद इंसान इन हकीकतों के सच होने को मानता है। इसी तरह कियामत की घड़ी के बारे में भी उसे मुजमल (संक्षिप्त) खबर की बुनियाद पर यकीन करना चाहिए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَأَرْبَابٍ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ رَفُوعًا مِمَّا أَنَّهُمْ مِنْ تَذْوِيرٍ ۚ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَحْتَدُونَ ۝

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। यह नाजिल की हुई किताब है, इसमें कुछ शुबह नहीं, खुदावंद आलम की तरफ से है। क्या वे कहते हैं कि इस शख्स ने इसे खुद गढ़ लिया है। बल्कि यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से, ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे राह पर आ जाएं। (1-3)

‘यह खुदा की किताब है’ बजाहिर चन्द अल्फाज का एक जुमला है। मगर यह इतना मुश्किल जुमला है कि तारीख में यह जुमला कहने की हिम्मत हकीकी तौर पर उन खास अफराद के सिवा किसी को न हो सकी जिन पर वाकेअतन खुदा की किताब उतरी थी। अगर कभी किसी और शख्स ने यह जुमला बोलने की जुरअत की है तो वह या तो मसखरा था या पागल। और उसका मसखरा या पागल होना बाद को पूरी तरह साबित हो गया।

कुरआन अपना सुबूत आप है। इसका मोजिजाती उस्तूब (दिव्य शैली), इसकी किसी बात का सैंकड़ों साल में गलत साबित न होना, इसका अपने मुखालिफीन पर पूरी तरह गालिब आना, ये और इस तरह के दूसरे वाक्यात इस बात का कतई सुबूत हैं कि कुरआन खुदा की तरफ से आई हुई किताब है। और जब वह खुदा की किताब है तो लाजिम है कि हर शख्स उसकी चेतावनी पर ध्यान दे, वह इतिहाई संजीदगी के साथ इस पर गौर करे।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ يُدِيرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝ ذَٰلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنسَانِ مِن طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِن سُلَالَةٍ مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِن رُّوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो इनके दर्मियान है छः दिनों में, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर कायम हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफारिश करने वाला। तो क्या तुम ध्यान नहीं करते। वह

आसमान से जमीन तक तमाम मामलात की तदवीर करता है। फिर वे उसकी तरफ लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी मिकदार तुम्हारी गिनती से हजार साल के बराबर है। वही है पोशीदा और जाहिर को जानने वाला। जबरदस्त है, रहमत वाला है। उसने जो चीज भी बनाई खूब बनाई। और उसने इंसान की तख्लीक की इब्तिदा मिट्टी से की। फिर उसकी नस्ल हकीर पानी के खुलासा (सत्त) से चलाई। फिर उसके आज्ञा (शरीरांग) दुरुस्त किए। और उसमें अपनी रूह फूँकी। तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। (4-9)

छः दिनों (छः चरणों) में पैदा करने से मुराद तदरीज (क्रम) व एहतिमाम के साथ पैदा करना है। कायनात की तदरीजी तख्लीक और इसका पुरहिक्मत निजाम बताता है कि इस तख्लीक से खालिक का कोई खास मक्सद वाबस्ता है। फिर कायनात में मुसलसल तौर पर बेशुमार अमल जारी हैं। इससे मजीद यह साबित होता है कि कायनात को पैदा करने वाला उसे मंसूबाबंद तौर पर चला रहा है। इंसान एक हैरतनाक किस्म का जिंदा वजूद है मगर उसके जिस्म का तज्जिया किया जाए तो मालूम होता है कि वह सिर्फ मिट्टी (भूमि के तत्वों) का मुखकब है। फिर यह इब्तिदाई तख्लीक खत्म नहीं हो जाती बल्कि तवालुद व तनासुल (प्रजनन क्रिया) के जरिए इसका सिलसिला मुस्तकिल तौर पर जारी है।

इन वाक्यात पर जो शख्स गौर करे उसके जेहन से एक खुदा की अज्मत के सिवा दूसरी तमाम अज्में मिट जाएंगी। वह खुदा का शुक्रगुजार बंदा बन जाएगा। मगर बहुत कम लोग हैं जो गहराई के साथ गौर करें। यही वजह है कि बहुत कम लोग हैं जो हम्द और शुक्र वाले बनें।

وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ  
كَفَرُونَ ۖ قُلْ يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۖ  
وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُو أُرُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَاقْضِنَا  
نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ۖ وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ  
الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْإِنسَانِ أَجْمَعِينَ ۖ فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ  
لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا أَنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ

और उन्होंने कहा कि क्या जब हम जमीन में गुम हो जाएंगे तो हम फिर नए सिरे से पैदा किया जाएंगे। बल्कि वे अपने रब की मुलाकात के मुंकिर हैं। कहो कि मौत का फरिश्ता तुम्हारी जान कब्ज करता है जो तुम पर मुस्स किया गया है। फिर तुम अपने

रब की तरफ लौटाए जाओगे। और काश तुम देखो जबकि ये मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे। ऐ हमारे रब, हमने देख लिया और हमने सुन लिया तू हमें वापस भेज दे कि हम नेक काम करें। हम यकीन करने वाले बन गए। और अगर हम चाहते तो हर शख्स को उसकी हिदायत दे देते। लेकिन मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से भर दूंगा। तो अब मजा चखो इस बात का कि तुमने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया। हमने भी तुम्हें भुला दिया। और अपने किए की बदौलत हमेशा का अजाब चखो। (10-14)

इंसान की तख्लीके अब्बल उसकी तख्लीके सानी (पुनःसृजन) के मामले को समझने के लिए बिल्कुल काफी है। मगर जब खुदा के सामने जवाबदेही का यकीन न हो तो आदमी तख्लीके सानी का मजाक उड़ता है, वह गैर संजीदा तौर पर मुखलिफ बातें करता है।

मगर यह जसारात (दुस्साहस) सिर्फ उस वक्त तक है जब तक आदमी की इम्तेहानी आजादी की मुद्दत खत्म न हुई हो। जब यह मुद्दत खत्म होगी और आदमी मरकर खुदाए जुलजलाल के सामने हिसाब के लिए खड़ा होगा तो उसके सारे अल्फाज गुम हो जाएंगे। उस वक्त सरकार लोग कहेंगे कि हमने मान लिया। हमें दुबारा जमीन में भेज दीजिए ताकि हम नेक अमल करें। मगर उनका यह मानना बेफायदा होगा। खुदा को अगर इस तरह मनवाना होता तो वह दुनिया ही में लोगों को मानने के लिए मजबूर कर देता।

खुदा के यहां उस एतराफ की कीमत है जो बगैर देखे किया गया हो। देखने के बाद जो एतराफ किया जाए उसकी कोई कीमत नहीं।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ  
هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۖ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَ  
طَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۖ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ  
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ

हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उनके जरिए से याददिहानी की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्वीह करते हैं। और वे तकबुर (घमंड) नहीं करते। उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं। वे अपने रब को पुकारते हैं डर से और उम्मीद से। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। तो किसी को खबर नहीं कि उन लोगों के लिए उनके आमाल के बदले में आंखों की क्या ठंडक छुपा रखी गई है। (15-17)

हिदायत के सिलसिले में सबसे अहम चीज मादूदा-ए-एतराफ (स्वीकार की क्षमता) है।



हिदायत सिर्फ उन लोगों को मिलती है जिनके अंदर यह मिजाज हो कि जब सच्चाई उनके सामने आए तो वे फौरन उसे मान लें। चाहे सच्चाई बजाहिर एक छोटे आदमी के जरिये सामने आई हो, चाहे उसे मानना अपने आपको ग़लत करार देने के हममअना हो, चाहे उसे मानकर अपनी जिंदगी का नक्शा दरहम बरहम होता हुआ नजर आए। जिन लोगों के अंदर यह हैसला हो वही सच्चाई को पाते हैं। जो लोग यह चाहें कि वे सच्चाई को इस तरह मानें कि उनकी बड़ाई बदस्तूर कायम रहे ऐसे लोगों को सच्चाई कभी नहीं मिलती।

जो आदमी हक की खातिर अपनी बड़ाई को खो दे वह सबसे बड़ी चीज को पा लेता है और वह खुदा की बड़ाई है। उसकी जिंदगी में खुदा इस तरह शामिल हो जाता है कि वह उसकी यादों के साथ सोए और वह उसकी यादों के साथ जागे। उसके खौफ और उम्मीद के जज्बात तमामतर खुदा के साथ वाबस्ता हो जाएं। वह अपना असासा (धन-सम्पत्ति) इस तरह खुदा के हवाले कर देता है कि उसमें से कुछ बचाकर नहीं रखता। यही वे लोग हैं जिनकी आंखें जन्नत के अबदी बागों में ठंडी होंगी।

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ۚ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَأْثُورِ ۖ إِنَّهُمْ لَنُؤْتِيهِمُ أَجْرًا لَّا يَرْضَوْنَ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۚ وَلَنَذِقَنَّاهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْكَافٍ ۚ وَلَنُؤْتِيَهُمُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ۚ

तो क्या जो मोमिन है वह उस शख्स जैसा होगा जो नाफरमान है। दोनों बराबर नहीं हो सकते। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत की क्रियामगाहें हैं, जियाफ्त (सत्कार) उन कामों की वजह से जो वे करते थे। और जिन लोगों ने नाफरमानी की तो उनका ठिकाना आग है, वे लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे। और उनसे कहा जाएगा कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुल्लाते थे। और हम उन्हें बड़े अजाब से पहले करीब का अजाब चखाएंगे शायद कि वे बाज आ जाएं। और उस शख्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसे उसके खब की आयतों के जरिए नसीहत की जाए। फिर वह उनसे मुंह मोड़े। हम ऐसे मुजरिमों से जरूर बदला लेंगे। (18-22)

मोमिन वह है जो खुदाई सच्चाई का एतराफ करे। और फासिक (अवज्ञाकारी) वह है

जिसके सामने सच्चाई आए तो वह अपनी जात के तहफुज (संरक्षण) की खातिर उसका इंकार कर दे। ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल मुखलिफ किरदार हैं और दो मुखलिफ किरदार का अंजाम एक जैसा नहीं हो सकता।

मौजूदा दुनिया में जो शख्स सच्चाई का एतराफ करता है वह इस बात का सुबूत देता है कि वह सच्चाई को सबसे बड़ी चीज समझता है। ऐसा शख्स आखिरत में बड़ा बनाया जाएगा। इसके बरअक्स जो शख्स सच्चाई को नजरअंदाज करे उसने अपनी जात को बड़ा समझा, ऐसा शख्स आखिरत की हकीकी दुनिया में छोटा कर दिया जाएगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِبْرَاهِيمَ يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لِتَصْبِرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يُفَصِّلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يََسْتَوُونَ فِي مَسْكَانِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۚ

और हमने मूसा को किताब दी। तो तुम उसके मिलने में कुछ शक न करो। और हमने उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हमने उनमें पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे। जबकि उन्होंने सब्र किया। और वे हमारी आयतों पर यकीन रखते थे। बेशक तेरा खब क्रियामत के दिन उनके दर्मियान उन मामलों में फैसला कर देगा जिनमें वे बाहम इख़्तेलाफ (परस्पर मतभेद) करते थे। क्या उनके लिए यह चीज हिदायत देने वाली न बनी कि उनसे पहले हमने कितनी कौमों को हलाक कर दिया। जिनकी वस्तियों में ये लोग आते जाते हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं। (23-26)

खुदा की किताब किसी गिरोह को मिलना उसे इमामते आलम (विश्व नेतृत्व) की कुंजी अता करना है। मगर इमामते आलम का मकाम किसी गिरोह को उस वक्त मिलता है जबकि वह सब्र का सुबूत दे। यानी पेशवाई का मकाम उन्हें उस वक्त मिला जबकि उन्होंने दुनिया से सब्र किया। (तपसीर इब्ने कसीर)

लोग उसी शख्स या गिरोह को अपना इमाम तस्लीम करते हैं जो उन्हें अपने से बुलन्द दिखाई दे। जो उस वक्त उसूल के लिए जिए जबकि लोग मफाद के लिए जीते हैं। जो उस वक्त इंसफ की हिमायत करे जबकि लोग कैम की हिमायत करने लगते हैं। जो उस वक्त बर्दाश्त करे जबकि लोग इत्तिकाम लेते हैं। जो उस वक्त अपने को महरूम पर राजी कर ले जबकि लोग पाने के लिए दौड़ते हैं। जो उस वक्त हक के लिए कुर्बान हो जाए जबकि लोग

सिर्फ अपनी जात के लिए क़र्बान होना जानते हैं। यही सब्र है और जो लोग इस सब्र का सबूत दें वही कौमों के इमाम बनते हैं।

दीन में नई-नई तशरीह व ताबीर निकाल कर जो लोग इख़्तेलाफ़ात खड़े करते हैं वे अपने लिए यह ख़तरा मोल ले रहे हैं कि आख़िरकार खुदा उनकी बात को रद्द कर दे और इसके बाद अबदी ज़िल्लत के सिवा और कुछ उनके हिस्से में न आए। आदमी अक्सर हालात में सबक नहीं लेता, यहां तक कि जो कुछ दूसरों पर गुज़रा वही उस पर भी न गुज़र जाए।

وَأَمَّا يَرُوا الْآسَافَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُزْ فَتُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا كُلُّ مِنْهُ أَعْمَامٌ  
وَأَنفُسُهُمْ أَفْلَا يُبْصِرُونَ ۚ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ قُلْ  
يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا الْإِيمَانُ لَهُمْ وَلَاهُمْ يُنْظَرُونَ ۚ فَأَعْرَضَ عَنْهُمْ  
وَأَنْتَظِرُ أَرْبَاعَهُمْ مُّتَنَظِّرُونَ ۚ

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल जमीन की तरफ हाँककर ले जाते हैं। फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके चौपाए खाते हैं और वे खुद भी। फिर क्या वे देखते नहीं। और वे कहते हैं कि यह फैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि फैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफ़ा न देगा जिन्होंने इंकार किया। और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। तो उनसे दूर रहो और इंतज़ार करो, ये भी मुंज़िर हैं। (27-30)

कदीम मक्का में मुशिरकीन हर एतबार से ग़ालिब और सरबुलन्द थे और इस्लाम हर एतबार से परत और मग़लूब हो रहा था। चुनांचे मुशिरकीन इस्लाम और मुसलमानों का मजाक उड़ाते थे। इसका जवाब अल्लाह तआला ने एक मिसाल के जरिये दिया। फरमाया, क्या तुम खुदा की इस क़ुदरत को नहीं देखते कि एक जमीन बिल्कुल ख़ुश्क और चटियल पड़ी होती है। बजाहिर यह नामुमकिन मालूम होता है कि वह कभी सरसब्ज व शादाब हो सकेगी। मगर इसके बाद खुदा बादलों को लाकर उसके ऊपर बारिश बरसाता है तो चन्द दिन में यह हाल हो जाता है कि जहां ख़ाक उड़ रही थी वहां सब्जा लहलहाने लगता है। खुदा की यही क़ुदरत यह भी कर सकती है कि इस्लाम को इस तरह फ़रोज़ दे कि वही वक्त का ग़ालिब फ़िज़ बन जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُطِيعُوا الْكُفْرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا  
حَكِيمًا ۚ وَاتَّبِعُوا مَا يَأْمُرُ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۚ  
وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी, अल्लाह से डरो और मुंकिरों और मुनाफ़िकों (पाखंडियों) की इताअत (आज्ञापालन) न करो, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। और पैरवी करो उस चीज़ की जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो तुम लोग करते हो। और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह कारसाज (कार्यपालक) होने के लिए काफी है। (1-3)

पैग़म्बर इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेआमेज़ (विशुद्ध) हक के दाजी थे। इस दुनिया में जो शख्स बेआमेज़ हक का दाजी बनकर उठे उसे निहायत होसलाशिकन (निराशाजनक) हालात का सामना करना पड़ता है। वह पूरे माहौल में अजनबी बनकर रह जाता है। किसी का दुनियापरस्ताना मजहब दाजी के आख़िरपसंदाना दीन से मेल नहीं खाता। किसी की ज़मानासाजी (महत्वाकांक्षा) दाजी की बेलाग हक़परस्ती से टकराती है। कोई दीन को अपनी कौमपरस्ती का जमीमा (परिशिष्ट) बनाए हुए होता है, जबकि दाजी का मुतालबा यह होता है कि दीन को ख़ालिस ख़ुदापरस्ती की बुनियाद पर कायम किया जाए।

ऐसी हालत में दाजी अगर माहौल का दबाव कुबूल कर ले तो बहुत से लोग उसका साथ देने वाले मिल जाएंगे। और अगर वह ख़ालिस हक़ पर कायम रहे तो एक ख़ुदा के सिवा कोई और उसका सहारा नज़र नहीं आता। मगर दाजी को किसी हाल में पहला रास्ता नहीं इख़्तियार करना है। उसे अल्लाह के भरोसे पर ख़ालिस हक़ पर कायम रहना है। और यह उम्मीद रखना है कि ख़ुदा हकीम और अलीम है, वह जरूर अपने बंदे की मदद फरमाएगा।

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ الَّتِي تُظَاهَرُونَ  
مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللَّهُ  
يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۚ اُدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ ۚ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ  
فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ  
فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ ۚ وَلَكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे, और न तुम्हारी बीवियों को जिनसे तुम जिहार (तलाक़ देने की एक सूत जिसमें शौहर अपनी बीबी से कहता था कि तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हो।) करते हो तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे मुंह

बोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया। ये सब तुम्हारे अपने मुंह की बातें हैं। और अल्लाह हक बात कहता है और वह सीधा रास्ता दिखाता है। मुंह बोले बेटों को उनके बापों की निस्वत से फुकारो यह अल्लाह के नजदीक ज्यादा मुसिफाना बात है। फिर अगर तुम उनके बाप को न जानो तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे रफीक हैं। और जिस चीज में तुमसे भूल चूक हो जाए तो उसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं मगर जो तुम दिल से इरादा करके करो। और अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (4-5)

आदमी के सीने में दो दिल न होना बताता है कि तजादे फिक्री (विचारिक द्वंद) खुदा के तख्तीकी मंसूबे के खिलाफ है। जब इंसान को एक दिल दिया गया है तो उसकी सोच भी एक होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि एक ही दिल में बयकवक्त इख़लास (निष्ठा) भी हो और निफ़क (कपट) भी, खुदापरस्ती भी हो और ज़मानापरस्ती भी, इंसान भी हो और ज़ुम भी, घमंड भी हो और तवाजोअ भी। आदमी दोनों में से कोई एक ही हो सकता है और उसे एक ही होना चाहिए।

यह एक उसूली बात है। इसी के तहत जमानए जाहिलियत की रस्में मसलन जिहार व तबन्नियत आती हैं। अगर जाहिलियत का एक रवाजी कानून यह था कि अगर कोई शख्स अपनी बीवी से यह कह दे कि : 'तू मेरे ऊपर मेरी मां की पीठ की तरह है' तो उसकी बीवी उसके ऊपर हमेशा के लिए हाराम हो जाती थी जिस तरह किसी की मां उसके लिए हाराम होती है। इसे जिहार कहते हैं। इसी तरह मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) के मामले में भी उनका अकीदा था कि वह बिल्कुल सुलबी (सगे) बेटे की तरह हो जाता है। उसे हर मामले में वही दर्जा दे दिया गया था जो हकीकी औलाद का होता है। कुरआन ने इस रवाज को बिल्कुल ख़त्म कर दिया। कुरआन में एलान किया गया कि यह तख्तीकी निज़ाम के सरासर ख़िलाफ है कि हकीकी मां और जवान से कही हुई मां या हकीकी बेटा और मुंह बोला बेटा दोनों की हैसियत बिल्कुल एक हो जाए।

आदमी अगर बेख़बरी में कोई ग़लती करे तो वह खुदा के यहां काबिले माफी है। मगर जब किसी मामले की हकीकत पूरी तरह वाज़ेह हो जाए, इसके बावजूद आदमी अपनी ग़लत रविश को न छोड़े तो इसके बाद वह काबिले माफी नहीं रहता।

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ  
بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ  
تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا

और नबी का हक मोमिनों पर उनकी अपनी जान से भी ज्यादा है, और नबी की वीवियां उनकी माएं हैं। और रिश्तेदार खुदा की किताब में, दूसरे मोमिनीन और मुहाजिरिन की बनिस्वत, एक दूसरे से ज्यादा तअल्लुक रखते हैं। मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है। (6)

पैग़म्बर अपनी जिंदगी में जाती तौर पर और वफ़ात के बाद उसूली तौर पर अहले ईमान के लिए सबसे ज्यादा मुकद्दम हैसियत रखता है। इसकी वजह यह है कि पैग़म्बर दुनिया में खुदा का नुमाइंदा होता है। पैग़म्बर की तालीमात की अज़मत को कायम रखने के लिए ज़रूरी है कि उसका वजूद लोगों की नजर में मुकद्दस वजूद हो। यहां तक कि उसकी वीवियां भी लोगों के लिए माओं की तरह काबिले एहताराम करार पाएं। पैग़म्बर और आपकी वीवियों के बाद उम्मत के बकिया लोगों के तअल्लुकात की बुनियाद यह है कि रहमी (खून के) रिश्ते रखने वाले 'क़रीबी रिश्तेदार सबसे पहले हक़दार' के उसूल पर एक दूसरे के हक़दार ठहरें। दीनी ज़रूरत के तहत वक्ती तौर पर ग़ैर रिश्तेदारों में हुक्क की शिरकत कायम की जा सकती है। जैसा कि हिज़रत के बाद इब्तिदाई ज़माने में मदीना में किया गया। मगर मुस्तक़िल मआशिरती इतिज़ाम के एतबार से हकीकी रिश्तेदार ही सबसे पहले हक़दार हैं और हमेशा रहें।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَ مِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَ  
عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا عَلِيمًا ۚ لِيُشْكَلَ الصِّدِّيقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ  
وَاعِدًا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا

और जब हमने पैग़म्बरों से उनका अहद (वचन) लिया और तुमसे और नूह से और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से। और हमने उनसे पुख़्ता अहद लिया। ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे, और मुंकिरों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (7-8)

अल्लाह तआला ने इंसान को जिस मंसूबे के तहत पैदा किया है वह इस्तेहान है। यानी मौजूदा दुनिया में हर किसम के असबाबे हयात देकर उसे आजादाना माहौल में रखना और फिर हर एक के अमल के मुताबिक उसे अबदी (चिरस्थायी) इनाम या अबदी सज़ा देना।

जिंदगी की यह इस्तेहानी नौइयत लाज़िमन यह चाहती है कि आदमी को अस्ल सूरतेहाल से पूरी तरह बाख़बर कर दिया जाए। इस मक़सद के लिए अल्लाह तआला ने पैग़म्बरी का सिलसिला कायम फरमाया। पैग़म्बरी कोई लाउडस्पीकर का एलान नहीं है। यह एक बेहद सन्न आज़मा काम है। इसलिए तमाम पैग़म्बरों से निहायत एहतियाम के साथ यह अहद लिया गया कि वे पैग़ामरसानी के इस नाज़ुक काम को उसके तमाम आदाब और तकाज़ों के साथ अंजाम देंगे। और इसमें हरगिज़ कोई अदना कोताही न करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ  
رِيحًا وَجُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۖ إِذْ جَاءُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَ  
مِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّونَ

بِاللَّهِ الظُّنُونَا ۚ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब तुम पर फौजें चढ़ आईं तो हमने उन पर एक आंधी भेजी और ऐसी फौज जो तुम्हें दिखाई न देती थी। और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। जबकि वे तुम पर चढ़ आए, तुम्हारे ऊपर की तरफ से और तुम्हारे नीचे की तरफ से। और जब आंखें खुल गईं और दिल गलों तक पहुंच गए और तुम अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक्त ईमान वाले इस्तेहान में डाले गए और बिल्कुल हिला दिए गए।

(9-11)

ग़ज़वए अहज़ाब (5 हि०) अरब क़बाइल और यहूद की तरफ से मदीना पर मुशतरक हमला था। इसमें हमलाआवरों की तादाद तकरीबन 12 हजार थी। मुसलमान इस अजीम फौज से लड़ने की ताकत न रखते थे। मगर अल्लाह तआला ने अपनी खुसूसी तदबीरों के जरिए दुश्मनों को इस क़द्र ख़ैफज़दा किया कि तकरीबन एक महीने के मुकाबले (श्राव) के बाद वे खुद मदीना को छोड़कर चले गए।

इस तरह के सख़्त हालात इस्लामी दावत के साथ इसलिए पेश आते हैं कि मुसलमानों के गिरोह से मुख़्लिसीन (निष्ठावानों) और ग़ैर मुख़्लिसीन को अलग कर दें। और दूसरे यह कि दुश्मन ताकतों को दिखा दें कि खुदा अपने दीन का खुद हामी है। वह किसी हाल में उसे मगलूब (परास्त) होने नहीं देगा।

وَأَذِيقُوا الْبُنْفُتُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۚ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُلِواُ الْفِتْنَةَ لَاتَوَّاهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُؤْتُونَ الْأَذْبَارَ ۖ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ۝ قُلْ لَّنْ يَنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذْ لَا تَمْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِيكُم مِّنَ اللَّهِ ۚ إِن أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً

وَأَلَّا يَحْدُوثَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

और जब मुनाफ़िकीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कहते थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादा हमसे किया था वह सिर्फ़ फ़रेब था। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिब वालो, तुम्हारे लिए ठहरने का मौका नहीं, तो तुम लौट चलो। और उनमें से एक गिरोह पैगम्बर से इजाजत मांगता था, वह कहता था कि हमारे घर ग़ैर महफूज़ हैं और वे ग़ैर महफूज़ नहीं। वे सिर्फ़ भागना चाहते थे। और अगर मदीना के अतराफ से उन पर कोई घुस आता और उन्हें फ़ितने की दावत देता तो वे मान लेते और वे इसमें बहुत कम देर करते। और उन्होंने इससे पहले अल्लाह से अहद किया था कि वे पीठ न फेरेंगे। और अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) की पूछ होगी। कहो कि अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा। और इस हालत में तुम्हें सिर्फ़ थोड़े दिनों फ़ायदा उठाने का मौका मिलेगा। कहो, कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचाए अगर वह तुम्हें नुक़स्तान पहुंचाना चाहे, या वह तुम पर रहमत करना चाहे। और वे अपने लिए अल्लाह के मुकाबले में कोई हिमायती और मददगार न पाएंगे। (12-17)

ग़ज़वए अहज़ाब में ख़तरात का तूमन देखकर मुनाफ़िक़ विस्म के लोग क़बरा उठे और भागने की राहें तलाश करने लगे। मगर जो सच्चे अहले ईमान थे वे अल्लाह के एतमाद पर कायम रहे। वे जानते थे कि आगे भी खुदा है और पीछे भी खुदा है। इस्लाम दुश्मनों के ख़तरे से भागना अपने आपको खुदा के ख़तरे में डालना है जो कि इससे ज्यादा सख़्त है। उन्हें यकीन था कि अगर हम दुश्मनों के मुकाबले में जमे रहे तो अल्लाह की मदद हमें हासिल होगी और अगर हम इस्लाम के महाज को छोड़कर भाग जाएं तो आख़िरकार दुनिया में भी अपने आपको हलाकत से बचा नहीं सकते और आख़िरत में खुदा की होलनाक पकड़ इसके अलावा है।

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلْهُمْ إِلَهَانَا ۚ لَا يَأْتُونَ النَّبَأَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ أَشْحَذَ عَلَيْكُمْ ۚ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يُنْظَرُونَ ۚ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَإِذَا ذُهِبَ الْخَوْفُ سَكَتُوا بِالسِّنَةِ ۚ حَدَادِ أَشْحَذَ عَلَى الْغَيْثِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۚ وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابَ يَوَدُّذُ الْوَاتِئِهِمْ بِأَدُونِ فِي الْأَحْزَابِ يَسْأَلُونَ عَنِ النَّبَإِ ۚ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۚ



अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो तुम में से रोकने वाले हैं और जो अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ। और वे लड़ाई में कम ही आते हैं। वे तुमसे बुल्ल (कृपणता) करते हैं। पस जब ख़ौफ पेश आता है तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आंखें उस शख्स की आंखों की तरह गर्दिश कर रही हैं जिस पर मौत की बेहोशी तारी हो। फिर जब ख़तरा दूर हो जाता है तो वे माल की हिस् में तुमसे तेज जबानी के साथ मिलते हैं। ये लोग यकीन नहीं लाए तो अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। और यह अल्लाह के लिए आसान है। वे समझते हैं कि फौजें अभी गई नहीं हैं। और अगर फौजें आ जाएं तो ये लोग यही पसंद करें कि काश हम बद्दुओं के साथ देहात में हों, तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें। और अगर वे तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते। (18-20)

एक आदमी वह है जो कुर्बानी के वक़्त पीछे रह जाए तो उस पर शर्मिंदगी तारी होती है। उसका बोलना बंद हो जाता है। दूसरा शख्स वह है जो कुर्बानी के वक़्त कुर्बानी नहीं देता। और फिर दूसरों को भी इससे रोकता है। यह कोताही पर डिठाई का इजाफा है। कोताही कबिले माफी हो सकती है मगर डिठाई कबिले माफी नहीं।

जिन लोगों के अंदर डिठाई की नफिसयात हो वे बजाहिर कोई अच्छा अमल करें तब भी वे बेकीमत हैं। क्योंकि अमल की अस्ल रूह इख़लास है और वही उनके अंदर मौजूद नहीं।

दीन के लिए कुर्बानी न देना हमेशा दुनिया की मुहब्बत में होता है। आदमी अपनी दुनिया को बचाने के लिए अपने दीन को खो देता है। इसलिए ऐसे लोग जहां देखते हैं कि दीन में दुनिया का फायदा भी जमा हो गया है तो वहां वे ख़ूब अपने बोलने का कमाल दिखाते हैं ताकि दीन के साथ ज्यादा से ज्यादा तअल्लुक जहिर करके ज्यादा से ज्यादा फायदा हासिल कर सकें। मगर जहां दीन का मतलब कुर्बानी हो वहां दीनदार बनने से उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं होती।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ  
الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۚ وَلَبَّارًا الْبُؤْسُونَ الْأَخْزَابَ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا  
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا  
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قُتِيَ  
مِنْهُمْ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُ ۚ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۚ لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ

يُصَدِّقُهُمْ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ ۚ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنِ الشَّاءَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ  
غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना था, उस शख्स के लिए जो अल्लाह का और आखिरत के दिन का उम्मीदवार हो और कसरत से अल्लाह को याद करे। और जब ईमान वालों ने फौजों को देखा, वे बोले यह वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा। और इसने उनके ईमान और इताअत में इजाफा कर दिया। ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) को पूरा कर दिखाया। पस उनमें से कोई अपना जिम्मा पूरा कर चुका और उनमें से कोई मुंजिर है। और उन्होंने जरा भी तब्दीली नहीं की। ताकि अल्लाह सच्चाओं को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफिकों (पाखंडियों) को अजाब दे अगर चाहे या उनकी तौबा कुबूल करे। वेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (21-24)

रसूल और असहाबे रसूल (रसूल के साथियों) की ज़िंदगियां क़ियामत तक के अहले ईमान के लिए ख़ुदापरस्ताना ज़िंदगी का नमूना हैं, इस बात का नमूना कि अल्लाह और आखिरत की उम्मीदवारी के मअना क्या हैं। अल्लाह को याद करने का मतलब क्या होता है। मुश्किल हालात में साबितकदमी किसे कहते हैं। ख़ुदा के वादों पर भरोसा किस तरह किया जाता है। इजाफापज़ीर (वृद्धिशील) ईमान क्या है और वह क्योंकर हासिल होता है। ख़ुदा से किए हुए अहद को पूरा करने का तरीका क्या है।

रसूल और असहाबे रसूल ने इन चीजों का आखिरी नमूना कायम कर दिया। शदीदतरीन हालात में भी उन्होंने कोई कमजोरी नहीं दिखाई। उन्होंने हर मामले में इस्लामी फ़िक्र और इस्लामी किरदार का कामिल सुबूत दिया। इस्तेहान का लम्हा आने से पहले भी वे हक पर कायम थे और इस्तेहान का लम्हा आने के बाद भी वे हक पर कायम रहे।

फिर रसूल और असहाबे रसूल की ज़िंदगियां ही इस बात का नमूना भी हैं कि ख़ुदा के यहां किसी का फैसला इस्तेहान के बग़ैर नहीं किया जाता। ख़ुदा का तरीका यह है कि वह शदीद हालात पैदा करता है ताकि सच्चे अहले ईमान और झूठे दावेदार एक दूसरे से अलग हो जाएं। इस ख़ुदाई कानून में न पहले किसी का इस्तसना (अपवाद) था और न आइंदा किसी का इस्तसना होगा।

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَأْلُوا خَيْرًا ۚ وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ  
وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۝ وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوا لَهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ

صِيَاصِيهِمْ وَقَدَّتْ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبُ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَآلِيسُونَ فَرِيقًا  
وَأُورِثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَضْلَلْتُمْ تَطَوُّهُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى  
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا

और अल्लाह ने मुंकिरों को उनके गुस्से के साथ फेर दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई और मोमिनीन की तरफ से अल्लाह लड़ने के लिए काफी हो गया। अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला जबरदस्त है। और अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने हमलाआवरों का साथ दिया उनके किलों से उतारा। और उनके दिलों में उसने रौब डाल दिया, तुम उनके एक गिरोह को कत्ल कर रहे हो और एक गिरोह को कैद कर रहे हो। और उसने उनकी जमीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम्हें वारिस बना दिया। और ऐसी जमीन का भी जिस पर तुमने कदम नहीं रखा। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। (25-27)

गज़वए सुंदक (अहज़ाब) में हालात बेहद सख्त थे। मगर उसमें बाक़यदा जंग की नौबत नहीं आई। अल्लाह तआला ने हवा का तूफ़ान और फरिशतों का लश्कर भेजकर दुश्मनों को इस तरह सरासीमा (हतोत्साहित) किया कि वे खुद ही मैदान छोड़कर चले गए। मदीना के यहूद (बनू कुरैजा) का मुसलमानों से सुलह और अमन का मुआहिदा था। मगर जंग अहज़ाब के मौके पर उन्होंने गद्दारी की। वे मुआहिदे को तोड़कर मुश्रीकीन के साथी बन गए। जब हमलाआवरों का लश्कर मदीना से वापस चला गया तो अल्लाह के हुक़म से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू कुरैजा की बस्तियों पर चढ़ाई की। इस्लामी फौज ने उनके किलों को घेर लिया। 25 दिन तक मुहासिरा (घेराव) जारी रहा। आखिर में खुद उनकी दरख्वास्त पर साद बिन मुआज हक़म (निर्णायक) मुक़र्रर हुए। हज़रत साद बिन मुआज ने वही फैसला किया जो खुद उनकी किताब तौरात में ऐसे मुजरिमीन के लिए मुक़र्रर है। यानी बनू कुरैजा के सब जवान कत्ल कर दिए जाएं। औरतें और लड़के कैदे गुलामी में ले लिए जाएं। और उनके माल और जायदाद को जब्त कर लिया जाए। (इस्तसना 20 : 10-14)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ  
أُمْتَعِكُنَّ وَأَسْرَحِكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۚ وَإِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالْآرَ  
الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ مَنْ يَأْتِ  
مِنكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ يُضَعَّفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۖ وَكَانَ ذٰلِكَ  
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا

ऐ नबी, अपनी वीवियों से कहो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी जीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ माल व मत्ताअ देकर ख़ूबी के साथ रुख़्सत कर दूँ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से नेक किरदारों के लिए बड़ा अज़्र मुहय्या कर रखा है। ऐ नबी की वीवियों, तुम में से जो कोई खुली बेहयाई करेगी, उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा। और यह अल्लाह के लिए आसान है। (28-30)

हिजरत ने मुसलमानों की मआशियात को दरहम बरहम कर दिया था। मजीद यह कि हिजरत के बाद इस्लाम दुश्मनों ने मुसलमानों को मुसलसल जंग में उलझा दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों की मआशी (आर्थिक) हालत बिल्कुल बर्बाद होकर रह गई। इसका सबसे ज्यादा असर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ा। आपके घर वालों का हाल यह हुआ कि नागुजीर (मूलभूत) जरूरत की फ़राहमी भी मुश्किल हो गई। यहाँ तक कि आपकी अजवाज (वीवियों) ने तंग आकर आप से नफ़क़ा (खर्च) का मुतालबा शुरू कर दिया।

अजवाज की तरफ से सिर्फ़ जरूरी ख़र्च का मुतालबा किया गया था। उसे अल्लाह ने जीनते दुनिया के मुतालबे से ताबीर फ़रमाया। यह दरअस्तल शिद्दते इज़हार है। इसी तरह 'बेहयाई' का लफ़्ज़ भी यहाँ शिद्दते इज़हार के लिए आया है। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तारीख़ के एक अहमतरिन मिशन की तक्मील पर मामूर (नियुक्ति) थे। यानी दोरे शिर्क का ख़ात्मा और दोरे तीहीद का कियाम। ऐसी हालत में किसी भी दूसरी चीज़ को अहमियत देना आपके लिए मुमकिन न था। इसलिए अजवाजे रसूल से फ़रमाया गया कि या तो सब्र और कनाअत (संतोष) के साथ रसूल के साथ रहो। और अगर यह मंज़ूर नहीं है तो खुश उस्तूबी के साथ अलग हो जाओ। ख़ानगी निजाअ (विवाद) खड़ी करके पैग़म्बर के ज़ेहन को मुंतशिर करना किसी तरह भी काबिले बर्दाश्त नहीं।

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا تُوْتِيَهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ۚ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۚ

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करेगी और नेक अमल करेगी तो हम उसे उसका दोहरा अज़्र देंगे। और हमने उसके लिए वाइज़त रोज़ी तैयार कर रखी है। ऐ नबी की वीवियों, तुम आम औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुम अल्लाह से डरो तो तुम लहजे में नर्मी न इज़्लियार करो कि जिसके दिल में बीमारी है वह लालच में पड़ जाए और मारुफ़ (सामान्य नियम) के मुताबिक़ बात कहो। (31-32)

पैगम्बर की बीवियों को मआशिरें में एक तरह का कायदाना (नेतृत्वपरक) मकाम हासिल था। ऐसे लोगों को हक के आगे झुकने के लिए उससे ज्यादा कुर्बानी देनी पड़ती है। जितनी एक आम आदमी को देनी पड़ती है। यही वजह है कि ऐसे लोगों से अल्लाह तआला ने दोहरा इनाम का वादा फरमाया है। वे अमल करने के लिए दूसरों से ज्यादा कुव्वते इरादी इस्तेमाल करते हैं। इसलिए वे अपने अमल की कीमत भी दूसरों से ज्यादा पाते हैं।

पैगम्बर की औरतों की इसी खुसूसियत की वजह से उनका रक्त बार-बार दूसरों से कायम होता था। लोग दीनी उमूर (मामलों) में रहनुमाई के लिए उनके पास आते थे। इसलिए हुक्म दिया गया कि दूसरों से बात करो तो किसी कद्र खुशक अंदाज में बात करो। इस तरह बेतकलुफ अंदाज में बात न करो जिस तरह एक महरम रिश्तेदार से बात की जाती है।

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۖ وَاذْكُرْنَ مَا يُكَلِّفُ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ لَيْلٍ وَالنَّهَارِ ۚ إِنَّا لِلَّهِ كَانُ لَطِيفًا خَبِيرًا ۝

और तुम अपने घर में करार से रहो और पहले की जाहिलियत की तरह दिखलाती न फिरो। और नमाज कायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम अहलेबैत (रसूल के घर वालों) से आलूदगी को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे। और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतों और हिक्मत (तत्वज्ञान) की जो तालीम होती है उसे याद रखो। वेशक अल्लाह बारीकबी (सूक्ष्मदर्शी) है खबर रखने वाला है। (33-34)

यहां अजवाजे रसूल को खिताब करते हुए मुस्लिम ख्वातीन को आम हिदायत दी गई है कि वे अपने घरों में किस तरह रहें। उन्हें उसूलन अपने घर के दायरे में रहना चाहिए। दुनियादार औरतों की तरह जेब व जीनत (बनाव-सिंगार) की नुमाइश उनका मक्सूद नहीं होना चाहिए। उनकी तक्जोह का मर्कज यह होना चाहिए कि वे अल्लाह की इबादतगुजार बन जाएं। वे अपने असासे (पूँजी) को अल्लाह के लिए खर्च करें। जिंदगी के मामलात में अल्लाह और रसूल का जो हुक्म मिले उसे फौरन इस्त्रियार कर लें। वे अल्लाह और रसूल की बातों को सुनने और समझने में अपना वक्त गुजारें।

यह तर्जिज़गी वह है जो आदमी को पाकबाज बनाता है। और पाकबाज आदमी ही अल्लाह तआला को पसंद है।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّالِحِينَ وَالصَّالِحَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

वेशक इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें। और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें। और फरमांवरदारी करने वाले मर्द और फरमांवरदारी करने वाली औरतें। और रास्तबाज (सत्यनिष्ठ) मर्द और रास्तबाज औरतें। और सन्न करने वाले मर्द और सन्न करने वाली औरतें। और खुशूअ (विनय) करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरतें। और सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और रोजा रखने वाले मर्द और रोजा रखने वाली औरतें। और अपनी शर्मणाहों की हिफजत करने वाले मर्द और हिफजत करने वाली औरतें। और अल्लाह को कसस्त (अधिकता) से याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें। इनके लिए अल्लाह ने मग़्फ़िरत और बड़ा अन्न मुहय्या कर रखा है। (35)

इस आयत में बताया गया है कि अल्लाह तआला एक मर्द या एक औरत को जैसा देखना चाहता है वह क्या है। वे ये सिफ़त हैं इस्लाम, ईमान, फरमांवरदारी, सिद्क (सच्चाई), सन्न, खुशूअ (विनय), सदका, रोजा, इफ़्तत (अस्मिता), अल्लाह का जिक्र।

इन दस अल्फ़ाज में इस्लामी अक़ीदे और इस्लामी किरदार के तमाम पहलू सिमट आए हैं। इसका खुलासा यह है कि हर वह शख्स जो अल्लाह के यहां मग़्फ़िरत और इनाम का उम्मीदवार हो उसे ऐसा बनना चाहिए कि वह अल्लाह के हुक्म के आगे झुकने वाला हो। वह अल्लाह पर यकीन करने वाला हो। वह अपने पूरे वजूद के साथ अल्लाह के लिए एकसू हो जाए। उसकी जिंदगी कौल और फेअल के तज़ाद (अन्तर्विरोध) से ख़ाली हो। वह हर हाल में जमा रहने वाला हो। अल्लाह की बड़ाई के एहसास ने उसे मुतवाजेअ (विनम्र) बना दिया हो। वह दूसरों की जरूरत पूरी करने को भी अपनी जिम्मेदारी शुमार करता हो। वह रोजादार हो जो नपस को कंट्रोल करने की तर्बियत है। वह शहवानी ख़ाहिशात के मुन्नबले में अफ़ीफ़ (सुशील) और पाक दामन हो। उसके सुबह व शाम अल्लाह की याद में बसर होने लगे।

ये औसाफ़ जिस तरह मर्दों से मल्लूब हैं उसी तरह वे औरतों से भी मल्लूब हैं। इन औसाफ़ के इज़हार का दायरा कुछ एतबार से दोनों के दर्मियान मुख़्तलिफ़ है। मगर जहां तक खुद औसाफ़ का तअल्लुक है वह दोनों के लिए एकसां (समान) हैं। कोई औरत हो या कोई

सूरह-33. अल-अहज़ाब

1133

पारा 22

मर्द वह उसी वक्त खुदा के यहां काबिले कुबूल ठहरेगा जबकि वह इन दस सिफ्तों को अपना कर खुदा के यहां पहुंचे।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُبِينًا

किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फैसला कर दें तो फिर उनके लिए उसमें इस्तिथार बाकी रहे। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा तो वह सरीह गुमराही में पड़ गया। (36)

इंसान को खुदमुख्तार (इच्छानुसार काम करने वाला) पैदा किया गया है। इस खुदमुख्तारी को उसे खुदा के हवाले करना है। यही मौजूदा दुनिया में इंसान का अस्त इस्तेहान है। वही शख्स हिदायत पर है जो इस नाजुक इस्तेहान में पूरा उतरे।

इसकी एक मिसाल और अवल में जैद और जैनब के निकाह का वाक्या है। जैद एक आजादकरदा गुलाम थे। इसके बरअक्स जैनब क़ैश के आला खानदान से तअल्लुक रखती थीं। क्योंकि वह उमैमा बिनत अब्दुल मुत्तलिब की साहबजादी थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जैद का निकाह जैनब से करना चाहा तो जैनब के घर वाले इसके लिए तैयार नहीं हुए। खुद जैनब ने कहा कि : 'मैं नसब (वंश) में जैद से बेहतर हूं।' मगर जब उन लोगों को कुरआन की मज़्हूआ आयत सुनाई गई तो वे लोग फ़ैरन राजी हो गए। सन् 4 हि० में उनका निकाह कर दिया गया।

यही इस्लाम का मिजाज है और यही मिजाज हर मुसलमान मर्द और औरत में होना चाहिए।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفَى فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا

और जब तुम उस शख्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया और तुमने इनाम

पारा 22

1134

सूरह-33. अल-अहज़ाब

किया कि अपनी बीबी को रोके रखो और अल्लाह से डरो। और तुम अपने दिल में वह बात छुपाए हुए थे जिसे अल्लाह जाहिर करने वाला था। और तुम लोगों से डर रहे थे, और अल्लाह यादा हक्मर है कि तुम उससे डरो। फिर जब जैद उससे अपनी गरज तमाम कर चुका, हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया ताकि मुसलमानों पर अपने मुंह बोले बेटों की बीबियों के बारे में कुछ तंगी न रहे। जबकि वे उनसे अपनी गरज पूरी कर लें। और अल्लाह का हुक्म होने वाला ही था। (37)

हजरत जैद के साथ हजरत जैनब का निकाह सन् 4 हि० में हुआ। मगर निबाह न हो सका, अगले साल दोनों में अलेहिदगी हो गई। हजरत जैद ने जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तलाक का इरादा जाहिर किया तो आपने सबब पूछा। उन्होंने कहा कि वह अपने खानदानी शरफ (यश) की वजह से मेरे मुकाबले में बड़ाई का एहसास रखती हैं। ताहम आपने उन्हें रोका। बार-बार की दरख्वास्त पर आखिरकार आपने उन्हें अलेहिदगी की इजाजत दे दी।

जैद और जैनब के निकाह से अवलन यह रस्म तोड़ी गई थी कि मआशिरती फर्क को निकाह में हायल नहीं होना चाहिए। मगर जब उनके दर्मियान अलाहिदगी हो गई तो अब अल्लाह तआला की मर्जी यह हुई कि जैनब को एक और ग़लत रस्म के तोड़ने का जरिया बनाया जाए।

कदीम जाहिलियत में यह रवाज था कि मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) को बिल्कुल हकीकी बेटे की तरह समझते थे। हर एतबार से उसके वही हुक्क थे जो हकीकी बेटे के होते हैं। इस रस्म को तोड़ने की बेहतरीन सूरत यह थी कि तलाक के बाद हजरत जैनब का निकाह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कर दिया जाए। जैद अल्लाह के रसूल के मुतबन्ना थे। यहां तक कि उन्हें जैद बिन मुहम्मद कहा जाने लगा था। ऐसी हालत में मुंह बोले बेटे की तलाकशुदा औरत से आपका निकाह करना उस रस्म के खिलाफ एक धमाके की हैसियत रखता था। क्योंकि उनका ख्याल था कि मुतबन्ना की मंकूहा (निकाह में आई औरत) बाप पर हराम है जिस तरह हकीकी बेटे की मंकूहा बाप पर हराम होती है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेशगी तौर पर बताया जा चुका था कि अगर दोनों में अलाहिदगी हुई तो इस जाहिली रस्म को तोड़ने की तदबीर के तौर पर जैनब को आपके निकाह में दे दिया जाएगा। चूंकि इस किस्म का निकाह कदीम माहिल में जबरदस्त बदनामी का जरिया होता। इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरत जैद को रोकते रहे कि अगर वह तलाक न दें तो मैं इस शदीद आजमाइश से बच जाऊंगा। मगर जो चीज इल्मे इलाही में मुफ़्दर थी वह होकर रही। जैद ने जैनब को तलाक दे दी और उस रस्म को तोड़ने की अमली तदबीर के तौर पर सन् 5 हि० में जैनब का निकाह आप से कर दिया गया।



مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فَبِمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ۖ الَّذِينَ يُبَيِّعُونَ رَسُولَ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ۖ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

॥

पैगम्बर के लिए इसमें कोई हरज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया हो। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीका) उन पैगम्बरों के साथ रही है जो पहले गुजर चुके हैं। और अल्लाह का हुक्म एक कतई फ़ैसला होता है। वे अल्लाह के पैग़ामों को पहुँचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातम (समापक) हैं। और अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है। (38-40)

इस वाक्य के बाद हब्स तवक्क़ल आपके खिलाफ़ ज़बरदस्त प्रेमण्डा शुरू हो गया। कहा जाने लगा कि पैगम्बर ने अपनी बहू से निकाह कर लिया, हालाँकि बेटे की मंकूहा बाप पर हाराम होती है। फरमाया कि मुहम्मद का मामला तो यह है कि उनकी सिर्फ़ लड़कियाँ हैं। वह मर्दों में से किसी के बाप ही नहीं। ज़ैद बिन हारिसा उनके सिर्फ़ मुँह बोले बेटे थे और मुँह बोला बेटा वाकई बेटा कैसे हो सकता है कि उसकी तलाक़शुदा बीवी से निकाह आपके लिए जाइज न हो।

आप खुदा के पैगम्बर थे, फिर भी आपके साथ इतने उतार चढ़ाव के वाक़ेयात क्यों पेश आए। इसका जवाब यह है कि पैगम्बर पर अगरचे खुदा की 'वही' आती है। मगर उसे आम इंसानों की तरह रहना होता है। मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में उसे भी वैसे ही हालात पेश आते हैं जैसे हालात दूसरों को पेश आते हैं। अगर ऐसा न हो तो पैगम्बर की ज़िंदगी आम इंसानों पर हुज्जत (तर्कवित्त) न बन सके। यही वजह है कि पैगम्बराना रहनुमाई हकीकी हालात के ढाँचे में दी जाती है न कि मसूरी हालात के ढाँचे में।

ख़ातमुन्बिख़ीन का लफ्ज़ी तर्जुमा यह है कि आप नबियों की मुहर हैं। ख़ातम का लफ्ज़ स्टैम्प (Stamp) के लिए नहीं आता है बल्कि सील (Seal) के लिए आता है। यानी आख़िरी अमल। लिफाफ़े को सील करने का मतलब उसे आख़िरी तौर पर बंद करना है कि इसके बाद न कोई चीज़ उसके अंदर से बाहर निकले और न बाहर से अंदर जाए। चुनांचे अरबी में कौम का ख़ातम कौम के आख़िरी शख्स को कहा जाता है।

इस वाक्य के जेल में आपके ख़ातमुन्बिख़ीन (अंतिम नबी) होने के एलान का मतलब यह है कि आपके बाद चूँकि कोई और नबी आने वाला नहीं, इसलिए जरूरी है कि तमाम खुदाई बातों का इज़हार आपके जरिए से कर दिया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۚ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَى كُمْ وَوَلَّيَكُمُ الْمَلِكُ مِنَ الظَّالِمِينَ إِلَى الْيَوْمِ ۖ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝ تَحِيَّةٌ لَهُمْ يَوْمَ يَقُومُونَ سَلَامًا ۖ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो। और उसकी तस्बीह करो सुबह और शाम। वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फरिश्ते भी ताकि तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रोशनी में लाए। और वह मोमिनों पर बहुत महरबान है। जिस रोज़ वे उससे मिलेंगे, उनका इस्तक़बाल सलाम से होगा। और उसने उनके लिए बाइज्जत सिला (प्रतिफल) तैयार कर रखा है। (41-44)

जब मिलावटी दीन का ग़लबा हो, उस वक़्त सच्चे दीन को इख़्तियार करना हमेशा मुश्किलतरीन काम होता है। ऐसी हालत में अहले ईमान के दिल में बअज औकात दिल शिकस्तगी और मायूसी के जज्बात तारी होने लगते हैं। उससे बचने की सिर्फ़ एक ही यकीनी सूत है जाहिरी नाखुशगवारियों के पीछे जो खुशगवार पहलू छुपा हुआ है, उस पर नजर को जमाए रखना।

लोग मादिदयात (भौतिक वस्तुओं) के बल पर जीते हैं। मोमिन को अपकार (Ideas) के बल पर जीना पड़ता है। अपकार की सतह पर जीना यह है कि आदमी अल्लाह की यादों में जीने लगे। फरिश्तों का न सुनाई देने वाला कलाम उसे सुनाई देने लगे। उसे सही मक़सद की शक़ल में जो फ़िक्की (वैचारिक) दरयाफ़्त हुई है उसे वह सबसे बड़ी चीज़ समझे। दुनिया को देकर आख़िरत में जो कुछ मिलने वाला है उस पर वह पूरी तरह राजी और मुतमइन हो जाए।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۖ وَذَاعِيَ إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَثِيرًا ۝ وَلَا تَطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعِرْ أَذْهُمُ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाही देने वाला और खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। और अल्लाह की तरफ़, उसके इज्ज (आज्ञा) से, दावत देने वाला (आह्वानकती)

सूरह-33. अल-अहज़ाब

1137

पारा 22

और एक रोशन चराग। और मोमिनों को बिशारत दे दो कि उनके लिए अल्लाह की तरफ से बहुत बड़ा फल (अनुग्रह) है। और तुम मुँक़रों और मुनाफ़िक्को (पाखंडियों) की बात न मानो और उनके सताने को नजरअंदाज करो और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। (45-48)

शाहिद (गवाह), मुबशिशर (खुशखबरी देने वाला), नजीर (डराने वाला), दाजी (आह्वानकर्ता) ये सब एक ही हकीकत के मुख़लिफ पहलू हैं। पैग़म्बर का मिशन यह होता है कि वह लोगों को ज़िंदगी की हकीकत से आगाह करे। वह लोगों को जन्नत और जहन्नम की ख़बर दे। यह एक दावती अमल है और इसी दावती अमल की बुनियाद पर पैग़म्बर आख़िरत की अदालत में उन लोगों की बारे में गवाही देगा जिन पर उसने अम्र हक पंहुचाया और फिर किसी ने माना और किसी ने न माना।

पैग़म्बर का जो मिशन है वह उम्मत मुस्लिमा का मिशन भी है। इस राह में लोगों की तरफ से अजिबतें (यातनाएँ) पेश आती हैं। कोई साथ नहीं देता और कोई वक्ती तौर पर साथ देता है और फिर झूठे अल्फ़ाज बोलकर अलग हो जाता है। ऐसे हालात में सिर्फ़ खुदा पर भरोसा ही वह चीज़ है जो पैग़म्बर (या उसकी पैरवी करने वाले दाजी) को दावती अमल पर साबित कदम रख सकता है। लोगों की तरफ से जो कुछ पेश आए उस पर सब्र करना और उसे नजरअंदाज करना और हर हाल में खुदा पर अपनी नजर जमाए रखना, यही इस्लामी दावत का काम करने वाले का अस्ल सरमाया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَسُوهُنَّ فَبِالْكَرِّ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَيَعْبُوهُنَّ وَسَرَخُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا

ऐ ईमान वाले, जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो तो उनके बारे में तुम पर कोई इद्दत लाज़िम नहीं है जिसका तुम शुमार करो। पस उन्हें कुछ मताअ (सामग्री) दे दो और ख़ूबी के साथ उन्हें रुख़सत कर दो। (49)

एक शख्स किसी औरत से निकाह करे लेकिन मुलाकात की नौबत आने से पहले उसे तलाक दे दे तो ऐसी हालत में इद्दत की वह पाबंदी नहीं है जो आम निकाह में होती है। अलबत्ता इस्लामी अज़्हाक़ का तमज़ज़ है कि जिस तरह बाइज्जत अंज़ाम में देनों के दर्मियान तअल्लुक का मामला हुआ था उसी तरह बाइज्जत तौर पर दोनों के दर्मियान जुदाई का मामला भी किया जाए। उस ख़ातून का अगर महर बांधा गया था तो मर्द को मुकर्ररह महर का निस्फ़ (आधा) देना होगा वरना उर्फ़ (आम रवाज) और हैसियत के मुताबिक कुछ देकर ख़ूबसूरती से रुख़सत कर दिया जाए। औरत अगर चाहे तो फ़ौरन ही दूसरा निकाह कर सकती है। इस सूरत में उसके लिए इद्दत गुज़ारने की शर्त नहीं।

पारा 22

1138

सूरह-33. अल-अहज़ाब

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي أَتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَمِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ وَبَنَاتِ خَالَكَ وَبَنَاتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَأَمْرًا مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا

ऐ नबी हमने तुम्हारे लिए हलाल कर दीं तुम्हारी वे बीवियां जिनकी महर तुम दे चुके हो और वे औरतें भी जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हैं जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुम्हें दी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हो। और उस मुसलमान औरत को भी जो अपने आपको पैग़म्बर को दे दे, बशर्त कि पैग़म्बर उसे निकाह में लाना चाहे, यह ख़ास तुम्हारे लिए है, मुसलमानों से अलग। हमें मालूम है जो हमने उन पर उनकी बीवियों और उनकी दासियों के बारे में फर्ज किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (50)

आम मुसलमानों के लिए बीवियों की आख़िरी तादाद को चार तक महदूद रखा गया है। मगर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह पाबंदी नहीं थी। आपने अल्लाह तआला की खुसूसी इजाज़त के तहत चार से ज्यादा निकाह किया। इसकी मस्तेहत यह थी कि रसूल के ऊपर कोई तंगी न रहे।

तंगी के मुराद पैग़म्बराना मिशन की अदायगी में तंगी है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख़लिफ दावती (आह्वानपरक) और इस्लाही (सुधारवादी) तमज़ज़ तहत ज़रूरत महसूस होती थी कि आप ज्यादा औरतों को अपने निकाह में ला सकें। इसी दीनी मस्तेहत की बिना पर अल्लाह तआला ने आपके लिए चार की कैद नहीं रखी। मिसाल के तौर पर हज़रत आइशा से निकाह में यह मस्तेहत थी कि एक कम उम्र और ज़हीन ख़ातून आपकी मुस्तक़िल सोहबत (समीपता) में रहें ताकि आपके बाद लम्बी मुद्दत तक लोगों को दीन सिखाती रहें। चुनांचे हज़रत आइशा आपकी वफ़ात के बाद निस्फ़ (आधी) सदी तक उम्मत के लिए एक ज़िंदा कैसेट रिकॉर्डर बनी रहीं। इसी तरह हज़रत उम्मे सलमा और हज़रत उम्मे हबीबा से निकाह का यह फ़ायदा हुआ कि ख़ालिद बिन वलीद और अबू सुफ़ियान बिन हरब की मुख़ालिफत हमेशा के लिए ख़त्म हो गई। वग़ैरह

تُرْجَىٰ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيَّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ وَمَنْ ابْتِغَيْتَ مِمَّنْ  
عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ  
بِمَا آتَيْنَهُنَّ كُلُّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا  
حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النَّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ  
أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ  
شَيْءٍ رَقِيبًا ۝

तुम उनमें से जिस-जिसको चाहो दूर रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो। और जिन्हें दूर किया था उनमें से फिर किसी को तलब करो तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। इसमें ज्यादा तक्क़ोअ (संभावना) है कि उनकी आंखें ठंडी रहेंगी, और वे संजीदा न होंगी। और वे इस पर राजी रहें जो तुम उन सबको दो। और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानने वाला है, बुर्दवार (उदार) है। इनके अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल नहीं हैं। और न यह दुरुस्त है कि तुम उनकी जगह दूसरी वीवियां कर लो, अगरचे उनकी सूरत तुम्हें अच्छी लगे। मगर जो तुम्हारी ममलूका (मिलिकयत) हो। और अल्लाह हर चीज पर निगरां है। (51-52)

जहां कई ख़्वातीन का मसला हो वहां शिकायत का इम्कान बढ़ जाता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कई वीवियां थीं। इस बिना पर अंदेशा था कि हुक्के जौजियत (दाम्पत्य अधिकारों) के बारे में ख़्वातीन को अदम मुसावात (असमानता) की शिकायत हो और इसका नतीजा यह निकले कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यकसूई के साथ दीनी मुहिम की अदायगी न फरमा सकें। इसलिए एलान फरमाया कि पैगम्बर का मामला खुसूसी मामला है। वह आम मुसलमानों की तरह हुक्के जौजियत में मुसावात (समानता) के पाबंद नहीं हैं। हुक्के जौजियत की रियायत और हुक्के इस्लाम की रियायत में टकराव हो तो पैगम्बर के लिए जाइज होगा कि वह हुक्के इस्लाम की रियायत को तरजीह दें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आम जाबे से मुस्तसना (अपवाद) करने का मकसद यह था कि ख़्वातीन के अंदर शिकायती जेहन की पैदाइश को रोका जा सके। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस इख़्तियार को अमलन बहुत ही कम इस्तेमाल फरमाया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ

طَعَامٍ غَيْرَ نَبِزٍ لَّكُمْ وَلَا رُكْنٍ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا  
لَكُمْ سُلَاسِيْنَ حَدِيثٌ إِنْ ذِكْرُكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيُّ فَيَسْتَحْيَ مِنْكُمْ وَاللَّهُ  
لَا يَسْتَحْيَ مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ  
ذِكْرُكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ  
تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِ ابْدَاءِ إِنْ ذِكْرُكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝ إِنْ تَبَدُّوا  
شَيْئًا أَوْ خَفَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

ऐ ईमान वालो, नबी के घरों में मत जाया करो मगर जिस वक्त तुम्हें खाने के लिए इजाजत दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुंतजिर न रहो। लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाख़िल हो। फिर जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो। इस बात से नबी को नागवारी होती है। मगर वह तुम्हारा लिहाज करते हैं। और अल्लाह हक बात कहने में किसी का लिहाज नहीं करता। और जब तुम रसूल की वीवियों से कोई चीज मांगो तो पर्दे की ओट से मांगो। यह तरीका तुम्हारे दिलों के लिए ज्यादा पाकीजा है और उनके दिलों के लिए भी। और तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ दो और न यह जाइज है कि तुम उनके बाद उनकी वीवियों से कभी निकाह करो। यह अल्लाह के नजदीक बड़ी संगीन बात है। तुम किसी चीज को जाहिर करो या उसे छुपाओ तो अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (53-54)

यहां अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिलसिले में हुक्म देते हुए मुसलमानों को बताया गया है कि उनकी घरेलू मआशिरत के आदाब किस किस के होने चाहिए। वे दूसरों के घरों में दाख़िल हों तो इजाजत लेकर दाख़िल हों। खाने या किसी और जरूरत के लिए किसी के यहां बुलाया जाए तो सिर्फ बक्दर जरूरत वहां बैठें और फरागत के बाद फौरन वापस हो जाएं। दूसरों से मिलने जाएं तो ग़ैर जरूरी बातों से शदीद परहेज करें। औरतों से मुतअल्लिक कोई काम हो तो पर्दे की आड़ से उसे अंजाम दें, वगैरह।

मआशिरती (सामाजिक) किंरी में आदमी को सिर्फ अपनी ख़्वाहिश या जरूरत नहीं देखना चाहिए बल्कि उसे निहायत शिद्दत से यह बात मल्हूज रखना चाहिए कि उसके रवैये से दूसरे शख्स को तकलीफ न पहुंचे। उसकी ग़ैर जरूरी बातें दूसरे का वक्त जाया करने वाली न हों।

मुसलमान औरत जब किसी जरूरत से अपने घर से बाहर निकले तो वह किस तरह निकले। उसे ऐसे लिबास में निकलना चाहिए जो इस बात का एक खामोश एलान हो कि वह एक शरीफ और हयादार औरत है। वह संजीदा जरूरत के तहत बाहर निकली है न कि तफरीह और दिल्लगी के लिए। सादा कपड़े, हयादार चाल, चादर या बुरके से जिस्म ढका हुआ होना इसी की एक अलामत है। हकीकत यह है कि जिस्मानी नुमाइश के साथ बाहर निकलना दूसरों को दावते इल्तफात देना (आकर्षित करना) है। और जिस्मानी नुमाइश के बगैर



निकलना गया अमल की जवान में दूसरों से यह कहना है कि मैं सिर्फ अपने काम से बाहर निकली हूँ, मुझे तुमसे कोई मतलब नहीं।

‘दिल के मरीजों’ से यहां मुराद ग़ालिबन यहूद हैं। क्योंकि वही लोग मुसलमानों को और मुस्लिम ख़ातीन को ज्यादा परेशान कर रहे थे और यही लोग थे जो मजहूर तंबीह के मुताबिक क़त्ल किए गए या शहर से निकाल दिए गए थे।

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ  
السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝  
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلَا يَصِيرُونَ ۝ يَوْمَ تَقْلُبُ وُجُوهُهُمْ  
فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا  
أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ۝ رَبَّنَا إِنْتُمْ ضَعُفْتُمْ مِنَ  
الْعَذَابِ وَالْعَنُومُ لَعْنًا كَبِيرًا ۝

लोग तुमसे कियामत के बारे में पूछते हैं। कहो कि उसका इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है। और तुम्हें क्या ख़बर, शायद कियामत करीब आ लगी हो। बेशक अल्लाह ने मुँकियों को रहमत से दूर कर दिया है। और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार है, उसमें वे हमेशा रहेंगे। वे न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार। जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किए जाएंगे, वे कहेंगे, ऐ काश हमने अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) की होती और हमने रसूल की इताअत की होती। और वे कहेंगे कि ऐ हमारे ख़ब, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमें रास्ते से भटका दिया। ऐ हमारे ख़ब, उन्हें दोहरा अजाब दे और उन पर भारी लानत कर। (63-68)

कियामत की तारीख़ पूछने का मतलब यह नहीं है कि वे लोग कियामत के आने को सिरे से मानते ही न थे। यह दरअसल कियामत का इस्तहज़ा (मज़ाक उड़ाना) न था बल्कि कियामत की ख़बर देने वाले का इस्तहज़ा था। वे नफ़से कियामत के मुँक़िर न थे बल्कि कियामत की उस नौइयत के मुँक़िर थे जिसकी रसूल और असहाबे रसूल उन्हें ख़बर दे रहे थे।

उनकी अस्ल ग़लती यह थी कि उन्होंने अपने कौमी अकाबिर (नायकों) को बड़ा समझा और फ़ैग़म्बर को बड़ा न समझा। इसलिए उन्हें अपने कौमी अकाबिर की बात काबिले लिहाज नजर आई और फ़ैग़म्बर की बात काबिले लिहाज नजर न आई। चुनांचे कियामत में ज़ब्र अस्ल हकीक़त खुलेगी तो वे अफ़सोस करेंगे कि काश हम झूठी बड़ई और सच्ची बड़ई के फ़र्क को समझते और झूठी बड़ई के फ़रेब में मुत्तिला होकर गुमराह न होते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ إِذْ دُاعُوا إِلَى اللَّهِ وَمِمَّا قَالُوا  
كَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ  
سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۝ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ  
رَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

ऐ ईमान वाले, तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा को अजिय्यत (यातना) पहुंचाई तो अल्लाह ने उसे उन लोगों की बातों से बरी साबित किया। और वह अल्लाह के नजदीक बाइज्जत था। ऐ ईमान वाले, अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात कहो। वह तुम्हारे आमाल सुधारेगा और तुम्हारे गुनाहों को बक्ष्श देगा। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। (69-71)

‘यहूदियों की तरह फ़ैग़म्बर को न सताओ’ से क्या मुराद है, इसकी वज़ाहत एक वाक्ये से होती है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में थे कि एक बार आपके पास कुछ माल आया। आपने उसे लोगों के दर्मियान तकसीम किया। इसके बाद अंसार में से एक शख्स ने दूसरे शख्स से कहा : खुदा की कसम मुहम्मद ने इस तकसीम से अल्लाह की रिज़ा और आखिरत का घर नहीं चाहा है। इस वाक्ये की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दी गई तो आप ने फरमाया कि अल्लाह की रहमत मूसा पर हो। उन्हें इससे ज्यादा अजिय्यत दी गई मगर उन्होंने सब्र किया। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

कलाम की दो किस्में हैं। एक है सदीद कलाम। दूसरा है ग़ैर सदीद कलाम। सदीद कलाम वह है जो फ़ैग़म्बर के हकीक़त हो। जो वाक्याती तज्जिया (विश्लेषण) पर मबनी हो। जो ठोस दलाइल के साथ पेश किया जाए। इसके बरअक्स ग़ैर सदीद कलाम वह है जिसमें हकीक़त की रिआयत शामिल न हो। जिसकी बुनियाद जन व गुमान (पूर्वाग्रह) पर कयम हो। जिसकी तैसियत महज रायज़ी की हिन कि हकीक़ते वाक़्या के इस्हार की।

पहला कलाम मोमिनाना कलाम है और दूसरा कलाम मुनाफ़िक़ाना कलाम।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَلَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا  
أَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝ لِيُعَذِّبَ اللَّهُ  
الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ  
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

हमने अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने

सूरह-34. सबा

1145

पारा 22

उसे उठाने से इंकार किया और वे उससे डर गए, और इंसान ने उसे उठा लिया। बेशक वह जालिम और जाहिल था। ताकि अल्लाह मुनाफिक (पाखंडी) मर्दों और मुनाफिक औरतों को और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को सजा दे। और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह फरमाए। और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (72-73)

अमानत से मुराद इख्तियार है। इख्तियार को अमानत इसलिए फरमाया कि वह अल्लाह की एक चीज है जिसे उसने आरजी मुद्दत के लिए इंसान को बतौर आजमाइश दिया है ताकि इंसान खुद अपने इरादे से खुदा का ताबेदार बने। अमानत, दूसरे लफ्जों में, अपने ऊपर खुदा का कायम मकाम बनना है। अपने आप पर वह करना है जो खुदा सितारों और सव्याओं पर कर रहा है। यानी अपने इख्तियार से अपने आपको खुदा के कंट्रोल में दे देना।

इस कायनात में सिर्फ अल्लाह हाकिम है और तमाम चीजें उसी की महकूम हैं। मगर अल्लाह तआला की मर्जी हुई कि वह एक ऐसी आजाद मख्लूक पैदा करे जो किसी जब्र (दबाव) के बगैर खुद अपने इख्तियार से वही करे जो खुदा उससे करवाना चाहता है। यह इख्तियारी इताअत बड़ी नाजुक आजमाइश थी। आसमान और जमीन और पहाड़ भी उसका तहम्मल नहीं कर सकते। ताहम इंसान ने शदीद अंदेशे के बावजूद इसे कुबूल कर लिया। अब इंसान मौजूदा दुनिया में खुदा की एक अमानत का अमीन (धारक) है। उसे अपने ऊपर वही करना है जो खुदा दूसरी चीजों पर कर रहा है। इंसान को अपने आप पर खुदा का हुक्म चलाना है। इंसान हालते इम्तेहान में है और मौजूदा दुनिया उसके लिए वसीअ इम्तेहानगाह।

यह अमानत एक बेहद नाजुक जिम्मेदारी है। क्योंकि इसी की वजह से जजा व सजा का मसला पैदा होता है। दूसरी मख्लूकत मजबूर व मक्हूर (बाध्य) हैं। इसलिए उनके वास्ते जजा व सजा का मसला नहीं। इंसान आजाद है। इसलिए वह जजा व सजा का मुस्तहक बनता है। हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने अमानत को आदम के सामने पेश किया, तो आदम ने पूछा कि अमानत क्या है। अल्लाह तआला ने फरमाया, अगर तुम अच्छा करोगे तो तुम्हें उसका बदला मिलेगा और अगर तुम बुरा करोगे तो तुम्हें सजा दी जाएगी। (तफसीर इब्नेकसीर)

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْمَلَكُوتِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الحمد لله الذي له ما في السموات وما في الأرض وله الحمد في الآخرة وهو الحكيم الخبير يعلم ما يدبر في الأرض وما يخبر منها وما ينزل من السماء وما يعبر فيها وهو الرحيم الغفور

पारा 22

1146

सूरह-34. सबा

आयतें-54

सूरह-34. सबा

रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ खुदा के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो जमीन में है और उसी की तारीफ है आखिरत में और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला जानने वाला है। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर दाखिल होता है और जो कुछ उससे निकलता है। और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है। और वह रहमत वाला बख्शने वाला है। (1-2)

कायनात अपने खालिक का तआरुफ है। उसकी हैबतनाक वुसूत (व्यापक) खालिक की अज्मत को बताती है। उसका हदे कमाल तक मौजू (उपयुक्त) होना बताता है कि उसका पैदा करने वाला एक कामिल व मुकम्मल हस्ती है। इसके तमाम अज्जा का हददर्जा तवाफुक (सहजता) के साथ अमल करना साबित करता है कि उसका चलाने वाला इतिहाई हद तक हकीम और अलीम है। कायनात का इंसान के लिए मुकम्मल तौर पर साजगार होना जाहिर करता है कि उसका खालिक अपनी मख्लूकत के लिए बेहद रहीम व करीम है।

जो शख्स कायनात पर गौर करेगा वह खुदा के जलाल (प्रताप) व कमाल के एहसास से सरशार हो जाएगा। वह यकीन कर लेगा कि अजल (आदि) से अबद (अंत) तक तमाम अज्मतें सिर्फ एक खुदा के लिए हैं। उसके सिवा किसी और के लिए नहीं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۖ عَلَيْهِمُ الْغُيُوبُ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۚ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۚ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُجْرِمِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ ۚ وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ مُّبِينٍ ۚ

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि हम पर कियामत नहीं आएगी। कहो कि क्यों नहीं, कसम है मेरे परवरदिगार आलिमुल्लैब की, वह जरूर तुम पर आएगी। उससे जरा बराबर कोई चीज छुपी नहीं, न आसमानों में और न जमीन में। और न कोई चीज उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है। ताकि वह

**पारा 22**

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ يَسَيْمِكُمْ إِذَا مُرِّقْتُمْ كُلُّ مُمْرِقٍ ۚ إِنَّكُمْ لَعِنَىٰ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۖ أَفَتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَيْدًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۖ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ شَأْنَنَا خِصْفٌ بِهِمُ الْأَرْضِ أَوْ نُسْقِطُ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۙ

**पारा 22**

1148

**सूरह-34. सबा**

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا ۖ وَجَعَلْنَا بَيْنَ يَدَيْهِ الْجِبَالَ آيَاتٍ ۚ لِيُبَيِّنَ لِقَوْمِهِ آيَاتِنَا ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ الْحَمِيدَ<sup>١١</sup> أَنْ أَعْمَلَ سِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ<sup>١٢</sup>

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ी नेमत दी। ऐ पहाड़ों तुम भी उसके साथ तस्बीह में शिरकत करो। और इसी तरह परिंदों को हुक्म दिया। और हमने लोहे को उसके लिए नर्म कर दिया कि तुम कुशादा जिन्हें (कवच) बनाओ और कड़ियों को अंदाजे से जोड़ो। और नेक अमल करो, जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देख रहा हूँ। (10-11)

एक मोमिन जब खुदा की याद से सरशर होकर उसकी तस्बीह करता है तो उस वक्त वह सारी कायनात का हमनवा होता है। जमीन व आसमान की तमाम चीजें तस्बीह खुदावंदी में उसकी शरीके आवाज हो जाती हैं। ताहम कायनात की यह हमनवाई खामोश जवान में होती है। मगर हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने यह ख़ुससियत दी कि जब

इसी तरह हजरत दाऊद को अल्लाह तआला ने लोहे की सनअत (शिल्पकला) सिखाई। उन्होंने लोहे के पिघलाने और ढालने के फन को इतनी तय्क्की दी कि वह निहायत बारीक लइयों की जिरहें बनाने लगे जिन्हें आदमी कपड़े की तरह पहन सके। उस वक़्त दुनिया में यह फन मौजूद न था। अल्लाह तआला ने बराहेरास्त तौर पर फ़रिश्तों के ज़रिए यह फन आपको सिखाया।

मोमिन उद्योग और साइंस में बड़ी-बड़ी तरक्कियां कर सकता है। मगर उसके लिए लाजिम है कि वह इंसानी तरक्की को सिर्फ इस्लाह (सुधार) के दायरे में इस्तेमाल करे। वह जो कुछ करे इस एहसास के तहत करे कि आखिरकार उसे जवाबदेही के लिए खुदा के सामने हजरि होना है।

وَلَسَلِيمِ الرِّيحِ غُدُّهَا شَهْرٌ وَرَوْحُهَا شَهْرٌ ۖ وَآسَلْنَا لَهُ عَيْنَ  
الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجَبْرِ مَن يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَن يَزِغْ مِنْهُمْ عَن  
أَمْرِنَا ذِقْهُ ۖ مِّنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٥﴾ يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَّحَارِبٍ وَ  
تَمَاثِيلَ وَجِفَالٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَّسِيتَ ۖ اِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا وَقَلِيلٌ مِّنْ  
عِبَادِيَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٦﴾

और सुलैमान के लिए हमने हवा को मुसख़्ख़र (अधीन) कर दिया, उसकी सुबह की मंजिल एक महीने की होती और उसकी शाम की मंजिल एक महीने की। और हमने उसके लिए तांबे का चशमा बहा दिया। और जिन्नात में से ऐसे ये जो उसके रब के हुक्म से उसके आगे काम करते थे। और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरे तो हम उसे आग का अजाब चखाएंगे। वे उसके लिए बनाते जो वह चाहता, इमारतें और तस्वीरें और हौज जैसे लगन (थाल) और जमी हुई देरें। ऐ आले दाऊद, शुक़रगुजारी के साथ अमल करो और मेरे बंदों में कम ही शुक़रगुजार हैं। (12-13)

हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने समुद्री सफर और समुद्री तिजारत को बहुत तरक्की दी थी। उन्होंने आला दर्जे के बादबानी जहाज तैयार किए। उनके साथ अल्लाह तआला का मजद फल यह हुआ कि उनके समुद्री जहजों को अक्सर मुयाफिक्र हवा मिलती थी। इसी तरह तांबा पिघला कर सामान बनाने का फन भी उनके जमाने में बहुत तरक्की कर गया। इन रैर मामूली कृत्यों से हजरत सुलेमान मुख़लिफ़ क्रिस्म का तामीरी और इस्लाही काम लेते थे। इन्हीं में से उन चीजों की तैयारी भी थी जिनका ज़िक्र आयत में किया गया है।

इंसान सरापा खुदा का एहसान है। इसलिए उसके अंदर सबसे ज्यादा खुदा के शुक्र और एहसानमंदी का जब्बा होना चाहिए। मगर यही वह चीज है जो इंसान के अंदर सबसे कम पाई जाती है। इसकी वजह यह है कि मौजूदा इन्तेहान की दुनिया में इंसान को जो कुछ मिलता है वह असबाब के पर्दे में मिलता है। इसलिए आदमी उसे असबाब का नतीजा समझ लेता है। मगर यही इंसान का अस्ल इन्तेहान है। इंसान से यह मल्लूब (अपेक्षित) है कि वह असबाब के जरिए मिलती हुई चीज को खुदा से मिलता हुआ देखे। बजाहिर अपनी अक्ल और मेहनत से हासिल होने वाली चीज को बराहेरास्त खुदा का अतिरिया (देन) समझे।

فَلَمَّا قُضِيَنا عَلَيْهِ الْمَوْتُ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ  
مِنْ سُلَاسِهِ ۖ فَلَمَّا خِرَّ تَبَيَّنَتْ إِلَيْنِ أَنْ لَوْ كُنَّا يُعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا  
فِي الْعَذَابِ الْمُبِينِ ۝

फिर जब हमने उस पर मौत का फैसला नाफिज किया तो किसी चीज ने उन्हें उसके मरने का पता नहीं दिया मगर जमीन के कीड़े ने, वह उसकी लाठी को खाता था। पस जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों पर खुला कि अगर वे ग़ैब (अप्रकट) को जानते तो इस जिल्लत की मुसीबत में न रहते। (14)

हजरत सुलेमान अलेहिस्सलाम की मौत का वक़्त आया तो वह अपनी लाठी टेके हुए थे और जिनों से कोई तामिरी काम करा रहे थे। मौत के फरिश्ते ने आपकी रूह कब्ज़ कर ली। मगर आपका बेजान जिस्म लाठी के सहारे बदेस्तूर कायम रहा। जिन्नात यह समझ कर अपने काम में लगे रहे कि आप उनके करीब मौजूद हैं और निगरानी कर रहे हैं। इसके बाद लाठी में दीमक लग गई। एक अर्से के बाद दीमक ने लाठी को खोखला कर दिया तो आपका जिस्म ज़मीन पर गिर पड़ा। उस वक़्त जिनों को मालूम हुआ कि आप वफ़ात पा चुके हैं।

यह वाक्या इस सूत्र में गालिबन इसलिए पेश आया ताकि लोगों के इस गलत अकदी की अमली तरदीद (रदद) हो जाए कि जिन्नात गैब का इत्म रखते हैं।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ذُكُلُوا مِنْ  
رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ بَدْدَةً طَيِّبَةً وَرَبِّ غُفُورٌ ۝ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا  
عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ كُلٍّ خَمْطٍ وَإِثْلٍ  
وَشَيْءٍ مِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ۝ ذَلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا  
الْكَافِرَ ۝





शैतान को या उसके नुमाईदे को खुदा ने किसी के ऊपर अमली इस्त्रियार नहीं दिया है। उसे सिर्फ बहकाने का इस्त्रियार है। यह इसलिए है ताकि इंसान की आजमाइश हो। इस आजमाइश में पूरा उतरने वाला शख्स वह है जो शैतानी तर्गीबात (बहकावों) से गैर मुतअस्सिर रहकर हकव सयक्ता पर कयम रहे।

قُلْ اَدْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ وِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِیْهِمَا مِنْ شَرْكٍَ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظٰهِیٍّ ۝ وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَہٗ اِلَّا لِمَنْ اٰذَنَ لَهُ ۚ حَتّٰی اِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ فَاَوْا مَاذَا قَال رَّبُّكُمْ قَالُوْا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْکَبِیْرُ ۝

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने खुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है, वे न आसमानों में जरा बराबर इस्त्रियार रखते और न जमीन में और न इन दोनों में उनकी कोई शिरकत है। और न इनमें से कोई उसका मददगार है। और उसके सामने कोई शफाअत (सिफारिश) काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके लिए वह इजाजत दे। यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होगी तो वे पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया। वे कहेंगे कि हक बात का हुक्म फरमाया। और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (22-23)

अगरचे हर दौर में बेशतर लोग आखिरत को मानते रहे हैं। मगर हर दौर में शैतान ने ऐसे खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) अकीदे लोगों के दर्मियान राइज कर दिए जिन्होंने उन्हें आखिरत की पकड़ से बेछेफ कर दिया। उन्हीं में से एक यह फर्जी अकीदा भी है कि कुछ हस्तियों को खुदा के यहां इतना मकाम हासिल है कि वे अपनी सिफारिश से जिसे चाहें बख्शवा सकते हैं।

मगर इस किस्म का हर अकीदा खुदा की खुदाई का कमतर अंदाजा है। यह वाक्या भी कैसा अजीब है कि जिन हस्तियों का अपना यह हाल है कि खुदा की अज्मत के एहसास ने उन्हें सरासीमा (शितिल) कर रखा है, उनके बारे में उनके परस्तारों ने यह समझ रखा है कि वे खुदा के यहां उनकी नजात के लिए काफी हो जाएंगे।

قُلْ مَنْ يَّرْتَفِعُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ قُلْ اللّٰهُ ۚ وَآلَا اُولٰٓئِکُمْ لَعَلٰی هُدٰی اَوْ فِی ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۝ قُلْ لَا اَسْأَلُوْنَ عَمَّا اَجْرُمُنَا وَلَا اَسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ یٰجَمْعُ بَیْنَنَا رَبَّنَا اَنْتُمْ یَقْتَضِیْۤہِ بَیْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتٰنُ الْعَلِیْمُ ۝ قُلْ اَرُوْنِی الَّذِیْنَ اَحَقُّتُمْ بِہٖ شُرَکَآءَ کُلِّۤہٗ ۚ لَّیْسَ لَہٗۤ اِلٰہٌ اِلَّا اللّٰهُ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ۝

कहो कि कौन तुम्हें आसमानों और जमीन से रक्क देता है। कहो कि अल्लाह। और हम में से और तुम में से कोई एक हिदायत पर है या खुली हुई गुमराही में। कहो कि जो कुसूर हमने किया उसकी कोई पूछ तुमसे न होगी। और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी बाबत हमसे नहीं पूछा जाएगा। कहो कि हमारा रब हमें जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान हक के मुताबिक फैसला फरमाएगा। और वह फैसला फरमाने वाला है, इत्त वाला है। कहो, मुझे उन्हें दिखाओ जिन्हें तुमने शरीक बनाकर खुदा के साथ मिला रखा है। हरगिज नहीं, बल्कि वह अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (24-27)

कायनात नाकबिले कयास हद तक अजीम है। इसी के साथ उसके अंदर कमाल दर्जे की हिक्मत और मअनवियत पाई जाती है। ऐसी कायनात खुदाए अजीज व हकीम ही का कारनामा हो सकती है। कोई भी शख्स संजीदा तौर पर यह गुमान नहीं कर सकता कि वे दूसरी हस्तियां उसकी खालिक व मालिक हैं जिन्हें जदीद (आधुनिक) या कदीम (प्राचीन) इंसान ने खुदा के सिवा फर्ज कर रखा है। फिर खुदा के सिवा कौन हो सकता है जिसे इस कायनात में बड़ाई का मकाम हासिल हो।

हकीकत यह है कि कायनात का मुतालआ (अवलोकन) तमाम मुश्किलाना नजरियात को बातिल (झूठा) ठहराता है। इस कायनात में वे तमाम अकीदे बेजोड़ साबित होते हैं जिनमें एक खुदा के सिवा किसी और के लिए किसी किस्म की बड़ाई तस्लीम की गई हो। ऐसी हालत में वही नजरिया सही हो सकता है जो एक खुदा की बुनियाद पर बने। जिस नजरिये में एक खुदा के सिवा किसी और हस्ती की कारफरमाई मानी जाए वह अपनी तरदीद (रद्द) आप है।

وَمَا اَرْسَلْنَاكَ اِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّاَنْذِیْرًا ۚ وَلٰكِنۡ اَكْثَرُ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝ وَیَقُولُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝ قُلْ لَّكُمْ مَّوْعٰدُ یَوْمٍ لَا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْہٗ سَاعَةٌ ۚ وَلَا تَسْتَفْزِحُوْنَ ۝

और हमने तुम्हें तमाम इंसानों के लिए खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है कि उससे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो। (28-30)

हर नबी ने बराहेरास्त तौर पर सिर्फ अपनी कौम के ऊपर दावती काम किया। और यही अमलन मुमकिन था। इसी तरह पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बराहेरास्त तौर पर अपनी ही कौम के लिए मुजिर और मुबशिशर बने (अल-अनआम 92)। मगर चूंकि आप पर नुबुव्वत खत्म हो गई इसलिए अब तमाम कौमों के लिए हुक्मन आप ही मुजिर और

मुबशिशर (डराने वाले और खुशखबरी देने वाले) हैं। अपने जमाने में अपने मुखातबीने अव्वल पर जिस तरह आपने इंजार व तबशीर (डराने और खुशखबरी देने) का काम किया उसी तरह बाद के जमाने में दूसरे तमाम मुखातबीन पर आपकी उम्मत को आपके नायब के तौर पर इंजार व तबशीर का काम करना है। यह सारा काम आपकी नुबुव्वत के तलससुल में शुमार होगा। आपकी जिंदगी में किया जाने वाला दावती काम बराहेरास्त तौर पर आपके दायराए नुबुव्वत में दाखिल है। और आपकी दुनियावी जिंदगी के बाद किया जाने वाला काम बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर।

पैगम्बर का काम हमेशा सिर्फ पहुंचाना होता है। इसके बाद कौमों के अमली अंजाम का फैसला करना खुदा का काम है, मौजूदा दुनिया में भी और आइंदा आने वाली दुनिया में भी।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُؤْمِنَ بِهِدَ الْقُرْآنُ وَلَا يَالِئِىٰ بَيْنَ يَدَيْهِ ۖ وَكَوْ  
تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ  
الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا أَلَا أَنْتُمْ لَكُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ قَالَ  
الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعُوا أَنْعُنْ صَدِّدْتُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ  
جَاءَكُمْ بَلْ لَنْتُمْ مُّجْرِمِينَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا  
بَلْ مَكْرُ الْيَلِيلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا ۖ وَسُئِرُوا  
الَّذِينَ لَمْ يَأْمُرُوا الْعَذَابَ ۖ وَجَعَلْنَا الْأَعْمَالَ فِي آخِنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ  
يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि हम हरगिज न इस कुरआन को मानेंगे और न उसे जो इसके आगे है। और अगर तुम उस वक्त को देखो जबकि ये जालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। एक दूसरे पर बात डालता होगा। जो लोग कमजोर समझे जाते थे वे बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम जरूर ईमान वाले होते। बड़ा बनने वाले कमजोर लोगों को जवाब देंगे, क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था। जबकि वह तुम्हें पहुंच चुकी थी, बल्कि तुम खुद मुजरिम हो। और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की तदबीरों से, जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ्र करें और उसके शरीक ठहराएं। और वे अपनी पशेमानी (पछतावे) को छुपाएंगे जबकि वे अजाब देखेंगे। और हम मुकिरों की गर्दन में तौक डालेंगे। वे वही बदला पाएंगे जो वे करते थे। (31-33)

हकीकत का इंकार सबसे बड़ा जुर्म है। दुनिया में इस जुर्म का अंजाम सामने नहीं आता। इसलिए दुनिया में आदमी बेखौफ होकर हकीकत का इंकार कर देता है। मगर आखिरत में जब इंकारे हक का बुरा अंजाम लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा तो उस वक्त लोगों का अजीब हाल होगा।

अवाम अपने जिन बड़ों पर दुनिया में फख्र करते थे वहां उन बड़ों को अपनी गुमराही का जिम्मेदार ठहरा कर वे उन पर लानत करेंगे। बड़े उन्हें जवाब देंगे कि अपने आपको शर्मिंदगी से बचाने के लिए हमें मुल्जिम न ठहराओ यह हम न थे बल्कि तुम्हारी अपनी ख्वाहिशें थीं जिन्होंने तुम्हें गुमराह किया। हमारा साथ तुमने सिर्फ इसलिए दिया कि हमारी बात तुम्हारी अपनी ख्वाहिश के मुताबिक थी। तुम ऐसा दीन चाहते थे जिसमें अपने आपको बदले बगैर दीनदार बनने का क्रेडिट हासिल हो जाए और वह हमने तुम्हें फराहम कर दिया। तुमने हमारा फंदा खुद अपनी गर्दन में डाला, वरना हमारे पास कोई ताकत न थी कि हम उसे तुम्हारी गर्दन में डाल देते।

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ  
كَافِرُونَ ۖ وَقَالُوا إِنَّا نَحْنُ الْغَالِبُونَ أَمْ لَكُم مَّا نَحْنُ بِمُعَدِّيْنَ ۖ قُلْ إِنْ  
رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۖ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَ  
مَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِآتِنَا نَقَرَكُمْ عِنْدَ نَارِنَا ۖ إِلَّا مَنْ أَمِنَ وَعَمِلَ  
صَالِحًا ۖ فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرَفَاتِ آمِنُونَ ۖ  
وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ ۖ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۖ قُلْ إِنْ  
رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِّنْ  
شَيْءٍ فَهُوَ خِلفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۖ

और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके खुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके मुकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। और उन्होंने कहा कि हम माल और औलाद में ज्यादा हैं और हम कभी सजा पाने वाले नहीं। कहे कि मेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रोजी देता है। और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वह चीज नहीं जो दर्जे में तुम्हें हमारा मुकर्रब (निकटवर्ती) बना दे, अलबत्ता जो ईमान लाया और उसने नेक

अमल किया, ऐसे लोगों के लिए उनके अमल का दुगना बदला है। और वे बालाखानों (उच्च भवनों) में इत्मीनान से रहेंगे। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगर्म हैं वे अजाब में दाखिल किए जाएंगे। कहो कि मेरा ख अपने बंदों में से जिसे चाहता है कुशादा रोजी देता है और जिसे चाहता है तंग कर देता है। और जो चीज भी तुम खर्च करोगे तो वह उसका बदला देगा। और वह बेहतर रिस्क देने वाला है। (34-39)

जिन लोगों के पास कुव्वत और माल आ जाए उन्हें मौजूदा दुनिया में बड़ाई का मकाम हासिल हो जाता है। यह चीज उनके अंदर झूठा एतमाद पैदा कर देती है। ऐसे लोगों को जब आखिरत से डराया जाता है तो वे उसे अहमियत नहीं दे पाते। उन्हें यकीन नहीं आता कि दुनिया में जब खुदा ने उन्हें इज्जत दी है तो आखिरत में वह उन्हें कैसे बेइज्जत कर देगा।

यही झूठा एतमाद हर दौर के बड़ों के लिए हक की दावत को न मानने का सबसे बड़ा सबब रहा है। और वक्त के बड़े लोग जब एक चीज को हकीर (तुच्छ) कर दें तो छोटे लोग भी उसे हकीर समझ लेते हैं। इस तरह खवास और अवाम दोनों हक को कुबूल करने से महरूम रह जाते हैं।

दुनिया का माल व असबाब इम्तेहान है न कि इनाम। दुनिया के माल व असबाब की ज्यादाती न किसी आदमी के मुक़र्रब होने की अलामत है और न इसकी कमी उसके रैर मुक़र्रब होने की। अल्लाह के यहां क़ुरबत (निकटता) का मक़ाम उसी शख्स के लिए है जो इस बात का सुबूत दे कि जो कुछ उसे दिया गया था उसमें वह खुदा की यादों के साथ जिया और खुदा की मुक़र्रर की हुई हदों का अपने आपको पाबंद रखा। यही लोग हैं जो आखिरत में खुदा के अबदी इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَكَةِ اِهْزُلِي اَيَاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝  
قَالُوا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيْنَا مِنْ دُونِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ  
بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ۝ ۞ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ  
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा फिर वह फरिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे। वे कहेंगे पाक है तेरी जात, हमारा तअल्लुक तुझसे है न कि इन लोगों से। बल्कि ये जिन्नों की इबादत करते थे। उनमें से अक्सर लोग उन्हीं के मोमिन थे। पस आज तुम में से कोई एक दूसरे को न फायदा पहुंचा सकता है और न नुक़सान। और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे। (40-42)

फरिश्ते इंसान को नजर नहीं आते। ये दरअस्तल पैग़म्बर हैं जिन्होंने इंसान को फरिश्तों के वुजूद की खबर दी। यह ख़बर उन्हें इसलिए दी गई थी कि वे खुदा के अज्मत व जलाल को महसूस करें और पूरी तरह उसकी इबादत में लग जाएं। मगर शैतान ने अजीब व ग़रीब तौर पर लोगों को सिखाया कि बराहेरास्त खुदा का तक़रूब (समीपता) हासिल करना मुश्किल है। इसलिए उन्हें चाहिए कि वे फरिश्तों की इबादत करें और उनके जरिये से खुदा का तक़रूब हासिल करें। चुनांचे सारी दुनिया में फरिश्तों के बुत बनाकर उनकी इबादत शुरू कर दी गई। देवी देवताओं का अक़ीदा भी दरअस्तल फरिश्तों ही की बिगड़ी हुई शकल है। जो फरिश्ता बारिश पर मुक़र्रर था उसे बारिश का देवता समझ लिया। जो फरिश्ता हवा पर मुक़र्रर था उसे हवा का देवता समझ लिया। वगैरह।

फरिश्ते आखिरत में ऐसे इबादत गुज़ारों से बरा-न्त (विरक्ति) जाहिर करेंगे। आखिरत में उन्हें न खुदा की मदद हासिल होगी और न फरिश्तों की। वे हमेशा के लिए बेयारो मददगार होकर रह जाएंगे।

وَإِذْ اتَّخَذُوا عَلَيْهِمْ اٰیٰتِنَا بَيِّنٰتٍ ۚ قَالُوْا مَا هٰذَا اِلَّا رَجُلٌ يُرِيْدُ اَنْ يَّصْدَكُمْ عَنْكُمْ اَعْمٰكًا يَّعْبُدُ اٰبَاؤَكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَا اِلَّا اَفْكٌ مُّفْتَرٰى ۚ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِّلْحَقِّ لَنَجْآءُهُمْ ۚ اِنْ هٰذَا اِلَّا اَسْحَرٌ مُّبِيْنٌ ۝ ۞ وَمَا اَتَيْنَهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَّذُرُّوْنَهَا وَمَا اَرْسَلْنَا اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ۝ ۞ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَا اَتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرٌ ۝ ۞

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं कि यह तो बस एक शख्स है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे। और उन्होंने कहा, यह तो महज एक झूठ है गढ़ा हुआ। और उन मुक़िरों के सामने जब हक़ आया तो उन्होंने कहा कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। और हमने उन्हें किताबें नहीं दी थीं जिन्हें वे पढ़ते हों। और हमने तुमसे पहले उनके पास कोई डराने वाला नहीं भेजा। और उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया। और ये उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था। पस उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, तो कैसा था उन पर मेरा अजाब। (43-45)

कुरआन अपने मुखातबीन (संबोधित लोगों) के सामने खुले-खुले दलाइल दे रहा था। मुखातबीन दलील से उसका तोड़ नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद वे अवाम को उससे रोकने में कामयाब हो गए। उनकी इस कामयाबी का वाहिद राज यह था कि उन्होंने लोगों को यह



सूरह-34. सबा

1159

पारा 22

कहकर उसकी तरफ से मुशतबह (संदिग्ध) कर दिया कि यह हमारे असलाफ (पूर्वजों) के तरीके के खिलाफ है। कुरआन में जो मोजिजाना अदब (दिव्य साहित्य) था उसका इंकार नामुमकिन था। उसके बारे में लोगों को यह कहकर मुतमइन कर दिया गया कि यह महज जादू बयानी का करिश्मा है, खुदाई 'वही' हेने से इसका कोई तअल्लुक नहीं। यह महज कलम का जोर है न कि इल्मे हकीकत का जोर। तारीख का यह तजर्बा निहायत अजीब है कि हर दौर के लोगों के लिए दलील के मुम्नबले में तअस्सुब (विद्वेष) ज्यादा ताकतवर साबित हुआ है।

कुरआन के मुखातबीन के पास कुरआन का इंकार करने के लिए या तो अक्ली दलाइल होते जिनके जरिए वे उसे रद्द कर सकते या उनके पास कोई दूसरी आसमानी किताब होती जिससे कुरआन की तरदीद निकाली जा सकती। मुखातबीन कुरआन के पास इन दोनों में से कोई चीज मौजूद न थी। मजीद यह कि दुनियावी तरक्की में भी वे दूसरी कैमों से बहुत ज्यादा पीछे थे। जिन लोगों का यह हाल हो वे अगर हक की दावत (आह्वान) का इंकार करते हैं तो इसकी वजह हठधर्मी है न कि माकूलियत (तार्किकता)।

قُلْ إِنَّمَا أَعْطَاكُمْ بِوَاحِدَةٍ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلَ خِيَارِكُمْ وَمِنْ أَصْحَابِكُمْ مَنْ جَاءَهُ الْإِنْدِيلُ بِكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝  
قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۚ إِنِ اجْتَبَىٰ إِلَهُ عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

कहो मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ। यह कि तुम खुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो-दो और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे साथी को जुनून नहीं है। वह तो बस एक सख्त अजाब से पहले तुम्हें डराने वाला है। कहो कि मैंने तुमसे कुछ मुआवजा मांगा हो तो वह तुम्हारा ही है। मेरा मुआवजा तो बस अल्लाह के ऊपर है। और वह हर चीज पर गवाह है। (46-47)

पैगम्बर के मुआसिरीन (समकालीन) ने पैगम्बर की दावत का इंकार कर दिया। मगर इनके पीछे ज़िद और तअस्सुब के सिवा और कुछ न था। हकीकत यह है कि अगर वे ज़िद और तअस्सुब से खाली होकर सोचते, चाहे अकेले अकेले सोचते, या चन्द आदमी मिलकर इज्तिमाई (सामूहिक) तौर पर गौर करते, तो वे पाते कि उनका पैगम्बर कोई दीवाना आदमी नहीं है। आपकी साबिका (पहले की) ज़िदगी आपकी संजीदगी की गवाही देती। आपका दर्दमंदाना अंदाज बताता कि आप जो कुछ कह रहे हैं वही आपके दिल की आवाज है। आपके कलाम का हकीमाना उस्लूब उसकी सेहत की दाखिली शहादत (भीतरी साक्ष्य) नजर आता। आपका किसी मुआवजे का तालिब न होना जाहिर करता है कि आपने इस काम को महज अल्लाह की खातिर शुरू किया है न कि जाती तिजारत की खातिर। ग़ैर जानिबदाराना

पारा 22

1160

सूरह-34. सबा

ग़ैरोफिक्क (निष्पक्ष चिंतन) में वे जान लेते कि आपकी बेकरारी जुनून की बेकरारी नहीं है बल्कि इसका सबब यह है कि आप जिस ख़तरे से डराने के लिए उठे हैं उसे अपनी आंखों से आता हुआ देख रहे हैं। मगर वे हक की दावत के बारे में संजीदा न थे इसलिए वे खुले हुए हकाइक उन्हें नजर भी न आ सके।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِرُ بِالْحَقِّ عَلامُ الْغُيُوبِ ۝ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِي  
الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝ قُلْ إِن ضَلَكْتُ فَأَتِمَّ أَخْلُكُ عَلَىٰ نَفْسِي وَإِنْ  
اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝

कहो कि मेरा ख़ब हक को (बातिल पर) मारेगा, वह छुपी चीजों को जानने वाला है। कहो कि हक (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) न आया करता है और न इआदा (पुनरावृत्ति)। कहो कि अगर मैं गुमराही पर हूँ तो मेरी गुमराही का ववाल मुझ पर है और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो यह उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की बदौलत है जो मेरा ख़ब मेरी तरफ भेज रहा है। बेशक वह सुनने वाला है, करीब है। (48-50)

दुनिया की तख़लीक हक (सत्य) हुई है। यहां सारा जोर हक की तरफ है। यहां तमाम दलाइल हक की तार्द करते हैं। हकीकते वाक्या के एतबार से यहां बातिल (असत्य) को कोई जोर और कोई दलील हासिल नहीं। ऐसी हालत में यह होना चाहिए कि हक यहां हमेशा सरबुलन्द रहे और बातिल यहां सरासर बेवजन होकर रह जाए। मगर अमलन ऐसा नहीं होता। इस दुनिया में हक इतना ताकतवर नहीं कि वह खुद अपने जोर पर बातिल का ख़ात्मा कर दे और बातिल इतना बेवकअत नहीं कि उसकी बुनियाद पर किसी शख्स के लिए इज्जत और सरबुलन्दी हासिल करना मुमकिन न हो।

इसकी वजह यह है कि यह दुनिया इस्तेहान की जगह है। यहां आजमाइश का कानून जारी है। इसलिए यहां बातिल को भी उभरने का मौका मिल जाता है। मगर यह सूरतेहाल आरज़ी तौर पर सिर्फ इस्तेहान की मुद्दत तक है। कियामत आते ही यह ग़ैर वाकई सूरतेहाल यकसर ख़त्म हो जाएगी। उस वक़्त तमाम नज़ी और अमली जोर सिर्फ हक की तरफ होगा और बातिल सरासर बेकीमत होकर रह जाएगा।

यह वाक्या अपनी कामिल सूत में कियामत में जाहिर होगा। मगर जब अल्लाह चाहता है उसे जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में भी जाहिर कर देता है ताकि लोगों के लिए सबक हो। वर्रै अबल में इस्लाम का ग़लबा इसी किस्म का एक जुजई इन्हार (आंशिक प्रदर्शन) था। चुनांचे जब मक्का फतह हुआ और तौहीद को शिर्क के ऊपर बालातरी हासिल हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्लललाहु अलैहि व सल्लम की जबान पर यह आयत थी : 'जाअल हक्कुव जह कत बातिल, इन्तल बातिल कन्न जहूम' (हक आया और बातिल

मिट गया, बेशक बातिल मिटने ही वाला था। बनी इस्राईलए 81)

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فِرْعَوْنُ أَقْلَفَوْتَ وَ اخْذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۖ وَقَالُوا آمْكَا بِهِ  
وَإِنَّا لَهُمْ لَشَتَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۖ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَ  
يَقْدِرُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۖ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا  
فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِمَّنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ۝

और अगर तुम देखो, जब ये घबराए हुए होंगे। पस वे भाग न सकेंगे और करीब ही से पकड़ लिए जाएंगे। और वे कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाए। और इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहा। और इससे पहले उन्होंने उसका इंकार किया। और बिना देखे दूर जगह से बातें फेंकते रहे। और उनकी और उनकी आरजू में आड़ कर दी जाएगी जैसा कि इससे पहले उनके सहमार्गी लोगों के साथ किया गया। वे बड़े धोखे वाले शक में पड़े रहे। (51-54)

मौजूदा दुनिया में आदमी हक का इंकार करता है तो फौरन उसका अंजाम सामने नहीं आता। यह सूरतेहाल उसे इंकारे हक के मामले में ढीठ बना देती है। वह हक की दावत को संजीदा तवज्जोह के कबिल नहीं समझता। वह हिक्मतअमेज (तिरस्कारपूर्ण) अल्फजमें उसका जिक्क करता है। वह बेपरवाही के साथ उसे रद्द कर देता है। वह उस पर इस तरह गैर जिम्मेदाराना अंदाज में तबसिरा करता है जैसे कि वह किसी लिहाज का मुत्तहिक ही नहीं।

मगर जब दुनिया का मौजूदा निजाम खत्म होगा तो अचानक सारा मामला बिल्कुल बदल जाएगा। अब आदमी को नजर आएगा कि वही चीज सबसे ज्यादा अहम थी जिसे वह सबसे ज्यादा नजरअंदाज किए हुए था। यह देखकर उसकी सारी अकड़ खत्म हो जाएगी। वह उस हक का वालिहाना (आतुरतापूर्ण) एतराफ करने लगेगा जिसे वह दुनिया में किसी तवज्जोह के लायक नहीं समझता था। मगर अब वक्त निकल चुका होगा। उससे कहा जाएगा कि एतराफ की कीमत आलमे गैब (अदृश्य-स्थिति) में थी, आलमे शुहद (प्रकट स्थिति) में एतराफ की कोई कीमत नहीं।

‘शक मुरीब’ का मतलब यह है तरदुद (दुविधा) में डालने वाला शक। यह मुंकिरीन की नफिसयाती हालत की तस्वीर है। दुनिया में जो हक उनके सामने पेश किया जा रहा था वह जवान व बयान के एतबार से इतना ताकतवर था कि वह अपने आपको इससे बेवस पाते थे कि दलील के जरिए उसे रद्द कर सकें। मगर यह हक चूँकि उनके जेहनी संचे के खिलाफ था इसलिए वे उसे कुबूल करने पर भी आमामा न हो सके। इस दोतरफा सूरतेहाल ने उन्हें एक किस्म के अंदरूनी खलजान (असमंजस) में मुब्तिला रखा। यहां तक कि मौत के फरिश्ते ने आकर वह पर्दा उनकी आंख से हटा दिया जिसे उन्हें खुद अपने हाथ से हटाना था। मगर

वे उसे हटाने में कामयाब न हो सके।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلِكِ رُسُلًا ۚ أُولَىٰ أَجْنَحَةٍ  
مَّمْشَىٰ وَتِلْكَ وَرُبِعٌ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝  
مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ  
مِنْ بَعْدٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

आयतें-45

सूरह-35. फतिर

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। तारीफ अल्लाह के लिए है, आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला, फरिश्तों को पैगामरसां (संदेशवाहक) बनाने वाला जिनके पर हैं दो-दो और तीन-तीन और चार-चार। वह पैदाइश में जो चाहे ज्यादा कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं। और जिसे वह रोक ले तो कोई उसे खोलने वाला नहीं। और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

फरिश्तों को अल्लाह तआला ने पैगाम रसानी के लिए और अपने पैगाम की तफ्सीज (लागू करने) के लिए पैदा किया है। मगर शैतान ने लोगों को सिखाया कि फरिश्ते मुस्तकिल विज्जात (स्वयं में) हैसियत रखते हैं। वे दुनिया में बरकत और आखिरत में नजात का जरिया बन सकते हैं। चुनांचे कुछ कौमों लात और मनात जैसे नामों से उनकी फर्जी तस्वीरें बनाकर उनकी इबादत करने लगीं। कुछ कौमों ने उन्हें देवी देवता करार देकर उन्हें पूजना शुरू कर दिया। मौजूदा जमाने में कानून फितरत (Law of Nature) की ताजीम भी इसी गुमराही का जदीद (आधुनिक) एडिशन है। मगर हकीकत यह है कि फरिश्ते हैं या कानून फितरत, सब एक खुदा के महकूम हैं। सब एक खुदा के कारगुजार हैं, चाहे वे दो बाजुओं वाले हों या 600 बाजुओं वाले या 600 करोड़ बाजुओं वाले।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۖ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ  
مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ قَاتِلُوا تُفَكُونُ ۚ وَإِنْ يَكْذِبُوا فَعُدَّ

كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ وَآلِيَ اللَّهِ تَرْجِعُ الْأُمُورُ ①

ऐ लोगो अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और खालिक है जो तुम्हें आसमान और जमीन से रिक्र देता हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तो तुम कहां से धोखा खा रहे हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएं तो तुमसे पहले भी बहुत से पैगम्बर झुठलाए जा चुके हैं। और सारे मामले अल्लाह ही की तरफ रुजूअ (प्रवृत्त) होने वाले हैं। (3-4)

इंसान अपनी जिंदगी के लिए बेशुमार चीजों का मोहताज है। मसलन रोशनी, पानी, हवा, खुराक, मादनियात (खनिज, धातु) वगैरह। इनमें से हर चीज ऐसी है कि उसे वजूद में लाने के लिए कायनाती ताकतों का मुत्तहिदा अमल (संयुक्त-प्रक्रिया) दरकार है। एक खुदा के सिवा कौन है जो इतने बड़े वाक्ये को जूहूर में लाने की ताकत रखता हो। मुश्कि और मुल्हिद (नास्तिक) लोग भी यह दावा नहीं कर सके कि इन असबाबे हयात की फराहमी एक खुदा के सिवा कोई और कर सकता है। फिर जब इन तमाम चीजों का खालिक और मुंजिम एक खुदा है तो उसके सिवा दूसरों को माबूद बनाना क्योंकि दुरुस्त हो सकता है।

तारीख का यह अजीब तजर्बा है कि जो लोग खुदा के सिवा दूसरों को बड़ाई का मकाम दिए हुए हों वे उन्हें छोड़कर खुदा को अपना बड़ा बनाने पर राजी नहीं होते, चाहे उसकी दावत पैगम्बराना सतह पर क्यों न दी जा रही हो। इसकी वजह यह है कि लोग हमेशा माने हुए को मानते हैं। जबकि पैगम्बर पर यकीन करने का मतलब उस वक्त यह होता है कि आदमी न माने हुए को माने। इस किस्म के ईमान को हासिल करने की शर्त यह है कि आदमी खुद अपनी फित्री (वैचारिक) कुव्वतों को बेदार करे, वह अपनी जाती बसीरत (सूझबूझ) से सच्चाई को दरयाफ्त करे। और बिलाशुबह यह किसी इंसान के लिए हमेशा सबसे ज्यादा मुश्किल काम रहा है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّكُمُ  
بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ  
لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا  
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ②

ऐ लोगो, वेशक अल्लाह का वादा बरहक है। तो दुनिया की जिंगी तुम्हें धोखे में न डाले। और न वह बड़ा धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। वेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसे दुश्मन ही समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है कि वे दोजख वालों में से हो जाएं। जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए सज़ा अजाब है। और जो ईमान लाए और नेक अमल किया उनके लिए माफ़ी है और

बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (5-7)

खुदा ने अपने पैगम्बरों के जरिए जिंदगी की नौइयत के बारे में जो खबर दी है वह बजाहिर एक ख्याली बात मालूम होती है। क्योंकि आदमी फौरन उनसे दो चार नहीं होता। इसके बरअक्स दुनिया की चीजें हकीकी नजर आती हैं। क्योंकि आदमी आज ही उनसे दो चार हो रहा है। मौत और जलजला और हादसा आदमी को चौकन्ना करते हैं। यह गोया क्रियामत से पहले क्रियामत की इत्तिहा हैं। मगर शैतान फौरन ही लोगों के जेहन को यह कहकर फेर देता है कि ये सब असबाब के तहत पेश आने वाले वाक्यात हैं न कि खुदाई मुदाखलत के तहत। मगर इस किस्म का हर ख्याल शैतान का फरेब है। वह दिन आना लाजिमी है जबकि झूठ और सच में तफरीक (विभेद) हो। जबकि अच्छे लोगों को उनकी अच्छाई का इनाम मिले और बुरे लोगों को उनकी बुराई की सजा दी जाए।

أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَاهُ حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي  
مَن يَشَاءُ ۚ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ③

क्या ऐसा शख्स जिसे उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझने लगे, पस अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। पस उन पर अफसोस करके तुम अपने को हल्कान (व्यथित) न करो। अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (8)

अल्लाह तआला ने हर आदमी को यह सलाहियत दी है कि वह सोचे और हक और नाहक के दर्मियान तमीज कर सके। जो आदमी अपनी इस फित्री सलाहियत को इस्तेमाल करता है वह हिदायत पाता है। और जो शख्स इस फित्री सलाहियत को इस्तेमाल नहीं करता वह हिदायत नहीं पाता।

आदमी के सामने जब हक आए तो फौरन उसके जेहन को झटका लगता है। उस वक्त उसके लिए दो रास्ते होते हैं। अगर वह हक का एतराफ कर ले तो उसका जेहन सही सन्त में चल पड़ता है। वह हक का मुसाफिर बन जाता है। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि कोई मस्लेहत या कोई नफिसयाती पेचीदगी उसके सामने आए और वह उससे मुतअसिर होकर हक का एतराफ करने से रुक जाए तो उसका जेहन अपने अदम एतराफ (अस्वीकार) को जाइज साबित करने के लिए बातें गढ़ना शुरू करता है। वह अपने बुरे अमल को अच्छा साबित करने की कोशिश करता है। यह एक जेहनी बीमारी है। और जो लोग इस किस्म की जेहनी बीमारी में मुक्त्ला हो जाएं वे कभी हक का एतराफ नहीं कर पाते। यहां तक कि इसी हाल में मर कर वे खुदा के यहां पहुंच जाते हैं। ताकि अपने किए का अंजाम पाएं।

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَسُقْنَاهُ إِلَى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَلِكَ النُّشُورُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۖ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَكَرُوا لَكُمْ هُوَ يُؤْوَرُ ۝

और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादल को उठाती हैं। फिर हम उसे एक मुर्दा देस की तरफ ले जाते हैं। पस हमने उससे उस जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद फिर जिंदा कर दिया। इसी तरह होगा दुबारा जी उठना। जो शख्स इज्जत चाहता हो तो इज्जत तमामतर अल्लाह के लिए है। उसकी तरफ पाकीज (पावन) कलाम चढ़ता है और अमले सालेह (सत्कर्म) उसे ऊपर उठाता है। और जो लोग बुरी तदबीर कर रहे हैं उनके लिए सख्त अजाब है। और उनकी तदबीर नाबूद (विनष्ट) होकर रहेंगी। (9-10)

मौजूदा दुनिया आखिरत की तमसील है। बारिश एक मालूम वाकये की सूरत में नामालूम वाकये को मुमसिल कर रही है। बारिश क्या है। बारिश पूरी कायनात के एक मुत्तहिदा अमल का नतीजा है। सूरज और हवा और समुद्र और कशिश और दूसरे बहुत से आलमी असबाब कामिल हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ अमल करते हैं। इस तरह वह बारिश जुहूर में आती है जो ख़ुशक जमीन पर ज़िंगी पैदा कर दे।

बारिश का यह अमल साबित करता है कि कायनात का नाजिम पूरी कायनात पर कामिल इस्त्रियार रखता है। वह एक वाकये को अपने मंसूबे के तहत जुहूर में लाता है। और फिर उसके मिटने के बाद उसे दुबारा जाहिर कर देता है, चाहे उसे दुबारा जाहिर करने के लिए पूरी कायनात को मुत्तहरिक (सक्रिय) करना पड़े।

मुर्दा जमीन को दुबारा सरसब्ज करना, और मुर्दा इंसान को दुबारा जिंदा करना, दोनों यकसां (समान) दर्जे के वाकयात हैं। फिर जब पहला वाकया मुमकिन साबित हो जाए तो इसके बाद उसी के मुमासिल (समरूप) दूसरे वाकये का मुमकिन होना अपने आप साबित हो जाता है।

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की जगह है, इसलिए यहां इज्जत वक्ती तौर पर एक रैर मुस्तहिक को भी मिल जाती है। मगर आखिरत में सारी इज्जत उन लोगों का हिस्सा होगी जो वाकई इसका इस्तहकक (अधिकार) रखते हों। इस इस्तहकक का मेयार कलमा तथ्यबा और अमले सालेह (नेक काम) है। यानी अल्लाह को इस तरह पाना कि वही आदमी की याद बन जाए जिसमें वह जिए। वही उसका अमल बन जाए जिसमें वह अपनी कुव्वतें सर्फ करे। जो लोग इस तरह अपनी जिंदगी की तामीर करें खुदा उनका मददगार बन जाता है और जिन

लोगों का खुदा मददगार बन जाए उन्हें जेर करने वाला कोई नहीं।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَاتِحِلٌ مِنْ أَنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يَعْمَرُ مِنْ مُعْتَمِرٍ وَلَا يَنْفَضُ مِنْ عُمْرَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर पानी की बूंद से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। और कोई औरत न हामिला (गर्भवती) होती है और न जन्म देती है मगर उसके इल्म से। और न कोई उम्र वाला बड़ी उम्र पाता है और न किसी की उम्र घटती है मगर वह एक किताब में दर्ज है। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (11)

पहला इंसान जमीनी अज्जा (तत्वों) से बनाया गया। फिर खुदा ने इंसान को एक बूंद में बशकल बीज रख दिया। फिर इंसानों को औरत और मर्द में तक्सीम करके उनके जोड़े से इंसानी नस्ल चलाई। यह वाकया खुदा की बेपनाह क़दरत को बताता है।

फिर एक बच्चा जब पेट में परवरिश पाना शुरू होता है तो वह पाता है कि पेट के अंदर वे तमाम मुवाफिक असबाब बगैर तलब के मौजूद हैं जो उसे नागुजीर (अपरिहार्य) तौर पर मल्लूब थे। यह वाकया मजीद साबित करता है कि बच्चे को पैदा करने वाला बच्चे की ज़रूरतों को पहले से जानता था वरना वह पेशगी तौर पर इसका इतना मुकम्मल इतिजाम किस तरह करता।

यही मामला उम्र का है। कोई शख्स इस पर कादिर नहीं कि वह अपनी मर्जी के मुताबिक अपनी उम्र का तअय्युन कर सके। ऐसा मालूम होता है कि उम्र का मामला तमामतर किसी ख़ारजी (वाह्य) हस्ती के हाथ में है। वह जिसे चाहता है कम उम्र में उठा लेता है और जिसे चाहता है लम्बी उम्र दे देता है। इन सारे वाकयात में एक खुदा के सिवा किसी का कोई दखल नहीं। फिर कैसे दुरुस्त हो सकता है कि आदमी एक खुदा के सिवा किसी और से अदेशा रखे, वह किसी और से उम्मीदें कायम करे।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَذَا عَذَابٌ فُؤَاتٍ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَمِنْ كُلِّ تَاكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا ۚ وَتَسْتَخْرِجُونَ حَبْلَةً تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاحِرَ لِيَتَبَغَّوْا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۚ ذُكِّرْكُمْ اللَّهُ رَبَّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ۝



إِنْ تَدْعُهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ  
يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ۝

और दोनों दरिया एकसां (समान) नहीं। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला, पीने के लिए खुशगवार। और यह खारी कड़वा है। और तुम दोनों से ताजा गोشت खाते हो और जीवन की चीज निकालते हो जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो जहाजों को कि वे उसमें फाड़ते हुए चलते हैं। ताकि तुम उसका फल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। वह दाखिल करता है रात को दिन में और वह दाखिल करता है दिन को रात में। और उसने सूरज और चांद को मुसख़्खर (सक्रिय) कर दिया है। हर एक चलता है एक मुकरर वक्त के लिए। यह अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाही है। और उसके सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे। और अगर वे सुनें तो वे तुम्हारी फरयादरसी नहीं कर सकते। और वे कियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इंकार करेंगे। और एक बाख़बर की तरह कोई तुम्हें नहीं बता सकता। (12-14)

जमीन पर पानी का अजीमुश्शन ज़ख़ीरा है, वसीअ (विस्तृत) समुद्रों में खारी पानी की सूरत में, और दरियाओं और झीलों और चशमों में मीठे पानी की सूरत में। यह पानी आदमी के लिए बेशुमार फायदों का जरिया है। वह पीने के लिए और आबापाशी (सिंचाई) के लिए इस्तेमाल होता है। इससे आबी जानवर हासिल होते हैं जो इंसान के लिए कीमती खुराक हैं। धरती के तीन चौथाई हिस्से में फैले हुए समुद्र गोया वसीअ आबी (जलीय) सड़कें हैं जिन्होंने सफर और बारबरदारी (यातायात) को बेहद आसान कर दिया है। समुद्रों से मोती और दूसरी कीमती चीजें हासिल होती हैं वगैरह।

फिर वसीअ ख़ला में ख़ुदा ने सूरज और चांद को सक्रिय कर रखा है जिनमें बेशुमार फायदे हैं। उसने जमीन को सूरज के गिर्द अपने महवर (धुरी) पर कामिल हिसाब के साथ घुमा रखा है जिससे रात और दिन पैदा होते हैं। इस तरह के बेशुमार कायनाती इतिजामात हैं जो सिर्फ़ ख़ुदा के कायम करता हैं। फिर ख़ुदा के सिवा कौन है जो इंसान के जब्बए शुक्र का मुस्तहिक हो। अथाह ताकतें रखने वाला ख़ुदा इंसान की हाजतें पूरी कर सकता है या वे मफ़रूज़ा (काल्पनिक) माबूद जो किसी किसम का कोई इख़्तियार नहीं रखते।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ إِنْ يَشَاءْ يُدْخِلْكُمْ  
وَيَأْتِي بَخْلَقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ وَلَا تَتَزَوَّرُوا زِينَةً وَرَر  
أُخْرَىٰ وَإِنْ تَدْعُهُمْ ثَمَنًا يُثْبَلُ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ

إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يُخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَمَنْ تَرَكْنِي فَإِنِّي بَكَرٌ  
لِّنَفْسِي ۝ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

ऐ लोगो, तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो बेनियाज (निस्पृह) है तारीफ वाला है। अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई मख़्लूक ले आए। और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं। और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से जरा भी न उठया जाएगा, अगरचे वह करीबी संबंधी क्यों न हो। तुम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज कायम करते हैं। और जो शख्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है और अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है। (15-18)

मौजूदा दुनिया में इंसान इतिहाई हद तक ग़ैर महफूज (Vulnerable) है। इंसान का सारा मामला फितरत के ख़स तवाजुन (संतुलन) पर फ़ुंसिर है। यह तवाजुन बाकी न रहे तो एक लम्हे में इंसानी ज़िंदगी का ख़ात्मा हो जाए।

सूरज अगर अपने मौजूदा फ़ासले को ख़त्म करके जमीन के करीब आ जाए तो अचानक तमाम इंसान जल भुनकर खाक हो जाएं। जमीन के अंदर इसका बड़ा हिस्सा बेहद गर्म माददे की सूरत में है। इस गर्म माददे की हरकत ऊपर की तरफ हो जाए तो सतह जमीन पर ऐसा जलजला पैदा हो कि तमाम आबादियां खंडहर बनकर रह जाएं। ऊपरी फज़ से हर वक्त शहाबी पत्थर (Meteors) बरसते रहते हैं। अगर मौजूदा इतिजाम बिगड़ जाए तो ये शहाबी पत्थर एक ऐसी संगबारी की सूरत इख़्तियार कर लें जिससे किसी हाल में भी बचाव मुमकिन न हो। इस तरह के बेशुमार हलाकतख़ेज इम्कानात हर वक्त इंसान को घेरे में लिए हुए हैं। हकीकत यह है कि इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जो मुकम्मल तौर पर मोहताज है। इंसान को ख़ुदा की जरूरत है न कि ख़ुदा को इंसान की जरूरत।

कियामत का बोझ ख़ुद अपने गुनाहों का बोझ होगा न कि ईंट पत्थर का बोझ। ईंट पत्थर के बोझ में एक शख्स किसी दूसरे शख्स का हिस्सेदार बन सकता है मगर ख़ुद अपने बुरे अमल से जो रुसवाई और तकलीफ किसी शख्स को लाहिक हो वह इतिहाई जाती नौइयत का अजाब होता है। इसमें किसी दूसरे के लिए हिस्सेदार बनने का सवाल नहीं।

हकीकत निहायत वाज़ेह है मगर हकीकत को वही शख्स समझता है जो उसे समझना चाहे। जो शख्स इस बारे में संजीदा ही न हो कि हकीकत क्या है और बेहकीकत क्या, उसे कोई बात समझाई नहीं जा सकती।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۝ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ۝ وَلَا الظِّلُّ وَلَا

الْحُرُورُ ۖ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْواتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ۚ إِنَّ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۚ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۚ وَإِن يَكَذِّبُونَكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ وَالزُّبُرُ ۖ وَالْكِتَابُ الْمُنِيرُ ۖ ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۚ

ع  
15

और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं। और न अंधेरा और न उजाला। और न साया और न धूप। और जिंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते। बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे वह चाहता है। और तुम उन्हें सुनाने वाले नहीं बन सकते जो कब्रों में हैं। तुम तो बस एक खबरदार करने वाले हो। हमने तुम्हें हक (सत्य) के साथ भेजा है, खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर। और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं। उन्होंने भी झुठलाया। उनके पास उनके पैगम्बर खुले दलाइल और सहीफे (ग्रंथ) और रोशन किताब लेकर आए। फिर जिन लोगों ने न माना उन्हें मैंने पकड़ लिया, तो देखो कि कैसा हुआ उनके ऊपर मेरा अजाब। (19-26)

यह एक हकीकत है कि जो उम्मीद रोशनी से की जा सकती है वह तारीकी से नहीं की जा सकती। इसी तरह साये से जो चीज मिलेगी वह धूप से मिलने वाली नहीं। यही मामला इंसान का है। इंसानों में कुछ आंख वाले होते हैं और कुछ अंधे होते हैं। आंख वाला फौरन अपने रास्ते को देखकर उसे पहचान लेता है। मगर जो अंधा हो वह सिर्फ भटकता फिरेगा। उसे कभी अपने रास्ते की पहचान नहीं हो सकती।

इसी तरह अंदरूनी मअरफत के एतबार से भी दो किस्म के लोग होते हैं। एक जानदार और दूसरे बेजान। जानदार इंसान वह है जो बातों को उसकी गहराई के साथ देखता है। जो लफ्जी फरेब का पर्दा फाड़कर मअनी का इदराक करता है। जो सतही पहलुओं से गुजर कर हकीकते वाक्यो को जानने की कोशिश करता है। जो चीजों को उनके जौहर के एतबार से परखता है न कि महज उनके जाहिर के एतबार से। जिसकी निगाह हमेशा असल हकीकत पर रहती है न कि रैर मुतअल्लिक मूशिगाफियों (कुतर्कों) पर। जो इसे सहन नहीं कर सकता कि सच्चाई को जान लेने के बाद वह अपने आपको उससे वाबस्ता न करे। यही जानदार लोग हैं। और यही वे लोग हैं जिन्हें मौजूदा दुनिया में हक को कुबूल करने की तौफीक मिलती है। और जो लोग इसके बरअक्स सिफात रखते हों वे मुर्दा इंसान हैं। वे इम्तेहान की इस दुनिया में कभी कुबूले हक की तौफीक नहीं पाते। वे हक की दावत के मुम्बले में अंधे बने रहते हैं। यहां तक कि मर कर खुदा के यहां चले जाते हैं ताकि अपने अंधेपन का अंजाम भुगतें।

الْمُتَرَّكُ ۚ إِنَّ اللَّهَ أُنزِلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَعَرَايِبُ سُودٌ ۚ وَمِنَ النَّاسِ وَالْدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَلِكَ ۚ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ۚ

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे मुख्तलिफ रंगों के फल पैदा कर दिए। और पहाड़ों में भी सफेद और सुर्ख मुख्तलिफ रंगों के टुकड़े हैं और गहरे स्याह भी। और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी मुख्तलिफ रंग के हैं। अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, बख्शाने वाला है। (27-28)

बादल से एक ही पानी बरसता है मगर उससे मुख्तलिफ किस्म की चीजें उगती हैं। अच्छे दरख्त भी और झाड़ु झांकाड़ भी। इसी तरह एक ही माददा है जो पहाड़ों की सूरत में जमा हुआ होता है मगर उनमें कुछ सुर्ख व सफेद हैं और कुछ बिल्कुल काले। इसी तरह जानदार भी एक गिजा खाते हैं। मगर उनमें से कोई इंसान के लिए कारआमद है और कोई बेकार। इससे मालूम हुआ कि फैज (प्रदत्तता) चाहे आम हो मगर उससे फायदा हर एक को उसकी अपनी इस्तेदाद (सामर्थ्य) के मुताबिक पहुंचता है। यही मामला इंसान का भी है। हक की दावत की सूरत में खुदा की जो रहमत बिखेरी जाती है वह अगरचे बजाते खुद एक होती है मगर मुख्तलिफ इंसान अपने अंदरूनी मिजज के मुताबिक उससे मुख्तलिफ किस्म का तासुर कुबूल करते हैं। कोई शख्स हक की दावत में अपनी रूह की गिजा पा लेता है। वह फौरन उसे कुबूल करके अपने आपको उससे वाबस्ता कर देता है और किसी की नफिसयात उसके लिए हक को मानने में रुकावट बन जाती है। वह उससे बिदकता है, यहां तक कि उसका मुख्तलिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

हक की दावत जिस शख्स के लिए उसके दिल की आवाज साबित हो वही इल्म वाला इंसान है। उसके अंदर फितरत की खुदाई रोशनी जिंदा थी। इसलिए उसने हक के जाहिर होते ही उसे पहचान लिया। इसके मुकाबले में वे लोग जाहिल हैं जो अपनी फितरत की रोशनी पर पर्दा डाले हुए हों और जब हक उनके सामने बेनकाब हो तो उसे पहचानने में नाकाम रहें।

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلاَنِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ۚ لِيُؤْتِيَهُمُ اجْزَاءَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّنْ

فَضْلُهُ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا  
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝

जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छुपे और खुले खर्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मांद न होगी ताकि अल्लाह उन्हें उनका पूरा अज्र दे। और उनके लिए अपने फल से और ज्यादा कर दे। बेशक वह बख्शने वाला है, कद्रदां है। और हमने तुम्हारी तरफ जो किताब 'वही' (प्रकाशना) की है वह हक है, उसकी तस्दीक करने वाली है जो इसके पहले से मौजूद है। बेशक अल्लाह अपने बंदों की खबर रखने वाला है, देखने वाला है। (29-31)

इल्म वाला वह है जो मअरफत (अन्तर्ज्ञान) वाला हो। और जिस शख्स को मअरफत हासिल हो जाए वह खुदा की किताब को अपना फिक्री रहबर बना लेता है। वह अल्लाह का इबादतगुजार बंदा बन जाता है। इंसानों के हक में वह इतना महरबान हो जाता है कि अपनी महनत की कमाई में से उनके लिए भी हिस्सा लगाता है। उसके अंदर यह हौसला पैदा हो जाता है कि हमह-तन (पूर्णतः) अपने आपको खुदा के काम में लगा दे और इस पर कानेअ (संतुष्ट) रहे कि उसका इनाम उसे आखिरत में दिया जाएगा।

कुरआन की सदाकत का एक सबूत यह भी है कि वह ऐन उन पेशीनगोइयों के मुताबिक है जो पिछली किताबों में इससे पहले आ चुकी थीं। अगर कोई शख्स संजीदा हो तो यही वाक्या उसके लिए कुरआन पर ईमान लाने के लिए काफी हो जाए।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ ۚ إِنَّ اللَّهَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝  
جَعَلْنَا عَدْنَ يَدِ خُلُوفٍ يَأْكُلُونَ فِيهَا مِنْ آسَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَلَوْ لَوَّاهُ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ ۚ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝  
الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ لَآ يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ ۖ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا  
لُغُوبٌ ۝

फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगों को जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया। पस उनमें से कुछ अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ बीच की चाल पर हैं। और उनमें से कुछ अल्लाह की तौफ़ीक से भलाइयों में सबकत

(अग्रसरता) करने वाले हैं। यही सबसे बड़ा फल है। हमेशा रहने वाले बाग हैं जिनमें ये लोग दाखिल होंगे, वहां उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां उनका लिबास रेशम होगा। और वे कहेंगे, शुक्र है अल्लाह का जिसने हमसे गम को दूर किया। बेशक हमारा ख माफ करने वाला, कद्र करने वाला है। जिसने हमें अपने फल से आबाद रहने के घर में उतारा, इसमें हमें न कोई मशक्कत पड़ेगी और न कभी थकान लाहिक होगी। (32-35)

हज्रत याकूब हज्रत इब्रहीम के पेटे थे। हज्रत याकूब अलैहिस्सलाम से लेकर हज्रत मसीह अलैहिस्सलाम तक तमाम पैगम्बर बनी इस्राईल की नस्ल में पैदा होते रहे। इस तरह तकरीबन दो हजार साल तक पैगम्बरी का सिलसिला यहूद की नस्ल में जारी रहा। मगर बाद के दौर में यहूद इस काबिल न रहे कि वे किताबे इलाही के हामिल (धारक) बन सकें। चुनांचे दूसरी जिंदा कौम (बनू इस्राईल) को किताबे इलाही का हामिल बनने के लिए मुंतखब किया गया। बनू इस्राईल में पैगम्बरे इस्लाम हज्रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश इसी इलाही फैसले की तामील थी। इस आयत में 'मुंतखब बंदों' से मुराद यही बनू इस्राईल हैं।

अल्लाह के रसूल हज्रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब बनू इस्राईल के सामने कुरआन पेश किया तो उनमें तीन किस्म के लोग निकले। एक वे जो उसके खिलाफ मुखालिफ बनकर खड़े हो गए। दूसरे वे जिन्होंने दर्मियानी राह इख्तियार की। तीसरा गिरोह आगे बढ़ने वालों का था। यही वे लोग हैं जिन्होंने पैगम्बर हज्रत मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देकर इस्लाम की अजीम तारीख बनाई।

कुरआन का साथ देने के लिए उन्हें हर किस्म की राहत से महरूम हो जाना पड़ा। इसके नतीजे में उनकी जिंदगी अमलन सब्र और मशक्कत की जिंदगी बन गई। इस कुर्बानी की कीमत उन्हें आखिरत में इस तरह मिलेगी कि खुदा उन्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जहां वे हमेशा के लिए गम और तकलीफ से महफूज हो जाएंगे।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۖ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فِيمَوْتُهَا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۖ وَهُمْ يَصْطَرِّحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوْ كَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّارُ يَوْمَ ذُنُوقِهَا لَاطِمَةً ۖ إِنَّكُمْ لَفِيهَا لَمَصِيرٌ ۝

और जिन्होंने इंकार किया उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनकी कजा! आएगी कि वे मर जाएं और न दोख का अजाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर मुंकिर को ऐसी ही सजा देते हैं। और वे लोग उसमें चिल्लाएंगे। ऐ हमारे ख हमें निकाल ले।

हम नेक अमल करेंगे, उससे मुसल्लिफ जो हम किया करते थे। क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी कि जिसे समझना होता वह समझ सकता। और तुम्हारे पास डराने वाला आया। अब चखो कि जालिमों का कोई मददगार नहीं। (36-37)

दुनिया में हक का इंकार करने वाले आखिरत में हक का मुकम्मल एतराफ करेंगे। मगर यह एतराफ उनके कुछ काम न आएगा। क्योंकि आखिरत का एतराफ मजबूर इंसान का एतराफ है। और अल्लाह तआला को जो एतराफ मल्लूब है वह इख्तियारी एतराफ है न कि जबरी एतराफ।

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۝

अल्लाह आसमानों और जमीन के गैब (अप्रकट) को जानने वाला है। बेशक वह दिल की बातों से भी बाखबर है। वही है जिसने तुम्हें जमीन में आबाद किया। तो जो शख्स इंकार करेगा उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार, उनके खब के नजदीक, नाराजी ही बढ़ने का सबब होता है। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार खसारे (घाटे) ही में इजाफा करेगा। (38-39)

इस आयत में खलीफा से मुराद पिछली कौमों का खलीफा बनना है। 'तुम्हें जमीन में खलीफा बनाया' का मतलब है पिछली कौमों के गुजरने के बाद तुम्हें उसकी जगह जमीन में आबाद किया। अल्लाह तआला का यह तरीका है कि वह एक कौम को जमीन में बसने और अमल करने का मौका देता है। फिर जब वह कौम अपनी नाअहली साबित कर देती है तो उसे हटाकर दूसरी कौम को उसकी जगह ले आता है। इस तरह जमीन पर एक के बाद एक कौम की आबादकारी का सिलसिला जारी रहेगा। यहां तक कि कियामत आ जाए।

मौजूदा जमाने में फितरत के जो कयामीन (सिद्धांत) दरयाप्त हुए हैं वे बताते हैं कि यहां इसका इम्कान है कि अंधेरे में किसी चीज का फोटो लिया जाए। बजाहिर न सुनाई देने वाली आवाज को मशीन की मदद से काबिले समाअत (सुनने योग्य) बनाया जा सके। तख़लीक में इस तरह के इम्कानात ख़ालिक की क़दरत का तआरुफ हैं। इससे मालूम होता है कि इस कायनात का ख़ालिक एक ऐसी हस्ती है जो गैब को जाने और दिल के अंदर छुपी हुई बात को सुन सके। गोया इंसान का मामला एक ऐसे अलीम और कदीर खुदा से है जिससे न किसी ज़ुर्म को छुपाया जा सकता और न यही मुमकिन है कि उसके फैसले को बदलवाया जा सके।

قُلْ إِيَّاكُمْ شُرَكَاءُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ

الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ أَمْ أُنْتَبِهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَى بَيِّنَاتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِنَّ يَعْبُدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا الْإِغْوَارَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝

कहो, जरा तुम देखो अपने उन शरीकों को जिन्हें तुम खुदा के सिवा पुकारते हो। मुझे दिखाओ कि उन्होंने जमीन में से क्या बनाया है। या उनकी आसमानों में कोई हिस्सेदारी है। या हमने उन्हें कोई किताब दी है तो वे उसकी किसी दलील पर हैं। बल्कि ये जालिम एक दूसरे से सिर्फ धोखे की बातों का वादा कर रहे हैं। बेशक अल्लाह ही आसमानों और जमीनों को थामे हुए है कि वे टल न जाएं। और अगर वे टल जाएं तो उसके सिवा कोई और उन्हें थाम नहीं सकता। बेशक वह तहम्मूल (उदारता) वाला है, बख़्शने वाला है। (40-41)

कायनात की तख़लीक और अथाह ख़ला में बेशुमार अजरामे समावी (आकाशीय रचनाओं) का निजाम हबतनाक हद तक अजीम है। यह बिल्कुल नाक़बिले कयास है कि इस अजीम कारनामे को ज़ुर्ई (आंशिक) या कुल्ली तौर पर उन हस्तियों में से किसी की तरफ मंसूब किया जा सके जिन्हें लोग बतौर खुद माबूद बनाकर पूजते हैं। इसी तरह इसका भी कोई सुबूत नहीं कि खुदा ने खुद यह ख़बर दी हो कि कोई और है जो उसके साथ खुदाई में शरीक है।

हकीकत यह है कि ग़ैर अल्लाह की परस्तिश का सारा मामला सिर्फ फ़ेब पर कयम है। इस किस्म का फ़ेब उसी वक़्त तक चलेगा जब तक कियामत न आए। कियामत के आते ही उनका इस तरह ख़ात्मा हो जाएगा जैसे कि उनका कोई वजूद ही न था।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۚ ۝ اسْتَكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۖ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ۚ ۝ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكُنُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝



1175

**पारा 22**

अरब के लोग जब सुनते कि यहूद ने और दूसरी कौमों ने अपने नबियों की नाफरमानी की तो वे पुरजोश तौर पर कहते कि अगर ऐसा हो कि हमारे दर्मियान कोई नबी आए तो हम उसे पूरी तरह मानें और उसकी इताअत करें। मगर जब उनके दर्मियान एक पैगम्बर आया तो वे उसके मुखलिफ बन गए।

इसकी वजह यह है कि इंकारे हक किसी खास कौम की खुसूसियत नहीं। वह इंसानी नफिसयात की आम खुसूसियत है। हक को मानना अक्सर हालात में अपनी बड़ाई को खत्म करने के हममअना होता है। आदमी अपनी बड़ाई को खोना नहीं चाहता। इसलिए वह हक को मानने के लिए भी तैयार नहीं होता। वह भूल जाता है कि हक का इंकार जरूर उसके बस में है, मगर हक के इंकार के अंजाम से अपने आपको बचाना हरगिज उसके बस में नहीं।

और अगर अल्लाह लोगों के आमाल पर उन्हें पकड़ता तो जमीन पर वह एक जानदार को भी न छोड़ता। लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक मोहलत देता है। फिर जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तो अल्लाह अपने बंदों को ख़द देखने वाला है। (45)

**पारा 22**

1176

किया। यह गलतियाँ इतनी ज्यादा हैं कि अगर इंसान को उसकी गलतकारियों पर फौरन पकड़ा जाने लगे तो जमीन में इंसानी नस्ल का खात्मा हो जाए। मगर इंसान की आजादी बराए इस्तेहान है। और इस इस्तेहान की एक मुद्दत मुकर्र है। एक फर्द (व्यक्ति) की मुद्दत मौत तक है और मज्मूर् तौर पर पूरी इंसानियत की मुद्दत कियामत तक। इसी बिना पर इंसान की नस्ल जमीन पर बर्फी है। ताहम जिस तरह यह एक हक्कीकत है कि अल्लाह तआला मोहलत की मुफर्र मुद्दत से पहले किसी को नहीं पकड़ता। इसी तरह यह भी एक संगीन हक्कीकत है कि मोहलत की मुकर्र मुद्दत गुजर जाने के बाद वह जरूर इंसान को पकड़ेगा। कोई शख्स उसकी पकड़ से बचने वाला नहीं।

سُورَةُ الْكَافِرَةِ هِيَ ثَلَاثُونَ آيَةً وَخَمْسُونَ كَلِمَةً

आयतें-83

सूरह-36. या० सीन०

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

या० सीन०। कसम है बाह्यिकमत (तत्त्वज्ञाननूणी) कुरआन की। वेशक तुम रसूलों में से हो। निहायत सिधे रास्ते पर। यह खुदाए अजीज (प्रभुत्वशाली) व रहीम (दयावान) की तरफ से उतारा गया है। ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके अगलों को नहीं डराया गया। पस वे बेखबर हैं। (1-6)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खुदा के पैग़म्बर होने का सुबूत खुद वह कुरआन हकीम है जिसे आपने यह कहकर पेश किया कि यह मेरे ऊपर खुदा की तरफ से उतरा है। कुरआन के हकीम होने का मतलब यह है कि वह सिराते मुस्तकीम का दाजी है। यानी वह उस रास्ते की तरफ रहनुमाई कर रहा है जो बिल्कुल सीधा और सच्चा है। इसकी कोई बात अकल व फितरत से टकराने वाली नहीं। कुरआन के जुनूल (अवतरण) को अब ढेड़ हजार साल हो रहे हैं। मगर आज तक इसमें किसी ख़िलाफे अक़ल या ख़िलाफे फितरत बात की निशानदेही न की जा सकी। कुरआन की यही इम्तियाज़ी सिफ़त (विशिष्टता) १० उसके किताबे इलाही होने की सबसे बड़ी दलील है।

‘ताकि तुम कौम को डरा दो’ में कौम से मुराद बनू इस्माईल हैं। हर नबी अव्वलन अपनी

सूरह-36. या० सीन०

1177

पारा 22

कौम के लिए आता है। इसी तरह पैगम्बरे इस्लाम की अव्वलीन मुखातब भी उनकी अपनी कौम थी। मगर चूँकि आपके बाद नुबुव्वत खत्म हो गई इसलिए अब कियामत तक के लिए आपकी नुबुव्वत का तसलसुल जारी है। फर्क यह है कि बनू इस्माईल पर आपने बराहेरास्त हुज्जत तमाम (आव्दान की पूर्ति) की और आपके बाद मुख्तलिफ कौमों पर दावत और इतमामेहुज्जत का काम आप की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में आप की उम्मत को अंजाम देना है।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ① إِنَّا جَعَلْنَا فِيهِ  
أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا فَبِهِ إِلَىٰ الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ② وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ  
أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ③  
وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ④ إِنَّا كَاتِبُونَ  
مَنْ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنََ الْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ⑤

उनमें से अक्सर लोगों पर बात साबित हो चुकी है तो वे ईमान नहीं लाएंगे। हमने उनकी गर्दन में तौक डाल दिए हैं सो वे ठोड़ियों तक हैं, पस उनके सिर ऊंचे हो रहे हैं। और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी। फिर हमने उन्हें ढांक दिया तो उन्हें दिखाई नहीं देता। और उनके लिए एकसां (समान) है, तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे ईमान नहीं लाएंगे। तुम तो सिर्फ उस शख्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और खुदा से डरे, बिना देखे। तो ऐसे शख्स को माफी की और बाइज्जत सवाब की बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (7-11)

आदमी की गर्दन में तौक भरा हुआ हो तो उसका सिर उठा रह जाएगा और वह नीचे की चीज को न देख सकेगा। यह उन मगूरर (अभिमानी) लोगों की तस्वीर है जो अपनी बड़ाई में इतना गुम हों कि अपने से बाहर की कोई हकीकत उन्हें दिखाई ही न दे। ऐसे लोगों को कभी हक के एतराफ की तैफिक हसिल नहीं होती।

हिदायत पाने के लिए सबसे ज्यादा अहमियत इस बात की है कि आदमी के अंदर एतराफ का माद्दा हो, उसे खुदा के सामने हाजिरी का खटका लगा हुआ हो। वह कुल्ली सदाकत से कम किसी चीज पर राजी न हो सके। यही वे लोग हैं जो हक के जहिर होते ही उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं और इसके नतीजे में अल्लाह का सबसे बड़ा इनाम पाते हैं।

إِنَّا نَحْنُ الْمُغْنِي الْمَوْتِ وَكَتَبْنَا مَا قَدَّمُوا وَإِنَّا لَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ  
فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ⑥ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا

पारा 22

1178

सूरह-36. या० सीन०

الْمُرْسَلُونَ ⑦

यकीनन हम मुर्दों को जिंदा करेंगे। और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा। और हर चीज हमने दर्ज कर ली है एक खुली किताब में और उन्हें बस्ती वालों की मिसाल सुनाओ, जबकि उसमें रसूल आए। (12-13)

जदीद तहकीकत ने बताया कि इंसान अपने मुंह से जो आवाज निकालता है वह नक्श की सूत में फज्ज में महफूज हो जाती है। इसी तरह इंसान जो अमल करता है उसका अक्स (बिंब) भी हराती (ताप) लहरों की शकल में मुस्तकिल तौर पर दुनिया में मौजूद हो जाता है। गोया इस दुनिया में हर आदमी की वीडियो रिकॉर्डिंग हो रही है। यह तजर्बा बताता है कि इस दुनिया में यह मुमकिन है कि इंसान के इल्म के बगैर और उसके इरादे से आज्ञाद उसका कैल और अमल मुकम्मल तौर पर महफूज किया जा रहा हो और किसी भी लम्हा उसे दोहराया जा सके।

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَهُكُمُ  
مُّرْسَلُونَ ⑧ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ إِنَّا  
أَنْتُمْ إِلَّا تُكْذِبُونَ ⑨ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ⑩ وَمَا عَلَيْنَا  
الْبَلَاغَ الْمُبِينُ ⑪ قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَكِن لَمْ تَنْهَهُوا الذِّمَّةَ بَعْثَكُمْ وَ لِيَمْسَسَنَّكُمْ  
مِنْ آعَذَابِ الْيَوْمِ ⑫ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ إِنَّ دُكْرَكُمْ بِكُمْ أَنْتُمْ قَوْمٌ

مُتَسْرِفُونَ ⑬

जबकि हमने उनके पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से उनकी ताईद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे बशर (इंसान) हो और रहमान ने कोई चीज नहीं उतारी है, तुम महज झूठ बोलते हो। उन्होंने कहा कि हमारा खब जानता है कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं। और हमारे जिम्मे तो सिर्फ वाजिह तौर पर पहुंचा देना है। लोगों ने कहा कि हम तो तुम्हें मनहूस समझते हैं, अगर तुम लोग बाज न आए तो हम तुम्हें संगसार करेंगे और तुम्हें हमारी तरफ से सख्त तकलीफ पहुंचेगी। उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या इतनी बात पर कि तुम्हें नसीहत की गई। बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (14-19)

बस्ती से मुराद ग़ालिबन मिस्र की बस्ती है। यहाँ बयकवक्त दो पैगम्बर (हजरत मूसा

सूरह-36. या० सीन०

1179

पारा 23

और हजरत हारून) लोगों को खबरदार करने के लिए भेजे गए। मगर उन्होंने इंकार किया। फिर उनकी अपनी कौम से तीसरा शख्स उठा और उसने दोनों रसूलों की ताईद की। उस तीसरे शख्स से मुराद गालिबन वही मर्दे मोमिन है जिसका जिक्र कुरआन में सूरह मोमिन में तफसील से आया है। (मोमिन : 28)

हर जमाने में आदमी के लिए सबसे ज्यादा तलख चीज यह रही है कि उसे ऐसी नसीहत की जाए जो उसके मिजाज के खिलाफ हो। ऐसी बात सुनकर आदमी फौरन बिगड़ जाता है। नतीजा यह होता है कि वह मोअतदिल (सहज) जेहन के साथ उस पर गौर नहीं कर पाता। वह उसे दलील के एतबार से नहीं जांचता बल्कि ज़िद और नफरत के तहत उसके खिलाफ ग़ैर मुतअल्लिक बातें कहता रहता है। किसी बात को दलील से जांचना हद के अंदर रहना है और बेदलील मुख़ालिफ़त करना हद से बाहर निकल जाना।

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَى ۖ قَالَ يَقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۖ  
اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْئَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۝

और शहर के दूर मक़ाम से एक शख्स दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, ऐ मेरी कौम रसूलों की पैरवी करो। उन लोगों की पैरवी करो जो तुमसे कोई बदला नहीं मांगते। और वे ठीक रास्ते पर हैं। (20-21)

दोनों रसूल उस वक़्त बज़ाहिर बिल्कुल बेजोर थे। मगर तीसरे शख्स ने अपने आपको उन्हीं के साथ वाबस्ता किया। हक़ और नाहक के मुक़ाबले में आदमी को हक़ का साथ देना पड़ता है, चाहे वह ताक़तवर के मुक़ाबले में कमजोर का साथ देने के हममअना क्यों न हो।

तीसरे शख्स ने कौम के लोगों से कहा कि ये रसूल तुमसे अज़्र नहीं मांगते, और वे हिदायतयाब भी हैं। इससे मालूम हुआ कि सिर्फ़ बेगरजी आदमी के हिदायतयाब होने की काफ़ी दलील नहीं है। बेगरज और नेक नीयत होने के बावजूद आदमी की बात दलील के मेयार पर परखी जाएगी और वह उसी वक़्त सही समझी जाएगी जबकि वह दलील के मेयार पर पूरी उतरे।

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ أَخْتَذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْ  
يُرْدِنَ الرِّحْمَنُ بَصِيرًا ۚ لَأَتَّعِنَ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ۚ إِنَّي إِذَا  
لَفَيْ ضَلَلٍ مُبِينٍ ۚ إِنَّي أَمْنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ ۚ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۚ  
قَالَ يَلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۚ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝

और मैं क्यों न इबादत करूँ उस जात की जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। क्या मैं उसके सिवा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाऊँ। अगर रहमान मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और

पारा 23

1180

सूरह-36. या० सीन०

न वे मुझे छुड़ा सकेंगे। बेशक उस वक़्त मैं एक खुली हुई गुमराही में हूँ। मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो। इशार्द हुआ कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उसने कहा काश मेरी कौम जानती कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे इज्जतदारों में शामिल कर दिया। (22-27)

मर्दे हक़ ने अपनी ज़िंदगी ख़तरे में डाल कर पैग़म्बरों की दावत की ताईद की थी। उसका यह अमल इतना कीमती था कि इसके बाद उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। जन्नत में दाख़िल होने के बाद वह अपनी जालिम कौम को बुरा नहीं कहता। बल्कि यह तमन्ना करता कि काश वे लोग मेरा अंजाम जानते तो वे हक़ के मुख़ालिफ़ न बनते। यह सच्चे मोमिन की तस्वीर है। मोमिन हर हाल में लोगों का ख़ैरख़्वाह (हितैषी) होता है, चाहे लोग उसके साथ कैसा ही जालिमाना सुलूक करें।

وَمَا أَرْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ۖ  
إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَالِدُونَ ۖ ۝ يَحْسُرَةُ عَلَى الْعِبَادِ مَا  
يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۖ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا  
قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۖ ۝ وَإِنْ كُلُّ لُطَّا جَمِيعٍ لَّدَيْنَا  
مُحْضَرُونَ ۖ

और इसके बाद उसकी कौम पर हमने आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी, और हम फ़ौज नहीं उतारा करते। बस एक धमाका हुआ तो यकायक वे सब बुझकर रह गए। अफ़सोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मज़ाक़ ही उड़ते रहे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही कौमों हलाक कर दीं। अब वे उनकी तरफ़ वापस आने वाली नहीं। और उनमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा होकर हमारे पास हाज़िर न किया जाए। (28-32)

अल्लाह तआला की तरफ़ से जब किसी कौम की हलाक़त का फैसला किया जाता है तो इतना ही काफ़ी होता है कि ज़मीनी असबाब को उसके खिलाफ़ कर दिया जाए। सारी आसमानी ताक़तों को उसके खिलाफ़ इस्तेमाल करने की ज़रूरत पेश नहीं आती।

पैग़म्बरों का मज़ाक़ क्यों उड़या गया, इसका जवाब खुद लफ़्ज़ 'इस्तहज़ा' (मज़ाक़ उड़ाना) में मौजूद है। इस्तहज़ा करने वाले हमेशा उस इंसान का इस्तहज़ा करते हैं जो उन्हें हँस (तुच्छ) दिखाई देता हो। पैग़म्बरों के साथ यही मामला पेश आया। पैग़म्बर की शख़्सियत को उनके हमजमाना (समकालीन) लोगों ने इससे कम समझा कि उनकी ज़बान से खुदाई सदाक़त का एलान हो। इसलिए उन्होंने पैग़म्बरों को मानने से इंकार कर दिया।

सूरह-36. या० सीन०

1181

पारा 23

وَاٰیةٌ لَهُمُ الْاَرْضُ الْمِیْتَةُۙ اَحْیَیْهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ یَاْكُلُوْنَ ۝ وَ  
جَعَلْنَا فِیْهَا جَانَّتٍ مِّنْ تَّحِیْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِیْهَا مِنَ الْعُیُوْنِ ۝ لِیَاْكُلُوْا  
مِنْ ثَمَرِهَا ۝ وَمَا عَلَّمْتَهُمْ اَیْدِیْهِمْ ۝ اَفَلَا یَشْكُرُوْنَ ۝ سُبْحٰنَ الَّذِیْ خَلَقَ  
الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا ۝ اِنَّمَا تُنْبِئُ الْاَرْضُ وَمَنْ اَنْفُسِهِمْ وَمَا لَا یَعْلَمُوْنَ ۝

और एक निशानी उनके लिए मुर्दा जमीन है। उसे हमने जिंदा किया और उससे हमने गल्ला निकाला। पस वे उसमें से खाते हैं। और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग बनाए। और उसमें हमने चशमे (स्रोत) जारी किए। ताकि लोग उसके फल खाएं। और उसे उनके हाथों ने नहीं बनाया। तो क्या वे शुक्र नहीं करते। पाक है वह जात जिसने सब चीज के जोड़े बनाए, उनमें से भी जिन्हें जमीन उगाती है और खुद उनके अंदर से भी। और उनमें से भी जिन्हें वे नहीं जानते। (33-36)

जमीन की सतह पर जरखेज (उपजाऊ) मिट्टी का जमा होना, उसके लिए पानी और धूप और हवा का इतिजाम, फिर बीज के अंदर नशो व नुमा (विकास) की सलाहियत, इस तरह के बेशुमार मालूम और ग़ैर मालूम असबाब हैं जो बिलआखिर गल्ला और फल और सब्जी की शक्ल इख्तियार करके इंसान की खुराक बनते हैं। यह पूरा निजाम इंसान के बनाए बगैर बना है। इसे वजूद में लाना और इसे कायम रखना सरासर खुदा की रहमत से होता है। अगर इंसान इस पर सोचे तो वह शुक्र के जच्चे से भर जाए।

फिर इसी निजाम में एक अजीमतर हकीकत की निशानी भी मौजूद है। मुतालआ बताता है कि दुनिया की तमाम चीजों में जोड़े का उसूल कारफरमा है। फिर जब कायनात का निजाम इस उसूल पर कायम है कि यहां तमाम चीजें अपने जोड़े के साथ मिलकर अपनी तक्मील (पूर्णता) करें तो मौजूदा दुनिया का भी एक जोड़ा होना चाहिए जिसके मिलने से उसकी तक्मील होती हो। इस तरह मौजूदा दुनिया में जोड़े का निजाम आखिरत के इम्कान को साबित कर देता है।

وَاٰیةٌ لَهُمُ الْیَّیْلُ ۙ سَنَخْرُجُ مِنْهُ النُّجُومَ ۙ فَادَّاهُمْ مُظْلِمُوْنَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِی لِمُسْتَقَرٍّ ۙ لَهَاۤ ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ۝ وَالْقَمَرُ قَدْرُ ذٰلِكَ مَنَازِلَ حَتّٰی عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِیْمِ ۝ لَا الشَّمْسُ یَنْبَغِیْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ ۙ وَلَا الْیَّیْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۙ وَكُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ۝

और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं तो वे अंधेरे में

पारा 23

1182

सूरह-36. या० सीन०

रह जाते हैं। और सूरज, वह अपनी ठहरी हुई राह पर चलता रहता है। यह अजीज (प्रभुत्वशाली) व अलीम (ज्ञानवान) का बांधा हुआ अंदाजा है। और चांद के लिए हमने मंजिलें मुकर्र कर दीं, यहां तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख। न सूरज के वश में है कि वह चांद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है। और सब एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। (37-40)

जमीन और चांद और सूरज सब का एक मदार (कक्ष) मुकर्र है। सब अपने-अपने मदार पर हददर्जा सेहत के साथ घूम रहे हैं। इस गर्दिश से मुख़लिफ मजाहिर वजूद में आते हैं। मसलन जमीन पर रात और दिन का पैदा होना, चांद का कम व वेश होकर फल्कियाती (आकाशीय) कैलेंडर का काम करना, वगैरह। यह निजाम करोड़ों साल से कायम है और फिर भी इसमें किसी किस्म का कोई खलल वाकेअ नहीं हुआ।

यह मुशाहिदा खुदा की अथाह कुदरत का एक तआरुफ है। अगर आदमी इससे सबक ले जो एक खुदा की अज़मत उसके जेहन पर इस तरह छाप कि दूसरी तमाम अज़मतें अपने आप उसके जेहन से हज़फ़ हो जाएं।

وَاٰیةٌ لَهُمُ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّیَّتَهُمْ فِی الْفَلَکِ الْمَشْحُوْنِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهَاۤ مَا یَرْکَبُوْنَ ۝ وَاِنْ تَسْأَلُهُمْ فَلَا ضَرَرَ لَهُمْ وَلَا فَیْضٌ ۝ اِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا اِلٰی حَیْنٍ ۝

और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार किया। और हमने उनके लिए उसी के मानिंद और चीजें पैदा कीं जिन पर वे सवार होते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें गर्क कर दें, फिर न कोई उनकी फरयाद सुनने वाला हो और न वे बचाए जा सकें। मगर यह हमारी रहमत है और उन्हें एक निर्धारित वक्त तक फरयाद देना है। (41-44)

हमारी दुनिया में खुशकी भी है और समुद्र भी। और हमारे ऊपर वसीअ फजा भी। खुदा ने इस दुनिया में ऐसे इम्कानात रख दिए हैं कि आदमी तीनों में से किसी हिस्से में भी सफर से आजिज न हो। वह खुशकी में और पानी और फजा में एकसां तौर पर सफर कर सके।

ये तमाम सफर सरासर खुदा के इतिजाम के तहत मुमकिन होते हैं। यह इंसान के लिए इतनी बड़ी रहमत है कि इंसान अगर इन पर ग़ौर करे तो वह बिल्कुल अपने आपको खुदा के आगे डाल दे। और कभी सरकशी का तरीका इख्तियार न करे।

وَإِذْ اَقْبَلَ لَهُمْ اَنْقَوْمًاۙ مَا یَبِیْنُ اَیْدِیْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ ۙ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَمَا



تَأْتِيَهُمْ مِنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كُنُوزَهُمَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذْ أَقِيلَ لَهُمُ أَنْفُسُهُمْ أَفَرَأَوْهُمُ كُفَرُوا وَالَّذِينَ آمَنُوا أُطْعِمُوا مِنْ لَّدُنْهِ يَسَاءَ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर रहम किया जाए। और उनके खब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिसकी वे उपेक्षा न करते हों। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो तो जिन लोगों ने इंकार किया वे ईमान लाने वालों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएं जिन्हें अल्लाह चाहता तो वह उन्हें खिला देता। तुम लोग तो खुली गुमराही में हो। (45-47)

आदमी के पीछे उसके आमाल हैं, और उसके आगे हिसाब-किताब का दिन है। जिंदगी गोया अमल की दुनिया से अंजाम की दुनिया की तरफ सफर है। यह बेहद नाजुक सूरतेखाल है। आदमी को इसका वाकई एहसास हो तो वह कांप उठे। मगर आदमी न गौर करता और न कोई निशानी उसकी आंख खोलने वाली साबित होती। वह झूठी तावीलों के जरिए अपने आमाल को सही साबित करता रहता है। यहां तक कि मर जाता है।

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّسُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ۝ قَالُوا يٰوَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِنْ كُنْتُمْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। ये लोग बस एक चिंघाड़ की राह देख रहे हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी और वे झगड़ते ही रह जाएंगे। फिर वे न कोई वसीयत कर पाएंगे और न अपने लोगों की तरफ लौट सकेंगे। और सूर फूँका जाएगा तो यकायक वे कब्रों से अपने खब की तरफ चल पड़ेंगे। वे कहेंगे, हाय हमारी बदबख्ती, हमारी कब्र से किसने हमें उठाया यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैगम्बरों ने सच कहा था। बस वह एक चिंघाड़ होगी, फिर यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाजिर कर दिए जाएंगे। (48-53)

जो लोग आखिरत पर यकीन नहीं रखते वे आखिरत की तरफ से इस तरह बेफिक्र रहते हैं गोया कि आखिरत कोई बहुत दूर की चीज है। उनमें से जो लोग ज्यादा गैर संजीदा हैं वे बअज औम्मत आखिरत का मजक भी उड़ने लगते हैं। इस तरह के लोग अपनी इसी गफ़लत में पड़े रहेंगे यहां तक कि कियामत आ जाए। कियामत उन्हें इस तरह यकायक पकड़ लेगी कि वे उसके खिलाफ कुछ भी न कर सकेंगे।

हदीस में है कि इस्राफ़ील सूर अपने मुंह में लिए हुए अर्श की तरफ देख रहे हैं और इस बात के मुंतज़िर हैं कि कब हुक्म हो और वह उसमें फूँक मार दें। सूर का फूँका जाना ऐसा ही है जैसे इम्तेहान का वक्त खत्म हो जाने का घंटा बजना। इसके फौरन बाद दुनिया का निजाम बदल जाएगा। इसके बाद अंजाम का मरहला शुरू होगा, जबकि आज हम अमल के मरहले से गुज़र रहे हैं।

فَالْيَوْمَ لَا تُلْطَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنْ أَحْبَبَ الْجَنَّةَ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَلَهُنَّ ۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرْبَابِ مُتَكُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا قَاصِحَةٌ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا يَدْعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ۝

पस आज के दिन किसी शख्स पर कोई जुल्म न होगा। और तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे। वेशक जन्नत के लोग आज अपने मशगलों में खुश होंगे। और उनकी बीवियां, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए बैठे होंगे। उनके लिए वहां मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे मांगेंगे। उन्हें सलाम कहलाया जाएगा महरबान खब की तरफ से। (54-58)

मौजूदा दुनिया में आदमी के अमल के मअनवी नताइज सामने नहीं आते। आखिरत वह जगह है जहां हर आदमी अपने अमल के मअनवी नताइज को पाएगा। जो शख्स यहां सिर्फ वक्ती मफादात के लिए सरगर्म रहा वह आखिरत की अबदी दुनिया में इस तरह उठेगा कि वहां वह बिल्कुल खाली हाथ होगा। इसके बरअक्स जो लोग आला मक्सद के लिए जिए वे वहां शानदार अंजाम में खुश हो रहे होंगे। अल्लाह तआला की खुसूसी इनायात इसके अलावा होंगी।

وَأَمَّا زُورَ الْيَوْمِ فَهِيَ الْجَحِيمُ ۝ أَلَمْ أَعْهَدُ إِلَيْكُمْ يٰبَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَإِنْ أَعْبُدْتُمْ فِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ وَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۝ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ۝ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي

كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۖ صَلَوَاتُهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تُكْفُرُونَ ۖ الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ  
وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَنَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ

और ऐ मुजरिमो, आज तुम अलग हो जाओ। ऐ औलादे आदम, क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना। बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। और उसने तुम में से बहुत से गिरोहों को गुमराह कर दिया। तो क्या तुम समझते नहीं थे। यह है जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था। अब अपने कुफ्र के बदले में इसमें दाखिल हो जाओ। आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पांव गवाही देंगे जो कुछ ये लोग करते थे। (59-65)

मौजूदा ज़िंदगी में अच्छे लोग और बुरे लोग एक ही दुनिया में रहते हैं। अगली ज़िंदगी में दोनों की दुनियाएं अलग-अलग कर दी जाएंगी। शैतान के बंदे शैतान के साथ और रहमान के बंदे रहमान के साथ।

कोई आदमी शैतान के नाम पर शैतान की परस्तिश नहीं करता। मगर विलवास्ता (परोक्ष) तौर पर ग़ैर अल्लाह का हर परस्तार (पूजक) दरअसल शैतान का परस्तार है। क्योंकि वह शैतान ही के बहकावे में ऐसा कर रहा है। मसलन फरिश्तों और कौमी बुजुर्गों की परस्तिश इस तरह शुरू हुई कि शैतान ने उनके बारे में झूठे अकीदे लोगों के जेहन में डाले और लोग इन शैतानी तर्गीबात (बहकावों) से मुतअस्सिर होकर उनकी परस्तिश करने लगे।

जदीद तहकीकत (नवीन खोजों) से यह साबित हुआ है कि इंसान की खाल एक किस्म का रिकॉर्डर है जिस पर आदमी की बोली हुई आवाजें मुरतसिम (प्रतिबिंबित) हो जाती हैं और उन्हें दोहराया जा सकता है। यह एक निशानी है जो इस बात को काबिलेफहम बना रही है कि किस तरह आखिरत में आदमी के हाथ और पांव आदमी के अहवाल सुनाने लगेंगे।

وَلَوْ شَاءَ الْمُعَذِّبُونَ عَلَىٰ آبَعَيْنِهِمْ ۖ وَأَسْبَقُوا الضَّرَاطَ ۖ فَأَنَّىٰ يُجِيرُونَ ۖ وَلَوْ شَاءَ  
لَسَخَّطْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۖ وَمَنْ تَعْبُرُهُ  
نُكُتُهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۖ

और अगर हम चाहते तो उनकी आंखों को मिटा देते। फिर वे रास्ते की तरफ दौड़ते तो उन्हें कहां नजर आता। और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते तो वे न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते। और हम जिसकी उग्र ज्यादा कर देते हैं तो उसे उसकी पैदाइश में पीछे लौटा देते हैं, तो क्या वे समझते नहीं। (66-68)

इंसान को आंख और हाथ पांव और दूसरी जो सलाहियतें हासिल हैं उन्हें पाकर वह सरकश बन जाता है। हालांकि अगर वह सोचे तो यही वाक्या उसकी नसीहत के लिए काफी हो जाए कि ये सलाहियतें उसकी अपनी बनाई हुई नहीं हैं बल्कि खालिक के देने से उसे मिली हैं। और जब देने वाला कोई और हो तो उसने जिस तरह दिया है उसी तरह वह उन्हें वापस ले सकता है।

मजीद यह कि बुढ़ापे की सूरत में इस इम्कान की एक झलक अमलन भी लोगों को दिखाई जा रही है। आदमी जब ज्यादा बूढ़ा होता है तो उसकी तमाम ताकतें भी छिन जाती हैं। यहां तक कि वह दुबारा वैसा ही कमजोर और मोहताज हो जाता है जैसा कि वह उस वक्त था जबकि वह एक छोटा बच्चा था। मगर इंसान इतना नादान है कि इसके बावजूद वह कोई सबक नहीं लेता।

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۖ لِيُذَكِّرَ مَنْ  
كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ

और हमने उसे शेअर (काव्य) नहीं सिखाया और न यह उसके लायक है। यह तो सिर्फ एक नसीहत है और वाजेह (सुस्पष्ट) कुरआन है ताकि वह उस शख्स को खबरदार कर दे जो ज़िंदा हो और इंकार करने वालों पर हुज्जत कायम हो जाए। (69-70)

कुरआन का मेजिजाना उस्लूब सुनने वालों को अपनी तरफ खींचता है। चुनांचे मुखलिफिनी ने लोगों के तअस्सुर को घटाने के लिए यह कहना शुरू किया कि यह एक शायराना कलाम है न कि कोई खुदाई कलाम।

मगर यह सरासर बेअसल बात है। कुरआन में अथाह हद तक जो संजीदा फज्र है। उसमें हक्कइकेरैब का जो बेमिसाल इक्शाफ (फ्रकटन) है, उसमें मअरफते हक की जो आलातरीन तालीमात हैं। उसमें शुरू से आखिर तक जो नादिर इत्तेहादे ख्याल (अद्वितीय वैचारिक एकरूपता) है। उसमें खुदा की खुदाई की जो नाकाबिले बयान झलकियां हैं। ये सब यकीनी तौर पर इशारा कर रही हैं कि कुरआन इससे बरतर कलाम है कि उसे इंसानी शायरी कहा जा सके।

मगर हकीकत को हमेशा जिंदा लोग मानते हैं। इसी तरह कुरआन की सदाकत भी सिर्फ जिंदा इंसानों को नजर आएगी, मुर्दा इंसान उसे देखने वाले नहीं बन सकते।

وَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِيُنَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ۖ وَذَلَّلْنَاهَا  
لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ  
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۖ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُبْصَرُونَ ۖ لَا يَسْتَطِيعُونَ

نَصْرَهُمْ ۖ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحَضَّرُونَ ۖ فَلَا يُحِزُّكَ قَوْلُهُمْ ۖ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनाई हुई चीजों में से उनके लिए मवेशी पैदा किए, तो वे उनके मालिक हैं। और हमने उन्हें उनका ताबेअ (अधीन) बना दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है और किसी को वे खाते हैं। और उनके लिए उनमें फायदे हैं और पीने की चीजें भी, तो क्या वे शुक नहीं करते। और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए कि शायद उनकी मदद की जाए। वे उनकी मदद न कर सकेंगे, और वे उनकी फौज होकर हाजिर किए जाएंगे। तो उनकी बात तुम्हें गमगीन न करे। हम जानते हैं जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। (71-76)

मवेशी जानवर एक किस्म की जिंदा अलामत हैं जो बताते हैं कि मादूदी दुनिया को उसके बनाने वाले ने इस तरह बनाया है कि इंसान उसे मुसख़्खर (अधीन) करके उसे इस्तेमाल कर सके। मादूदी दुनिया की इसी सलाहियत के ऊपर इंसानी तहजीब की पूरी इमारत कायम है। अगर घोड़े और बैल में भी वही वहशियाना मिजाज हो जो रीछ और भेड़िये में होता है। या लोहा और पेट्रोल इसी तरह इंसान के काबू से बाहर हों जिस तरह जमीन के अंदर का अतिशफ़शानी (प्रज्वलनशील) मादूदा इंसान के काबू से बाहर है तो तहजीबे इंसानी का इरतिका (विकास) नामुमकिन हो जाए।

जिस ख़ालिक ने ये अजीम एहसानात किए हैं, इंसान को चाहिए था कि वह उसी का शुक करे और उसी का इबादतगुजार बने। मगर वह दूसरों को अपना माबूद बनाता है, और जब उसे नसीहत की जाए तो वह उस पर ध्यान नहीं देता। यह बिलाशुबह सबसे बड़ी सरकशी है जिसके अंजाम से बचना किसी के लिए मुमकिन नहीं।

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ ۖ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۖ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُغْنِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۖ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۖ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا ۖ فَإِذَا أَنْتُمْ مُوقِدُونَ ۖ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم بَلَىٰ ۖ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۖ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۖ فَسُبْحَنَ الَّذِي بِيَدِهِ مَكُونُ كُلِّ

وَالَّذِي يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَكُونُ

شَيْءٍ ۖ وَاللَّهُ يَتَرَجَّعُونَ ۖ

क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक बूंद से पैदा किया, फिर वह सरीह झगड़ालू बन गया। और वह हम पर मिसाल चसपां करता है और वह अपनी पैदाइश को भूल गया। वह कहता है कि हड्डियों को कौन जिंदा करेगा जबकि वे बोसीदा हो गई हों। कहो, उन्हें वही जिंदा करेगा जिसने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया। और वह सब तरह पैदा करना जानता है। वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी। फिर तुम उससे आग जलाते हो। क्या जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे। हां वह कादिर है। और वही है अस्त पैदा करने वाला, जानने वाला। उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। पस पाक है वह जात जिसके हाथ में हर चीज का इस्तिथार है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (77-83)

इंसान अपना ख़ालिक (सृजक) आप नहीं। वह बिलाशुबह ख़ालिक की मख़बूक है। इस वाक्यका तमज़ था कि इंसान के अंदर इज्ज की सिफ़त पाई जाए। मगर वह हकीकतपरस्ती को खोकर ऐसी बहस करता है जो उसकी हैसियते इज्ज से मुताबिकत नहीं रखती।

इंसान की और कायनात की तख़्कीक अब्बल ही इस बात का काफी सुबूत है कि यह तख़्कीक दूसरी बार भी मुमकिन है। मगर इसे नजरअंदाज करके इंसान यह बहस निकालता है कि मुर्दा इंसान दुबारा जिंदा इंसान कैसे बन जाएगा। इंसान का मुर्दा होकर फिर जिंदा हालत में तब्दील होने का वाक्या बिलाशुबह कियामत में होगा। मगर दूसरी चीजों में यह इम्कान आज ही नजर आ रहा है। मसलन दरख़्त को देखो। दरख़्त बजाहिर हरा भरा होता है। मगर जब वह काट कर लकड़ी की सूरत में जलाया जाता है तो वह बिल्कुल एक मुख़लिफ़ सूरत इस्तिथार कर लेता है जिसे आग कहते हैं।

एक चीज का बदल कर बिल्कुल दूसरी चीज बन जाना एक साबितशुदा वाक्या है। बकिया चीजों में खुदा आज ही इसे मुमकिन बना रहा है। इंसानों के लिए वह कियामत में इसे मुमकिन बनाएगा। मगर यह मनवाने के लिए नहीं होगा बल्कि इसलिए होगा कि इंसान को उसकी सरकशी का बदला दिया जाए।

وَالَّذِي يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَكُونُ

سُبْحَانَ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالصَّفَّاتِ صَفًّا ۖ فَالْزُجُرُتِ زَجْرًا ۖ فَالتَّثْلِيثِ ذِكْرًا ۖ إِنَّ إِلَهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۖ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۖ

सूरह-37. अस-साफफत

1189

पारा 23

आयतें-182

सूरह-37. अस-साफफत

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।  
कसम है कतार दर कतार सफ बांधने वाले फरिश्तों की। फिर डटने वालों की झिझक  
कर। फिर उनकी जो नसीहत सुनाने वाले हैं। कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही है।  
आसमानों और जमीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है और सारे मशिकों (पूर्वी  
दिशाओं) का रब। (1-5)

पैगम्बर के जरिए जिन षेही हकीकतों की खबर दी गई है उनमें से एक फरिश्ते का वजूद  
है। यहां फरिश्तों के तीन खास काम बताए गए हैं। एक यह कि वे मुकम्मल तौर पर खुदा  
के ताबेअ हैं, वे अदना सरताबी (अवज्ञा) के बगैर सफ-ब-सफ उसकी तामील के लिए हाजिर  
रहते हैं। फिर फरिश्तों का एक गिरोह वह है जो इंसानों पर खुदाई सजा का निफाज करता  
है, चाहे वह आफत और हादसात की सूरत में हो या किसी और सूरत में। फरिश्तों का तीसरा  
अमल यह बताया गया कि वे खुदा के बंदों पर खुदा की नसीहत उतारते हैं, आम इंसानों पर  
इल्हाम (दिव्य निर्देश) या इल्का (संप्रेषण) की शकल में और पैगम्बरों पर 'वही' (ईश्वरीय  
वाणी) की शकल में।

खुदा ही उन फरिश्तों का मालिक है जिन्हें आम इंसान नहीं देखता। और खुदा ही  
आसमान व जमीन का मालिक भी है जिन्हें हर आदमी अपनी आंखों से देख रहा है। ऐसी  
हालत में खुदा के सिवा जिसे भी माबूद बनाया जाएगा वह ऐसा माबूद होगा जिसे माबूद बनने  
का हक नहीं।

إِنَّا زَيْنَا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِرِزْقِنَا الْكَوَاكِبِ ۖ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۚ  
لَّا يَسْتَعِينُونَ إِلَى الْمَلِكِ الْأَعْلَىٰ وَيُقَدَّرُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ دُخُورًا وَكَأَنَّهُمْ  
عَذَابٌ وَاصِبٌ ۖ إِلَّا مَن خِطَفَ الْخُطْفَةَ فَاتَّبَعَهَا شَيْهَابٌ ثَائِبٌ ۖ

हमने आसमाने दुनिया को सितारों की जीनत (शोभा) से सजाया है। और हर शैतान  
सरकश से उसे महफूज किया है। वे मलए आला (आकाश लोक) की तरफ कान नहीं  
लगा सकते और वे हर तरफ से मारे जाते हैं, भगाने के लिए। और उनके लिए एक  
दाइमी (स्थाई) अजाब है। मगर जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ  
शोला उसका पीछा करता है। (6-10)

आसमाने दुनिया से मुराद ग़ालिबन वसीअ ख़ला (अंतरिक्ष) का वह हिस्सा है जो इंसान  
के करीब वाकेअ है और जिसे आदमी किसी आला (उपकरण) की मदद के बगैर ख़ाली आंख  
से देख सकता है।

पारा 23

1190

सूरह-37. अस-साफफत

जिस तरह इंसान एक बाइख़ियार मख़्लूक है उसी तरह जिन्नात भी बाइख़ियार मख़्लूक  
हैं। चुनांचे वे ख़ला में परवाज करते हैं और कोशिश करते हैं कि ऊपर उठकर मलए आला  
(आलमे बाला) तक पहुंचें और वहां से मुस्तकबिल की ख़बरें ले आए। मगर आसमाने दुनिया  
में अल्लाह तआला ने ऐसे मोहकम इतिजामात फरमाए हैं कि वे यहीं से मार कर लौटा दिए  
जाते हैं और उससे ऊपर जाने का मौका नहीं पाते।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنِ خَلَقْنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّنْ طِينٍ لَّارِبٍ ۖ  
بَلْ عَجَبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۖ وَإِذَا دُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ۖ وَإِذَا أُرُوا آيَةً يَسْتَسْخَرُونَ ۖ  
وَقَالُوا إِن هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۖ إِذْ أَمْنُنَا وَكُنَّا ثُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَبَعُوثُونَ ۖ  
أَوِ ابْأَوْنَا الْأَوَّلُونَ ۖ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ۖ

पस उनसे पूछो कि उनकी पैदाइश ज्यादा मुश्किल है या उन चीजों की जो हमने पैदा  
की हैं। हमने उन्हें चिपकती मिट्टी से पैदा किया है। बल्कि तुम ताज्जुब करते हो और  
वे मजाक उड़ा रहे हैं। और जब उन्हें समझाया जाता है तो वे समझते नहीं। और जब  
वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसे हंसी में टाल देते हैं। और कहते हैं कि यह तो  
बस खुला हुआ जादू है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएंगे  
तो फिर हम उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि हां, और  
तुम जलील भी होगे। (11-18)

जमीन व आसमान की सूरत में जो कायनात हमारे मुशाहिदे में आती है वह इतनी पेचीदा  
और इतनी अजीम है कि इसके बाद इंसानों को दूसरी दुनिया में पैदा करना मुकाबिलतन एक  
छोटा काम नजर आने लगता है। जिस ख़ालिक की कुव्वते तख़लीक का अजीमतर नमूना हमारे  
सामने मौजूद है उसी ख़ालिक से इससे छोटी तख़लीक नामुमकिन या मुश्किल क्यों।

इंसानी जिस्म का तज्जिया (विश्लेषण) करने से मालूम होता है कि वह तमामतर जमीनी  
अज्जा का एक मन्मूअ है। जमीन में पाए जाने वाले माददे (पानी, कैल्शियम, लोहा, सोडियम,  
टंगस्टन, वगैरह) की तर्कीब से इंसान बना है। ये तमाम अज्जा हमारी दुनिया में बहुत इफरात  
(अधिकता) के साथ पाए जाते हैं। फिर जिन अज्जा की तर्कीब से ख़ालिक ने एक बार इंसान  
को बनाकर खड़ा कर दिया उन्हीं अज्जा की तर्कीब से वह दुबारा क्यों ऐसा नहीं कर सकता।

فَأَمَّا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۖ وَقَالُوا يَوْمَئِذٍ إِنَّا لَنَافِلُ هَٰذَا يَوْمِ الدِّينِ ۖ  
يَع ۖ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۖ احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا  
أَوْرَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۖ



وَقَفُّهُمْ ۖ إِنَّهُمْ مَسْئُونٌ ۖ مَا لَكُمْ لَاتَّخَذُوا ۖ بَلْ هُمْ الْيَوْمَ  
مُسْتَسْلِمُونَ ۖ

पस वह तो एक झिड़की होगी, फिर उसी वक्त वे देखने लगे और वे कहेंगे कि हाय हमारी कमबख्ती यह तो जजा (बदले) का दिन है। यह वही फैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे। जमा करो उन्हें जिन्होंने जुल्म किया और उनके साथियों को और उन माबूदों को जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे, फिर उन सबको दोख़ का रास्ता दिखाओ और उन्हें ठहराओ, इनसे कुछ पूछना है। तुम्हें क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। बल्कि आज तो वे फरमांबरदार हैं। (19-26)

मौजूदा दुनिया में अगली ज़िंदगी का मामला एक ख़बर के तौर पर बताया जा रहा है। आदमी इस ख़बर को कोई अहमियत नहीं देता। मगर आख़िरत में अगली ज़िंदगी का मामला एक सीन हकीकत बनकर लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा। उस वक्त आदमी अपनी सरकशी भूल कर अपने आपको खुदा के सामने डाल देगा। यह नाक़बिले बयान हद तक हैलनाक मंजर होगा। उस वक्त मैदाने हश्र में लोगों का जो हाल होगा उसका एक नक्शा इन आयतों में दिया गया है।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا كُنْتُمْ نُنَادِيَنَا عَنْ الْيَمِينِ ۖ  
قَالُوا بَلْ لَمْ كُنَّا نَدْعُوا مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانْ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ ۖ بَلْ كُنْتُمْ  
قَوْمًا طٰغِينَ ۖ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّ الَّذِیْنَ يَقُولُونَ ۖ فَأَعْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا  
غَوِينَ ۖ وَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ

और वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर सवाल व जवाब करेंगे। कहेंगे तुम हमारे पास दाईं तरफ़ से आते थे। वे जवाब देंगे, बल्कि तुम खुद ईमान लाने वाले नहीं थे। और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था, बल्कि तुम खुद ही सरकश लोग थे। पस हम सब पर हमारे ख़ब की बात पूरी होकर रही, हमें उसका मजा चखना ही है। हमने तुम्हें गुमराह किया, हम खुद भी गुमराह थे। पस वे सब उस दिन अजाब में मुशतरक (सह भागी) होंगे। (27-33)

यह अवाम और लीडरों की गुफ्तगू है। क़ियामत में अवाम अपनी बर्बादी की जिम्मेदारी अपने गुमराह लीडरों पर डालेंगे और कहेंगे कि आप लोगों ने हमें तरह-तरह से बहकाया।

लीडर कहेंगे कि तुम्हारा यह इल्जाम ग़लत है। कोई बहकाने वाला किसी को नहीं बहकाता। तुम लोगों के अंदर खुद सरकशी का मिजाज था। हमारी बात तुम्हें अपने मिजाज के मुताफ़िक़ नज़र आई इसलिए तुमने उसे मान लिया। तुमने हकीकत अपनी ख़्वाहिशात का साथ दिया न कि हमारा। दोनों का ज़ुर्म एक है।

हकीकत यह है कि क़ियामत में लीडर और पैरोकार दोनों एक ही मुशतरक अंजाम से दो चार होंगे। न लीडर की अज़मत उसे अजाब से बचा सकेगी और न अवाम का यह उज़्र उन्हें बचाने वाला बनेगा कि हम तो बेइल्म थे, हमें हमारे लीडरों ने गुमराह किया।

إِنَّا كُنَّا لَنَكْفُرُ بِكَ نَفْعًا ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ  
يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّا نَسَارَكُ وَإِنَّا لَمُتَّاعُونَ ۖ بَلْ جَاءَ  
بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِنَّكُمْ لَذَاقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمَ ۖ وَمَا تَجْزُونَ  
إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ

हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ये वे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो वे तकबुर (घमंड) करते थे। और वे कहते थे कि क्या हम एक शायर दीवाने के कहने से अपने माबूदों को छोड़ दें। बल्कि वह हक लेकर आया है। और वह रसूलों की पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) का मिस्दाक (पुष्टि-रूप) है। बेशक तुम्हें दर्दनाक अजाब चखना होगा। और तुम उसी का बदला दिए जा रहे हो जो तुम करते थे। (34-39)

‘जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं तो वे घमंड करते थे’ इसका मतलब यह नहीं कि वे खुदा के मुकाबले में घमंड करते थे। ऐसा कोई भी नहीं करता।

खुदा की अज़मत इससे ज्यादा है कि कोई उसके मुकाबले में बड़ा बनने की जुरअत करे। उनका घमंड दरअसल खुदा के पैग़म्बर के मुकाबले में था न कि खुद खुदा के मुकाबले में।

पैग़म्बर के पैग़ामे तौहीद की ज़द उन अकाबिर (बड़ों) पर पड़ती थी जिनके नाम पर वे अपने मुशिकाना आमाल में मुक्तिला थे। अब एक तरफ़ पैग़म्बर होता और दूसरी तरफ़ उनके मफ़रूजा (मान्य) अकाबिर। चूँकि पैग़म्बर बजाहिर उन्हें अपने अकाबिर से कम दिखाई देता था, इसलिए वे पैग़म्बर को छेदा समझ कर नज़रअंदाज़ कर देते। वे अपने मफ़रूजा अकाबिर के साथ वाबस्ता रहकर समझते कि वे बड़ों के साथ वाबस्ता हैं। दलील का जोर बिलाशुबह पैग़म्बर की तरफ़ होता था। मगर जाहिरी अज़मत उन्हें अपने बड़ों में दिखाई देती थी। और तारीख़ बताती है कि जाहिरी अज़मत के मुकाबले में दलील की ताक़त हमेशा बेअसर साबित हुई है।

الْأَعْبَادَ لِلَّهِ الْمُخْلِصِينَ ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝ فَوَٰكِلُهُمْ مُّكْرَمُونَ ۝ فِي جَدَّتِ التَّعْيِيمِ ۝ عَلَى سُرْرٍ مُّتَقَبِلِينَ ۝ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّوْعِينٍ بَيَضَاءُ لِّدَّةٍ لِلشَّرْبِ بَيْنَ ۝ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۝ وَعِنْدَهُمْ قَصِيرَاتُ الطَّرْفِ عَيْنٌ ۝ كَأَنَّهُمْ بِيضٌ مَّكْنُونٌ ۝

मगर जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। उनके लिए मालूम रिज्क होगा। मेवे, और वे निहायत इज्जत से होंगे, आराम के बागों में। तख्तों पर आमने सामने बैठे होंगे। उनके पास ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। साफ शफ़फ़ पीने वालों के लिए लज्जत। न उसमें कोई ज़र (हानिकारकता) होगा और न उससे अक्ल ख़राब होगी। और उनके पास नीची निगाह वाली, बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी। गोया कि वे अंडे हैं जो छुपे हुए रखे हों। (40-49)

मौजूदा दुनिया आजमाइश की दुनिया है। यहां लोगों को आजादाना अमल का मौक़ा देकर उनका इतिखाब किया जा रहा है। जो लोग अपने कौल व अमल से इसका सबूत देंगे कि वे जन्नत की लतीफ (आनंदमय) और नफ़ीस (उत्तम) दुनिया में बसाए जाने के काबिल हैं, उन्हें उनका खुदा अपनी जन्नत में बसाने के लिए चुन लेगा। वहां उन्हें हर किस्म की आला नेमतें फ़राहम की जाएंगी। और फिर उनसे कहा जाएगा कि राहतों और लज्जतों के बाग़ात में अबदी (चिरस्थायी) तौर पर आबाद रहो।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الْمُتَدِينِ ۝ وَإِنَّا لَنَرَاهُ فِي سَوَاءٍ الْحَيِّمِ ۝ لَمَذْمُومٌ ۝ قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّطَّلِعُونَ ۝ فَاطَّلَعَ قَرَاهُ فِي سَوَاءٍ الْحَيِّمِ ۝ قَالَ تَاللَّهِ إِن كُنتَ لَتَتَّبِعُنِي ۝ وَلَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُخْضَرِّينَ ۝ أَفَبِمَا نَحْنُ بِمَبْتَئِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَدِّينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِيُثِلَ هَٰذَا فَيُعْبَلَ الْعِٰلُونَ ۝

फिर वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक मुलाकाती था। वह कहा करता था कि क्या तुम भी तस्दीक (पुष्टि) करने वालों में से हो। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो

क्या हमें जजा मिलेगी। कहेगा, क्या तुम झांक कर देखोगे। तो वह झांकेगा और उसे जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा कि खुदा की कसम तुम तो मुझे तबाह कर देने वाले थे। और अगर मेरे ख़ का फज़ल न होता तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता जो पकड़े हुए आए हैं। क्या अब हमें मरना नहीं है, मगर पहली बार जो हम मर चुके और अब हमें अज़ाब न होगा। वेशक़ यही बड़ी कामयाबी है। ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। (50-61)

जन्नत लतीफ़तरीन सरगर्मियों की दुनिया है। वहां दिलचस्प मुलाकातें होंगी। वहां पुरलुफ़ मुशाहिदात होंगी। वहां एक दूसरे के दर्मियान आफ़की सतह पर गुफ़्तगुएं होंगी। हर किस्म की महदूदियत (सीमितता) और हर किस्म की नाखुशगवारी का वहां ख़ात्मा हो चुका होगा।

आख़िरत को मानने से मुराद सादा तौर पर सिर्फ़ उसे मान लेना नहीं है। बल्कि आख़िरत के मामले को इतना हकीकी और इतना अहम समझना है कि वह आदमी की पूरी ज़िंदगी पर छा जाए। आदमी अपना सब कुछ आख़िरत के लिए लगा दे। जो लोग ऐसे आख़िरतपसंदों को दीवाना समझते थे वे आख़िरत में उनकी कामयाबियां देखकर दमबख़ुद (स्तब्ध) रह जाएंगे। दूसरी तरफ़ आख़िरतपसंदों का हाल यह होगा कि वे अपने शानदार अंजाम को इस तरह हैरत के साथ देखेंगे जैसे कि उन्हें यकीन न आ रहा हो कि उनके छोटे से अमल का खुदा ने उन्हें इतना बड़ा बदला दे दिया है। कैसा अजीब होगा वह इंसान जो ऐसी जन्नत का हरीस न हो, जो ऐसी जन्नत के लिए अमल न करे!

أَذٰلِكَ خَيْرٌ تُنْزِلُاَمْ شَجَرَةُ الرَّقْمِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهَا اُفْتِنَةً لِّلْظٰلِمِيْنَ ۝ اِنّٰهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝ طَلْعُهَا كَاَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيْطٰنِ ۝ وَاهُمْ لَا يَلٰكُوْنَ مِنْهَا فَاَلَا يَرَوْنَ مِنْهَا الْبَطُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنّٰن لّٰهُمْ عَلَيْهَا شُوبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۝ ثُمَّ اِنّٰن مَّرْجِعُهُمْ اِلٰى الْجَحِيْمِ ۝ اِنَّهُمْ اَلْفَوَا اِلٰهَهُمْ صٰلِحِيْنَ ۝ فَهُمْ عَلَىٰ اَثَرِهِمْ يٰهْرَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلِصِيْنَ ۝

यह ज़िफ़त (सत्कार) अच्छी है या जम्हूम का दख़्त। हमने उसे जल्लिमों के लिए फ़ितना बनाया है। वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की तह से निकलता है। उसका ख़ोशआ ऐसा है जैसे शैतान का सर। तो वे लोग उससे खाएंगे। फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन्हें खोलता हुआ पानी मिलाकर दिया जाएगा। फिर उनकी वापसी दोज़ख़ ही की तरफ़

सूरह-37. अस-साफ़फ़त

1195

पारा 23

होगी। उन्होंने अपने बाप दादा को गुमराही में पाया। फिर वे भी उन्हीं के कदम बकदम दौड़ते रहे, और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हुए। और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे। तो देखो, उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन्हें डराया गया था। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे थे। (62-74)

कुरआन में बताया गया है कि दोख़ में ज़क़ूम का दरख़ होगा और दोख़ लोग जब भूख से बेकरार होंगे तो उसे खाएंगे। (अल-वाक़या 52)

कुरआन में यह ख़बर दी गई तो क़दीम अरब के लोगों ने उसका मजाक उड़ाना शुरू किया। एक सरदार ने कहा कि दोख़ की आग के दर्मियान दरख़ कैसे उगेगा। जबकि आग दरख़ को जला देती है। एक और सरदार ने कहा : मुहम्मद हमें ज़क़ूम से डराते हैं। हालांकि ज़क़ूम आम ज़बान में ख़जूर और मक्खन को कहते हैं। अबू जहल कुछ लोगों को अपने घर ले गया और अपनी खादिमा से कहा कि ख़जूर और मक्खन ले आओ। वह लाई तो अबू जहल ने अपने साथियों से कहा कि लो इसे खाओ। यही वह ज़क़ूम है जिसकी मुहम्मद तुम्हें धमकी दे रहे हैं।

इस किस्म के कुरआनी बयानात मुख़लिफ़ीन के लिए बेहतरीन हथियार थे जिनके जरिए वे अवाम की नजर में कुरआन को ग़ैर मोतबर साबित कर सकें। अल्लाह के लिए यह मुमकिन था कि वह कुरआन में ऐसा लफ़्ज़ इस्तेमाल न करे जिसमें मुख़लिफ़ीन के लिए शोश निकालने का मौका हो। मगर अल्लाह ने ऐसा नहीं किया। इसकी वजह यह है कि यही वह मक़ाम है जहां आदमी का इस्तेहान हो रहा है। आदमी को नजातयाफ़ता (मुक्ति-प्राप्त) बनने के लिए यह सुबूत देना है कि उसने शोशे की बातों से बचकर अस्ल हकीक़त पर ध्यान दिया। उसने ग़लतफ़हमियों को उबूर (पार) करके कलाम के हकीक़ी उद्देश्य को पाया। उसने ज़ेहनी इहिराफ़ (भटकाव) के अवसर होते हुए अपने ज़ेहनी को इहिराफ़ से बचाया।

अल्लाह के चुने हुए बंदे वे हैं जो रवाजी दीन से ऊपर उठकर सच्चाई को दरयाफ़्त करें। जो जवाहिर (प्रकट) से बुलन्द होकर मआनी (निहितार्थ) का इदराक़ (भान) करें। जो खुदा के बशरी नुमाइदे (मानव-प्रतिनिधि) को पहचान कर उसके साथी बन जाएं।

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْرًا فَلْيَعْمُرِ الْبُحْيُوتُ ۖ وَنَجِّنِيْهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ  
وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِيْنَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِيْنَ ۖ سَلَامٌ عَلَى نُوْرٍ فِي  
الْعَالَمِيْنَ ۖ اِنَّكَ لَكِنْ مُّجْرِي الْمَحْسُوْرِيْنَ ۖ اِنَّكَ لَمِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۖ ثُمَّ  
اَغْرَقْنَا الْآخِرِيْنَ

और हमें नूह ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं। और हमने उसे और

पारा 23

1196

सूरह-37. अस-साफ़फ़त

उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से बचा लिया। और हमने उसकी नस्ल को बाकी रहने वाला बनाया। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलाम है नूह पर तमाम दुनिया वालों में। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। फिर हमने दूसरों को ग़र्क कर दिया। (75-82)

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम उनकी दुश्मन हो गई। उन्होंने क़ौम के मुक़्तबले में मदद के लिए अल्लाह को पुकारा तो अल्लाह ने बेहतरीन तौर पर आपकी मदद की। ये अल्फ़ज़ बताते हैं कि जब अल्लाह का एक बंदा अल्लाह को पुकारता है तो अल्लाह की तरफ से वह उसका बेहतरीन जवाब पाता है। मगर इस मामले को समझने के लिए ज़रूरी है कि इसमें एक और बात को शामिल किया जाए। वह यह कि हज़रत नूह साढ़े नौ सौ साल तक काम करते रहे। उन्होंने सब्र और हिक्मत और ख़ैरख़्वाही के तमाम आदाब को मल्हूज रखते हुए क़ौम को दावत दी। इस तरह लम्बी मुद्दत के बाद वह वक़्त आया कि वह क़ौम के ख़िलाफ़ अल्लाह को पुकारें। और अल्लाह अपनी तमाम ताक़तों के साथ उनकी मदद पर आ जाए।

हज़रत नूह के मुख़लिफ़ीन एक हैलनाक तूफ़ान में इस तरह हलाक हुए कि उनकी पूरी नस्ल ख़त्म हो गई। इसके बाद दुबारा जो नस्ल चली वह उन्हीं चन्द अफ़राद के जरिए चली जो हज़रत नूह के साथ क़श्ती में बचा लिए गए थे।

وَإِن مِّن شَيْعَةٍ إِلَّا بُرْهِيْمٌ ۖ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۖ إِذْ قَالَ لِلَّيْثَةِ  
وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ۖ أَيْفَكَ الْهَيْهَةَ دُونَ اللَّهِ تُرِيدُوْنَ ۖ فَمَا ظَنُّكُمْ  
بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ

और उसी के तरीके वालों में से इब्राहीम भी था। जबकि वह आया अपने रब के पास कल्बे सलीम (पाक दिल) के साथ। जब उसने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो। क्या तुम अल्लाह के सिवा मनगढ़त माबूदों को चाहते हो तो खुदावंद आलम के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है। (83-87)

हज़रत इब्राहीम भी उसी दीन पर थे जिस दीन पर हज़रत नूह थे। तमाम नबियों की दावत हमेशा एक रही है। वह यह कि आदमी कल्बे सलीम के साथ खुदा के यहां पहुंचे। कल्बे सलीम के मअना हैं पाक दिल। यानी फ़ितनों से महफूज़ दिल। यही अस्ल चीज़ है जो अल्लाह तआला को इंसान से मल्बूब है। अल्लाह ने इंसान को फ़ितरते सही पर पैदा करके दुनिया में भेजा। अब उसका इस्तेहान यह है कि वह दुनिया के फ़ितनों से अपने आपको बचाए। वह हर किस्म की नफ़्सी और शैतानी आलूदगी से पाक रहकर खुदा के यहां पहुंचे। यही पाक और महफूज़ इंसान हैं जिन्हें खुदा अपनी जन्नतों में बसाएगा।

शिरक़ खुदा की तसगीर (छोटा मानना) है। आदमी खुदा को सबसे बड़े की हैसियत से नहीं पाता इसलिए वह दूसरी बड़ाइयों में गुम होकर उनकी परस्तिश करने लगता है।

فَنظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۖ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۖ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۖ فَرَأَىٰ إِلَىٰ  
الْبَيْتِ ۖ فَقَالَ آلَا تَأْتُونَ ۚ مَا لَكُمْ لَا تَنْتَفِقُونَ ۖ فَرَأَىٰ عَلَيْهِمْ ضُرًّا بِالْيَمِينِ ۖ  
فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَرْفُوقُونَ ۖ قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ۖ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا  
تَعْمَلُونَ ۖ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْفَوْهُ فِي الْجَحِيمِ ۖ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ  
الْأَسْفَلِينَ ۖ وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۖ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ  
الضَّالِّينَ ۖ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۖ

फिर इब्राहीम ने सितारों पर एक नजर डाली। पस कहा कि मैं बीमार हूं। फिर वे लोग उसे छोड़कर चले गए। तो वह उनके बुतों में घुस गया, कहा कि क्या तुम खाते नहीं हो। तुम्हें क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं। फिर उन्हें मारा पूरी कुब्त के साथ। फिर लोग उसके पास दौड़े हुए आए। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम लोग उन चीजों को पूजते हो जिन्हें खुद तराशते हो। और अल्लाह ही ने पैदा किया है तुम्हें भी और उन चीजों को भी जिन्हें तुम बनाते हो। उन्होंने कहा, इसके लिए एक मकान बनाओ फिर इसे दहकती आग में डाल दो। पस उन्होंने उसके खिलाफ एक कार्रवाई करनी चाही तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया। और उसने कहा कि मैं अपने रब की तरफ जा रहा हूं, वह मेरी रहनुमाई फरमाएगा। ऐ मेरे रब, मुझे नेक औलाद अता फरमा। तो हमने उसे एक बुरदबार (संयमी) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। (88-101)

हजरत इब्राहीम की कौम के लोग ग़ालिबन किसी त्रौहार में शिरक़ के लिए शहर से बाहर जा रहे थे। आपके घर वालों ने आपसे भी चलने के लिए कहा। आपने अपने एक छुपे अंदाज में उनसे मअजरत कर ली। जब तमाम लोग चले गए तो रात के वक्त आप बुतखाने में दाखिल हुए और उनके बुतों को तोड़ डाला। यह आपने उस वक्त किया जबकि मुसलसल दावत (आह्वान) के जरिए आप उन पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) कर चुके थे। जब उन्होंने दलाइल से बुतों का बेहकीकत होना तस्लीम नहीं किया तो बुतों को तोड़कर आपने अमल की ज्वान में बताया कि इन बुतों की कोई हकीकत नहीं। अगर हकीकत होती तो वे अपने आपको तोड़े जाने से बचा लेते।

आपकी इस आखिरी कार्रवाई के बाद कौम ने भी अपनी आखिरी कार्रवाई की। उन्होंने आपको आग में डाल दिया मगर अल्लाह ने आपको आग से बचा लिया। इसके बाद आप

अपने वतन (इराक) को छोड़कर चले गए। उस वक्त आपने दुआ की कि खुदाया तू मेरे यहां सालेह (नेक) औलाद कर ताकि मैं उसे तालीम व तर्बियत के जरिए मोमिन व मुस्लिम बनाऊं और वह मेरे बाद दावते तौहीद का तसलसुल जारी रखे।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَؤُا إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَآبَتِ أَفْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّىٰ لِلْجَبِينِ ۖ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ۖ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۖ وَفَدَيْنَاهُ بِذَبْحٍ عَدِيمٍ ۖ وَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ۖ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ مُبِينٌ ۖ

पस जब वह उसके साथ चलने फिरने की उम्र को पहुंचा, उसने कहा कि ऐ मेरे बेटे, मैं ख़ाब में देखता हूं कि तुम्हें जबह कर रहा हूं पस तुम सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है। उसने कहा कि ऐ मेरे बाप, आपको जो हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए, ईशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे। पस जब दोनों मुत्तीअ (आज्ञाकारी) हो गए और इब्राहीम ने उसे माथे के बल डाल दिया। और हमने उसे आवाज दी कि ऐ इब्राहीम, तुमने ख़ाब को सच कर दिखाया। बेशक हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। यकीनन यह एक खुली हुई आजमाइश थी और हमने एक बड़ी कुर्बानी के एक्ज उसे छुड़ा लिया। और हमने उस पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इब्राहीम पर। हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। और हमने उसे इश्हाक की खुशख़बरी दी, एक नबी सालेहीन (नेकों) में से। और हमने उसे और इश्हाक को बरकत दी। और इन दोनों की नस्ल में अच्छे भी हैं और ऐसे भी जो अपने नफस पर सरीह जुल्म करने वाले हैं। (102-113)

हजरत इब्राहीम के जमाने में शिरक़ का इस तरह उमूमी ग़लबा हुआ कि तारीख़ में उसका तसलसुल कायम हो गया। अब जो बच्चा पैदा होता वह माहौल के असर से शिरक़ में इतना



सूरह-37. अस-साफ़फ़त

1199

पारा 23

पुछा हो जाता कि कोई भी दावती कोशिश उसके जेहन को शिर्क से हटाने में कामयाब नहीं होती थी। हजरत इब्राहीम जब तवील (दीर्घ) दावती जद्दोजहद के बाद इराक से निकले तो उनके साथ सिर्फ दो मोमिन थे। एक आपकी बीवी सारा, दूसरे आपके भतीजे लूत।

लोग दावत (आह्वान) के जरिए तौहीद के रास्ते पर नहीं आ रहे थे। इसलिए अल्लाह तआला का यह मंसूबा हुआ कि एक ऐसी नस्ल तैयार की जाए जो शिर्क की फजा से अलग होकर परवरिश पाए। इसके लिए हिजाज (अरब) के इलाके का इतिहास हुआ जो बेआब व गयाह (निर्जन) होने की वजह से बिल्कुल ग़ैर आबाद पड़ा हुआ था। मंसूबा यह था कि इस ग़ैर आबाद इलाके में एक शख्स को आबाद किया जाए और उससे तवालुद व तनासुल (वंश-क्रम) के जरिए एक महफूज नस्ल तैयार की जाए। मगर उस वक्त हिजाज मुकम्मल तौर पर एक खुशक सहारा (रेगिस्तान) था और उस खुशक सहारा में किसी शख्स को आबाद करना उसे जीते जी जबह कर देने के हममअना था। हजरत इब्राहीम को अल्लाह तआला ने अपने बेटे के हक में इसी जबीहा का हुक्म दिया और उन्होंने पूरी तरह मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर अपने बेटे को इस जबीहा के लिए हजिर कर दिया।

हजरत इब्राहीम के दूसरे बेटे हजरत इस्हाक थे। उनकी नस्ल में मुसलसल नुबुव्वत जारी रही यहां तक कि बनू इस्माईल में आखिरी नबी पैदा हो गए। उन्होंने मच्चूरा 'महफूज नस्ल' को इस्तेमाल करके वह इकिलाब बरपा किया जिसने हमेशा के लिए शिर्क को ग़ालिब फिक्क (वर्चस्व प्राप्त विचारधारा) की हैसियत से ख़त्म कर दिया।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۖ وَنَصَرْنَاهُمْ فَاكْفُلُوا ۚ هُمُ الْغَالِبِينَ ۖ وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ۖ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَّمَ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ إِنَّهُمْ أَمِنَ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया। और उन्हें और उनकी कौम को एक बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हमने उनकी मदद की तो वही ग़ालिब आने वाले बने। और हमने उन दोनों को वाजेह किताब दी। और हमने उन दोनों को सीधा रास्ता दिखाया। और हमने उनके तरीके पर पीछे वालों के एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो मूसा और हारून पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वे दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे। (114-122)

अल्लाह तआला ने हजरत मूसा और उनकी कौम की मदद की और उन्हें फिरऔन के जुल्म से नजात दी। यहां सवाल यह है कि यह कैसे हुआ। यह दावत इलल्लाह के जरिए हुआ। हजरत मूसा ने फिरऔन पर हक की तब्लीग की। लम्बी जद्दोजहद के जरिए आपने उसे

पारा 23

1200

सूरह-37. अस-साफ़फ़त

इतमामेहुज्जत तक पहुंचाया। इसके बाद वह वक्त आया कि फिरऔन को मुजरिम करार देकर उसे हलाक किया जाए। और हजरत मूसा और उनकी कौम को ग़लबा हासिल हो।

इस सियाक (प्रसंग) में सिराते मुस्तकीम (सीधा रास्ता) दिखाने का एक मतलब यह है कि फिरऔन के मसले का सही हल उन पर खोला गया। बनी इस्राईल के लिए अगरचे यह एक कौमी मसला था मगर इसका हल उन्हें दावत (आह्वान) की शक्ल में बताया गया। चुनांचे उन्हें जो ग़लबा मिला वह उन्हें दावती जद्दोजहद के नतीजे में मिला न कि फिरऔन के खिलाफ मअरूफ़ किस्म की कैमी जद्दोजहद के नतीजे में।

وَالْإِلْيَاسَ لَيْسَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۖ أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۖ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ ۖ فَالْتَهُمْ لِيُحْضَرُونَ ۖ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمْ فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ إِنَّهُمْ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ

और इलयास भी पैगम्बरों में से था। जबकि उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम डरते नहीं। क्या तुम बअल (एक बुत का नाम) को पुकारते हो और बेहतरीन ख़ालिक को छोड़ देते हो, अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी। पस उन्होंने उसे झुठलाया तो वे पकड़े जाने वालों में से होंगे। मगर जो अल्लाह के ख़ास बंदे थे। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इलयास पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। (123-132)

हजरत इलयास अलैहिस्सलाम ग़ालिबन हजरत हारून अलैहिस्सलाम की नस्ल से थे। उनका जमाना नवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) है। उस जमाने में इस्राईल (फिलिस्तीन) का यहूदी बादशाह अखीअब (Ahab) और लुबनान के फीनिकीय (Phoenicians) की हुकूमत थी जो मुशिरक थी और बअल नामी बुत की पूजा करती थी। अखीअब ने मुशिरक बादशाह की लड़की से शादी कर ली। उस मुशिरक शहजादी के असर से यहूदियों के दर्मियान बअल की परस्तिश शुरू हो गई। उस वक्त हजरत इलयास ने यहूदियों को डराया और उन्हें खुदाए वाहिद की परस्तिश की तरफ बुलाया जो उनका अस्ल आबाई दीन था। हजरत इलयास के हालात तपसील से बाइबल में मौजूद हैं।

हजरत इलयास के जमाने में सिर्फ थोड़े से यहूदियों ने आपका साथ दिया। बेशतर तादाद ने अपनी मुखालिफत की। यहां तक कि वे आपके कत्ल के दरपे हो गए। इसकी वजह से

सूरह-37. अस-साफ़फ़त

1201

पारा 23

अल्लाह तआला ने उन पर सजाएं भेजीं। मगर बाद को यहूदियों के यहां हजरत इलयास (ऐलिया) को बहुत ऊंचा मकाम मिला। अब वह यहूदियों की तारीख़ (इतिहास) में बहुत बड़े नबी शुमार किए जाते हैं।

وَلَا تُطَاوِلُنَا الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَدِيرِينَ ۖ ثُمَّ دَمَرْنَا الْأَخْرِينَ ۖ وَاتَّكُمُ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِينَ ۖ وَبِالْأَيْلِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۖ

और वेशक लूत भी पैगम्बरों में से था। जबकि हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी। मगर एक बुढ़िया जो पीछे रह जाने वालों में से थी। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और तुम उनकी बस्तियों पर गुजरते हो सुबह को भी और रात को भी, तो क्या तुम नहीं समझते। (133-138)

हजरत लूत अलैहि० हजरत इब्राहीम अलैहि० के भतीजे थे। वह बहरे मुर्दार (Dead Sea) के इलाके में सदूम और अमूरा की हिदायत के लिए भेजे गए जिनके वाशिदे गैर अल्लाह की परस्तिश में मुक्त्तिला थे। मगर उन्होंने हिदायत कुबूल नहीं की। आखिरकार उन पर खुदा की आफ़त आई और हजरत लूत और उनके चन्द साथियों को छोड़कर सबके सब हलाक कर दिए गए।

कौमे लूत की बस्तियों के खंडहर बहरे मुर्दार के किनारे मौजूद थे और कुऐश के लोग जब तिजारात के लिए शाम और फिलिस्तीन जाते तो वे रास्ते में इन बर्बादशुदा बस्तियों को देखते। मगर इंसान का हाल यह है कि वह सिर्फ उसी हादसे को जानता है जो खुद उसके अपने ऊपर पड़े। दूसरों के अंजाम से वह कभी सबक नहीं लेता।

وَلَا يُؤْنَسُ لِنَا الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۖ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۖ وَالنَّمَةُ الَّتِي فِي الْخُوتِ وَهُوَ مُلِيمٌ ۖ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۖ لَكِيتَ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۖ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ۖ وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۖ فَاْمُنُوا فَتُنَجِّهُمْ إِلَى حِينٍ ۖ

और वेशक यूनुस भी रसूलों में से था। जबकि वह भाग कर भरी हुई कश्ती पर पहुंचा। फिर कुरआ (कई में से एक का चयन) डाला तो वही ख़तावार निकला। फिर उसे मछली ने निगल लिया। और वह अपने को मलामत कर रहा था। पस अगर वह तस्वीह करने

पारा 23

1202

सूरह-37. अस-साफ़फ़त

वालों में से न होता तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक उसके पेट ही में रहता। फिर हमने उसे एक मैदान में डाल दिया और वह निढाल था। और हमने उस पर एक बेलदार दरख़्त उगा दिया। और हमने उसे एक लाख या इससे ज्यादा लोगों की तरफ भेजा। फिर वे लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें फायदा उठाने दिया एक मुद्दत तक। (139-148)

हजरत यूनुस अलैहिस्सलाम का जमाना आठवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) है। वह इराककेक्रीम शहर नैन्वा (Nineveh) में रसूल बनाकर भेजे गए। एक मुद्दत तक तब्लीग के बाद आपने अंदाजा किया कि कौम ईमान लाने वाली नहीं है। आपने शहर छोड़ दिया। आगे जाने के लिए आप ग़ालिबन दजला के किनारे एक कश्ती में सवार हो गए। कश्ती ज्यादा भरी हुई थी। दर्मियान में पहुंच कर डूबने का अंदेशा हुआ। चुनांचे कश्ती को हल्का करने के लिए कुरआ डाला गया कि जिसका नाम निकले उसे दरिया में फेंक दिया जाए। कुरआ हजरत यूनुस के नाम निकला और कश्ती वालों ने आपको दरिया में डाल दिया। उस वक्त खुदा के हुक्म से एक बड़ी मछली ने आपको निगल लिया और आपको ले जाकर दरिया के किनारे ख़ुश्की में डाल दिया। हजरत यूनुस ने अपनी कौम को वक्त से पहले छोड़ दिया था। चुनांचे अल्लाह का हुक्म हुआ कि आप दुबारा अपनी कौम की तरफ वापस जाएं। आपने दुबारा आकर तब्लीग की तो शहर के तमाम सवा लाख वाशिदे मोमिन बन गए।

इस वाक्ये से अंदाजा होता है कि दाजी के लिए सब्र इतिहाई हद तक जरूरी है। यहां तक कि उस वक्त भी जबकि लोगों का रवैया बजाहिर मायूसी पैदा करने वाला बन जाए।

فَأَسْقِمْهُمْ الزَّبَنَاتِ وَالْهَمُ الْبَنُونَ ۖ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ۖ وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۖ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ۖ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۖ أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌ ۖ فَاتُّوْا بِكَيْدِكُمْ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۖ

पस उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियां हैं और उनके लिए बेटे। क्या हमने फरिश्तों को औरत बनाया है और वे देख रहे थे। सुन लो, ये लोग सिर्फ मनगढ़त के तौर पर ऐसा कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और यकीनन वे झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटों के मुकाबले में बेटियां पसंद की हैं। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा हुक्म लगा रहे हो। फिर क्या तुम सोच से काम नहीं लेते। क्या तुम्हारे पास कोई वाजेह दलील है। तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो। (149-157)

शैतान की तर्गीब या इंसानों की ग़लत ताबीर से अक्सर ग़ैबी हकीकतों के बारे में बहुत

बड़ी-बड़ी गुमराहियां पैदा हो जाती हैं। उन्हीं में से एक फरिश्तों के मुतअल्लिक कुछ लोगों का यह अकीदा है कि वे खुदा की बेटियां हैं। यह इतिहाई हद तक बेबुनियाद और ग़ैर माकूल बात है। इसकी ग़लती इस सादा सी बात से साबित होती है कि खुदा को अगर अपनी मदद के लिए औलाद दरकार थी तो वह अपने लिए बेटे बनाता। वह अपने लिए बेटियां क्यों बनाता जो खुद मुश्कीन के नजदीक कमजोरी की अलामत हैं।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نِجَالًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۖ سُبْحَنَ  
اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۚ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۖ فَاتَّكُم مَّا تَعْبُدُونَ ۖ مِمَّا  
أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ۖ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِحٌ مُّجْتَبِىٌّ ۚ وَنَامُوا إِلَّاهُ مَقَامِرَ  
مُّعَلُومٍ ۖ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ۚ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ۚ

और उन्होंने खुदा और जिन्नात में भी रिश्तेदारी करार दी है। और जिन्नों को मालूम है कि यकीनन वे पकड़े हुए आएंगे। अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते हैं। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। पस तुम और जिनकी तुम इबादत करते हो, खुदा से किसी को फेर नहीं सकते। मगर उसे जो जहन्नम में पड़ने वाला है। और हम में से हर एक का एक मुअय्यन (निश्चित) मकाम है। और हम खुदा के हुज़ूर बस सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) रहने वाले हैं। और हम उसकी तस्वीह करने वाले हैं। (158-166)

गुमराह कौमें जिन्नात के बारे में इस तरह का अकीदा रखती हैं गोया कि जिन्नात खुदा के हरीफ (प्रतिपक्षी) और मददेमुकाबिल हैं। उनका ख्याल है कि जिन्नों के हाथ में बंदी की ताकतें हैं और फरिश्तों के हाथ में नेकी की ताकतें। ये दोनों जिसे चाहें मुसीबत में डाल दें और जिसे चाहें कामयाब बना दें। जैसा कि मजूस (पारसी) खुदाई में दो के कायल हैं। उनके नजदीक यजदां नेकी का खुदा है और अहरमन बुराई का खुदा।

इंसान अपने झूठे मफरूजात (मान्यताओं) की बिना पर दुनिया में फरिश्तों की इबादत करता है। और खुद फरिश्तों का हाल यह है कि वे अल्लाह के हुज़ूर ताबेदार खादिम की तरह सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े रहते हैं और हर वक्त सिर्फ एक अल्लाह की बड़ाई का एलान करते हैं।

وَإِنْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۖ لَوَ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ۖ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ  
الْمُخْلَصِينَ ۖ فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۖ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا  
الْمُرْسَلِينَ ۖ إِنَّهُمْ لَمُصْذَرُونَ ۖ وَإِنْ جُنْدُنَا لَهُمُ الْغُلَبُونَ ۖ قَتَلْنَا عَنْهُمْ حَتَّى  
حِينَ ۖ وَأَبْصَرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ۖ

और ये लोग कहा करते थे कि अगर हमारे पास पहलों की कोई तालीम होती तो हम अल्लाह के ख़ास बंदे होते। फिर उन्होंने उसका इंकार कर दिया तो अनकरीब वे जान लेंगे। और अपने भेजे हुए बंदों के लिए हमारा यह फैसला पहले ही हो चुका है। कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएंगे। और हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है। तो कुछ मुद्दत तक उनसे रुख़ फेर लो और देखते रहो, अनकरीब वे भी देख लेंगे। (167-175)

कदीम जमाने में अरबों का हाल यह था कि जब वे सुनते कि यहूद ने और दूसरी कौमों ने अपने रसूलों का इंकार किया तो वे पुरफख़ तौर पर कहते कि ये लोग बहुत बदबख़्त थे। अगर हमारे पास रसूल आता तो हम उसकी कद्रदानी करते और उसका साथ देते। मगर जब उनके अंदर अल्लाह ने एक रसूल भेजा तो वे उसके मुंकिर हो गए। जिस तरह दूसरे लोग अपने रसूलों के मुंकिर हुए थे। ऐसा हक़ आदमी को ख़ूब दिखाई देता है जिसकी जद दूसरों पर पड़ती हो। मगर जिस हक़ की जद खुद आदमी की अपनी जात पर पड़े उससे वह इस तरह बेख़बर हो जाता है जैसे उसे देखने के लिए उसके पास आंख ही नहीं।

हक़ के दाअियों की बात को लोग नजरअंदाज करते हैं। वे भूल जाते हैं कि हक़ के दाअी इस दुनिया में खुदा के लश्कर हैं। हक़ के दाअियों की बात हर हाल में बुलन्द व बाला होकर रहती है, चाहे मुख़ालिफ़त करने वाले उसकी कितनी ही ज्यादा मुख़ालिफ़त करें।

أَفِيعَدَا إِنَّا يَسْتَعْلِمُونَ ۖ فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ۖ وَتَوَلَّى  
عَنْهُمْ حَتَّى حِينٍ ۖ وَأَبْصَرُ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ۖ سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعُرْوَةِ الْعَمَّا  
يُصِفُونَ ۖ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۖ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ

क्या वे हमारे अजाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। पस जब वह उनके सेहन में उतरेगा तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिन्हें उससे डराया जा चुका है। तो कुछ मुद्दत के लिए उनसे रुख़ फेर लो। और देखते रहो, अनकरीब वे खुद देख लेंगे। पाक है तेरा रब, इज्जत का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं। और सलाम है पैग़म्बरों पर। और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (176-182)

पैग़म्बर लोगों से कहते थे कि अगर तुमने मेरी बात न मानी तो तुम्हारे ऊपर खुदा का अजब आ जाएगा। मगर लोग इस बात को बेक़ीक़त समझते रहे और उसका मजक उड़ते रहे। इसकी वजह यह थी कि उनका पैग़म्बर उन्हें इससे बहुत कम नजर आता था कि उसकी बात न मानने से उन पर खुदा का अजाब टूट पड़े।

सूरह-38. साद

1205

पारा 23

ताहम उनके मज़ाक उड़ाने के बावजूद ऐसा नहीं हुआ कि फौरन उनके ऊपर अजाब आ जाए क्योंकि अजाबे इलाही के उतरने के लिए हुज्जत की तक्मील (आह्वान की पूर्णता) जरूरी है। इसलिए पैगम्बरों को हुक्म होता है कि वे सब्र और एराज करते रहें, यहां तक कि इल्मे इलाही के मुताबिक मुकर्रह मुद्दत पूरी हो जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ۚ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عَذَابٍ وَشَقَاقٍ ۚ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَُوا وَلَوْ كُنَّا حِينٍ مَنَاصٍ ۚ

आयतें-88

सूरह-38. साद

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। साद०। कसम है नसीहत वाले कुरआन की। बल्कि जिन लोगों ने इंकार किया, वे धमंड और ज़िद में हैं। उनसे पहले हमने कितनी ही कौमों हलाक कर दीं, तो वे पुकारने लगे और वह वक्त बचने का न था। (1-3)

‘जिफ्र’ के अरस्ल मअना याददिहानी के हैं। याददिहानी किसी ऐसी चीज की कराई जाती है जो बतौर वाक्या पहले से मौजूद हो। कुरआन के ‘जिजिफ्र’ हेने का मतलब यह है कि कुरआन उन हकीकतों को मानने की दावत देता है जो इंसानी फितरत में पहले से मौजूद हैं। कुरआन की कोई बात अब तक ख़िलाफ़े वाक्या या ख़िलाफ़े फितरत नहीं निकली। यही इस बात का काफी सुकूत है कि कुरआन सरासर हक है। इसके बावजूद जो लोग कुरआन को न मानें उनके न मानने का सबब यकीनी तौर पर नपिसयाती है न कि अक्ली। उनका न मानना किसी दलील की बिना पर नहीं है बल्कि इसलिए है कि उसे मान कर उनकी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी।

कुरआन उस दावते तौहीद (एकेश्वरवाद के आह्वान) का तसलसुल है जो पिछले हर दौर में मुख़ालिफ नबियों के जरिए जारी रही है। पिछले जमानों में जिन लोगों ने इस दावत का इंकार किया वे हलाक कर दिए गए। हाल के मुकिरीन को माजी (अतीत) के मुकिरीन के इस अंजाम से सबक लेना चाहिए।

وَعَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سِحْرٌ كَذَّابٌ ۖ أَجَعَلِ الْإِلَهَ الْهَآءِ وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا الشَّيْءُ عَجَبٌ ۚ وَأَنطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا الشَّيْءُ لَشَيْءٌ عَرِيدٌ ۖ فَاسْمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمَلَأِ الْآخِرَةِ ۖ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا

पारा 23

1206

सूरह-38. साद

اٰخِرًا ۖ ۝ اُوْنَزِلَ عَلَيْهِ الْكِتَابُ مِنْ بَيْنِنا بَلِ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ ذِكْرِي ۚ بَلِ لَنَا يَدٌ وَفُوعًا عَذَابٍ ۝

और उन लोगों ने ताज्जुब किया कि उनके पास उनमें से एक डराने वाला आया। और इंकार करने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है। क्या उसने इतने माबूदों (पूज्यों) की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है। और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, यह कोई मतलब की बात है। हमने यह बात पिछले मजहब में नहीं सुनी, यह सिर्फ एक बनाई बात है। क्या हम सब में से इसी शख्स पर कलामे इलाही नाजिल किया गया। बल्कि ये लोग मेरी याददिहानी की तरफ से शक में हैं। बल्कि उन्होंने अब तक मेरे अजाब का मजा नहीं चखा। (4-8)

‘पैगम्बरे इस्लाम’ का नाम आज एक अजीम (महान) नाम है। क्योंकि बाद की पुरअजमत तारीख ने इसे अजीम बना दिया है। मगर इब्तिदा में जब आपने मक्का में नुबुव्वत का दावा किया तो लोगों को आप सिर्फ एक मामूली आदमी दिखाई देते थे। लोगों के लिए यह यकीन करना मुश्किल हो गया कि यही मामूली आदमी वह शख्स है जिसे खुदा ने अपने कलाम का महबत (उतरने की जगह) बनने के लिए चुना है। जब तारीख (इतिहास) बन चुकी हो तो एक अंधा आदमी भी पैगम्बर का पहचान लेता है। मगर तारीख बनने से पहले पैगम्बर को पहचानने के लिए जौहरशनासी (यथार्थ की पहचान) की सलाहियत दरकार है, और यह सलाहियत वह है जो हर दौर में सबसे ज्यादा कम पाई जाती है।

कुरआन का तौर मामूली तौर पर मुअस्सिर (प्रभावशाली) कलाम कुरआन के मुख़ालिफीन को हैरत में डाल देता था। मगर साहिबे कुरआन की मामूली तस्वीर दुबारा उन्हें शुबह में डाल देती थी। इसलिए वे उसे रद्द करने के लिए तरह-तरह की बातें करते थे। कभी उसे जादूगर कहते। कभी झूठा बताते। कभी कहते कि इसके पीछे कोई मादूदी गरज शामिल है। कभी कहते कि ऐसा क्योंकि हो सकता है कि हमारे बड़े-बड़े बुजुर्गों की बात सही न हो और इस मामूली आदमी की बात सही हो।

‘अपने माबूदों पर जमे रहो’ का लफ्ज बताता है कि दलील के मैदान में वे अपने आपको आजिज पा रहे थे, इसलिए उन्होंने तअस्सुब (विद्वेष) के नारे पर अपने लोगों को कुरआनी सैलाब से बचाने की कोशिश की।

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۚ أَمْ لَهُمْ ثَلَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ فَلْيُرْثُوا فِي الْأَنْسَابِ ۚ جُنْدٌ فَأُهْلِكُوا مَهْرُومِينَ مِنَ الْأَكْزَابِ ۚ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۚ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ



सूरह-38. साद

1207

पारा 23

أُولَئِكَ الْأَخْزَابُ ۖ إِنَّ كُلَّ الْأَكْذَابِ الرَّسُلَ فَحَقَّ عِقَابٌ ۖ وَمَا يَنْظُرُ هُمُ إِلَّا  
الْأَصْحَىٰ ۖ وَاحِدَةً مَّا هَا مِنْ فَوَاقٍ ۖ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجَلْنَا قِطْنًا قَبْلَ يَوْمِ  
الْحِسَابِ ۖ

क्या तेरे ख की रहमत के खजने उनके पास हैं जो जबरदस्त है, फय्याज (दाता) है।  
क्या आसमानों और जमीन और इनके दरमियान की चीजों की बादशाही उनके इस्तिआर  
में है। फिर वे सीढ़ियां लगाकर चढ़ जाएं। एक लश्कर यह भी यहां तबाह होगा सब  
लश्करों में से। इनसे पहले कौमे नूह और आद और मेखों (कीलों) वाला मिराज।  
और समूद और कौमे लूत और ऐका वालों ने झुटलाया। ये लोग बड़ी-बड़ी जमाअतें थे।  
उन सब ने रसूलों को झुटलाया तो मेरा अजाब नाजिल होकर रहा। और ये लोग सिर्फ  
एक चिंघाड़ के मुंतजिर हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं। और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे  
ख, हमारा हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले दे दे। (9-16)

खुदा की रहमते हिदायत इस तरह तकसीम नहीं होती कि जिस शख्स को दुनियावी  
अज्मत मिली हुई हो उसी को खुदा की हिदायत भी दे दी जाए। अगर दुनियावी अज्मत लोगों  
को खुदा के यहां अजीम बनाने वाली होती तो ऐसे लोगों के लिए मुमकिन होता कि वे जिस  
शख्स को चाहें खुदा की रहमत पहुंचाएं और जिससे चाहें उसे रोक दें। मगर हकीकत यह है  
कि खुदा अपनी रहमत की तकसीम खुद अपने मेयार पर करता है न कि जाहिरपरस्त इंसानों  
के बनाए हुए मेयार पर।

पैगम्बर का इकार करने वाले कहते कि जिस खुदाई अजाब से तुम हमें डरा रहे हो उस  
खुदाई अजाब को ले आओ। यह जुरअत उनके अंदर इसलिए पैदा होती थी कि वे समझते  
थे कि उन पर खुदा का अजाब आने वाला ही नहीं। उन्हें बताया गया कि जिन बुतों के बल  
पर तुम अपने आपको महफूज समझ रहे हो, उसी किस्म के बुतों के बल पर पिछली कौमों ने  
भी अपने को महफूज समझा और अपने रसूलों के साथ सरकशी की मगर वे सब की सब  
हलाक कर दी गई। फिर तुम आखिर किस तरह बच जाओगे।

أَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَادْكُرْ عَبْدًا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ ۚ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۖ إِنَّا مَنَعْنَا  
الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحُنَا بِالْعَشِيِّ وَالْإشْرَاقِ ۖ وَالطَّيْرُ مَحْشُورَةٌ ۖ كُلُّ لَكَ أَوَّابٌ ۖ وَ  
شَدَدْنَا مَلَكَهٖ وَاتَّيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخِطَابِ ۖ

जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और हमारे बंदे दाऊद को याद करो जो कुव्वत वाला,  
रुजूअ करने वाला था। हमने पहाड़ों को उसके साथ मुसख़र (वशी भूत) कर दिया कि वे  
उसके साथ सुबह व शाम तस्वीह करते थे, और परिंदों को भी जमा होकर। सब अल्लाह की

पारा 23

1208

सूरह-38. साद

तरफ रुजूअ करने वाले थे। और हमने उसकी सल्लनत मजबूत की, और उसे हिक्मत अता  
की। और मामलात का फैसला करने की सलाहियत दी। (17-20)

दीन में सब्र की बेहद अहमियत है। मगर इंसान की अजियतों (यातनाओं) पर सब्र वही  
शख्स कर सकता है जो इंसान के मामले को खुदा के खाने में डाल सके। जो शख्स खुदा की  
हम्द व तस्वीह में डूबा हुआ हो उसी के लिए यह मुमकिन है कि वह इंसान की तरफ से कही  
जाने वाली नाखुशगवार बातों को नजरअंदाज कर दे।

हजरत दाऊद इस सिफत का आला नमूना थे। उन्हें अल्लाह तआला ने रैर मामूली कुव्वत  
और सल्लनत दी थी। मगर उनका हाल यह था कि वह हर मामले में अल्लाह की तरफ रुजूअ  
करते थे। वह कायनात में बुलन्द होने वाली खुदाई तस्वीहात में गुम रहते थे। वह पहाड़ के दामन  
में बैठकर इतने वज्द के साथ हम्दे खुदावंदी का नगमा छेड़ते कि पूरा माहौल उनका हम आवाज  
हो जाता था। दरख्त और पहाड़ भी उनके साथ तस्वीहखानी में शामिल हो जाते थे।

अल्लाह तआला ने हजरत दाऊद को जो हुक्मत दी थी वह निहायत मुस्तहकम (मजबूत)  
हुक्मत थी। इस इस्तहकाम का राज था हिक्मत और फसल खिताब। हिक्मत से मुराद यह है कि  
वह मामलात में हमेशा हकीमाना और दानिशमंदाना अंदाज इस्तिआर करते थे। और फसल  
खिताब का मतलब यह है कि वह बरवक्त सही फैसला लेने की सलाहियत रखते थे। यही दोनों  
चीजें हैं जो किसी हुक्मरां को सालेह हुक्मरां बनाती हैं। उसके अंदर हिक्मत होना इस बात का  
जामिन है कि वह कोई ऐसा इक्दाम नहीं करेगा जो फयदे से ज्यादा नुस्सान का सबब बन जाए।  
और फसल खिताब इसका जामिन है कि उसका फैसला हमेशा मुसिफना फैसला होगा।

وَهَلْ أُنَبِّئُكَ نَبَأَ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْحُرَابَ ۖ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا  
لَا تَخَفْ خَصْمُكَ بَغِيَ بَعْضًا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاخْتُمْنَا بِهٖ بِالْحَقِّ وَلَا تَشْطِطْ وَاهْدِنَا  
إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۖ

और क्या तुम्हें खबर पहुंची है मुकदमा वालों की जबकि वे दीवार फांदकर इबादतखाने  
में दाखिल हो गए। जब वे दाऊद के पास पहुंचे तो वह उनसे घबरा गया, उन्होंने कहा  
कि आप डरें नहीं, हम दो फरीके मामला (विवाद के पक्ष) हैं, एक ने दूसरे पर ज्यादाती  
की है तो आप हमारे दरमियान हक के साथ फैसला कीजिए, बेइंसाफी न कीजिए और  
हमें राहस्ता सन्मार्ग बताइए। (21-22)

कहा जाता है कि हजरत दाऊद ने तीन दिन की बारी मुकदमा कर रखी थी। एक दिन  
दरबार और मुकदमात के फैसलों के लिए। दूसरे दिन अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के  
साथ रहने के लिए। तीसरे दिन अलग रहकर खालिस खुदा की इबादत के लिए। एक रोज  
जबकि उनका इबादती दिन था वह अपने महल के मखसूस हिस्से में अकेले इबादत में मशगूल

सूरह-38. साद

1209

पारा 23

थे कि दो आदमी दीवार फांदकर अंदर दाखिल हो गए और उनके इबादत के कमरे में आकर खड़े हो गए। यह एक ग़ैर मामूली बात थी इसलिए आप कुछ घबरा उठे। उन दोनों आदमियों ने इत्मीनान दिलाया और कहा कि हम दो फरीक (पक्ष) हैं। आप से एक झगड़े का फैसला लेने के लिए यहां हाजिर हुए हैं।

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَجَةً وَاحِدَةً ۖ فَقَالَ لَأُفْلِحَنَّهَا وَ  
عَزَّيْنِي فِي الْخِطَابِ ۖ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَجَّتِكَ إِلَىٰ نَجَاتِهِ ۖ وَإِنْ كَثِيرًا مِّنَ  
الْخَطَا ۖ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا  
يَذَّكَّرُونَ ۚ هُمْ وَظَنَ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَاتَتْهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ ۖ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۖ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ ۖ  
وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۖ

यह मेरा भाई है, इसके पास निम्नानवे दुबियां हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुंबी है। तो वह कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दे। और उसने गुफ्तुगु में मुझे दबा लिया। दाऊद ने कहा, उसने तुम्हारी दुंबी को अपनी दुबियों में मिलाने का मुतालबा करके वाकई तुम पर जुल्म किया है। और अक्सर शुरका (साझीदार) एक दूसरे पर ज्यादाती किया करते हैं। मगर वे जो ईमान रखते हैं और नेक अमल करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद को ख्याल आया कि हमने उसका इन्तेहान किया है, तो उसने अपने खब से माफी मांगी और सज्दे में गिर गया। और रुजूअ हुआ। फिर हमने उसे वह माफ कर दिया। और बेशक हमारे यहां उसके लिए तकरूब (सान्निध्य) है और अच्छा अंजाम। (23-25)

आने वाले दोनों आदमियों ने जो मुकदमा पेश किया वह कोई हकीकी मुकदमा न था बल्कि तमसील की जवान में खुद हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम की किसी बात पर उन्हें मुतनब्बह (सचेत) करना था। चुनांचे मुकदमे का फैसला देते-देते आपको अपना वह मामला याद आ गया जो मज्कूरा मिसाल से मिलता जुलता था। आपने फौरन उससे रुजूअ कर लिया और अल्लाह के आगे सज्दे में गिर पड़े।

हजरत दाऊद को उस वक़्त ज़बरदस्त इक्तेदार (सत्ता) हासिल था। मगर उन्होंने आने वालों को न तो कोई सजा दी और न उन्हें बुरा भला कहा। यही अल्लाह के सच्चे बंदों का तरीका है। उनके अंदर किसी मामले में ज़िद नहीं होती। उन्हें जब उनकी किसी ख़ामी की तरफ तवज्जोह दिलाई जाए तो वे फौरन उसे मान कर अपनी इस्लाह कर लेते हैं, चाहे वे बाइक्तेदार हैसियत के मालिक हों और चाहे मुतवज्जह करने वाले ने उन्हें बेदोष तरीके से मुतवज्जह किया हो।

पारा 23

1210

सूरह-38. साद

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ  
فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ سَبِيلُ اللَّهِ ۖ لَهُمْ عَذَابٌ  
شَدِيدٌ بِمَا سَوَّوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۖ

ऐ दाऊद हमने तुम्हें ज़मीन में खलीफा (हाकिम) बनाया है तो लोगों के दर्मियान इंसाफ के साथ फैसला करो और ख्वाहिश की पैरवी न करो वह तुझे अल्लाह की राह से भटका देगी। जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं उनके लिए सज़ा अजाब है इस वजह से कि वे रोजे हिसाब को भूले रहे। (26)

एक हाकिम हमेशा दो चीजों के दर्मियान होता है। या तो वह मामलात का फैसला अपनी चाहत के मुताबिक करेगा या उसूल हक के मुताबिक। जो हाकिम मामलात का फैसला अपनी चाहत और ख्वाहिश के मुताबिक करे वह राह से भटक गया। खुदा के यहां उसकी सज़ा पकड़ होगी। इसके बरअक्स (विपरीत), जो हाकिम मामलात का फैसला हक व इंसाफ के उसूल का पाबंद रहकर करे वही राहेरास्त पर है। खुदा के यहां उसे बेहिसाब इनामात दिए जाएंगे।

यह हिदायत जिस तरह एक हाकिम के लिए है उसी तरह वह आम इंसानों के लिए भी है। हर आदमी को अपने दायरए इख्तियार में वही करना है जो इस आयत में बाइक्तेदार (सत्ताधारी) हाकिम के लिए बताया गया है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا ذِكْرَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ قَوْلٌ لِلَّذِينَ  
كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ۖ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ  
أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۖ كَذَّبَ الَّذِينَ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبْرَكٌ لِّدَبْرِهِ ۚ وَلَيَسَّ لَكُرْ  
أُولَ الْأَكْبَابِ ۖ

और हमने ज़मीन और आसमान और जो इनके दर्मियान है अबस (बयर्थ) नहीं पैदा किया, यह उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इंकार किया, तो जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए बर्बादी है आग से। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनकी मानिंद कर देंगे जो ज़मीन में फ़साद करने वाले हैं। या हम परहेजगारों को बदकारों जैसा कर देंगे। यह एक बाबरकत किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि अक्ल वाले इससे नसीहत हासिल करें। (27-29)

दुनिया की चीजों पर गौर कीजिए तो मालूम होता है कि इसका पूरा निजाम निहायत हकीमाना बुनियादों पर कायम है हालांकि यह भी मुमकिन था कि वह एक अललटप निजाम हो और उसमें कोई बात यकीनी न हो। दो इम्कान में से एक मुनासिबतर इम्कान का पाया जाना इस बात का करीना (संकेत) है कि इस दुनिया को पैदा करने वाले ने इसे एक वामक्सद मंसूबे के तहत बनाया है। फिर जो दुनिया अपनी इत्तिदा में वामक्सद हो वह अपनी इतिहा में बेमक्सद क्योंकर हो जाएगी।

इसी तरह इस दुनिया में हर आदमी आजाद और खुदमुख्तार है। मुशाहिदा दुबारा बताता है कि लोगों में कोई शख्स वह है जो हकीकत का एतराफ करता है और अपने इस्त्रियार से अपने आपको सच्चाई और इंसाफ का पाबंद बनाता है। इसके मुकाबले में दूसरा शख्स वह है जो हकीकत का एतराफ नहीं करता। वह बेकैद होकर जो चाहे बोलता है और जिस तरह चाहे अमल करता है। अक्ल इसे तस्लीम नहीं करती कि जब यहां दो किस्म के इंसान हैं तो उनका अंजाम यकसां होकर रह जाए।

दुनिया की इस सूरतेहाल को सामने रखा जाए तो जिंदगी के मुतअल्लिक कुरआन का बयान ही ज्यादा मुताबिकेहाल नजर आएगा न कि उन लोगों का बयान जो जिंदगी की तशरीह (विवेचना) उसके बरअक्स अंदाज में करने की कोशिश करते हैं।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝ إِذْ عَرَضَ عَلَيْكَ بِالْعِشِيِّ  
الطُّفُفَاتِ الْيُحْيَادُ ۝ فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۝ حَتَّى تَوَارَتْ  
بِالْحِجَابِ ۝ رُدُّوْهَا عَلَيَّ طَفُفَ مَسَاكِ السُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ۝

और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। जब शाम के वक्त उसके सामने तेज रफ्तार, उमदा घोड़े पेश किए गए। तो उसने कहा, मैंने दोस्त रखा माल की मुहब्बत को अपने रब की याद से, यहां तक कि छुप गया ओट में। उन्हें मेरे पास वापस लाओ। फिर वह झाड़ने लगा पिंडलियां और गर्दन। (30-33)

हजरत सुलैमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम एक अजीम सल्लनत के हुक्मरां थे। एक दिन उनकी फौज के चुस्त और तर्बियतयाफ्ता घोड़े उनके सामने लाए गए। फिर उनकी दौड़ हुई। यहां तक कि घोड़े दौड़ते हुए दूर के मंजर में गुम हो गए। और फिर वे दुबारा वापस आए। इस किस्म का मंजर हमेशा निहायत शानदार होता है। उन्हें देखकर आम इंसान फख्र और घमंड में मुब्तिला हो जाता है। मगर हजरत सुलैमान का हाल यह हुआ कि वह इस पुरफख्र मंजर को देखकर खुदा की याद करने लगे। उन्होंने कहा कि मैंने यह घोड़े अपनी शान दिखाने के लिए पसंद नहीं किए हैं बल्कि सिर्फ खुदा के लिए पसंद किए हैं। घोड़े की शक्ल

में उन्हें खुदा की अजीम कारिगरी नजर आई। और वह खुदा की अम्मत के एतराफ के तौर पर घोड़ों की गर्दनों और पिंडलियों पर हाथ फेरने लगे। मोमिन हर चीज में खुदा की शान देखता है और गैर मोमिन हर चीज में अपनी शान।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَالْقَيْنَ عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَداً ثُمَّ أَنَابَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي  
وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ فَخَرَّ نَاَهُ  
الرِّيحُ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُجَاءَ حَيْثُ أَصَابَ ۝ وَالشَّيَاطِينُ كُلُّ بَنَاءٍ وَغَوَاصٍ ۝  
وَالْآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ هَذَا عَطَاؤُنَا فَانْنُ ۚ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝  
وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عِنْدَ نَالِ الْزُلْفَىٰ وَحُسْنِ مَّآبٍ ۝

और हमने सुलैमान को आजमाया। और हमने उसके तख्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उसने रुजूअ किया। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ कर दे और मुझे ऐसी सल्लनत दे जो मेरे बाद किसी के लिए सजावार (उपलब्ध) न हो। बेशक तू बड़ा देने वाला है। तो हमने हवा को उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया। वह उसके हुक्म से नर्मी के साथ चलती थी जिधर वह चाहता। और जिन्नात को भी उसका ताबेअ कर दिया। हर तरह के कामगर और गोताखोर। और दूसरे जो जंजीरों में जकड़े हुए रहते। यह हमारा अतिया (देन) है तो चाहे उसे दो या रोको, बेहिसाब। और उसके लिए हमारे यहां कुर्ब (समीपता) है और बेहतर अंजाम। (34-40)

हर इंसान से कोताही होती है। मगर खुदा के नेक बंदों के लिए कोताही एक अजीम भलाई बन जाती है क्योंकि वे कोताही के बाद और ज्यादा खुशूअ (विनय) के साथ अपने रब की तरफ पलटते हैं और फिर और ज्यादा इनाम के मुस्तहिक करार पाते हैं।

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम से भी एक मौके पर भूलवश कोई कोताही हो गई। जब आप पर हकीकत वाजेह हुई तो आप शदीद इनाबत (समर्पण-भाव) के साथ अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो गए। अल्लाह तआला ने आप से दरगुजर फरमाया और मजीद यह इनाम किया कि आपको अजीम सल्लनत अता फरमाई और आपको ऐसे गैर मामूली इस्त्रियारात दिए जो किसी और इंसान को हासिल नहीं हुए।

وَإِذْ كُنْزُ عِبْدِنَا يُؤْتَبُ ۚ إِذْ نَادَىٰ رَبُّهُ إِنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ ۚ وَعَدَ ابْنُ  
أَرْضٍ بِرِجْلِكَ ۚ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۚ وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ  
مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا فَاضْرِبْ بِهِ وَ

لَا تَحْزَنْ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۖ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٦٩﴾

और हमारे बंदे अय्यूब को याद करो। जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे तकलीफ और अजाब में डाल दिया है। अपना पांव मारो। यह ठंडा पानी है, नहाने के लिए और पीने के लिए। और हमने उसे उसका कुंवा अत्ता किया और उनके साथ उनके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत के तौर पर और अक्ल वालों के लिए नसीहत के तौर पर। और अपने हाथ में सीकों का एक मुट्ठा लो और उससे मारो और कसम न तोड़ो। बेशक हमने उसे साबिर (धैर्यवान) पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। (41-44)

हजरत अय्यूब अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के पैगम्बरों में से थे। उनका जमाना ग़ालिबन नवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) है। उन्हें काफी माल व दौलत हासिल थी। मगर माल व दौलत में गुम होने के बजाए वह खुदा की इबादत करते और लोगों को खुदा की तरफ बुलाते थे।

कुछ गलत किस्म के लोगों ने यह कहना शुरू किया कि अय्यूब को जब इतना ज्यादा माल व दौलत हासिल है तो वह दीनदार न बनेंगे तो और क्या करेंगे। अल्लाह तआला ने लोगों पर हुज्जत कायम करने के लिए हजरत अय्यूब को मुफ़्लिस बना दिया। मगर वह बदस्तूर अल्लाह के इबादतगुजार बंदे बने रहे। उन्होंने कहा कि 'खुदावंद ने दिया और खुदावंद ने ले लिया। खुदावंद का नाम मबारक हो।'

शरीर लोग अब भी चुप न हुए। उन्होंने कहा कि अस्ल इम्तेहान तो यह है कि वह जिस्मानी तकलीफ में मुब्तिला हों और फिर भी सब्र व शुक्र पर कायम रहें। अल्लाह तआला ने लोगों को यह नमूना भी दिखाया। हजरत अय्यूब को सख्त जिल्दी (खाल की) बीमारी लाहिक हुई और उनके तमाम जिस्म पर फोड़े हो गए। मगर वह बदस्तूर सब्र व शुक्र की तस्वीर बने रहे। जब लोगों पर हुज्जत तमाम हो चुकी तो अल्लाह तआला ने हजरत अय्यूब के लिए एक चशमा (स्रोत) जारी किया जिसमें नहाने से उनका जिस्म बिल्कुल तंदुरुस्त हो गया। और माल व औलाद भी द्वारा मज्द इजफे के साथ अता फरमाए।

हजरत अय्यूब ने बीमारी की हालत में किसी बात पर कसम खा ली थी कि अच्छे हो गए तो अपनी बीवी को सौ लकड़ियां मारेंगे। अल्लाह तआला ने इस कसम को पूरा करने की यह तदबीर उन्हें बताई कि एक झाड़ू लो जिसमें एक सौ सीकें हों और उससे हल्के तौर पर एक बार अपनी बीवी को मार दो। इससे मालूम हुआ कि मख़सूस हालात में हीला (प्रतीकात्मक अमल) करना जाइज है, बशर्ते कि वह किसी शरई हक्म को बातिल न करता हो।

खुदा जब अपने दोन के लिए किसी को इस्तेमाल करे और वह शख्स किसी संकोच के बगैर अपने आपको खुदा के हवाले कर दे तो खुदा उसे दुबारा उससे ज्यादा दे देता है जितना उससे मज्जुरा अमल के दौरान छिना था।

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ ۖ وَاسْتَقِ وَيَعْقُوبَ أُولَى الْأَيْدِي ۖ وَالْأَبْصَارِ ۖ إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذُكِّرَى الدَّارِ ۖ وَإِنَّمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْآخِرَارِ ۖ وَأَذْكُرْ سَمْعِيلَ ۖ وَالْيَسَعَ ۖ وَذَا الْكِفْلِ ۖ وَكُلَّ مِّنَ الْآخِرَارِ ۖ

और हमारे बंदो, इब्राहीम और इल्हाक और याकूब को याद करो, वे हाथों वाले और आंखों वाले थे। हमने उन्हें एक ख़ास बात के साथ मज़सूस किया था कि वह आख़िरत (परलोक) की याददिहानी है। और वे हमारे यहां चुने हुए नेक लोगों में से हैं। और इस्माईल और अल यसअ और जुलक़िफ़ल को याद करो, सब नेक लोगों में से थे।  
(45-48)

यहां चन्द पैगम्बरों का जिक्र करके इर्शाद हुआ कि वे हाथ वाले और आंख वाले थे। यानी उन्हें जिस्मानी कुव्वत और जेहन्मी बसीरत (सूझबूझ) दोनों आला दर्ज में हासिल थीं। एक तरफ वे अमली सलाहियत के मालिक थे। दूसरी तरफ उन्होंने उस मअरफत (अन्तर्ज्ञान) का सुबूत दिया कि वे चीजों को सही नजर से देखने और मामलात में सही राय कायम करने की सलाहियत रखते हैं। चुनांचे खुदा ने उन्हें अपने पैगाम की पैगाम्बरी के लिए चुन लिया।

खुदा का खास काम क्या है जिसके लिए वह इंसानों में से अपने पैगाम्बर चुनता है। वह है आखिरत के घर की याददिहानी। पैगाम्बरों का खास मिशन हमेशा यह रहा है कि वे इंसान को उस हकीकत से बाखबर करें कि इंसान की अस्त मजिल आखिरत है। और इंसान को उसी की तैयारी करना चाहिए। इंसान का सबसे बड़ा मसला यही है और इस दुनिया में सबसे बड़ा काम यह है कि उसे इस संगीन मसले से आगाह किया जाए।

هَذَا ذِكْرُ <sup>(٥٤)</sup> وَإِنَّ الْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ <sup>(٥٥)</sup> جَنَّتْ عَنْهُمْ مَفْجَأَةٌ لَّهُمُ الْآبُوبُ <sup>(٥٦)</sup>  
مُتَكِينٍ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِأَلْفَامَةٍ كَثِيرَةٍ <sup>(٥٧)</sup> وَشَرَابٍ <sup>(٥٨)</sup> وَعَنْهُمْ قِصْرُ الطَّرَفِ  
أَتْرَابٍ <sup>(٥٩)</sup> هَذَا مَا تُعَدُّونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ <sup>(٦٠)</sup> إِنَّ هَذَا رِزْقًا مَالَهُ مِنْ تَفَاوُتٍ <sup>(٦١)</sup>

यह नसीहत है, और बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है, हमेशा के बाग़ जिनके दरवाजे उनके लिए खुले होंगे। वे उनमें तकिया लगाए बैठे होंगे। और बहुत से मेवे और मशरूबात (पेय पदार्थ) तलब करते होंगे। और उनके पास शर्मिली हमसिन (समान अवस्था वाली) बीवियां होंगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे रोज़े हिसाब आने पर वादा किया जाता है। यह हमारा रिश्क है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं। (49-54)

जन्मत के दरवाजे उन लोगों के लिए खोले जाते हैं जो अपने दिल के दरवाजे नसीहत के लिए खोलें। जो खुदा के जुहूर से पहले खुदा से डरने वाले बन जाएं। यही वे खुशनसीब लोग



सूरह-38. साद

1215

पारा 23

हैं जो आखिरत की अबदी नेमतों के हिस्सेदार होंगे।

कुरआन में आखिरत की जिन नेमतों का जिक्र है वे सब वही हैं जो दुनिया में भी इंसान को हासिल होती हैं। मगर दोनों में जबरदस्त फर्क है। वह यह कि दुनिया में ये नेमतें वकती और इत्तिदाई शकल में दी गई हैं और आखिरत में ये नेमतें अबदी और इतिहाई शकल में दी जाएंगी। मजीद यह कि इन आला नेमतों के साथ हर क्रिस्म के ख़ैफ और अंशे को हजफ कर दिया जाएगा जिनका हजफ होना मौजूदा दुनिया में किसी तरह मुमकिन नहीं।

هَذَا وَإِنَّ لِلطَّغْيِينَ لَشَرَّ مَا بَ ۖ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَيَسُّنَ الْبِهَادِ ۖ هَذَا أَفَلَيْدٌ وَقُوَّةُ  
حَيَمٍ وَعَسَاقٍ ۖ وَآخِرُ مَنْ شَكَلَهُ أَزْوَاجٌ ۖ هَذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ لَا مَرْحَبًا  
بِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۖ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَأَمْزَجِبَاكُمْ أَنْتُمْ قَدْ مُتُّمُوهُنَا فَيَسُّنَ  
الْقَرَارِ ۖ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۖ وَقَالُوا مَا لَنَا  
لَا نَسْرَىٰ رِجَالًا لَّنَا غَدُمٌ مِّنَ الْأَشْرَارِ ۖ أَخَذْنَا لَهُمْ سِجْرًا ۖ أَمْزَجَعْنَا لَهُمُ  
الْأَبْصَارَ ۖ إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُّمُ أَهْلِ النَّارِ ۖ

यह बात हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है। जहन्नम, उसमें वे दाखिल होंगे। पस क्या ही बुरी जगह है। यह खोलता हुआ पानी और पीप है, तो ये लोग उन्हें चखें। और इस क्रिस्म की दूसरी और भी चीजें होंगी। यह एक फौज तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है, उनके लिए कोई खुशआमदीद (स्वागत) नहीं। वे आग में पड़ने वाले हैं। वे कहेंगे बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई खुशआमदीद नहीं। तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाए हो, पस कैसा बुरा है यह ठिकाना। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, जो शरूस इसे हमारे आगे लाया उसे तू दुगना अजाब दे, जहन्नम में। और वे कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहां नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। क्या हमने उन्हें मजाक बना लिया था या उनसे निगाहें चूक रही हैं। बेशक यह बात सच्ची है, अहले दोख़ का आपस में झगड़ना। (55-64)

जहन्नम उन तकलीफों की अबदी और इतिहाई शकल है जिनका मौजूदा दुनिया में कोई शरूस तसव्वुर कर सकता है। दुनिया में सरकशी करने वाले सच्चाई को झुठलाने वाले लोग जब जहन्नम में इकट्ठा होंगे तो उनके लीडर और पैरोकार आपस में तकरार करेंगे। वे पैरोकार जो अपने लीडरों की अज्मत पर फख़ करते थे वे वहां अपना अंजाम देखकर उन पर लानत भेजेंगे। इसका एक नक़्शा इन आयात में दिखाया गया है।

सच्चाई का इंकार करने वाले जब आखिरत में अपना बुरा अंजाम देखेंगे तो वहां वे उन लोगों को याद करेंगे जिन्होंने सच्चाई का साथ दिया था और इस बिना पर वे अपने माहौल

पारा 23

1216

सूरह-38. साद

में हकीर बन गए थे। उनके मुतअल्लिक मुकिरीन कहते थे कि ये अकाबिर की तोहीन करने वाले हैं। ये आबाई (पैतुक) दीन से भटक गए हैं। इन्होंने मिलत से अलग अपना रास्ता बनाया है।

ये मुकिरीन अपने आपको हक पर समझते थे और उन्हें नाहक पर। मगर आखिरत में मामला बिल्कुल बरअक्स हो जाएगा। उस वक़्त उन पर खुलेगा कि जिन्हें हकीर (तुच्छ) समझ कर वे उनका मजाक उड़ते थे, वही आखिरत की सरफराजी में सबसे आगे दर्जा पाए हुए हैं।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۚ وَمَا مِن إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۖ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۖ قُلْ هُوَ نَبُوءٌ أُعْطِيَ ۖ أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۖ مَا كَانَ لِي  
مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يُخْتَصِمُونَ ۖ إِنْ يُؤْخَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَا أَنْذِرُ مُبِينٌ ۖ

कहो कि मैं तो सिर्फ एक डराने वाला हूं। और कोई मावूद (पूज्य) नहीं मगर अल्लाह, यकता (एक) और ग़ालिब (वर्चस्वशील)। वह रब है आसमानों और जमीन का और उन चीजों को जो इनके दर्मियान हैं, वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। कहो कि यह एक बड़ी ख़बर है, जिससे तुम बेपरवाह हो रहे हो। मुझे आलमे बाला (आकाश लोक) की कुछ ख़बर नहीं थी जबकि वे आपस में तकरार कर रहे थे। मेरे पास तो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) बस इसलिए आती है कि मैं एक खुला डराने वाला हूं। (65-70)

यहां जिस इख़्तिसाम (तकरार) का जिक्र है वह वही है जो अगली आयत में मंकूल है।

यानी आदमी की तख़्बीक (रचना) के वक़्त इब्लीस का बहस व तकरार करना।

कुरआन में बताया गया है कि शैतान पहले रोज से आदम का दुश्मन बन गया है। वह पुरफरेब बातों के जरिए औलादे आदम को सीधे रास्ते से भटकाता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह होशियार रहे और उससे पूरी तरह बचने की कोशिश करे। इस सिलसिले में आदम की पैदाइश के वक़्त जो इख़्तिसाम (तकरार) हुआ और उसे कुरआन में बयान किया गया वह सरासर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) था। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त मलए आला में मौजूद न थे कि जाती वाकफ़ियत की बुनियाद पर उसे बयान कर सकते।

सबसे अहम ख़बर इंसान के लिए यह है कि उसे ज़िंदगी की इस नौइयत से आगाह किया जाए कि शैतान हर लम्हा उसके पीछे लगा हुआ है, वह उसकी सोच और उसके जज्बात में दाखिल होकर उसे गुमराह कर रहा है। इंसान को चाहिए कि वह इस ख़तरे से अपने आपको बचाए। पैग़म्बर एक एतबार से इसीलिए आए कि इंसान को इस नाजुक ख़तरे से आगाह कर दें।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ۖ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۖ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَسْجُودًا ۖ إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ ۝ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۖ ۝ قَالَ إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتَ بِيدِي ۖ أَسْتَكَذِبُ ۖ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ۖ ۝ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ خَلْقَتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۖ ۝ قَالَ فَأَخْرِجْهُ مِّنْهَا وَإِنَّكَ رَاجِعٌ ۖ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۖ ۝

जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक बंशर (इंसान) बनाने वाला हूँ। फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर पड़ना। पस तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने धमंड किया और वह इंकार करने वालों में से हो गया। फरमाया कि ऐ इब्लीस, किस चीज ने तुझे रोक दिया कि तू उसे सज्दा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया। यह तूने तकबुर (धमंड) किया या तू बड़े दर्जे वालों में से है। उसने कहा कि मैं आदम से बेहतर हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया है और उसे मिट्टी से। फरमाया कि तू यहां से निकल जा, क्योंकि तू मर्दूद (धुत्कारा हुआ) है। और तुझ पर मेरी लानत है जजा के दिन तक। (71-78)

अल्लाह तआला ने इंसान को एक इतिहाई आला मख्रूक की हैसियत से बनाया। और इसकी अलामत के तौर पर फरिश्तों और जिनों को हुक्म दिया कि वे उसे सज्दा करें। इसके बाद जब ऐसा हुआ कि इब्लीस ने आदम को सज्दा नहीं किया तो वह हमेशा के लिए मलऊन करार पा गया। मगर इस संगीन वाक्ये की अहमियत सिर्फ इब्लीस के एतबार से न थी बल्कि खुद आदम के लिए भी इसकी बेहद अहमियत थी।

आदम के आगे झुकने से इंकार करके इब्लीस अबदी तौर पर नस्ले आदम का हरीफ (प्रतिपक्षी) बन गया। इस तरह इंसानी तारीख़ अव्वल रोज से एक नए रुख़ पर चल पड़ी। इस वाक्ये ने तै कर दिया कि इंसान के लिए जिंदगी का सफ़र कोई सादा सफ़र नहीं होगा बल्कि शदीद मुजाहेमत (प्रतिरोध) का सफ़र होगा। उसे इब्लीस के बहकावों और उसकी पुरफरेब तदबीरों का मुकाबला करते हुए अपने आपको सही रास्ते पर कायम रखना होगा ताकि वह सलामती के साथ अपनी मंजिल तक पहुंच सके।

इंसान और जन्नत के दर्मियान शैतान की फरेबकारियां हायल हैं। जो शख्स शैतान की फरेबकारियों से अपने आपको बचाए वही जन्नत के अबदी बाग़ों में दाख़िल होगा। और जो लोग शैतान की फरेबकारियों का पर्दा फाड़ने में नाकाम रहें वही वे लोग हैं जो जन्नत से महरूम रह गए।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ ۝ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۖ ۝ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۖ ۝ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۖ ۝ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ۖ ۝ لَا مَلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّن تَبَعُوا مَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ ۝

इब्लीस ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे मोहलत दे उस दिन तक के लिए जब लोग दुबारा उठाए जाएंगे। फरमाया कि तुझे मोहलत दी गई, मुअय्यन (निश्चित) वक्त तक के लिए। उसने कहा कि तेरी इज्जत की कसम, मैं उन सबको गुमराह करके रखूँगा, सिवाए तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने ख़ालिस कर लिया है। फरमाया, तो हक़ यह है और मैं हक़ ही कहता हूँ कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन तमाम लोगों से भर दूँगा जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे। (79-85)

मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में शैतान को पूरा मौका दिया गया है कि वह इंसान को बहकाए। मगर शैतान उसी वक्त तक बहका सकता है जब तक हकीकत ग़ैब में छुपी हुई हो। कियामत जब ग़ैब का पर्दा फाड़ेगी तो सब कुछ सामने आ जाएगा। इसके बाद न कोई बहकाने वाला बाकी रहेगा और न कोई बहकने वाला।

मुख़्लिस का मतलब है खोट से ख़ाली होना। मुख़्लिस बंदा वह है जो नफिसयाती बीमारियों से पाक हो। शैतान का मामला यह है कि उसे कोई अमली जोर हासिल नहीं। वह हमेशा तजईन के जरिए इंसानों को बहकाता है। यानी बातिल को हक़ के रूप में दिखाना। बेअस्ल बातों को ख़ूबसूरत अल्फाज में पेश करना। सीधी बात में शोशा निकाल कर लोगों को उसकी तरफ से मुशतबह (संदिग्ध) कर देना। ताहम शैतान की इस तजईन से वही लोग फरेब खाते हैं जो अपने अंदर नफिसयाती खोट लिए हुए हैं। और जो लोग अपनी नफिसयात को उसकी फितरी हालत पर बाकी रखें और अपनी अक्ल को खुले तौर पर इस्तेमाल करें वे फ़ैरन शैतानी फरेब को पहचान लेते हैं। वे कभी उसकी तजईन से गुमराह नहीं होते।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۖ ۝ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۖ ۝ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۖ ۝

कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई अज़्र (मेहनताना) नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ़ (बनावट) करने वालों में से हूँ। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। और तुम जल्द उसकी दी हुई ख़बर को जान लोगे। (86-88)

दाओ की एक लाजिमी सिफ़त यह है कि वह मदऊ (संबोधित पक्ष) से अज़्र का तालिब नहीं होता। वह अपने और मदऊ के दर्मियान कोई मादूदी झगड़ा नहीं खड़ा करता। कुरआन की दावत

आखिरत की दावत है। इसलिए जो शख्स ऐसा करे कि वह एक तरफ कुरआन की दावते आखिरत का अलमबरदार (ध्वजावाहक) हो, और इसी के साथ मदऊ कौम से मादूदी (भौतिक, आर्थिक) मुतालबात की मुहिम भी चलाए वह मदऊ की नजर में एक ग़ैर सजीदा आदमी है। और जो आदमी खुद अपनी ग़ैर सजीदगी साबित कर दे उसकी बात पर कौन ध्यान देगा।

इसी तरह दाओ अपनी तरफ से बनाकर कोई बात नहीं कहता। वह बस वही कहता है जो खुदा की तरफ से उसे मिला है। मसरूक ताबई कहते हैं कि हम अब्दुल्लाह बिन मसरूद रजियल्लाहु अन्हु के पास आए। उन्होंने कहा कि ऐ लोगो, जो शख्स कुछ जानता हो तो उसे चाहिए कि बोले। और जो शख्स न जानता हो तो उसे यह कहना चाहिए कि अल्लाह ही ज्यादा जानता है। यह इल्म की बात है कि आदमी जिस चीज को न जाने उसके बारे में कह दे कि अल्लाह ज्यादा जानता है। क्योंकि अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया है कि कहो कि मैं इस पर तुमसे अज़ नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ करने वालों में से नहीं हूँ। (तप्सीर इब्नेकसीर)

इसी तरह दाओ की यह सिफत है कि वह दावत को नसीहत के रूप में पेश करे। उसका कलाम ख़ैरख़ाहाना (परोपकारी) कलाम हो न कि मुनाजिराना (वाद-विवाद का) कलाम।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۚ الْأَلِلَهُ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ۝

आयतें-75

सूरह-39. अज़-जुमर

रुकूअ-8

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। यह किताब अल्लाह की तरफ से उतारी गई है जो जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ हक के साथ उतारी है, पस तुम अल्लाह ही की इबादत करो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। आगाह, दीन ख़ालिस सिर्फ अल्लाह के लिए है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं, कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ इसलिए करते हैं कि वे हमें खुदा से करीब कर दें। बेशक अल्लाह उनके दर्मियान उस बात का फैसला कर देगा जिसमें वे झल्लफ (मतभेद) कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख्स को हिदायत नहीं देता जो झूठ, हक को न मानने वाला हो। (1-3)

कुरआन हकीकते वाक्या का खुदाई बयान है। इसका हकीमाना उस्तूब और इसके ग़ैर मामूली तौर पर पुख्ता मजामीन इस बात का दाखिली सुबूत हैं कि यह वाक्यातन खुदा ही की तरफ से है। कोई इंसान इस किस्म का ग़ैर मामूली कलाम पेश करने पर कादिर नहीं।

दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस करने का मतलब है इबादत को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना। यानी यह कि तुम सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करो, अपनी इबादत को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए।

हर इंसान के अंदर पुरअसरार (रहस्यमयी) तौर पर इबादत का जब्बा मौजूद है। यानी किसी को बड़ा तसव्वुर करके उसके लिए अजीब और बड़ा समझने (Awe) का एहसास पैदा होना। जिस हस्ती के बारे में आदमी के अंदर यह एहसास पैदा हो जाए उसे वह सबसे ज्यादा मुकद्दस समझता है। उसके आगे उसकी पूरी हस्ती झुक जाती है। उसकी जनाब में वह ग़ैर मामूली किस्म के एहताराम व आदाब का इज्हार करता है। उससे वह सबसे ज्यादा डरता है और उसी से सबसे ज्यादा मुहब्बत करता है। उसकी याद से उसकी रूह को लज्जत मिलती है। वही उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा सहारा बन जाता है।

इसी का नाम इबादत (या परस्तिश) है। और यह इबादत सिर्फ एक खुदा का हक है। मगर इंसान ऐसा करता है कि वह खुदा को मानते हुए इबादत में ग़ैर खुदा को शरीक करता है। वह ग़ैर खुदा के लिए इबादती अफआल अंजाम देता है। यही इंसान की अस्ल गुमराही है। हकीकत यह है कि जिस तरह खुदाई नाक़बिले तक्सीम है उसी तरह इबादत की भी तक्सीम नहीं की जा सकती।

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يَكُونُ الْيَلَّ عَلَى النَّهَارِ وَيَكُونُ النَّهَارُ عَلَى الْيَلِّ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ الْأَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝

अगर अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक में से जिसे चाहता चुन लेता, वह पाक है। वह अल्लाह है, अकेला, सब पर ग़ालिब। उसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर रखा है। हर एक एक ठहरी हुई मुद्दत पर चलता है। सुन लो कि वह जबरदस्त है, बख़्शाने वाला है। (4-5)

आदमी के अंदर फ़ित्री तौर पर यह जब्बा है कि वह खुदा की तरफ लपके, वह खुदा की परस्तिश करे। शैतान की कोशिश हमेशा यह होती है कि वह इस जब्बे को खुदा की तरफ से हटाकर दूसरी तरफ मोड़ दे। इसलिए वह लोगों के जेहन में डालता है कि खुदा की बारगाह

ऊंची है, तुम बराहोरास्त खुदा तक नहीं पहुंच सकते। इसलिए तुम्हें बुजुर्गों के वसीले से खुदा तक पहुंचने की कोशिश करना चाहिए। इसी तरह लोगों के जेहन में यह अक्रीदा बिठाता है कि जिस तरह इंसानों की औलाद होती है उसी तरह खुदा की भी औलाद है। और खुदा को खुश रखने का आसान तरीका यह है कि तुम खुदा की औलाद को खुश रखो। जदीद माद्दापरस्ती (आधुनिक भौतिकवादिता) भी इसी की एक विपरीत हुई सूरत है जिसने आदमी के जख्म परस्तिश को खलिक से हटाकर मजबूत की तरफ कर दिया है।

इस किस्म की तमाम बातें खुदा की तसगीर (छोटा बनाना) हैं। जो खुदा शमसी निजाम को चला रहा है और जिसने अजीम कायनात को संभाल रखा है वह यकीनन इससे बुलन्द है कि उसके यहां किसी की सिफारिश चले या उसके बेटे-बेटियां हों।

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَانزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ ثَمِينَةَ زَوَاجٍ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمٍ ثَلَاثٍ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ

अल्लाह ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए नर व मादा चौपायों की आठ किस्में उतारीं। वह तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट में बनाता है, एक खिलकत (सृजन रूप) के बाद दूसरी खिलकत, तीन तारीकियों के अंदर। यही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहां से फरे जाते हो। (6)

अव्वलन एक इंसान वजूद में आया। फिर ऐन उसके मुताबिक उसका एक जोड़ा निकाला गया। इस तरह इब्तिदाई मर्द व औरत के जरिए इंसानी नस्ल चली। फिर इंसान की जरूरत के लिए उससे बाहर अल्लाह तआला ने बेशुमार चीजें बनाईं। भेड़, बकरी, ऊंट और गाय (नर व मादा को मिलाकर आठ किस्में) तहजीब के इब्तिदाई दौर में हजारों साल तक इंसान की मईशत (अर्थव्यवस्था) का जरिया बनी रहीं। फिर जब तहजीब अगले मरहले में पहुंची तो दूसरी बेशुमार चीजों को इंसान ने इस्तेमाल करना शुरू किया जिन्हें खुदा ने अव्वल रोज से ऐसा बना रखा था कि इंसान उन्हें अपने काम में ला सके। जिस तरह पालतू जानवर तबीई (भौतिक) तौर पर इंसान के अधिकार में हैं। इसी तरह गैसों और मादनियात (धातु, खनिज) भी प्रदान की हुई हैं, वना इंसान उन्हें इस्तेमाल न कर सके। मजबूरा आठ किस्मों की मिसाल बतौर अलामत है न कि बतौर हस्र (सीमांकन)।

इंसान की पैदाइश के सिलसिले में यहां जिन तीन तारीकियों का जिक्र है उससे मुराद तीन पर्दे हैं। अव्वल पेट की दीवार, फिर रहमे मादर (गर्भाशय) का पर्दा, और फिर जनीन (भ्रूण) की बाहरी झिल्ली।

The mother's abdominal wall, the wall of the uterus, and the amniochorionic membrane.

यह सारा निजाम इतना हिरतनाक हद तक पेचीदा और अजीम है कि खलिके कायनात के सिवा कोई और इन्हें जुहूर में नहीं ला सकता। फिर उसके सिवा कौन इस काबिल है कि उसे माबूद का दर्जा दिया जाए।

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

अगर तुम इंकार करो तो अल्लाह तुमसे बेनियाज (निस्पृह) है। और वह अपने बंदों के लिए इंकार को पसंद नहीं करता। और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारे रब ही की तरफ तुम्हारी वापसी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की बात को जानने वाला है। (7)

खुदा को मानना और उसका शुक्रगुजार बनना खुद इंसानी अक्ल का तक्काज है क्योंकि यह हकीकत वाक्या (यथार्थ) का एतराफ है और हकीकत वाक्या का एतराफ बिलाकुद

आखिरत अदले कामिल का जुहूर (पूर्ण न्याय का प्रकटन) है और यह नामुमकिन है कि अदले कामिल की दुनिया में वह नाकिस (त्रुटिपूर्ण) सूरतेहाल जारी रहे जो मौजूदा दुनिया में नजर आती है। अदल का तक्काज है कि हर आदमी ऐन वही साबित हो जो कि फिलवाकअ वह है, और ऐन वही पाए जिसका वह हकीकतन मुस्तहिक था। मौजूदा दुनिया में ऐसा नहीं होता। आखिरत इसलिए आएगी कि वह दुनिया की इस कमी को दूर करे, वह नाकिस दुनिया को आखिरी हद तक कामिल दुनिया बना दे।

وَإِذْ آمَسَّ الْإِنْسَانُ عُزْرَةَ عَارِبَهُ مُبْتِغِيًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا اخْوَلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسَىٰ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِّیُخْسَلَ عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا بِكُفْرِكُمْ قَلِيلًا إِنَّكُمْ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۖ أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ إِنَّهُ الْيَقِيلُ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَّحْذُرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا رَحْمَةَ رَبِّهِ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ



सूरह-39. अज़-जुमर

1223

पारा 23

और जब इंसान को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह अपने ख़ब को पुकारता है, उसकी तरफ़ रुजूअ (प्रवृत्त) होकर। फिर जब वह उसे अपने पास से नेमत दे देता है तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और वह दूसरों को अल्लाह का बराबर ठहराने लगता है ताकि उसकी राह से गुमराह कर दे। कहो कि अपने कुफ़्र से थोड़े दिन फायदा उठा ले, बेशक तू आग वालों में से है। भला जो शख्स रात की घड़ियों में सज्दा और क़ियाम की हालत में आजिजी (विनय) कर रहा हो, आखिरत से डरता हो और अपने ख़ब की रहमत का उम्मीदवार हो, कहो, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं। नसीहत तो वही लोग पकड़ते हैं जो अक्ल वाले हैं। (8-9)

हर आदमी पर ऐसे लम्हात आते हैं जबकि वह अपने आपको बेबस महसूस करने लगता है। वह जिन चीज़ों को अपना सहारा समझ रहा था वे भी इस नाजुक लम्हे में उसके मददगार नहीं बनते। उस वक़्त आदमी सब कुछ भूलकर ख़ुदा को पुकारने लगता है। इस तरह मुसीबत की घड़ियों में हर आदमी जान लेता है कि एक ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं। मगर मुसीबत दूर होते ही वह दुबारा पहले की तरह बन जाता है।

इंसान की मज्दी सरकशी यह है कि वह अपनी नज़ात को ख़ुदा के सिवा दूसरी चीज़ों की तरफ़ मंसूब करने लगता है। कुछ लोग उसे असबाब का करिश्मा बताते हैं और कुछ लोग फर्जी माबूदों का करिश्मा। आदमी अगर ग़लती करके ख़ामोश रहे तो यह सिर्फ़ एक शख्स का गुमराह होना है। मगर जब वह अपनी ग़लती को सही साबित करने के लिए उसकी झूठी तौजीह करने लगे तो वह गुमराह होने के साथ गुमराह करने वाला भी बना।

एक इंसान वह है जिसे सिर्फ़ मादूदी ग़म बेकरार करे। दूसरा इंसान वह है जिसे ख़ुदा की याद बेकरार कर देती हो। यही दूसरा इंसान दरअसल ख़ुदा वाला इंसान है। उसका इकरारे ख़ुदा हालात की पैदावार नहीं होता, वह उसकी शऊरी दरयाफ़्त (चेतनापूर्ण खोज) होता है। वह ख़ुदा को एक ऐसी बरतर हस्ती की हैसियत से पाता है कि उसकी उम्मीदें और उसके अंदेशे सब एक ख़ुदा की जात के साथ वाबस्ता हो जाते हैं। उसकी बेकरारियां रात के लम्हात में भी उसे बिस्तर से जुदा कर देती हैं। उसकी तंहाई ग़फलत की तंहाई नहीं होती बल्कि ख़ुदा की याद की तंहाई बन जाती है।

इल्म वाला वह है जिसकी नफ़िसयात में ख़ुदा की याद से हलचल पैदा होती हो। और बेइल्म वाला वह है जिसकी नफ़िसयात को सिर्फ़ मादूदी हालात बेदार करें। वह मादूदी झटकों से जागे और इसके बाद दुबारा ग़फलत की नींद सो जाए।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً ۚ وَارْضُۢلِلّٰهِ وَالسَّعٰۤةُ اِنَّمَا يُوَفّٰى الصّٰدِقُوْنَ اَجْرُهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۱

पारा 23

1224

सूरह-39. अज़-जुमर

कहो कि ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, अपने ख़ब से डरो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करेंगे उनके लिए नेक सिला (प्रतिफल) है। और अल्लाह की जमीन वसीअ (विस्तृत) है। बेशक सब करने वालों को उनका अज़्र बेहिसाब दिया जाएगा। (10)

आदमी को जब अल्लाह की गहरी मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) हासिल होती है तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि वह अल्लाह से डरने वाला बन जाता है। अल्लाह की अज़्मतों का इदराक उसे अल्लाह के आगे पस्त कर देता है। उसकी अमली जिंदगी अल्लाह के अहकाम की पाबंदी में गुजरने लगती है। वह इस मामले में इस हद तक संजीदा हो जाता है कि सब कुछ छोड़ दे मगर अल्लाह को न छोड़े।

ईमान के ऊपर जिंदगी की तामीर करना आदमी के लिए जबरदस्त इम्तेहान है। इस इम्तेहान में वही लोग पूरे उतरते हैं जिनके लिए ईमान इतनी कीमती दौलत हो कि उसकी ख़ातिर वे हर दूसरी चीज़ पर सब्र करने के लिए राजी हो जाएं। ईमानी जिंदगी अमल के एतबार से सब्र वाली जिंदगी का दूसरा नाम है। जो लोग सब्र की कीमत पर मोमिन बनने के लिए तैयार हों वही वे लोग हैं जो ख़ुदा के आला इनामात में हिस्सेदार बनाए जाएंगे।

قُلْ اِنِّىْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لِّهِ الدِّيْنَ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۚ قُلْ اِنِّىْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْۤ اَعَذَّبَ يَوْمَ عَظِيْمٍ ۝۱ قُلْ اللّٰهُ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لِّدِيْنِىْ ۚ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ۚ قُلْ اِنَّ الْخٰۤیِرَ لَ الَّذِيْنَ خَيْرُوْا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخَيْرُ اِنَّ الْبٰۤیِّنَ ۝۲ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ اٰلَا ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادًا ۙ لَّيَعْبُدُوْهُ اَتَتَّقُوْنَ ۝۳

कहो, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ख़ुद मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूं। कहो कि अगर मैं अपने ख़ब की नाफरमानी (अवज्ञा) करूं तो मैं एक होलनाक दिन के अजाब से डरता हूं। कहो कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूं उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। पस तुम उसके सिवा जिसकी चाहे इबादत करो। कहो कि असली घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को क़ियामत के दिन घाटे में डाला। सुन लो यही खुला हुआ घाटा है। उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के सायबान होंगे और उनके नीचे से भी। यह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है। ऐ मेरे बंदो, पस मुझसे डरो। (11-16)

पैगम्बर की अस्ल दावत यह होती है कि लोग सिर्फ़ एक ख़ुदा के परस्तार बनें। उसके सिवा

दूसरी तमाम चीजों की परस्तारी छोड़ दें। पैगम्बर के लिए यह मारुफ (प्रचलित) मअनोंमेंसिर्फ कफ़री (नेतृत्वपरक) मसला नहीं होता बल्कि वह उसका जाती मसला होता है। इसलिए वह सबसे पहले खुद उस पर कायम होता है। पैगम्बर को यकीन होता है कि आदमी के नफ़ व नुक़सान का अस्ल फ़ैसला आख़िरत में होने वाला है। इसलिए वह खुद अपनी ज़िंदगी को आख़िरत की राह में लगाता है और दूसरों को उसकी तरफ़ लगने की दावत देता है।

पैगम्बर के काम की यह नौइयत दाओ के काम की नौइयत को बता रही है। हक़ का दाओ वही शरूअ है जिसके लिए हक़ उसका जाती मसला बन जाए। जिसकी दावत उसकी अंदरूनी हालत का एक बेताबाना इज़हार हो न कि लाउडस्पीकर की तरह सिर्फ़ एक ख़ारजी पुकार।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادَ ۚ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۖ وَوَلَّيْنَاكَ هُمْ أُولَٰئِكَ الْأَكْبَابَ ۝

और जो लोग शैतान से बचे कि वे उसकी इबादत करें और वे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हुए, उनके लिए खुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को खुशख़बरी दे दो जो बात को ग़ौर से सुनते हैं। फिर उसके बेहतर की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बरूनी है और यही हैं जो अक्ल वाले हैं। (17-18)

मौजूदा दुनिया फ़ितने की दुनिया है। यहां हकीकतें अपनी आख़िरी बेनकाब शक़ल में जाहिर नहीं हुई हैं। यही वजह है कि यहां हर बात को ग़लत मअना पहनाया जा सकता है। शैतान इसी इम्कान को इस्तेमाल करके लोगों को राहेरास्त से भटकाता है।

जब भी कोई हक़ सामने आता है तो शैतान उसे ग़लत मअना पहनाकर लोगों के जेहन को फेरने की कोशिश करता है। वह कौल के अहसन (अच्छे) पहलू से हटाकर कौल के ग़ैर अहसन पहलू को लोगों के सामने लाता है। यही वह मकाम है जहां आदमी का अस्ल इम्तेहान है। आदमी को उस अक्ल का सुबूत देना है कि वह सही और ग़लत के दर्मियान तमीज करे। वह शैतानी फ़रेब का पर्दा फाड़कर हकीकत को देख सके। जो लोग इस बसीरत का सुबूत दें वही वे खुशकिस्मत लोग हैं जो खुदाई सच्चाई को पाएंगे और जो लोग इस बसीरत (सूझबूझ) का सुबूत देने में नाकाम रहें, उनके लिए इस दुनिया में इसके सिवा कोई और अंजाम मुकद्दर नहीं कि वे कौल के ग़ैर अहसन (बुरे) पहलुओं में उलझे रहें और खुदा के यहां शैतान के परस्तार की हैसियत से उठाए जाएं।

أَفَنَنْتَ عَلَىٰ كَلِمَةٍ الْعَذَابَ ۚ أَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي الثَّائِلِ ۚ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعَدَ اللَّهُ

لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْبِعَادَ ۝

क्या जिस पर अजाब की बात साबित हो चुकी, पस क्या तुम ऐसे शरूअ को बचा सकते हो जो कि आग में है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरे, उनके लिए बालाख़ाने (उच्च भवन) हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, बने हुए। उनके नीचे नहरें बहती हैं। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (19-20)

हर आदमी अपने आमाल के अंजाम के दर्मियान घिरा हुआ है। जन्नत वाले को जन्नती फ़िज़ भेरे हुए हैं और जहन्नम वाले को जहन्नी फ़िज़ भेरे हुए हैं। ग़ैर महसूस हकीकतों को देखने वाली निगाह हो तो लोग जन्नत वाले इंसान को इसी दुनिया में जन्नत में देखें और जहन्नम वाले इंसान को इसी दुनिया में जहन्नम में घिरा हुआ पाएं।

जन्नत आरजुओं की उस दुनिया की आख़िरी मेयारी सूरत है जिसे आदमी दुनिया में हासिल करना चाहता है मगर वह उसे हासिल नहीं कर पाता। इस जन्नत की कीमत अल्लाह का तक़्वा है। जो लोग दुनिया में ख़ैफ़े खुदा का सुबूत दें वही जन्नत की बेख़ौफ़ ज़िंदगी के मालिक बनेंगे।

الْمُتَرَكِّانَ اللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرًا لِأُولَى الْأَكْبَابِ ۚ أَفَنَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَكَ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ ۖ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसे ज़मीन के चश्मों (स्रोतों) में जारी कर दिया। फिर वह उससे मुत्तलिफ़ किस्म की खेतियां निकालता है, फिर वह खुशक हो जाती है, तो तुम उसे जर्द देखते हो। फिर वह उसे रेज़ा-रेज़ा कर देता है। बेशक़ इसमें नसीहत है अक्ल वालों के लिए। क्या वह शरूअ जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, पस वह अपने रब की तरफ़ से एक रोशनी पर है। तो ख़राबी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत के मामले में सख़्त हो गए। ये लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (21-22)

ज़मीन पर बारिश का हैतअरीज़ निज़म, फिर उससे सब्ज़ का उगना, फिर फ़सल की तैयारी, इन माददी वाक़ेयात में बेशुमार मअनवी नसीहतें हैं। मगर इन नसीहतों को वही लोग पाते हैं जो बातों की गहराई में उतरने का मिजाज रखते हों।

एक तरफ़ अल्लाह ने ख़ारजी (वाह्य) दुनिया को इस ढंग पर बनाया कि उसकी हर चीज़

हकीकते आला की निशानी बन गई। दूसरी तरफ इंसान के अंदर ऐसी सलाहियतें रख दीं कि वह इन निशानियों को पढ़े और उन्हें समझ सके। अब जो लोग अपनी फितरी सलाहियतों को जिद्द रखें और उनसे काम लेकर दुनिया की चीजों पर गौर करें, उनके सीने में मअरफत (अन्तर्ज्ञान) के दरवाजे खुल जाएंगे। और जो लोग अपनी फितरी सलाहियतों को जिद्द न रख सकें वे नसीहतों के हुजूम में भी नसीहत लेने से महरूम रहेंगे। वे देखकर भी कुछ न देखेंगे और सुन कर भी कुछ न सुनेंगे।

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعُرُ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ ذَلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَالَهُ مِنْ هَادٍ ۖ

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा है। एक ऐसी किताब आपस में मिलती-जुलती, बार-बार दोहराई हुई, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं। फिर उनके बदन और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, इससे वह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

कुरआन की सूरत में अल्लाह तआला ने एक बेहतरीन किताब इंसान को अता की है। इसकी दो खास सिफतें हैं। एक यह कि वह मुतशबेह (मिलती-जुलती) है। यानी वह एक बेतजाद (अन्तर्विरोध से मुक्त) किताब है। इसके एक जुज और उसके दूसरे जुज में कोई टकराव नहीं। कुरआन की यह सिफत बताती है कि यह किताब बयाने हकीकत पर मबनी है। अगर इसके बयानात ऐन हकीकत न हों तो जरूर इसके मुखलिफ अज्जा के दर्मियान इख़लेफ (मतभेद) और बहुरूपता (Inconsistency) पैदा हो जाती।

कुरआन की दूसरी सिफत यह है कि वह मसानी (दोहराई हुई) किताब है। यानी इसके मजामीन बार-बार मुखलिफ पैरायों से दोहराए गए हैं। कुरआन की यह सिफत उसके किताबे नसीहत होने को बताती है। नसीहत करने वाला हमेशा यह चाहता है कि उसकी बात सुनने वाले के जेहन में बैठ जाए। इस मकसद के लिए वह अपनी बात को मुखलिफ अंदाज से बयान करता है। यही हिक्मत आलातरीन अंदाज में कुरआन में भी है।

इंसान के अंदर यह खुसूसियत है कि जब वह कोई दहशतनाक ख़बर सुनता है तो उसके जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और उसके वजूद में एक किस्म की आजिजाना नर्मी पैदा हो जाती है। यही हाल संजीदा इंसान का कुरआन को पढ़कर होता है। कुरआन में ज़िंदगी की संगीन हकीकतों को इतिहाई मुअस्सिर (प्रभावी) अंदाज में बयान किया गया है। इसलिए इंसान जैसी मख़्लूक अगर वाक़यतन उसे समझ कर पढ़े तो उसके जिस्म के ऊपर वही कैफ़ियत तारी होगी जो किसी संगीन ख़बर को सुनकर फितरी तौर पर उसके ऊपर तारी होना चाहिए।

أَفَمَنْ يَتَّبِعْ يَوْجِهِ سُوَاءُ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۖ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۖ فَادْرَأْهُمْ لِلَّهِ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْعَذَابُ الْآخِرُ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۖ

क्या वह शख्स जो कियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अजाब की सिपर (ढाल) बनाएगा, और जालिमों से कहा जाएगा कि चखो मजा उस कमाई का जो तुम कर्ते थे। उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया तो उन पर अजाब वहां से आ गया जिधर उनका ख़्याल भी न था। तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का मजा चखाया और आख़िरत का अजाब और भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (24-26)

आदमी की कोशिश हमेशा यह होती है कि वह अपने चेहरे को चोट से बचाए। मगर कियामत का अजाब आदमी को इस तरह घेरे हुए होगा कि वहां यह मुमकिन न होगा कि आदमी अपने जिस्म के किसी हिस्से को उसकी जद में आने से रोक सके। वह नाकाबिले दिफ़अ अजाब के सामने इस तरह खड़ा हुआ होगा गोया वह खुद अपने चेहरे को उसके मुकाबले में सिपर (ढाल) बनाए हुए है।

अल्लाह की नजर में सबसे बड़ा जुर्म यह है कि आदमी के सामने हक आए और वह उसका एतराफ न करे। ऐसे लोग किसी हाल में खुदा की पकड़ से बच नहीं सकते।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۖ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّكَ يَكِيدُ ۖ وَإِنَّهُمْ يَكِيدُونَ ۖ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۖ

और हमने इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें बयान की हैं ताकि वे नसीहत हासिल करें। यह अरबी कुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग डरें। अल्लाह मिसाल बयान करता है एक शख्स की जिसकी मिल्कियत में कई ज़िद्दी आका (स्वामी) शरीक हैं। और दूसरा शख्स पूरा का पूरा एक ही आका का गुलाम है। क्या इन दोनों का हाल एकसां (समान) होगा। सब तारीफ अल्लाह के लिए है लेकिन अक्सर लोग नहीं

सूरह-39. अज़-जुमर

1229

पारा 24

जानते। तुम्हें भी मरना है और वे भी मरने वाले हैं। फिर तुम लोग कियामत के दिन अपने रब के सामने अपना मुकदमा पेश करोगे। (27-31)

कुरआन के बयानात इंसान की मालूम जबान और इंसान के मालूम दायरे के अंदर होते हैं ताकि किसी के लिए उसका समझना मुश्किल न हो।

यहां तमसील की जबान में बताया गया है कि शिर्क (बहुदेववाद) के मुकाबले में तौहीद (एकेश्वरवाद) का उसूल ज्यादा माफूल और ज्यादा मुताबिकेफितरत है। एक तरफ ख़रजी कायनात बताती है कि यहां एक ही इरादे की कारफरमाई है। अगर यहां कई इरादों की कारफरमाई होती तो कायनात का निजाम इस कदर हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ नहीं चल सकता था। दूसरी तरफ इंसान की साख़्त भी ऐसी है जो वफादारी में वहदत (एकत्व) को पसंद करती है। यह बात इंसानी साख़्त के सरासर खिलाफ है कि एक इंसान पर बयकवक्त कई मुख़्तलिफ़ किस्म की वफादारियों की जिम्मेदारी हो और नतीजतन वह एक को भी निभा न सके।

तमाम दलाइल व कराइन यही बताते हैं कि सिर्फ एक खुदा है जो इंसान का ख़ालिक और उसका माबूद है। मौजूदा दुनिया में यह हकीकत अपने जैसे इंसान की जबान से सुनाई जाती है। कियामत में ख़ुद ख़लिकेकायनात इस हकीकत का एलान फरमाएगा। उस वक्त किसी शख्स के लिए यह मुमकिन न होगा कि वह इस बात का इंकार कर सके।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۗ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۚ وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاُ الْحَسَنِينَ ۖ لِيَكْفِرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

उस शख्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा। और सच्चाई को झुठला दिया जबकि वह उसके पास आई। क्या ऐसे मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो शख्स सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी तस्दीक (पुष्टि) की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे, यह बदला है नेकी करने वालों का ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे अमलों को दूर कर दे और उनके नेक कामों के एवज उन्हें उनका सवाब दे। (32-35)

हर वह नजरिया जो मुताबिके हकीकत न हो वह अल्लाह पर झूठ बांधना है। हर दौर में लोग इसी किस्म के झूठ पर जी रहे होते हैं। अल्लाह का दाआ इसलिए उठता है कि वह ऐसे

पारा 24

1230

सूरह-39. अज़-जुमर

झूठ का झूठ होना साबित करे। इसके बाद भी जो लोग झूठ पर कायम रहें वे ठिठोई करने वाले लोग हैं। वे जहन्नम की आग में डाले जाएंगे। और जो लोग रुजूअ करके हक के साथी बन जाएं वही वे लोग हैं जो अल्लाह से डरने वाले साबित हुए। अल्लाह तआला ऐसे लोगों की बुराइयों को उनके आमाल से हटा देगा और उनके नेक आमाल की बिना पर उनकी कद्रदानी फरमाएगा।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۖ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۚ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝

क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफी नहीं। और ये लोग उसके सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं, और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। और अल्लाह जिसे हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह जबरदस्त, इतिकाम (प्रतिशोध) लेने वाला नहीं। (36-37)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तौहीद के दाआ थे। मगर आपका तरीका यह न था कि 'खुदा एक है' के मुस्बत (सकारात्मक) एलान पर रुक जाएं। इसी के साथ आप उन ग़ैर खुदाई हस्तियों की तरदीद (रद्द) भी फरमाते थे जिन्हें लोगों ने बतौर खुद माबूद का दर्जा दे रखा था। आपकी दावत का यही दूसरा जुज लोगों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त बन गया।

ये ग़ैर खुदाई हस्तियां दरअस्त उनके कौमी अकाविर (महापुरुष) थे। सदियों से वे उनकी करामत की मुबालगाआमेज (अतिरंजनापूर्ण) दास्तानें सुनते आ रहे थे। उनके जेहन पर उन हस्तियों की अज्मत इस तरह छा गई थी कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके तकद्दुस (पवित्रता) की तरदीद फरमाई तो उनकी समझ में किसी तरह न आया कि वे ग़ैर मुकद्दस कैसे हो सकते हैं। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि तुम हमारे माबूदों को बुरा कहना छोड़ दो वरना तुम तबाह हो जाओगे। या तुम्हें जुनून हो जाएगा।

मगर हक के दाआ को हुक्म है कि वह इस किस्म की बातों की परवाह न करे। वह अल्लाह के भरोसे पर इस्वाते तौहीद (एक खुदा की पुष्टि) और शिर्क के रद्द का दुगना काम जारी रखे। क्योंकि इसके बग़ैर अग्रे हक पूरी तरह वाजेह नहीं हो सकता।

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَتَادُعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَتُ ضَرِّيَ ۚ أَوْ أَرَادَنِيَ بِرَحْمَةٍ ۖ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ



حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٥٠﴾ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَاِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥١﴾ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٥٢﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّٰ فَأَمَّا يَضِلُّ عَلَيْهِ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿٥٣﴾

ع

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों को और जमीन को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहे, तुम्हारा क्या ख्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो, अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ पहुंचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तकलीफ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझ पर कोई महरबानी करना चाहे तो क्या ये उसकी महरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं। कहे कि अल्लाह मेरे लिए काफी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। कहे कि ऐ मेरी कौम, तुम अपनी जगह अमल करो, मैं भी अमल कर रहा हूं, तो तुम जल्द जान लोगे कि किस पर रुसवा करने वाला अजाब आता है और किस पर वह अजाब आता है जो कभी टलने वाला नहीं। हमने लोगों की हिदायत के लिए यह किताब तुम पर हक के साथ उतारी है। पस जो शख्स हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा। और जो शख्स बेराह होगा तो उसका बेराह होना उसी पर पड़ेगा। और तुम उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हो। (38-41)

इंसान हर दौर में ग़ैर अल्लाह की इबादत करता रहा है। मगर कोई शख्स यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि उसकी इन्हीं पसंदीदा हस्तियों ने जमीन आसमान को बनाया है। या तकलीफ और आराम के वाक्यात के हकीकी असबाब उनके इख्तियार में हैं। इस बेयकीनी के बावजूद लोगों का यकीन बड़ा अजीब है कि वे अपने झूठे माबूदों को छोड़ने पर राजी नहीं होते।

जब दाजी की दलीलें मदरू पर बेअसर साबित हों तो उस वक़्त उसके पास कहने की जो बात होती है वह यह कि तुम जो चाहे करो, जब आखिरी फैसले का दिन आएगा तो वह बता देगा कि कौन हक़ पर था और कौन नाहक़ पर। यह दलील के बाद यकीन का इन्कार है, और दाजी का आखिरी कलिमा हमेशा यही होता है।

اللَّهُ يَتَوَكَّلُ الْإِنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْآخَرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِي

ذَٰلِكَ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٤﴾

अल्लाह ही वफ़ात देता है जानों को उनकी मौत के वक़्त, और जिनकी मौत नहीं आई उन्हें सोने के वक़्त। फिर वह उन्हें रोक लेता है जिनकी मौत का फैसला कर चुका है और दूसरों को एक वक़्त मुक़र्र तक के लिए रिहा कर देता है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (42)

नींद के वक़्त आदमी पर बेख़बरी की हालत तारी हो जाती है। इस एतबार से नींद गोया मौत की तरह है। फिर जब आदमी सोकर उठता है तो दुबारा वह होश की हालत में आ जाता है। यह गोया मौत के बाद दुबारा जी उठने की तस्वीर है।

इस कानूने फ़ितरत के तहत हर आदमी को आज ही इब्तिदाई सतह पर दिखाया जा रहा है कि वह किस तरह मरेगा और किस तरह वह दुबारा उठ खड़ा होगा। आदमी अगर संजीदगी के साथ ग़ौर करे तो वह इसी दुनियावी वाक्ये में अपने लिए आखिरत का सबक पा लेगा।

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَلَوْ كُنَّا لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَ لَا يَعْهَدُونَ ﴿٥٥﴾ قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾ وَإِذَا ذَكَرَ اللَّهُ وَحْدَهُ شَكَّرْتُمْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذَكَرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٥٧﴾ قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ عَلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۖ وَبَدَّ اللَّهُمَّ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٥٩﴾ وَبَدَّ اللَّهُمَّ سَيِّئَاتِ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ تَابُ مَا كَانُوا يَكُونُونَ ۖ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٠﴾

क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफारिशी बना रखा है। कहे, अगर वे न कुछ इख्तियार रखते हों और न कुछ समझते हों। कहे, सिफारिश सारी की सारी अल्लाह के इख्तियार में है। आसमानों और जमीन की वादशाही उसी की है। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे। और जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ते हैं जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उसके सिवा

सूरह-39. अज़-जुमर

1233

पारा 24

दूसरों का जिक्र होता है तो उस वक्त वे खुश हो जाते हैं। कहे कि ऐ अल्लाह, आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, शायब और हाजिर के जानने वाले, तू अपने बंदों के दर्मियान उस चीज का फैसला करेगा जिसमें वे इत्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं। और अगर जुल्म करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है और उसी के बराबर और भी, तो वे कियामत के दिन सज़ा अज़ाब से बचने के लिए उसे फिदये (बदल) में दे दें। और अल्लाह की तरफ से उन्हें वह मामला पेश आएगा जिसका उन्हें गुमान भी न था। और उनके सामने आ जाएंगे उनके बुरे आमाल और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजक़ उड़ते थे। (43-48)

अरब के मुशरिकीन जिन के मुतअल्लिक यह अकीदा रखते थे कि खुदा के यहां वे उनकी श्रम (सिफ़रिश) करने वाले बन जाएंगे वे हकीकतन पत्थर के बुत न थे। ये वे बुजुर्ग हस्तियां थीं जिनकी अलामत के तौर पर उन्होंने पत्थर के बुत बना रखे थे। उनके शुफआ (शफ़अत करने वाले) दरअसल उनके कैमी अकाबिर (महापुरुष) थे जिनके मुतअल्लिक उनका अकीदा था कि उनका दामन पकड़े रहो, वे खुदा के यहां तुम्हारे लिए काफी हो जाएंगे।

जो लोग ग़ैर अल्लाह के बारे में इस किस्म का अकीदा बनाएं, धीरे-धीरे उनका हाल यह हो जाता है कि उनकी सारी अकीदतें और शेषतगियां (आस्था एवं मुहब्बतें) उन्हीं ग़ैर खुदाई शख़्सियतों के साथ वाबस्ता हो जाती हैं। उन शख़्सियतों की बड़ाई का चर्चा किया जाए तो उसे सुनकर वे ख़ूब खुश होते हैं। लेकिन अगर एक खुदा की बड़ाई बयान की जाए तो उनकी रूह को उससे कोई ग़िजा नहीं मिलती।

ऐसे लोगों के सामने ख़्वाह कितने ही ताकतवर दलाइल के साथ तौहीद ख़ालिस को बयान किया जाए वे उसे मानने वाले नहीं बनते। उनकी आंख सिर्फ़ उस वक्त खुलती है जबकि कियामत का पर्दा फाड़कर खुदा का जलाल बेनकाब हो जाए। आज आदमी का हाल यह है कि वह एतराफ के अल्फ़ज देने के लिए भी तैयार नहीं होता। मगर जब वह वक्त आएगा तो वह चाहेगा कि जो कुछ उसके पास है सब उससे बचने के लिए फिदये (बदल) में दे डाले। मगर वहां आदमी के अपने आमाल के सिवा कोई चीज न होगी जो उसके काम आ सके।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا نَجْوَاهُ إِخْوَانُهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۝ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا

पारा 24

1234

सूरह-39. अज़-जुमर

كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

पस जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम अपनी तरफ से उसे नेमत दे देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे इल्म की बिना पर दिया गया है। बल्कि यह आजमाइश है मगर उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वे कमाते थे वह उनके काम न आया। पस उन पर वे बुराइयां आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं। और उन लोगों में से जो जालिम हैं उनके सामने भी उनकी कमाई के बुरे नताइज जल्द आएंगे। वे हमें आजिज (निर्बल) कर देने वाले नहीं हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसे चाहता है रिक्क कुशादा कर देता है। और वही तंग कर देता है। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं। (49-52)

दुनिया में आदमी को जब कोई चीज मिलती है तो वह उसे अपनी लियाक़त (योग्यता) का नतीजा समझ कर खुश होता है। हालांकि दुनिया की चीजें आजमाइश का सामान हैं न कि लियाक़त का इनाम। इसी हकीकत को जानना सबसे बड़ा इल्म है। दुनिया की चीजों को आदमी अगर अपनी लियाक़त का नतीजा समझ ले तो इससे उसके अंदर फख़्र और घमंड की नफ़िसयात उभरेगी। इसके बरअक्स, जब आदमी उन्हें आजमाइश का सामान समझता है तो उसके अंदर शुक्र और तवाजुअ (विनम्रता) के ज़बात पैदा होते हैं।

रिक्केदुनिया की कमी या ज्यादाती तमामतर इंसानी इख़्तियार से बाहर की चीज है। ऐसा मालूम होता है कि इंसान के बाहर कोई कुव्वत है जो यह फैसला करती है कि किस को ज्यादा मिले और किस को कम दिया जाए। यह वाक्या बताता है कि रिक्क का फैसला शख़्सी लियाक़त की बुनियाद पर नहीं होता। इसका फैसला किसी और बुनियाद पर होता है। वह बुनियाद यही है कि मौजूदा दुनिया इम्तेहान की जगह है न कि इनाम की जगह। इसलिए यहां किसी को जो कुछ मिलता है वह उसके इम्तेहान का पर्चा होता है। इम्तेहान लेने वाला अपने फैसले के तहत किसी को कोई पर्चा देता है और किसी को कोई पर्चा। किसी को एक किस्म के हालात में आजमाता है और किसी को दूसरे किस्म के हालात में।

قُلْ يُعْبَادُوا الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلُمُوهُ ۚ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۝

सूरह-39. अज़-जुमर

1235

पारा 24

कहो कि ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादाती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ कर देता है, वह बड़ा बख्शने वाला महरबान है। और तुम अपने ख की तरफ रुजूअ करो और उसके फरमांबरदार बन जाओ। इससे पहले कि तुम पर अजाब आ जाए, फिर तुम्हारी कोई मदद न की जाए। (53-54)

जिन लोगों के सीने में हस्सास (संवेदनशील) दिल है उन्हें जब खुदा की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल होती है तो उन्हें यह ख्याल सताने लगता है कि अब तक उनसे जो गुनाह हुए हैं उनका मामला क्या होगा। इसी तरह खुदापरस्ताना जिंदगी इस्त्रियार करने के बाद भी आदमी से बार-बार कोताहियां होती हैं और उसकी हस्सासियत दुबारा उसे सताने लगती है। यहां तक कि यह एहसास कुछ लोगों को मायूसी की हद तक पहुंचा देता है।

ऐसे लोगों के लिए अल्लाह ने अपनी किताब में यह एलान फरमाया कि उन्हें यकीन करना चाहिए कि उनका मामला एक ऐसे खुदा से है जो गफूर व रहीम है। वह आदमी के माजी (अतीत) को नहीं बल्कि उसके हाल (वर्तमान) को देखता है। वह आदमी के जाहिर को नहीं बल्कि उसके बातित (भीतर) को देखता है। वह आदमी से वुस्अत (सहृदयता) का मामला फरमाता है न कि खुरदागीरी (निष्ठुरता) का। यही वजह है कि आदमी जब उसकी तरफ रुजूअ करता है तो वह नए सिरे से उसे अपनी रहमत के साये में ले लेता है, चाहे उससे कितना ही बड़ा कुसूर क्यों न हो गया हो।

وَاللّٰهُ اَحْسَنُ مَا اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ مِّن قَبْلِ اَنْ يَّاتِيَكُمْ  
الْعَذَابُ بِغَتَّةٍ ۚ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۚ اَنْ تَقُولَ نَفْسٌ لِّمَحْسَرَتِيْ عَلٰى  
مَا فَرَطْتُ فِيْ جَنۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لِنِ السَّآخِرِيۡنَ ۚ اَوْ تَقُولَ لَوْ اَنَّ  
اللّٰهَ هَدٰى سَبِيۡ لَكُنْتُ مِنَ الْمُنۢتَقِيۡنَ ۚ اَوْ تَقُولَ حِيۡنَ تَرٰى الْعَذَابَ لَوْ  
اَنَّ لِيْ كَرْۢةٌ فَاَكُوۡنَ مِنَ الْمُحْسِنِيۡنَ ۚ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰیٰتِيۡ فَكَلِمَتٌ  
بِهَا وَاَسْتَكَبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيۡنَ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرٰى الَّذِيۡنَ كَذَبُوۡا  
عَلٰى اللّٰهِ وَجُوۡهُهُمۡ مُّسْوَدَّةٌ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوٰى لِّلْمُتَكَبِّرِيۡنَ ۚ وَيُنۢجِيۡ  
اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰتَقَوْا بِمَقَآرَتِهِمۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوۡءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوۡنَ ۚ

और तुम पैरवी करो अपने ख की भेजी हुई किताब के बेहतर पहलू की, इससे पहले कि तुम पर अचानक अजाब आ जाए और तुम्हें खबर भी न हो। कहीं कोई शख्स यह

पारा 24

1236

सूरह-39. अज़-जुमर

कहे कि अफसोस मेरी कोताही पर जो मैंने खुदा की जनाब में की, और मैं तो मजाक उड़ाने वालों में शामिल रहा। या कोई यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी डरने वालों में से होता। या अजाब को देखकर कोई शख्स यह कहे कि काश मुझे दुनिया में फिर जाना हो तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊं। हां तुम्हारे पास मेरी आयतें आईं फिर तूने उन्हें झुठलाया और तकबुर (घमंड) किया और तू मुंकिरों में शामिल रहा। और तुम कियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग डरते रहे। अल्लाह उन लोगों को कामयाबी के साथ नजात (मुक्ति) देगा, और उन्हें कोई तकलीफ न पहुंचेगी और न वे शमगीन होंगे। (55-61)

खुदा के कलाम में बेहतर और ग़ैर बेहतर की तकसीम नहीं। न कुरआन में ऐसा है कि उसकी कुछ आयतें बेहतर हैं और कुछ आयतें ग़ैर बेहतर। और न कुरआन और दूसरी आसमानी किताबों में यह फर्क है कि उनमें से कोई किताब ब-एतबार हकीकत बेहतर है और कोई किताब ग़ैर बेहतर।

अस्ल यह है कि मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में आदमी को अमल की आजादी है। यहां उसके लिए यह मौका है कि एक कलाम को चाहे सीधे ख़ु से ले या उल्टे ख़ु से। वह चाहे कलाम के अस्ल मुद्दे पर ध्यान दे या उसमें बेजा शोशे निकाले और उसे ग़लत मअना पहनाए। कलामे इलाही का मजाक उड़ाना इसी की एक मिसाल है। आदमी एक आयत को लेकर उसमें उल्टा मफहूम निकालता है और फिर उस खुदसाख़्ता (स्वयनिर्मित) मफहूम की बिना पर उसका मजाक उड़ाने लगता है।

दुनिया में आदमी अपने आपको छुपाए हुए है। वह महज तकबुर (घमंड) की बुनियाद पर हक को नहीं मानता और ऐसे अल्फ़ाज बोलता है गोया कि वह उसूल की बुनियाद पर उसका इंकार कर रहा है। मगर कियामत के दिन आदमी का चेहरा उसकी अंदरूनी हालत का मजहर (प्रकट रूप) बन जाएगा। उस वक्त आदमी का अपना चेहरा बताएगा कि वह जिस हक में ग़ैर बेहतर पहलू निकाल कर उसका मुंकिर बना रहा वे सिर्फ उसके झूठे अल्फ़ाज थे।

वर्ना हक बजतेसु बिल्कुल साफ और बाजेह था। उस वक्त वह अफसोस करेगा मगर उस वक्त का अफसोस करना उसके कुछ काम न आएगा।

اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِیۡلٌ ۚ لَّهٗ مَقَالِیۡدُ  
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِآٰیٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوۡنَ ۚ  
قُلْ اَفَغَیۡرَ اللّٰهِ تَأْمُرُوۡنِیْۤ اَعْبُدُ اَیُّهَا الْجٰہِلُوۡنَ ۚ وَلَقَدْ اُوۡحِیَ اِلَیۡكَ  
وَ اِلَی الَّذِیۡنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَیۡنَ اَشْرَکْتَ لِیَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوۡنَنَّ مِنَ

الْخَسِرِينَ ۝ بَلِ اللّٰهُ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشّٰكِرِينَ ۝

अल्लाह हर चीज का खालिक है और वही हर चीज पर निगहबान है। आसमानों और जमीन की कुंजियां उसी के पास हैं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया वही घाटे में रहने वाले हैं। कहो कि ऐ नादानो, क्या तुम मुझे और अल्लाह की इबादत करने के लिए कहते हो। और तुमसे पहले वालों की तरफ भी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल जाया हो जाएगा। और तुम खसारे (घाटे) में रहोगे। बल्कि सिर्फ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र करने वालों में से बनो। (62-66)

कायनात की मौजूदगी उसके खालिक की मौजूदगी का सबूत है। इसी तरह कायनात जितने बामअना और जिस कद्र मुनज्जम तौर पर चल रही है वह इसका सबूत है कि हर आन एक निगरानी करने वाला उसकी निगरानी कर रहा है। आदमी अगर संजीदगी के साथ और करे तो वह कायनात में उसके खालिक की निशानी पा लेगा और इसी तरह उसके नाजिम और मुदबिख (व्यवस्थापक) की निशानी भी।

ऐसी हालत में जो लोग एक खुदा के सिवा दूसरी हस्तियों के इबादतगुजार बनते हैं वे एक ऐसा अमल कर रहे हैं जिसकी मौजूदा कायनात में कोई कीमत नहीं। क्योंकि खालिक और वकील (कार्य-साधक) जब सिर्फ एक है तो उसी की इबादत आदमी को नफा दे सकती है। उसके सिवा किसी और की इबादत करना गोया ऐसे माबूद को पुकारना है जिसका सिरे से कोई वजूद ही नहीं।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَالسَّمٰوٰتُ  
مَطْوِيٰتٌ يَّمِيْنًا ۚ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۚ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ  
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اٰخَرٰى  
ۚ فَاِذَا هُمْ قِيٰمٌ يَنْظُرُوْنَ ۚ وَاشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِشَوْرِ رَّبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ  
وَجِئْنَا بِالنَّبِيِّْنَ وَالشَّهَدٰٓءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَ  
وَقِيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝

और लोगों ने अल्लाह की कद्र न की जैसा कि उसकी कद्र करने का हक है। और जमीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी कियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। और सूर फूँका जाएगा तो आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, मगर

जिसे अल्लाह चाहे। फिर दुबारा उसमें फूँका जाएगा तो यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे और जमीन अपने रब के नूर (आलोक) से चमक उठेगी। और किताब रख दी जाएगी और पैगम्बर और गवाह हाजिर किए जाएंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई जुल्म न होगा। और हर शख्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा। और वह खूब जानता है जो कुछ वे करते हैं। (67-70)

अक्सर गुमराहियों की जड़ खुदा का कमतर अंदाजा है। आदमी दूसरी अज्मतों में इसलिए गुम होता है कि उसे खुदा की अथाह अज्मत का पता नहीं। वह अपने अकाबिर (महापुरुषों) से वाबस्तगी को नजात का जरिया समझता है तो इसीलिए समझता है कि उसे मालूम नहीं कि खुदा इससे ज्यादा बड़ा है कि वहां कोई शख्स अपनी जबान खोलने की जुर्रत कर सके। कियामत जब लोगों की आंख का पर्दा हटाएगी तो उन्हें मालूम होगा कि खुदा तो इतना अजीम था जैसे कि जमीन एक छोटे सिक्के की तरह उसकी मुट्ठी में हो और आसमान एक मामूली कागज की तरह उसके हाथ में लिपटा हुआ हो।

जिस तरह इम्तेहान हॉल में इम्तेहान के खत्म होने पर अलार्म बजता है उसी तरह मौजूदा दुनिया की मुद्दत खत्म होने पर सूर फूँका जाएगा। इसके बाद सारा निजाम बदल जाएगा। इसके बाद एक नई दुनिया बनेगी। हमारी मौजूदा दुनिया सूरज की रोशनी से रोशन होती है जो सिर्फ महसूस मादूदी अशया (भौतिक पदार्थों) को हमें दिखा पाती है। आखिरत की दुनिया बराहारास्त खुदा के नूर से रोशन होगी। इसलिए वहां यह मुमकिन होगा कि मअनवी (अर्थपूर्ण) हकीकतों को भी खुली आंख से देखा जा सके। उस वक्त तमाम लोग खुदा की अदालत में हाजिर किए जाएंगे। दुनिया में लोगों ने पैगम्बरों को और उनकी पैरवी में उठने वाले दावियों को नजरअंदाज किया था। मगर आखिरत में लोग यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि लोगों के मुस्तकबिल का फैसला वहां इसी बुनियाद पर किया जा रहा है कि किसने उनका साथ दिया और किसने उनका इंकार कर दिया।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ حَتّٰى اِذَا جَآءَ وُهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا ۚ  
قَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا اَلَمْ يَاۤئْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ ۙ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰیٰتِ رَبِّكُمْ  
وَيُنذِرُوْكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۙ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلٰى  
الْكٰفِرِيْنَ ۝ قِيْلْ اَدْخُلُوْا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَبِئْسَ مَثْوٰى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝

और जिन लोगों ने इंकार किया वे गिरोह-गिरोह बनाकर जहन्नम की तरफ हांके जाएंगे। यहां तक कि जब वे उसके पास पहुंचेंगे उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैगम्बर नहीं आए



सूरह-39. अज़-जुमर

1239

पारा 24

जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से डराते थे। वे कहेंगे कि हां, लेकिन अजाब का वादा मुंकिरों पर पूरा होकर रहा। कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकबुर (घमंड) करने वालों का। (71-72)

हक से एराज (उपेक्षा) व इंकार करने के दर्जे हैं। इसी लिहाज से जहन्नम वालों के भी दर्जे हैं। आखिरत में उन्हें उनके दर्जा के लिहाज से मुख़लिफ़ गिरोहों में तक्सीम किया जाएगा और फिर हर गिरोह को जहन्नम के उस तबके में डाल दिया जाएगा जिसका वह मुस्तहिक है। इस मैके पर जहन्नम की निगरानी करने वाले फ़रिश्तों की गुफ्तगु से उस मंजर की तस्वीरकशी हो रही है जो लोगों के जहन्नम में दाखिल होने के वक्त पेश आएगा।

जो लोग मौजूदा दुनिया में हक को नहीं मानते उनके न मानने की अस्त वजह हमेशा तकबुर (घमंड) होता है। ताहम उनका तकबुर हकीकतन हक के मुकाबले में नहीं होता बल्कि वह हक को पेश करने वाले शख्स के मुकाबले में होता है। हक को पेश करने वाला बजाहिर एक आदमी को अपने से छोटा दिखाई देता है इसलिए वह आदमी हक को भी छोटा समझ लेता है और उसे हक्करत (तिरस्कार) के साथ नजरअंदाज कर देता है।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ  
أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طُبِّئْتُ مَا دَخَلُوهَا خَالِدِينَ ۖ وَقَالُوا  
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَهُ ۖ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ  
حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۖ وَشَرَى الْمَلَائِكَةُ حَاقِقِينَ مِنْ  
حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ  
لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

और जो लोग अपने रब से डरे वे गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ ले जाए जाएंगे। यहां तक कि जब वे वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुम पर, खुशहाल रहो, पस इसमें दाखिल हो जाओ हमेशा के लिए। और वे कहेंगे कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें इस जमीन का वारिस बना दिया। हम जन्नत में जहां चाहें रहें। पस क्या खूब बदला है अमल करने वालों का। और तुम फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द हलका बनाए हुए अपने रब की हम्द व तस्बीह करते होंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी हम्द अल्लाह के लिए है, आलम का खुदावंद। (73-75)

पारा 24

1240

सूरह-40. अल-मोमिन

जन्नत में जाने वाले वे लोग हैं जिनमें तकवा की सिफत पाई जाए। जब आदमी खुदा की बड़ाई को इस तरह पाए कि उसके अंदर से अपनी बड़ाई का एहसास खत्म हो जाए तो इसका कुदरती नतीजा यह होता है कि वह खुदा से डरने लगता है। अपने इज्ज (निर्बलता) और खुदा की कुदरत का एहसास उसे अदिशानाक बना देता है। वह खुदा के मामले में हददर्जा मोहतात हो जाता है। उसे हर वक्त यह खटका लगा रहता है कि आखिरत में उसका खुदा उसके साथ क्या मामला फरमाएगा। जिन लोगों ने दुनिया में इसी तरह खौफ किया वही आखिरत की बैखैफ जिंदगी के वारिस करार दिए जाएंगे।

अहले जन्नत के साथ आखिरत में वह मामला किया जाएगा जो दुनिया में शाही मेहमानों के साथ किया जाता है। उन्हें कमाले एजाज व इकराम के साथ उनकी क्रियामाहों की तरफ ले जाया जाएगा। जब वे जन्नत को अपनी आंख से देखेंगे तो बेइख्तियार उनकी जबान पर हम्द और शुक्र के कलिमात जारी हो जाएंगे। जन्नत में उनके लिए न सिर्फ आला किया मगाहें होंगी बल्कि वहां सैर और मुलाकात के लिए आने जाने पर कोई रोक न होगी। सफर और मुवासिलात (संचार) की आलातरीन सहूलतें वाफिर भिक्दार में हासिल होंगी।

हम्द की मुस्तहिक सिर्फ एक अल्लाह की जात है। मगर मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में इसका जहूर नहीं होता। आखिरत हम्दे इलाही के कामिल जुहूर का दिन होगा। उस वक्त तमाम जबानों और सारा माहौल हम्दे खुदावंदी के नगमे से मअमूर हो जाएगा। तमाम झूठी बड़ाइयां खत्म हो जाएंगी। वहां सिर्फ एक हस्ती होगी जिसका आदमी नाम ले। वहां सिर्फ एक बड़ाई होगी जिसकी बड़ाई से सरशार (अभिभूत) होकर वह उसकी हम्द करे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ نَزَّلْنَاهُ فِي الْقُرْآنِ فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنَ الْعِلْمِ ۖ إِنَّهُمْ فِي الْعِلْمِ  
حَمْدٌ ۖ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۖ غَافِرُ الذَّنْبِ وَقَابِلُ  
التَّوْبِ شَدِيدُ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَهُ الْبَصِيرِ ۝

आयतें-85

सूरह-40. अल-मोमिन

रुकूअ-9

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ से जो जबरदस्त है, जानने वाला है। माफ करने वाला और तौबा कुबूल करने वाला है, सख्त सज्जे देने वाला, बड़ी कुदरत वाला है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी की तरफ लौटना है। (1-3)

‘अजीज व अलीम’ के अल्फ़ज यहाँ कुआन के हक में बतौर दलील इस्तेमाल हुए हैं। कुआन के उतरने के वक्त यह एक पेशीनगोई (भविष्यवाणी) थी, आज यह एक साबितशुदा वक़्क़ाई है।

कुरआन वैसे साईस से पहले इतिहाई नामुवाफिक (विषम) हालात में उतरा। मगर ऐन अपने दावे के मुताबिक उसने अपने मुखालिफों के ऊपर ग़लबा हासिल किया। अरब के मुश्रीकीन और यहूद और अजीम रूमी और ईरानी सल्तनतें सबकी सब उसकी दुश्मन थीं मगर इसने बहुत थोड़े अर्से में सबको मगलूब कर लिया। यह एक ऐसा वाक्या है जिसकी कोई दूसरी मिसाल इंसानी तारीख में नहीं मिलती। यह इस बात का सुबूत है कि कुरआन खुदाए अजीज व ग़ालिब की तरफ से भेजा गया है।

कुरआन की दूसरी सिफत यह है कि वह कामिल तौर पर एक सही किताब है। डेढ़ हजार वर्ष बाद भी कुरआन की कोई बात हकीकते वाक्या के खिलाफ नहीं निकली। यह इस बात का सुबूत है कि इसका नाज़िल करने वाला अलीम व ख़बीर है उससे ज़मीन व आसमान की कोई बात मख़्मी (छुपी) नहीं। वह माजी, हल और मुस्तक़बिल से यकसां तौर पर बाख़बर है।

यही ख़ुदा इंसान का हकीमी माबूद है। उसकी क़ुदरत और उसके इल्म का यह तक्का है कि वह तमाम इंसानों को जमा करके उनका हिसाब ले। फिर पूरे अद्ल (न्याय) के साथ हर एक का पैसला करे। जो लोग ख़ुदा की तरफ रुजूअ हुए उन्हें माफ कर दे और जिन्होंने सरकशी की उन्हें उनके बुरे आमाल की सजा दे।

مَا يَجَادِلُ فِيْ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغۡزِرُكَ تَقَلُّبُهُۥۤ فِى الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغۡوٰهُمْ قَوْمُ نُوۡحٍ وَّاَلۡخَزَابِ مِنْۢ بَعۡدِ هُمُ وَاٰتٰهُمۡ اٰمۡرًا يَّرۡسُوۡلُهُۥمۡ لِيَاۡخُذُوۡهُ وَاٰتٰهُمۡ اٰمۡرًا يَّرۡسُوۡلُهُۥمۡ لِيَاۡخُذُوۡهُ وَاٰتٰهُمۡ اٰمۡرًا يَّرۡسُوۡلُهُۥمۡ لِيَاۡخُذُوۡهُ وَاٰتٰهُمۡ اٰمۡرًا يَّرۡسُوۡلُهُۥمۡ لِيَاۡخُذُوۡهُ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّقْتَ كَلِمَتَكَ عَلٰى الَّذِيْنَ كَفَرُوۡا اَنَّهُمۡ اَصْحَابُ النَّارِ ۝

अल्लाह की आयतों में वही लोग झगड़े निकालते हैं जो मुंकिर हैं। तो उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखे में न डाले। उनसे पहले नूह की कौम ने झुलताया। और उनके बाद के गिरोह ने भी। और हर उम्मत ने इरादा किया कि अपने रसूल को पकड़ लें और उन्होंने नाहक के झगड़े निकाले ताकि उससे हक को पसपा (परास्त) कर दें तो मैंने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी थी मेरी सजा। और इसी तरह तेरे ख़ब की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है जिन्होंने इंकार किया कि वे आग वाले हैं। (4-6)

यहां अल्लाह की आयतों से मुराद वे दलाइल हैं जो हक की दावत को साबित करने के लिए पेश किए गए हों। जो लोग ख़ुदा के मामले में संजीदा न हों वे इन दलाइल में ग़ैरमुतअल्लिक बहसों पैदा करके लोगों को इस शुबह में डालते हैं कि यह दावत हक की दावत नहीं है। बल्कि महज एक शख़्स (दाओ) की ज़ेहनी उपज है।

इस किस्म का झूठा मुजादिला (निरर्थक बीस) बहुत बड़ा जुर्म है। ताहम मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में ऐसे लोगों को एक मुकरर मुदत तक मोहलत हासिल रहती है। इसके बाद उनके लिए वही बुरा अंजाम मुक़द्दर है जो कौमे नूह, कौमे आद, कौमे समूद कौरेह का हुआ। जिन लोगों ने अपने को बड़ा समझा था वे छोटे कर दिए गए। और जिन लोगों को छोटा समझ लिया गया था वे अल्लाह के नजदीक बड़े करार पाए।

اَلَّذِيْنَ يَحۡمِلُوْنَ الْعَرۡشَ وَمَنْ حَوۡلَهُۥ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَيُوۡمِنُوۡنَ بِهٖ وَيَسۡتَغۡفِرُوۡنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوۡا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحۡمَةً وَّعِلۡمًا فَاغۡفِرۡ لِلَّذِيْنَ تَابُوۡا وَاَتَّبِعُوۡا سَبِيۡلَكَ وَقِهِمۡ عَذَابَ الْجَحِيۡمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخُلُهُمۡ جَنَّتِ عَدۡنِ الْاٰتِیِّ وَعَدۡتُهُمۡ وَمَنْ صَلَحَ مِنْۢ بَآلِیۡهِمۡ وَاَزۡوَاجِهِمۡ وَذُرِّيَّتِهِمُ ۝ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیۡزُ الْحَكِیۡمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيَِّۡٔاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيَِّۡٔاتِ يَومۡئِذٍ فَقَدْ رَحِمۡتَهُ ۝ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوۡزُ الْعَظِیۡمُ ۝

जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने ख़ब की तस्वीह करते हैं, उसकी हम्द के साथ। और वे उस पर ईमान रखते हैं। और वे ईमान वालों के लिए मफ़िरत (क्षमा) की दुआ करते हैं। ऐ हमारे ख़ब तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ का इहाता किए हुए है। पस तू माफ कर दे उन लोगों को जो तौबा करें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें जहन्नम के अजाब से बचा। ऐ हमारे ख़ब, और तू उन्हें हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है। और उन्हें भी जो सालेह हों उनके वालिदैन् और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। वेशक तू जबरदस्त है, हिकमत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। और उन्हें बुराइयों से बचा ले। और जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचाया तो उन पर तूने रहम किया। और यही बड़ी कामयाबी है। (7-9)

जो अल्लाह के बंदे बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठते हैं उन्हें हमेशा सताया जाता है। उन्हें माहिल में हकीर बना दिया जाता है। मगर ऐन उस वक़्त जबकि जाहिरपरस्त इंसानों के दर्मियान उनका यह हाल होता है, ऐन उसी वक़्त ज़मीन व आसमान उनके बरसरे हक हेने की तस्दीक कर रहे होते हैं। कायनात का इतिजाम करने वाले फ़रिश्ते उनके हुने अंजाम सुखद परिणाम के मुंज़िर होते हैं। वक्ती दुनिया में नाक़बिले तज़्किरा समझे जाने वाले लोग अबदी दुनिया में उस मक़मे इज्ज़त पर होते हैं कि अल्लाह के मुक़र्रबतरीन (निकटतम) फ़रिश्ते भी उनके हक में दुआएं कर रहे हों।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ لِمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۖ قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا أَثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْنَا أَثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۖ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدًا كُفِرْتُمْ ۖ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝

जिन लोगों ने इंकार किया, उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, खुदा की बेजारी (खिन्ता) तुमसे इससे ज्यादा है जितनी बेजारी तुम्हें अपने आप पर है। जब तुम्हें ईमान की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार हमें जिंदगी दी, पस हमने अपने गुनाहों का इकरार किया, तो क्या निकलने की कोई सूरत है। यह तुम पर इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। और जब उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते। पस फैसला अल्लाह के इस्तिथार में है जो अजीम है, बड़े मर्तबे वाला है। (10-12)

मौजूदा दुनिया में अल्लाह तआला ने हिदायत की शक्त में अपनी रहमत भेजी। मगर लोगों ने उसे कुबूल नहीं किया। इसका अंजाम आखिरत में यह सामने आएगा कि इस क्रिम के लोग अल्लाह की रहमत से बिल्कुल महरूम कर दिए जाएंगे। दुनिया में उन्होंने खुदा की रहमत को नजरअंदाज किया था, आखिरत में खुदा की रहमत उन्हें नजरअंदाज कर देगी।

उस वक्त इंकार करने वाले लोग कहेंगे कि खुदाया, तूने हमें मिट्टी से पैदा किया। गोया कि हम मुर्दा थे फिर तूने हमारे अंदर जान डाली। इसके बाद अपनी उम्र पूरी करके दूसरी बार हम पर मौत आई। और अब हम दुबारा आखिरत की दुनिया में उठाए गए हैं। इस तरह तू हमें दो बार मौत और दो बार जिंदगी दे चुका है। अब अगर तू हमें तीसरा मौका दे और फिर हमें दुनिया में भेज दे कि हम वहां रहें और फिर मर कर आलमे आखिरत में हाजिर हों तो हम वहां तेरी सच्चाई का एतराफ करेंगे और नेक अमली की जिंदगी गुजारे।

मगर उनकी यह दरख्वास्त सुनी नहीं जाएगी। क्योंकि उन्होंने अपने बारे में यह सबूत दिया कि वे सच्चाई का इदराक उस वक्त नहीं कर सकते जबकि सच्चाई अभी गैब में छुपी हुई हो। वे सिर्फ जाहिरी खुदाओं को पहचान सकते हैं, वे शैबी खुदा को पहचानने की सलाहियत नहीं रखते। और खुदा के यहां ऐसे जाहिरपरस्तों की कोई कीमत नहीं।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُم آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۖ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ۝ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۖ ۝ رَفِيعُ

الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۚ يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لَبِئْسَ الْمَلِكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रिख उतारता है। और नसीहत सिर्फ वही शख्स कुबूल करता है जो अल्लाह की तरफ रुजूअ करने वाला हो। पस अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसी के लिए खालिस करके, चाहे मुंकिरों को नागवार क्यों न हो। वह बुलन्द दर्जों वाला, अर्श का मालिक है। वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजता है ताकि वह मुलाक़ात के दिन से डराए। जिस दिन कि वे जाहिर होंगे। अल्लाह से उनकी कोई चीज छुपी हुई न होगी। आज बादशाही किस की है, अल्लाह वाहिद कह्दर (वर्चस्वशाली) की। आज हर शख्स को उसके किए का बदला मिलेगा, आज कोई जुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (13-17)

कायनात में बेशमार निशानियां हैं जो तमसील (मिसालों) की जवान में हकीकत का दर्स दे रही हैं। उन्हीं में से एक निशानी बारिश का निजाम है। यह मादूदी वाकया 'वही' के मअनवी मामले को मुमस्सल (प्रतिरूपता) कर रहा है। जिस तरह बारिश जरखेज जमीन के लिए मुफ़ीद है और बंजर जमीन के लिए ग़ैर मुफ़ीद, इसी तरह 'वही' भी खुदा की मअनवी बारिश है। जिन लोगों ने अपने सीने खुले रखे हों उनके अंदर यह बारिश दाख़िल होकर उनके वजूद को सरसब्ज व शादाब कर देती है। इसके बरअक्स जिन लोगों के दिल ग़ैर खुदाई बड़ाइयों से भरे हुए हों वे गोया बंजर जमीन हैं। वे 'वही' के फ़ायदों से महरूम रहेंगे।

अल्लाह अपने बंदों से पूरी तरह वाकिफ़ है। वह जिस बंदे को अहल पाता है उसे अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी (संदेश-वाहन) के लिए चुन लेता है। इस पैग़ाम का ख़ास निशाना यह होता है कि लोगों को उस आने वाले दिन से आगाह किया जाए जबकि वे बादशाहे कायनात के सामने खड़े किए जाएंगे जिससे किसी की कोई बात छुपी हुई नहीं। और न कोई है जो उसके फैसले पर असरअंदाज हो सके।

وَأَنذَرُهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاطِئِينَ ۚ مَالِ الظَّالِمِينَ ۖ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٌ يُطَاعُ ۖ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۖ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ شَيْئًا ۖ

۞

إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۞

और उन्हें करीब आने वाली मुसीबत के दिन से डराओ जबकि दिल हलक तक आ पहुंचेंगे, वे ग़म से भरे हुए होंगे। ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफारशी जिसकी बात मानी जाए। वह निगाहों की चोरी को जानता है और उन बातों को भी जिन्हें सीने छुपाए हुए हैं। और अल्लाह हक के साथ फैसला करेगा। और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का फैसला नहीं करते। बेशक अल्लाह सुनने वाला है, देखने वाला है। (18-20)

मौजूदा दुनिया में इंसान को हर तरह के मौके हासिल हैं। वह आजाद है कि जो चाहे करे। इससे आदमी ग़लतफ़हमी में पड़ जाता है। वह अपनी मौजूदा आरजी हालत को मुस्तक़िल हालत समझ लेता है। हालांकि ये मौके जो इंसान को मिले हैं वे बतौर इस्तेहान हैं न कि बतौर इस्तहकाक (अधिकार)। इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही मौजूदा तमाम मौके उससे छिन जाएंगे। उस वक़्त इंसान को मालूम होगा कि उसके पास इज्ज (निर्बलता) के सिवा और कुछ नहीं जिसके सहारे वह खड़ा हो सके।

आदमी चाहता है कि केन्द्र ज़िद्दी गुज़रे। इसी मिजाज की वजह से आदमी रैर खुदा को बतौर खुद खुदाई में शरीक बनाता है ताकि उनके नाम पर वह अपनी बेराहरी को जाइज साबित कर सके। मगर क्रियामत में जब हकीकत बेपर्दा होकर सामने आएगी तो आदमी जान लेगा कि यहां खुदा के सिवा कोई न था जिसे किसी किस्म का इख़्तियार हासिल हो।

وَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمُ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۞

क्या वे ज़मीन में चले फिर नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़ चुके हैं। वे इनसे बहुत ज्यादा थे कुव्वत में और उन आसार के एतबार से भी जो उन्होंने ज़मीन में छोड़े। फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न था। यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियां लेकर आए तो उन्होंने इंकार किया। तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। यकीनन वह ताक़तवर है सज़ा सज़ा देने वाला है। (21-22)

दुनिया की तारीख़ में कसरत से ऐसे वाक़्यात हैं कि एक कौम उभरी और फिर मिट

गई। एक कौम जिसने ज़मीन पर शानदार तमदुन (सभ्यता) खड़ा किया, आज उसका तमदुन खंडहर की सूरत में ज़मीन के नीचे दबा हुआ पड़ा है। एक कौम जिसे किसी वक़्त एक ज़िंदा वाक़ये की तैयारी हासिल थी, आज वह सिर्फ़ एक तारीख़ी वाक़ये के तौर पर कबिले ज़िन्न समझी जाती है।

इस किस्म के वाक़्यात लोगों के लिए मालूम वाक़्यात हैं मगर लोगों ने इन वाक़्यात को अरजी हवादिस (भू-घटनाओं) या सियासी इक़िलावात के ख़ाने में डाल रखा है। लेकिन अस्त हकीकत यह है कि ये सब खुदाई फैसले थे जो सच्चाई के इंकार के नतीजे में उन कौमों पर नाज़िल हुए। अगर हमें वह निगाह हासिल हो जिससे हम मअनवी हकीकतों को देख सकें तो हमें नज़र आएगा कि हर वाक़्या खुदा के फ़रिश्तों के ज़रिए अंजाम पा रहा था, अगरचे बज़ाहिर देखने वालों को वह दुनियावी असबाब के तहत होता हुआ दिखाई दिया।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سِحْرٌ كَذَّابٌ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۞

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और खुली दलील के साथ, फिरऔन और हामान और कारून के पास भेजा, तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर है, झूठा है। फिर जब वह हमारी तरफ से हक लेकर उनके पास पहुंचा, उन्होंने कहा कि इन लोगों के बेटों को क़त्ल कर डालो जो इसके साथ ईमान लाएं और उनकी औरतों को ज़िंदा रखो। और उन मुक़िरो की तदबीर महज़ बेअसर रही। (23-25)

फ़ैग़म्बरों को आम दलाइल के साथ मज़ीद ऐसी मौजिजाती ताईद हासिल रहती है जो उनके फ़रसतादाए खुदा (ईश-दूत) होने का इतिहाई वाज़ेह सुबूत होती है। मगर हक को मानना हमेशा अपनी नफ़ी (नकार) की कीमत पर होता है जो बिलाशुबह किसी इंसान के लिए मुश्किलतरीन कुर्बानी है। यही वजह है कि इतिहाई खुले-खुले दलाइल के बावजूद फिरऔन और उसके दरबारियों ने हज़रत मूसा की नुबुव्वत का इकरार नहीं किया।

इसके बजाए उन्होंने एक तरफ़ अवाग़म को यह तअस्सुर (प्रभाव) देना शुरू किया कि मूसा का फ़ैग़म्बरी का दावा बेहकीकत है और उनके मेज़िजे (चमत्कार) महज़ जादू का करिश्मा हैं। दूसरी तरफ़ उन्होंने यह फैसला किया कि बनी इस्राईल की तादाद को घटाने के लिए अपनी साबिका पॉलिसी को मज़ीद शिद्दत के साथ जारी कर दिया जाए। ताकि मूसा अपनी कौम (बनी इस्राईल) के अंदर अपने लिए मजबूत बुनियाद न पा सकें। मगर उन्हें यह मालूम न था कि वे अपनी ये तदबीरें मूसा के मुकाबले में नहीं बल्कि खुदा के मुकाबले में कर रहे हैं और खुदा के मुकाबले में किसी की कोई तदबीर कभी कारगर नहीं होती।



وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ  
دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۖ وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي  
وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝

और फिरऔन ने कहा, मुझे छोड़ो, मैं मूसा को कत्ल कर डालूँ और वह अपने रब को पुकारे, मुझे अदेशा है कि कहीं वह तुम्हारा दीन (धर्म) बदल डाले या मुल्क में फसाद फैला दे। और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और तुम्हारे रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर (घमंडी) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। (26-27)

‘तुम्हारा दीन बदल डाले’ का मतलब है तुम्हारा मजहब बदल डाले। यानी तुम जिस मजहबी तरीके पर हो और जो तुम्हारे अकाबिर (पूर्वजों) से चला आ रहा है, वह खत्म हो जाए और लोगों के दरमियान नया मजहब राइज हो जाए। यह ऐसा ही है जैसे हिन्दुस्तान में कुछ इतिहासपसंद हिन्दू कहते हैं कि मजहब की तब्दील को कानूनी तौर पर बन्द करो, वर्ना दूसरे मजहब वाले अपनी तब्दील से देश के धर्म को बदल डालेंगे।

फसाद से मुराद बदअमनी (अशांति) है। यानी मूसा को अपने हमकौमों में साथ देने वाले मिल जाएंगे। और उन्हें लेकर वह मुल्क में इतिशार पैदा करने की कोशिश करेंगे। इसलिए हमें चाहिए कि हम शुरू ही में उन्हें कत्ल कर दें।

हक को मानने में सबसे बड़ी रुकावट आदमी की मुतकब्बिराना नफिसयात (घमंड-भाव) होती है। वह अपने को ऊंचा रखने की खातिर हक को नीचा कर देना चाहता है। मगर हक का मददगार अल्लाह रब्बुल आलमीन है। इब्तिदा में चाहे उसके मुखालिफीन बजाहिर उसे दबा लें मगर अल्लाह की मदद इस बात की जमानत है कि आखिरी कामयाबी बहरहाल हक को हासिल होगी।

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا  
فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يَقَوْمُ لَكُمْ الْمَلِكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي  
الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ جَاءَنَا فَقَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

और आले फिरऔन में से एक मोमिन शख्स, जो अपने ईमान को छुपाए हुए था, बोला, क्या तुम लोग एक शख्स को सिर्फ इस बात पर कत्ल कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, हालांकि वह तुम्हारे रब की तरफ से खुली दलीलें भी लेकर आया है। और अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और अगर वह सच्चा है तो उसका कोई हिस्सा तुम्हें पहुंच कर रहेगा। जिसका वादा वह तुमसे करता है। बेशक अल्लाह ऐसे शख्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुजरने वाला हो, झूठा हो। ऐ मेरी कौम, आज तुम्हारी सल्तनत है कि तुम जमीन में ग़ालिब हो। फिर अल्लाह के अजाब के मुक़ाबिल हमारी कौन मदद करेगा, अगर वह हम पर आ गया। फिरऔन ने कहा, मैं तुम्हें वही राय देता हूँ जिसे मैं समझ रहा हूँ, और मैं तुम्हारी रहनुमाई ठीक भलाई के रास्ते की तरफ कर रहा हूँ। (28-29)

यहां जिस मर्द मोमिन का जिक्र है वह फिरऔन के शाही खानदान का एक फर्द था और ग़ालिबन वह दरबार के आला ओहदेदारों में से था। यह बुजुर्ग हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की तौहीद की दावत से मुतअस्सिर (प्रभावी) हुए, ताहम वह अपना ईमान छुपाए हुए थे। मगर जब उन्होंने देखा कि फिरऔन हजरत मूसा को कत्ल करने का इरादा कर रहा है तो वह खुल कर हजरत मूसा की हिमायत पर आ गए। उन्होंने निहायत मुअस्सिर (प्रभावी) और निहायत हकीमाना अंदाज में हजरत मूसा की मुदफअत (प्रतिरक्षा) फरमाई।

इस वाक्य में एक नसीहत यह है कि तब्दील एक ऐसी ताकत है कि खुद दुश्मन की सफों में अपने हमदर्द और साथी पैदा कर लेती है, चाहे वह दुश्मने खानदाने फिरऔन जैसा जालिम और मुतकब्बिर क्यों न हो।

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۚ مِثْلَ  
دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظَلْمًا  
لِلْعِبَادِ ۚ وَيَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۚ يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ  
مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

और जो शख्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूँ कि तुम पर और गिरोहों जैसा दिन आ जाए, जैसा दिन कौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों पर आया। और अल्लाह अपने बंदों पर कोई जुल्म करना नहीं चाहता। और ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूँ कि तुम पर चीख पुकार का दिन आ जाए, जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे। और तुम्हें खुदा से बचाने वाला कोई न होगा। और जिसे खुदा गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (30-33)

फिरऔन ने हजरत मूसा को दुनिया की सजा से डराया था, इसके जवाब में मर्दे मोमिन ने फिरऔन को आखिरत की सजा से डराया। हक के दाओ का तरीका हमेशा यही होता है। लोग दुनिया की फिक्र करते हैं, दाओ आखिरत के लिए फिक्रमंद होता है। लोग दुनिया की इस्तेलाहों (शब्दावलिओं) में बोलते हैं, दाओ आखिरत की इस्तेलाहों में कलाम करता है। लोग दुनिया के मसाइल को सबसे ज्यादा कबिले फिक्र समझते हैं दाओ के नजदीक सबसे ज्यादा कबिले फिक्र मसला वह होता है जिसका तअल्लुक आखिरत से हो।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَنَكَرْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۚ حَتَّىٰ  
إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ  
مُسْرِفٌ مُرْتَابٌ ۖ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ كَبُرَ  
مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ  
مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝

और इससे पहले यूसुफ तुम्हारे पास खुले दलाइल के साथ आए तो तुम उनकी लाई हुई बातों की तरफ से शक ही में पड़े रहे। यहां तक कि जब उनकी वफात हो गई तो तुमने कहा कि अल्लाह इनके बाद हरगिज कोई रसूल न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से गुजरने वाले और शक करने वाले होते हैं। जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बगैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो। अल्लाह और ईमान वालों के नजदीक यह सख्त मबजूज अग्रिय है। इसी तरह अल्लाह मुहर कर देता है हर मगरूर (अभिमानी), सरकश के दिल पर। (34-35)

हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम की जिंदगी में मिन्न के लोगों की अक्सरियत आपकी सुबुयत की कयल नहीं हुई। मगर आपकी वफात के बाद जब मुक्की सलतनत का निजाम बिगड़ने लगा तो मिन्नियों को आपकी अजमत का एहसास हुआ। अब वे कहने लगे कि यूसुफ का वजुद मिन्न के लिए बहुत बाबरकत था, ऐसा रसूल अब कहां आएगा। हजरत यूसुफ अगरचे खुदा के पैगम्बर थे मगर इसी के साथ वह एक इंसान भी थे। इस बिना पर लोगों के लिए यह कहने की गुंजाइश थी कि 'क्या जरूरी है कि यूसुफ के कमालात पैगम्बरी की बिना पर हों, यह भी हो सकता है कि वह एक जहीन इंसान हों और इस बिना पर उन्हें कमालात जाहिर किए हों।' इसी तरह की बातें थीं जिन्हें लेकर मिन्न के लोग आपके बारे में शक में मुब्तिला हो गए।

हक चाहे कितना ही वाजेह हो, मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में हमेशा इसका इम्कान बाकी रहता है कि आदमी कोई शुबह का पहलू निकाल कर उसका मुँक़िर बन जाए। अब जो लोग

अपने अंदर सरकशी और घमंड का मिजाज लिए हुए हों, जो यह समझते हों कि हक को मान कर वे अपनी बड़ाई खो देंगे। वे ऐन अपने मिजाज के तहत इन्हीं शुबहात में अटक कर रह जाते हैं। वे इन शुबहात को इतना बढ़ाते हैं कि वही उनके दिल व दिमाग पर छा जाता है। नतीजा यह होता है कि वे हक के मामले में सीधे अंदाज से सोच नहीं पाते। वे हमेशा उसके मुँक़िर बने रहते हैं, यहां तक कि इसी हाल में मर जाते हैं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهْمُنُ ابْنُ بَنِي صَرَخَةَ الْعَلِيِّ ابْنُ الْأَسْبَابِ ۖ أَسْبَابُ السَّمَوَاتِ  
فَأَنظِرْ لِي إِلَىٰ الْمَوْسَىٰ وَإِنِّي لَأَخِطُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَلِكَ زُتِنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَ  
صُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝

और फिरऔन ने कहा कि ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं रास्तों पर पहुँचूं, आसमानों के रास्तों तक, पस मूसा के माबूद (पूज्य) को झांक कर देखूं, और मैं तो उसे झूठा ख्याल करता हूँ। और इस तरह फिरऔन के लिए उसकी बदअमली खुशनुमा बना दी गई और वह सीधे रास्ते से रोक दिया गया। और फिरऔन की तदबीर ग़ारत होकर रही। (36-37)

फिरऔन ने अपने वजीर हामान से जो बात कही वह कोई संजीदा बात नहीं थी बल्कि महज एक वक्ती तदबीर के तौर पर थी। उसने देखा कि मर्दे मोमिन की माकूल और मुदल्लल तकरीर से दरबार के लोग मुतअस्सिर हो रहे हैं, इसलिए उसने चाहा कि एक शोशे की बात निकाले ताकि हजरत मूसा की दावत संजीदा बहस का मौजूअ (विषय) न बने बल्कि मजाक का मौजूअ बनकर रह जाए।

'बदअमली का खुशनुमा बनना' यह है कि आदमी कुछ खुशनुमा अल्फाज बोलकर हक बात को रद्द कर दे। यही आदमी की गुमराही की अस्त जड़ है। यानी हकीकी दलाइल के मुकाबले में शोशे की बात को अहमियत देना, खुली बेराहरवी को झूठी तौजीहात (तर्कों) में छुपाने की कोशिश करना वगैरह। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जो हक मोहकम (ठोस) दलील के ऊपर खड़ा हुआ हो उसे बेबुनियाद शोशे निकाल कर मगलूब (परास्त) नहीं किया जा सकता।

وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا يَقَوْمُ الرِّشَادِ يَقَوْمُ إِنَّا هَذِهِ  
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۚ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۚ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً  
فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنَّثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ  
فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

ادْعُوهُمْ إِلَى الْجَوْهَةِ وَتَدْعُونِي إِلَى النَّارِ ۖ تَدْعُونِي لِأَكْفَرُ بِاللَّهِ وَ  
أَشْرَكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوهُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۖ لَاجِرَمَ أَنَا  
تَدْعُونِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنْ مَرَدُّنَا إِلَى اللَّهِ  
وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ فَسَتَنُكْرُونُ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفْوَضُ  
أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۖ

और जो शख्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें सही रास्ता बता रहा हूँ। ऐ मेरी कौम, यह दुनिया की ज़िंदगी महज चन्द रोज़ है और अस्ल ठहरने का मकाम आखिरत (परलोक) है। जो शख्स बुराई करेगा तो वह उसके बराबर बदला पाएगा। और जो शख्स नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो यही लोग जन्नत में दाखिल होंगे, वहाँ वे बेहिसाब रिक्क पाएंगे। और ऐ मेरी कौम, क्या बात है कि मैं तो तुम्हें नजात (मुक्ति) की तरफ बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की तरफ बुला रहे हो। तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं खुदा के साथ कुफ़ करूँ और ऐसी चीज़ को उसका शरीक बनाऊँ जिसका मुझे कोई इल्म नहीं। और मैं तुम्हें जबरदस्त मफ़िहत (क्षमा) करने वाले खुदा की तरफ बुला रहा हूँ। यकीनी बात है कि तुम जिस चीज़ की तरफ मुझे बुलाते हो उसकी कोई आवाज़ न दुनिया में है और न आखिरत में। और बेशक हम सबकी वापसी अल्लाह ही की तरफ है और हद से गुजरने वाले ही आग में जाने वाले हैं। पस तुम आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे। और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। बेशक अल्लाह तमाम बंदों का निगरान (निगाह रखने वाला) है। (38-44)

दरबारे फिरऔन के मोमिन की यह तकरीर निहायत वाजेह है। साथ ही, वह एक नमूने की तकरीर है जो यह बताती है कि हक के दाओ का अंदाजे ख़िताब क्या होना चाहिए और यह कि हक की दावत का अस्ल नुक्ता क्या है।

मैं तुम्हें खुदावंद आलम की तरफ बुलाता हूँ। और तुम जिसकी तरफ मुझे बुला रहे हो उसे पुकारने का कोई फायदा न दुनिया में है और न आखिरत में यह फ़िक़रा (वाक्य) मर्दे मोमिन की पूरी तकरीर का ख़ुलासा है। इससे अंदाजा होता है कि फिरऔन के दरबार में जो चीज़ ज़ेरे बहस थी वह क्या थी। वह यह थी कि खुदा को पुकारा जाए या इंसान के बनाए हुए बुतों को पुकारा जाए। मर्दे मोमिन ने कहा कि खुदा तो एक ज़िंदा और ग़ालिब हकीकत है, उसे पुकारना एक हकीकी माबूद को पुकारना है। मगर तुम्हारे असनाम (बुत) सिर्फ तुम्हारे वहम की ईजाद हैं। वे न दुनिया में तुम्हें कोई फायदा दे सकते और न आखिरत में। जब उनका कोई हकीकी वजूद ही नहीं तो उनसे कोई हकीकी फायदा कैसे मिल सकता है।

فَوَقَّعَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۖ النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۖ

फिर अल्लाह ने उसे उनकी बुरी तदबीरों से बचा लिया। और फिरऔन वालों को बुरे अजाब ने घेर लिया। आग, जिस पर वे सुबह व शाम पेश किए जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत कायम होगी, फिरऔन वालों को सख़्ततरीन अजाब में दाख़िल करे। (45-46)

फिरऔन के दरबार का मर्दे मोमिन पैग़म्बर नहीं था। मगर तंहा होने के बावजूद अल्लाह ने उसे फिरऔन के जालिमाना मंखूबे से बचा लिया। इससे मालूम हुआ कि ग़ैर अबिया को भी हक की हिमायत की वह नुसरत मिलती है जिसका वादा अबिया (नबियों) से किया गया है। इसानों के उख़रवी (परलोक के) अंजाम का बाकायदा फैसला अगरचे क़ियामत में होगा, मगर मौत के बाद जब आदमी अगली दुनिया में दाख़िल होता है तो फौरन ही उस पर खुल जाता है कि वह पिछली दुनिया में क्या करके यहाँ आया है और अब उसके लिए कौन सा अंजाम मुकद्दर है। इस तरह शुऊर की सतह पर वह मौत के बाद ही अपने अंजाम से दो चार हो जाता है और जिस्मानी सतह पर वह क़ियामत में खुदा की अदालत कायम होने के बाद उससे दो चार होगा।

وَأَذِيتُ الْجَوْنِ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضَّعْفُؤُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ قَهْلُ أَنْتُمْ مُعْتَدُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِنَ النَّارِ ۖ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لَخَزَنَةٌ جَهَنَّمِ ادْعُوا رَبَّكُمْ يَخَفِتْ عَنَّا يَوْمًا مِنَ الْعَذَابِ ۖ قَالُوا أَوَلَمْ تَكُنْ تَأْتِيَكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ قَالُوا فَاذْعُوا ۖ وَمَا دَعَا الْكُفْرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۖ

और जब वे दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे, तो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो। बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही इसमें हैं। अल्लाह ने बंदों के दर्मियान फैसला कर दिया। और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगहबानों से कहेंगे कि तुम अपने ख़ब से दरखास्त करो कि हमारे अजाब में से एक दिन की तख़्फ़ीफ़ (कमी) कर दे। वे

सूरह-40. अल-मोमिन

1253

पारा 24

कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल वाजेह दलीलें लेकर नहीं आए। वे कहेंगे कि हां। निगहबान कहेंगे फिर तुम ही दरख्वास्त करो। और मुंकिरों की पुकार अकारत ही जाने वाली है। (47-50)

इन आयतों में जहन्नम का एक मंजर दिखाया गया है। दुनिया में जो लोग बड़े बने हुए थे वे वहां अपनी सारी बड़ाई भूल जाएंगे। वे अवाम जो यहां अपने बड़ों पर फख्र करते थे वे वहां अपने बड़ों से बेजारी का इज्हार करेंगे। दुनिया में जो लोग हक के आगे झुकने के लिए तैयार नहीं होते थे वे वहां आजिजाना तौर पर हक के आगे झुक जाएंगे। मगर आखिरत का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝  
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ  
آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَأَوْثَقْنَا بِرَبِّهِ إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ ۝ هُدًى وَذِكْرًا  
لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ  
رَبِّكَ بِالْعُشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝

बेशक हम मदद करते हैं अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िंदगी में, और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे, जिस दिन जालिमों को उनकी मज्जरत (सफाई पेश करना) कुछ फायदा न देगी और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा। और हमने मूसा को हिदायत अता की और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया, रहनुमाई और नसीहत अक्ल वालों के लिए। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक है और अपने कुसूर की माफी चाहो। और सुबह व शाम अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ। (51-55)

पैगम्बर और पैगम्बर के पैरोकारों के लिए खुदा की मदद का यकीनी वादा है। मगर इस मदद का इस्तहकाक (अधिकार) हमेशा सब्र के बाद पैदा होता है। सब्र की यह अहमियत इसलिए है ताकि अहले हक मुकम्मल तौर पर अहले हक ठहरें और जालिम मुकम्मल तौर पर जालिम साबित हो जाएं। इस तफरीकी (विभेद के) मरहले को लाने के लिए अहले हक को यकतरफा तौर पर सब्र करना पड़ता है।

अहले हक का यह सब्र उन्हें दुनिया में खुदा की मदद का मुस्तहिक बनाता है। और इसी सब्र के जरिए वे इस क़बिल साबित होते हैं कि वे क़ियामत के दिन जालिमों के मुक़बले में खुदा के गवाह बनकर खड़े हों।

खुदा की तरफ से जो किताब आती है वह इंसानों की हिदायत और नसीहत ही के लिए

पारा 24

1254

सूरह-40. अल-मोमिन

आती है। मगर यह नसीहत सिर्फ उन लोगों को फायदा देती है जो अक्ल वाले हों। यानी वे लोग जो मस्लेहतों में बंधे हुए न हों। जो नपिसयाती पेचीदगियों (पूर्वाग्रहों) से आजाद होकर उस पर गौर कर सकें। जो बातों को दलील के एतबार से जांचते हों न कि किसी और एतबार से। यही खुदा की हिदायत के साथ अक्ल वाला मामला करना है। जो लोग खुदा की हिदायत के साथ बेअक्ली का मामला करें वे जालिम हैं और जो लोग खुदा की हिदायत के साथ अक्ल वाला मामला करें वही वे लोग हैं जो कामयाब हुए।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ إِنَّ فِي صُدُورِهِمْ  
الْأَكْبَرُ مَا هُمْ بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

जो लोग किसी सनद के बग़ैर जो उनके पास आई हो, अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में सिर्फ बड़ाई है कि वे उस तक कभी पहुंचने वाले नहीं। पस तुम अल्लाह की पनाह मांगो, बेशक वह सुनने वाला है, देखने वाला है। (56)

हक इतना वाजेह और इतना मुदल्लल (तर्कपूर्ण) है कि उसे समझना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं। मगर जब भी हक जाहिर होता है तो वह किसी 'इंसान' के जरिए जाहिर होता है। इसलिए हक का एतराफ अमलन हमिले हक (सत्य के धारक) के एतराफ के हममअना बन जाता है। यही वजह है कि वे लोग हक को मानने पर राजी नहीं होते जो अपने अंदर बड़ाई की नपिसयात लिए हुए हों।

ऐसे लोगों को डर होता है कि हक का एतराफ करते ही वे हमिले हक के मुक़बले में अपनी बरतरी खो देंगे। अपनी इसी नपिसयात की वजह से वे उसके मुखालिफ बन जाते हैं। मगर खुदा ने अपनी दुनिया के लिए मुकद्दर कर दिया है कि ऐसे लोग कभी कामयाब न हों।

لَخَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ  
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرَةُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ ۝ لَا رَيْبَ فِيهَا ۝  
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

यकीनन आसमानों और जमीन का पैदा करना इंसानों को पैदा करने की निस्वत ज्यादा बड़ा काम है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और अंधा और आंखों वाला एकसां (समान) नहीं हो सकता, और न ईमानदार और नेकोकार (सत्कर्म) और वे जो बुराई करने वाले हैं। तुम लोग बहुत कम सोचते हो। बेशक क़ियामत आकर रहेगी। इसमें कोई शक नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (57-59)



कायनात की अमृत अपने ख़ालिक की अमृत का तआस्फ़ (परिचय) है। यह अमृत इतनी बेपनाह है कि इसके मुकाबले में इंसान को दुबारा पैदा करना निस्वतन (अपेक्षाकृत) एक बहुत ज्यादा आसान काम है। इस तरह कायनात की मौजूदा तख़लीक इंसान के तख़लीक सानी (पूनःसृजन) के इम्कान को साबित कर रही है।

इसके बाद इंसानी समाज को देखा जाए तो आखिरत की दुनिया का आना एक अख़्ताकी ज़रूरत मालूम होने लगता है। समाज में ऐसे लोग भी हैं जो हकीकत को देखने वाली बसीरत का सुबूत देते हैं और ऐसे लोग भी हैं जो हकीकत के मुकाबले में बिल्कुल अंधे बने हों। इसी तरह समाज में ऐसे लोग भी हैं जो हर हाल में इंसाफ़ पर कायम रहते हैं। और ऐसे लोग भी जो इंसाफ़ से हट जाते हैं और मामलात में जालिमाना रवैया इख़्तियार करते हैं। इंसान का अख़्ताकी एहसास कहता है कि इन दोनों किस्म के इंसानों का अंजाम यकसां (एक जैसा) नहीं होना चाहिए।

इन बातों पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि आखिरत का जुहूर अक्ली तौर पर मुमकिन भी है और अख़्ताकी तौर पर ज़रूरी भी।

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۖ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۖ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ لَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآئِنِ تُؤْفَكُونَ ۖ كَذَلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَحْدُونَ ۖ

और तुम्हारे रब ने फरमा दिया है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दरखास्त कुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से सरताबी विमुखता करते हैं वे अनकरीब जलील होकर जहन्नम में दाखिल होंगे। अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को रोशन किया। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फज़ल करने वाला है मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। फिर तुम कहां से बहकाए जाते हो। इसी तरह वे लोग बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे। (60-63)

जमीन पर रात और दिन का बाक़यदा निजाम और इस तरह के दूसरे हयातबख़्श (जीवनदायी) वाक़ेयात इससे ज्यादा बड़े हैं कि कोई इंसान या तमाम मख़सूक़त मिलकर भी इन्हें जुहूर में ला सके। यह एक खुला हुआ करीना (संकेत) है जो बताता है कि जो ख़ालिक है वही इस लायक है कि उसे माबूद बनाया जाए। आदमी को चाहिए कि उसी के आगे झुके

और उसी से उम्मीदें कायम करे।

मगर आदमी ख़ालिक कायनात से इबादत और दुआ का हकीकी तअल्लुक कायम नहीं कर पाता। इसकी वजह यह है कि वह किसी ग़ैर ख़ालिक में अटका हुआ होता है। कुछ लोग जिंदा या मुर्दा बुतों में अटके हुए होते हैं जिसे शिर्क कहा जाता है। और कुछ लोग खुद अपनी जात में अटके हुए होते हैं जिसका दूसरा नाम किब्र (अहं) है। खुदा बार-बार ऐसे दलाइल जाहिर करता है जो इस फ़रेब की तरदीद (खंडन) करने वाले हों। मगर इंसान कोई न कोई झूठी तौजीह करके उन्हें नज़रअंदाज कर देता है।

इस किस्म का हर रवैया ख़ालिक कायनात की नाक़दी है। और जो लोग ख़ालिक कायनात की नाक़दी करें वे जहन्नम के सिवा कहीं और जगह नहीं पा सकते।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۖ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَتَذَكَّرُ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۖ هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया और तुम्हारा नक्शा बनाया पस उम्दा नक्शा बनाया। और उसने तुम्हें उम्दा चीज़ों का रिक़ दिया। यह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस बड़ा ही बाबरक़त है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। वही जिंदा है उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम उसी को पुकारो। दीन (धर्म) को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (64-65)

जमीन पर अनगिनत असबाब जमा किए गए हैं। इसके बाद ही यह मुमकिन हुआ है कि इंसान जैसी मख़सूक़ इसके ऊपर तमददुन (सभ्यता) की तामीर कर सके। इसी तरह जमीन के ऊपर जो फज़ है उसमेंमेंबेख़ुमार मुवाफ़िक़ इतिजमात हैंजिनमेंअगर मामूली फ़र्रभी पैदा हो जाए तो इंसानी जिंदगी का निजाम दरहम बरहम हो जाए। फिर इंसान की बनावट इतने आला अंदाज में हुई है कि वह जेहनी और जिस्मानी एतबार से इस दुनिया की सबसे बरतर मख़सूक़ बन गया है। जिस ख़ालिक ने यह सब किया है उसके सिवा कौन इस काबिल हो सकता है कि इंसान उसका परस्तार बने।

खुदा के लिए दीन को ख़ालिस करके उसे पुकारना यह है कि दीनी व मजहबी नौइयत का तअल्लुक सिर्फ़ एक अल्लाह से हो। अल्लाह के सिवा किसी से दीनी व मजहबी किस्म का लगाव बाकी न रहे।

قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَهَا جَاءَنِي  
الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ  
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ  
لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لِيَكَوُنُوا شُيُوخًا ۝ وَمِنْكُمْ مَن يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ  
وَلِتَبْلُغُوا أَجَلَ مُّسَمًّى ۝ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۝ فَإِذَا  
قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّا نَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

कहो, मुझे इससे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे पास खुली दलीलें आ चुकीं। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अपने आपको रख्बुल आलमीन (सृष्टि के प्रभु) के हवाले कर दूँ। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुफा (वीर्य) से, फिर खून के लोथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर वह तुम्हें बढ़ाता है ताकि तुम अपनी पूरी ताकत को पहुँचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से कोई पहले ही मर जाता है। और ताकि तुम मुकरर वक्त तक पहुँच जाओ और ताकि तुम सोचो। वही है जो जिलाता है और मारता है। पस जब वह किसी अम्र (काम) का फैसला कर लेता है तो बस उसे कहता है कि हो जा पस वह हो जाता है। (66-68)

इन आयात में फितरत के कुछ वाक्यात का जिक्र है। इसके बाद इर्शाद हुआ है 'यह इसलिए है ताकि तुम गौर करो' गोया फितरत के ये माददी (भौतिक) वाक्यात अपने अंदर कुछ मअनवी (अर्थपूर्ण) सबक लिए हुए हैं। और इंसान से यह मल्लूब है कि वह गौर करके उस छुपे हुए सबक तक पहुँचे।

फितरत के जिन वाक्यात का यहां जिक्र किया गया है वे हैं बेजान माददा (पदार्थ) का तब्दील होकर जानदार चीज बन जाना। इंसान का तदरीजी (चरणबद्ध) अंदाज में विकसित होना। जवानी तक पहुँच कर फिर आदमी पर बुढ़ापा तारी होना, जिंदा इंसान का दुबारा मर जाना, कभी कम उम्र में और कभी ज्यादा उम्र में। ये वाक्यात खलिक की मुखलिफ सिफत का तआरुफ हैं। इससे मालूम होता है कि इस कायनात को वजूद में लाने वाला एक ऐसा खुदा है जो कादिर और हकीम (तत्वदर्शी) है, वह सब पर गालिब और बालादस्त (शीर्षस्थ) है।

अगर आदमी इन वाक्यात से हकीमी सबक ले तो उसका जेहन फुलर उठेगा कि एक खुदा ही इसका हकदार है कि उसकी इबादत की जाए और उसे अपना आखिरी मल्लूब समझा जाए। आलम का यह नक्शा बजबाने हाल उन तमाम मावूदों की तरदीद कर रहा है जो एक खुदा को छोड़कर बनाए गए हों।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَمْجَدُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ ۖ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا  
بِالْكِتَابِ وَمِمَّا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۚ إِذَا الْأَغْصَلُ فِي  
أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ۚ فِي الْحَمِيمِ ۚ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۚ ثُمَّ  
قِيلَ لَهُمْ آيِنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۚ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ  
لَمْ نَكُنْ تَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۚ ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ  
تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَمِمَّا كُنْتُمْ تَمُرَّحُونَ ۚ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ  
خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۚ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं। वे कहां से फेंरे जाते हैं। जिन्होंने किताब को झुठलाया और उस चीज को भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा। तो अनकरीब वे जानेंगे, जबकि उनकी गर्दनो में तौक होंगे। और जंजीरें, वे घसीटे जाएंगे जलते हुए पानी में। फिर वे आग में झोंक दिए जाएंगे। फिर उनसे कहा जाएगा, कहां हैं वे जिन्हें तुम शरीक करते थे अल्लाह के सिवा। वे कहेंगे, वे हमसे खोए गए बल्कि हम इससे पहले किसी चीज को पुकारते न थे। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है मुंकिरों को। यह इस सबब से कि तुम जमीन में नाहक खुश होते थे और इस सबब से कि तुम घमंड करते थे। जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का। (69-76)

नाहक पर खुश होने वाले और घमंड करने वाले कौन थे, ये वक्त के बड़े लोग थे। उन्हें कुछ दुनिया का सामान और दुनिया की बड़ाई मिल गई। इसकी वजह से वे नाज और घमंड में मुत्तिला हो गए। उनकी माददी कामयाबी ने उनके अंदर गलत तौर पर यह एहसास पैदा कर दिया कि वे पाए हुए लोग हैं। हालांकि हकीकत के एतबार से वे सिर्फ महरूम लोग थे।

वक्त के ये बड़े अब्बलन हक के मुंकिर बनते हैं। फिर उनकी पैरवी में अवाम भी हक का इंकार करने लगते हैं। इन आयात में अगली दुनिया का वह मंजर दिखाया गया है जबकि ये लोग अपनी मुतकब्बिराना रविश की सजा पाने के लिए जहन्नम में डाल दिए जाएंगे। उनकी झूठी बड़ाई आखिरकार उन्हें जहां पहुंचाएगी वह सिर्फ अबदी जिल्लत है जिससे निकलने की कोई सूरत उनके लिए न होगी।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَأَمَّا نُرِّيكَ بَعْضَ الْأَرْزَىٰ نَعْدُهُمْ أَوْ  
نَتَوَقَّيْكَ ۖ وَالْيَنَّا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

पस सब करो बेशक अल्लाह का वादा बरहक है। फिर जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा देंगे। या तुम्हें वफात देंगे, पस उनकी वापसी हमारी ही तरफ है। (77)

यह अल्लाह का वादा है कि वह हक के दावियों की मदद करेगा और हक के मुखालिफ़ीन को मालूब (परास्त) करेगा। मगर इस वादे का तहक्क़ुस सब्र के बाद होता है। दावी को यक़तरफ़ तौर पर फरीके सानी (प्रतिपक्षी) की ईजाओं (यातनाओं) को बर्दाश्त करना पड़ता है यहां तक कि खुदा की सुन्नत के मुताबिक उसके वादे के जुहूर का वक़्त आ जाए।

मुखालिफ़ीने हक की असल सजा वह है जो उन्हें आखिरत में मिलेगी। ताहम मौजूदा दुनिया में भी उन्हें उसका इब्तिदाई तजर्बा कराया जाता है, अगरचे हमेशा ऐसा किया जाना ज़रूरी नहीं।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَاذْجَأْ أَمْرُ اللَّهِ فُضْیَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾

और हमने तुमसे पहले बहुत से रसूल भेजे, उनमें से कुछ के हालात हमने तुम्हें सुनाए हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने तुम्हें नहीं सुनाए। और किसी रसूल को यह मक़दूर (सामर्थ्य) न था कि वह अल्लाह की मर्जी के बग़ैर कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो हक के मुताबिक फैसला कर दिया गया। और शलतकार लोग उस वक़्त ख़सारे (घाटे) में रह गए। (78)

कुरआन में रसूलों के अहवाल (वृत्तांत) बतौर तारीख़ नहीं बयान हुए हैं बल्कि बतौर नसीहत बयान हुए हैं। इसलिए कुरआन में रसूलों के अहवाल महदूद तौर पर सिर्फ़ इतना ही बताए गए हैं जितना अल्लाह तआला के नजदीक नसीहत के लिए जरूरी थे।

रसूल का असल काम सिर्फ़ यह होता है कि वह खुदा का पैग़ाम उसके तमाम जरूरी आदाब और तक़ज़ों के साथ लोगों तक पहुंचा दे। इसके बाद जहां तक मोजिजे का तअल्लुक है वह तमामतर अल्लाह के इख़्तियार में है, वह अपनी मस्लेहत के तहत कभी उन्हें जाहिर करता है और कभी जाहिर नहीं करता।

मोजिजे ज्यादा उन क़ौमों को दिखाए गए हैं जिनकी सरकशी की बिना पर खुदा का

फैसला था कि उन्हें हलाक कर दिया जाए। इसलिए आखिरी तौर पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के लिए उन्हें मोजिजा भी दिखा दिया गया। मगर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कौम का मामला यह था कि उसका बड़ा हिस्सा बिलआखिर मोमिन बनने वाला था। ये वे लोग थे जो इम्कानी तौर पर यह सलाहियत रखते थे कि वे तारीख़ के पहले गिरोह बनें जिसने महज दलील की बुनियाद पर हक़ का एतराफ़ किया और अपने आजाद इरादे से अपने आपको उसके हवाले कर दिया। इसलिए उन लोगों के मुतालबे को नादानी पर महमूल करते हुए उन्हें ख़ारिके आदत मोजिजे (दिव्य चमत्कार) नहीं दिखाए गए।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْإِنْعَامَ لِتَزْكُوبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَكُلُونَ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ ۖ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۖ وَيُريْكُمُ آيَاتِهِ فَمَا يَتْلُو إِلَهُ تَتَكْرَهُونَ ﴿٧٩﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उनमें और भी फायदे हैं। और ताकि तुम उनके जरिए से अपनी जरूरत तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में हो और उन पर और क़श्ती पर तुम सवार किए जाते हो और वह तुम्हें और भी निशानियां दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इंकार करोगे। (79-81)

इंसान को अपनी ज़िंदगी और सभ्यता के लिए बहुत सी चीज़ों की जरूरत है। मसलन ग़िजा, सवारी, मुख़लिफ़ क्रिम की सनअतें (उद्योग), सामान को एक जगह से दूसरे जगह ले जाना। ये सब चीज़ें मौजूदा दुनिया में बड़ी मिक्दार में मौजूद हैं। खुदा ने दुनिया की चीज़ों को इस तरह बनाया है कि वे हमेशा इंसान के ताबेअ रहें और इंसान उन्हें अपनी जरूरतों के लिए जिस तरह चाहे इस्तेमाल कर सके।

ये तमाम चीज़ें गोया खुदा की निशानियां हैं। वे ग़ैबी हकीक़तों का माददी जवान में एलान कर रही हैं। यह एलान अगरचे बिलवास्ता (परोक्ष) जवान में है मगर इंसान का भला इसी में है कि वह बिलवास्ता जवान में कही हुई बात को समझे। क्योंकि खुदा जब बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) जवान में कलाम करे तो वह मोहलते अमल के ख़त्म होने का एलान होता है न कि अमल शुरू करने का।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا أَكْثَرُ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَأَثَارًا فِي الْأَرْضِ ۖ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ كِتَابُ اللَّهِ وَلَا يَسْبِقُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِإِسَاءِ عِنْدَهُمْ مَنْ

सूरह-40. अल-मोमिन

1261

पारा 24

الْوَلِيُّ وَحَاقَ بِهِمْ تَاكَانُؤَابَهُ يَسْتَهْرُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْا بُاسَنَا قَالُوا مَكَانًا  
بِاللَّهِ وَحْدَهُ ۝ وَكُفْرُنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِنَّمَا هُمْ  
لَمَّا رَأَوْا بُاسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۝ وَخَسِرَ هُنَاكَ  
الْكُفْرُونَ ۝

9  
14

क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो  
इनसे पहले गुजरे हैं। वे इनसे ज्यादा थे, और कुव्वत (शक्ति) में और निशानियों में जो  
कि वे जमीन पर छोड़ गए, बढ़े हुए थे। पस उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई।  
पस जब उनके पैगम्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे अपने उस इल्म पर  
नाजं रहे जो उनके पास था, और उन पर वह अजाब आ पड़ा जिसका वे मजक उड़ते  
थे। फिर जब उन्होंने हमारा अजाब देखा, कहने लगे कि हम अल्लाह वाहिद (एकेश्वर)  
पर ईमान लाए और हम इंकार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ शरीक करते थे। पस  
उनका ईमान उनके काम न आया जबकि उन्होंने हमारा अजाब देख लिया। यही  
अल्लाह की सुन्नत (तरीका) है जो उसके बंदों में जारी रही है, और उस वक्त इंकार  
करने वाले ख़सारे (घाटे) में रह गए। (82-85)

इल्म की दो किस्में हैं। एक वह इल्म जिससे दुनिया की तरक्कियां हासिल होती हैं।  
दूसरा इल्म वह है जो आखिरत की कामयाबी का रास्ता बताता है। जिन लोगों के पास दुनिया  
का इल्म हों उनके इल्म का शानदार नतीजा फौरी तौर पर दुनिया की तरक्कियों की सूत में  
सामने आ जाता है। इसके बरअक्स जिस शख्स के पास आखिरत का इल्म हो उसके इल्म  
के नताइज फौरी तौर पर महसूस शकल में सामने नहीं आते।

यह फर्क उन लोगों के अंदर बरतरी की नफिसयात पैदा कर देता है जो दुनिया का इल्म  
रखते हो। चुनांचे ऐसी कौमों के पास जब उनके पैगम्बर आए तो उन्होंने अपने को ज्यादा  
समझा और पैगम्बर को कम ख़्याल किया। यहां तक कि वे उनका मजाक उड़ाने लगे। मगर  
अल्लाह ने उन कौमों को उनकी तमाम कुव्वतों और शानदार तरक्कियों के बावजूद हलाक  
कर दिया। अब उनके तारीखी आसार (अवशेष) या तो खंडहर की शकल में हैं या जमीन के  
नीचे दबे हुए हैं। इस तरह अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों के लिए एक तारीखी मिसाल  
कायम कर दी कि मुस्तकिल कामयाबी का राज इल्मे आखिरत में है न कि इल्मे दुनिया में।

इन कौमों ने इब्तिदा में अपने पैगम्बरों का इंकार किया। पैगम्बरों के पास दलील की  
कुव्वत थी। मगर ये कौमों दलील की कुव्वत के आगे झुकने के लिए तैयार न हुईं। आखिरकार  
खुदा ने अजाब की ज्बान में उन्हें अम्र वाक्ई (यथाथी) से आगाह किया। उस वक्त वे लोग  
झुक कर इक्कार करने लगे। मगर यह इक्कार उनके काम न आया। क्योंकि इक्कार वह मल्लूब

पारा 24

1262

सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह

(अपेक्षित) है जो दलील की बुनियाद पर हो। उस इक्कार की कोई कीमत नहीं जो अजाब को  
देखकर किया जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ اَرْجِعْ مُوسَىٰ اِلٰى رَبِّهِ  
حَمْدًا تَنْزِيلًا ۝ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ كَتَبَ فُصِّلَتْ اٰتِیَةُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا  
لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۝ فَاعْضُ اٰذُنُكُمْ ۝ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ وَقَالُوا  
قُلُوبُنَا فِیْ الْاَكْتَةِ ۝ فَهَاتُوا عَلَيْنَا الْاٰیَةَ ۝ وَفِیْ اٰذَانِنَا وَقْرٌ ۝ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ  
حِجَابٌ ۝ فَاعْمَلْ اِنَّا عَمِلُونَ ۝

14  
15

आयतें-54

सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह

रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह बड़े महरबान, निहायत रहम वाले की तरफ से उतारा हुआ कलाम  
है। यह एक किताब है जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं, अरबी जवान  
का कुरआन, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। खुशख़बरी देने वाला और डराने  
वाला। पस उन लोगों में से अक्सर ने इससे मुंह मोड़ा। पस वे नहीं सुन रहे हैं। और  
उन्होंने कहा हमारे दिल उससे पर्दे में हैं जिसकी तरफ तुम हमें बुलाते हो और हमारे  
कानों में डाट है। और हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एक हिजाब (ओट) है। पस तुम  
अपना काम करो, हम भी अपना काम कर रहे हैं। (1-5)

पैगम्बर की दावत बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत होती है। इसके बरअक्स लोगों का  
हाल यह है कि अक्सर वे अपने अकाविर (बड़ों) के दीन पर होते हैं। उनके ऊपर उनकी  
कौमी रिवायात और जमानी अप्कार (तात्कालिक विचारों) का ग़लबा होता है। इस बिना पर  
पैगम्बर का बेआमेज दीन उनके फिक्की ढांचे में नहीं बैठता। वह उन्हें अजनबी दिखाई देता  
है। यह फर्क पैगम्बर और लोगों के दर्मियान एक ज़मानी दीवार की तरह हायल हो जाता है।  
लोग पैगम्बर की दावत को उसके अस्ल रूप में देख नहीं पाते, इसलिए वे उसे मानने पर भी  
तैयार नहीं होते।

पैगम्बर की दावत बजाए खुद इतिहाई मुदल्लल होती है। वह अपनी जात में इस बात  
का सुबूत होती है कि वह खुदा की तरफ से आई हुई बात है। मगर मज्हूरा ज़ेहनी दीवार  
इतनी ताकतवर साबित होती है कि इंसान उससे निकल कर पैगम्बर की दावत को देख नहीं  
पाता। खुदा इंसान के लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोलता है मगर इंसान उसके अंदर  
दाखिल नहीं होता।



قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنَا إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ  
وَاسْتَغْفِرُوا ۖ وَبَيْنَ الْبَشَرِ كَيْنٌ ۚ الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ  
هُم كَافِرُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

कहो, मैं तो एक बशर (इंसान) हूँ तुम जैसा। मेरे पास यह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) वस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहे उसी की तरफ और उससे माफी चाहो। और खराबी है मुश्रिकों के लिए, जो जकात नहीं देते और वे आखिरत के मुंकिर हैं। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए ऐसा अज्र (प्रतिफल) है जो मौक्फ (बाधित) होने वाला नहीं। (6-8)

हक की दावत जब भी उठती है 'बशर' (इंसान) की सतह पर उठती है। लोगों की समझ में नहीं आता कि यह कैसे मुमकिन है कि एक बशर खुदा की जवान में कलाम करे। इसलिए वे उसके मुंकिर बन जाते हैं मगर खुदा की सुन्नत (तरीका) यही है कि वह बशर की जवान से अपनी बात का एलान कराए। जो शख्स दाओ की बशरियत से गुजर कर उसके इलाही कलाम को न पहचान सके वह मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में हिदायत से महरूम रहेगा।

आखिरत का मानना वही मोतबर है जिसके साथ कामिल तौहीद और इम्फक फी सबीलिल्लाह (अल्लाह की राह में खर्च करना) पाया जाए। जो शख्स अल्लाह को हकीकी तौर पर पा ले वह किसी और अज्मत में अटका हुआ नहीं रह सकता। इसी तरह जो शख्स अल्लाह को हकीकी तौर पर पा ले वह अपने माल को खुदा से बचाकर नहीं रख सकता।

फरतकीमू इलैहि का मतलब है अख़िसू लहुल इबादत यानी तुम्हारी सारी तवज्जोह सिर्फ अल्लाह की तरफ हो तुम्हारी दुआ और इबादत का केन्द्र सिर्फ एक अल्लाह हो। तुम्हारी सोच तमामतर खुदा रुखी सोच बन जाए। यही वे लोग हैं जिन्हें खुदा के अबदी इनामात दिए जाएंगे।

قُلْ إِنَّا كُفَرُونا بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا  
ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۖ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِي مِّنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ  
فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ۖ ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ  
دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۖ  
فَقَضَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ ۖ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۖ وَزَيَّنَّا  
السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ ۖ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

कहो क्या तुम लोग उस हस्ती का इंकार करते हो जिसने जमीन को दो दिन में बनाया, और तुम उसके हमसर (समकक्ष) ठहराते हो। वह रब है तमाम जहान वालों का। और उसने जमीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाए। और उसमें फायदे की चीजें रख दीं। और उसमें उसकी गिजाएं ठहरा दीं चार दिन में, पूरा हुआ पूछने वालों के लिए। फिर वह आसमान की तरफ मुतवज्जह हुआ, और वह ध्रुवां था। फिर उसने आसमान और जमीन से कहा कि तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से। दोनों ने कहा कि हम ख़ुशी से हाजिर हैं। फिर उसने दो दिन में उसके सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसका हुक्म भेज दिया। और हमने आसमाने दुनिया को चराशों से जीनत (साज-सज्जा) दी, और उसे महफूज कर दिया। यह अजीज (प्रभुवशाली) व अलीम (सर्वज्ञ) की मंसूबाबंदी है। (9-12)

कायनात का मुतालआ बताता है कि उसकी तख़लीक कई दौरों में तदरीजी (चरणबद्ध) तौर पर हुई है। तदरीजी तख़लीक दूसरे लफ्जों में मंसूबाबंद तख़लीक है। और जब कायनात की तख़लीक मंसूबाबंद अंदाज में हुई है तो यकीनी है कि इसका एक मंसूबासाज हो जिसने अपने मुकररह मंसूबे के तहत इसे इरादतन बनाया हो।

इसी तरह यहां जमीन के ऊपर जगह-जगह पहाड़ हैं जो जमीन के तवाजुम (संतुलन) को बरकरार रखते हैं। इस दुनिया में करोड़ों किस्म के जीहयात (जीव) हैं। हर एक को अलग-अलग रिक दरकार है। मगर हर एक का रिक इस तरह कामिल मुताबिकत के साथ मौजूद है कि जिसे जो रोजी दरकार है वह अपने करीब ही उसे पा लेता है। इसी तरह कायनात का मुतालआ बताता है कि तमाम चीजें इब्तिदा में मुंतशिर (बिखरे हुए) एटम की सूरत में थीं। फिर वे आपस में मिलकर अलग-अलग चीजों की सूरत में विकसित हुईं। इसी तरह कायनात के मुतालआ से मालूम होता है कि वसीअ कायनात की तमाम चीजें एक ही कानूने फितरत में निहायत मोहकम (सुदृढ़) तौर पर जकड़ी हुई हैं।

ये मुशाहिदात वाजेह तौर पर साबित करते हैं कि कायनात का ख़ालिक अलीम और ख़बीर है। वह कुव्वत और ग़लबे वाला है। फिर दूसरा कौन है जिसे इंसान अपना माबूद करार दे।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صُغَيْرَةً وَمِثْلَ صُغَيْرَةٍ ۖ عَادِوا وَثَمُودَ ۚ إِذْ  
جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَنِي إِدْرِيسَ وَمِنْ خَلْفِهِمْ ۖ أَلا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۚ  
قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ نَارًا مِنَ السَّمَاءِ فَمَا تَسْتَغِيهِمْ ۖ فَالْتَمِزْهُمْ بِهِ كُفْرُونا ۝

पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करते हैं तो कहो कि मैं तुम्हें उसी तरह के अजाब से डराता हूँ जैसा अजाब आद व समूद पर नाजिल हुआ। जबकि उनके पास रसूल आए, उनके आगे से और उनके पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो। उन्होंने

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ जमा किए जाएंगे, फिर वे जुदा-जुदा किए जाएंगे, यहां तक कि जब वे उसके पास आ जाएंगे, उनके कान और उनकी आंखें और उनकी खालें उन पर उनके आमाal की गवाही देंगी। और वे अपनी खालों से कहेंगे, तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी। वे कहेंगी कि हमें उसी अल्लाह ने गोयाई (बोलने की ताकत) दी है जिसने हर चीज को गोया कर दिया है। और उसी ने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया और उसी के पास तुम लाए गए हो। और तुम अपने को इससे छुपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे खिलाफ गवाही दें, लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन आमाal को नहीं जानता जो तुम करते हो। और तुम्हारे उसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुम्हें बर्बाद किया, पस तुम ख़सारा (घाटा) उठाने वालों में से हो गए। पस अगर वे सब्र करें तो आग ही उनका ठिकाना है, और अगर वे माफी मांगें तो उन्हें माफी नहीं मिलेगी। (19-24)

कुरआन में बताया गया है कि कियामत में इंसान की खाल और उसके आजा (शरीरंग) उसके आमाल की गवाही देंगे। मौजूदा जमाने में नुके जिल्दी (Skin speech) केनजरियेनेइसे अमली तौर पर साबित कर दिया है। अब यह मालूम किया गया है कि इंसान का हर बोल उसके जिस्म की खाल पर मुरतसिम (प्रतिबिंबित) होता रहता है। और उसे दुबारा उसी तरह सुना जा सकता है जिस तरह मशीनी तौर पर रिकॉर्ड की हुई आवाज को दुबारा सुना जाता है।

खुदा चूंकि बजाहिर दिखाई नहीं देता इसलिए इंसान समझता है कि खुदा उसे देखता नहीं है। यही गलतफहमी आदमी के अंदर सरकशी पैदा करती है। अगर आदमी जान ले कि खुदा हर लम्हा उसे देख रहा है तो उसका सारा रवैया बिल्कुल बदल जाए।

आखिरत में खुदा के सामने आने के बाद आदमी इताअत (आज्ञापालन) का इज्हार करेगा। मगर वह उसके लिए बेफायदा होगा। क्योंकि इताअत हालते गैब में काबिले एतबार है न कि हालते शुहूद (प्रकट स्थिति) में।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ نَائِبِينَ أَيْدِيَهُمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمِّرٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَسِرِينَ ٥

और हमने उन पर कुछ साथी मुसल्लत कर दिए तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की हर चीज उन्हें खुशनुमा बनाकर दिखाई। और उन पर वही बात पूरी होकर रही जो जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों पर पूरी हुई जो इनसे पहले गुजर चुके थे। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रह जाने वाले थे। (25)

मौजूदा दुनिया में एक तरफ़ खुदा के दाजी हैं जो इंसान को हक की नसीहत करते हैं। दूसरी तरफ़ इस्तहसालपसंद (शोषक) लीडर हैं जो खुशनुमा बातें करके इंसान को अपनी तरफ़ मायल करना चाहते हैं। जो लोग खुदा की नसीहत पर तवज्जोह न दें वे उन लीडरों की बातों में आकर ग़ैर हकीकी रास्तों में दौड़ पड़ते हैं।

ये इस्तहसालपसंद लीडर लोगों को उनके माजी का हसीन ख़्बाब दिखाते हैं। वे उनके सामने उनके मुस्तकबिल का ख़ुबसूरत नक्शा पेश करते हैं। जो लोग ऐसे लीडरों के झूठे अल्फ़ाज से धोखा खाकर उनके पीछे दौड़ पड़ते हैं उनका अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं होता कि वे हमेशा के लिए तबाह होकर रह जाएं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا هَذَا الْقُرْآنَ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَبُونَ ٥ فَلَنْ يُقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنْ يُجْزِيَئَهُمْ

أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ٥ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ الثَّآلِثُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَأْتِينَ بِجَحْدُونَ ٥

और कुफ़ करने वालों ने कहा कि इस कुरआन को न सुनो और इसमें ख़लल डालो, ताकि तुम ग़ालिब रहो। पस हम इंकार करने वालों को सख़्त अजाब चखाएंगे और उन्हें उनके अमल का बदतरीन बदला देंगे। यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है, यानी आग। उनके लिए उसमें हमेशगी का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे। (26-28)

वल ग़ौ फ़ीह० की तशरीह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० ने अय्यूब के लफ़्ज़ से की है (तप्सीर इब्ने कसीर)। यानी कुरआन और साहिबे कुरआन में ऐब लगाओ और इस तरह लोगों को उससे दूर कर दो।

किसी बात या किसी शख्स के बारे में इन्हारे राय के दो तरीके हैं। एक तंकीद, दूसरा तअयीब। तंकीद का मतलब है ह्वइक की बुनियाद पर ज़ेबहस अम्र का तज्जिया (विस्लेषण) करना। इसके बरअक्स तअयीब यह है कि आदमी ज़ेबहस मसले पर दलाइल पेश न करे। वह सिर्फ़ उसमें ऐब निकाले वह उस पर इल्जाम लगाकर उसे मतऊन (लाछिल) करे।

तंकीद का तरीका सरसर जाइज तरीका है। मगर तअयीब का तरीका अहले कुफ़ का तरीका है। मज़ीद यह कि तअयीब का तरीका खुदा की निशानियों का इंकार है। क्योंकि हर सच्ची दलील खुदा की एक निशानी है। जो लोग दलील के आगे न झुकें और ऐबजोई और इल्जामतराशी का तरीका इख़्तियार करके उसे दबाना चाहें वे गोया खुदा की निशानी का इंकार कर रहे हैं। ऐसे लोग आखिरत में निहायत सख़्त सजा के मुस्तहक़ करार दिए जाएंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الْآذِينَ أَضَلَّنَا مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ جَعَلْنَاهُمْ أَتَقْدَامًا لِيَكُونُوا مِنَ الْآسَفِينَ ٥ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ٥ مَن أُولِيَؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهُى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ٥ نَزَّلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ٥

सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह 1269

पारा 24

और कुफ्र करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और इंसानों में से हमें गुमराह किया, हम उन्हें अपने पांवों के नीचे डालेंगे ताकि वे जलील हों। जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर वे साबितकदम रहे, यकीनन उन पर फरिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न अदेशा करो और न रंज करो और उस जन्नत की बशारत (शुभ सूचना) से खुश हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया गया है। हम दुनिया की जिंदगी में तुम्हारे साथी हैं और आखिरत में भी। और तुम्हारे लिए वहां हर चीज है जिसे तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें हर वह चीज है जो तुम तलब करोगे, गफूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) की तरफ से मेहमानी के तौर पर। (29-32)

इंसानों में दो किस्म के इंसान हैं। एक वे जो शैतानों और झूठे लीडरों को अपना रहनुमा बनाते हैं। ये लोग दुनिया में खूब एक दूसरे से दोस्ती रखते हैं। मगर आखिरत में सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स होगी। वहां पैरवी करने वाले लोग जब देखेंगे कि उनके झूठे रहनुमाओं ने उन्हें सिर्फ जहन्नम में पहुंचाया है तो वे उनसे सख्त मुनफिर (नफरतप्रेम) हो जाएंगे। और चाहेंगे कि उन्हें हकीर व जलील करके अपने दिल की तस्कीन हासिल करें।

दूसरे इंसान वे हैं जो खुदा के फरिश्तों को अपना साथी बनाएं। ऐसे लोग दुनिया से लेकर आखिरत तक फरिश्तों को अपना हमनशी (साथी) पाते हैं। फरिश्ते उनके दिल पर रब्बानी एहसासता उतारते हैं। वे मुश्किल हालात में उन्हें कल्बी सुकून अता करते हैं। वे लतीफ तजर्बात के जरिए उन्हें खुदा की बिशारतें सुनाते हैं। फिर यही फरिश्ते आखिरत में उनका इस्तकबाल करके उन्हें जन्नत के बाग़ात में दाखिल करेंगे।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۝ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝ وَإِنَّا يَنْزَغُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

और उससे बेहतर किसकी बात होगी जिसने अल्लाह की तरफ बुलाया और नेक अमल किया और कहा कि मैं फरमांबरदारों में से हूँ। और भलाई और बुराई दोनों बराबर नहीं, तुम जवाब में वह कहो जो उससे बेहतर हो फिर तुम देखोगे कि तुम में और जिसमें दुश्मनी थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त कराबत (घनिष्टता) वाला। और यह बात उसी को मिलती है जो सन्न करने वाले हैं, और यह बात उसी को मिलती है जो बड़ा नसीबे वाला है। और अगर शैतान तुम्हारे दिल में कुछ वसवसा डाले तो अल्लाह की

पारा 24

1270 सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह

पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (33-36)

कुरआन की दावत अल्लाह की तरफ बुलाने की दावत है। इंसान को उसके रब से जोड़ना, इंसान को खुदा की याद में जीने वाला बनाना, इंसान के अंदर यह शुऊर उभारना कि वह एक खुदा को अपना मर्कजे तवज्जोह बना ले, यही कुरआनी दावत का अस्त निशाना है। और बिलाशुबह इस पुकार से बेहतर कोई पुकार नहीं।

मगर खुदा का दाजी सिर्फ वह शख्स बनता है जो अपनी दावत में इस हद तक संजीदा हो कि जो कुछ वह दूसरों से मनवाना चाहता है उसे वह खुद सबसे पहले मान चुका हो, वह दूसरों से जो कुछ करने के लिए कह रहा है, खुद सबसे पहले उसका करने वाला बन जाए।

दाजी का सबसे बड़ा हथियार यह है कि वह लोगों के साथ यकतरफा हुस्ने सुलूक करे। दूसरे लोग बुराई करें तब भी वह दूसरों के साथ भलाई करे। वह इशतिआल (उत्तेजना) के मुक़बले मैएज़ और अजियतरसानी (उत्पीड़न) के मुक़बले में सब्र का तरीक़ा इस्तिआर करे। यकतरफा हुस्ने सुलूक में अल्लाह तआला ने जबरदस्त तस्वीरी (अपना बनाने की) ताकत रखी है। खुदा का दाजी खुदा की बनाई हुई इस फितरत को जानता है और उसे आखिरी हद तक इस्तेमाल करता है, चाहे इसके लिए उसे अपने जज्बात को कुचलना पड़े, चाहे इसकी खातिर अपने अंदर पैदा होने वाले रद्देअमल को जबह करने की नौबत आ जाए।

जब भी दाजी के अंदर इस किस्म का ख्याल आए कि फलां बात का जवाब देना जरूरी है, फलां जुम् के खिलाफ जरूर कार्रवाई की जानी चाहिए वरना दुश्मन दिलेर होकर और ज्यादा ज्यादतियां करेगा तो समझ लेना चाहिए कि यह एक शैतानी वसवसा है। मोमिन और दाजी का फर्ज है कि वह ऐसे ख्याल से खुदा की पनाह मांगे, न कि वह उसके पीछे दौड़ना शुरू कर दे।

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۝

और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और चांद। तुम सूरज और चांद को सज्दह न करो बल्कि उस अल्लाह को सज्दह करो जिसने इन सबको पैदा किया है, अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो। पस अगर वे तकबुर (घमंड) करें तो जो लोग तेरे रब के पास हैं वे शब व रोज उसी की तस्वीह करते हैं और वे कभी नहीं थकते। (37-38)



इंसान की सबसे बड़ी गुमराही उसकी जाहिरपरस्ती है। कदीम जमाने के इंसान को सूरज और चांद और सितारे सबसे ज्यादा नुमायां नजर आए। इसलिए उसने इन मजाहिर (जाहिरियों) को खुदा समझ लिया और उन्हें पूजना शुरू कर दिया। मौजूदा जमाने में मादूदी (भौतिक) तहजीब की जगमगाहट लोगों को नुमायां दिखाई दे रही है इसलिए अब मादूदी तहजीब को वह मक्कम दे दिया गया है जो कदीम जमाने में सूरज और चांद को हासिल था। हालांकि चाहे सूरज और चांद हों या दूसरे मजाहिर सबके सब खुदा की मख्तूक हैं। इंसान को चाहिए कि वह खालिक का परस्तर बने न कि उसकी मख्तूकत का।

तकबुर (घमंड) करने वालों का तकबुर (आह्वान) दावत के मुकाबले में नहीं होता, बल्कि हमेशा दाओ के मुकाबले में होता है। वक्त के बड़ों को बजाहिर दाओ अपने से छोटा नजर आता है इसलिए वह उसे छोटा समझ लेते हैं और इसी के साथ उसकी तरफ से पेश किए जाने वाले पैगाम को भी।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُتَّى الْمَوْتَى إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْهَا ۚ أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَبِيرٌ ۚ أَمْ مَنْ يَأْتِي أَمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम जमीन को फरसूदा (मृत) हालत में देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है। वेशक जिसने उसे जिंदा कर दिया वह मुर्दों को भी जिंदा कर देने वाला है। वेशक वह हर चीज पर कादिर है। जो लोग हमारी आयतों को उल्टे मअना पहनाते हैं वे हमसे छुपे हुए नहीं हैं। क्या जो आग में डाला जाएगा वह अच्छा है या वह शख्स जो कियामत के दिन अमन के साथ आएगा। जो कुछ चाहे कर लो, वेशक वह देखता है जो तुम कर रहे हो। (39-40)

सूखी जमीन में बारिश का बरसना और उससे सब्ज का उगना एक ऐसा मजहर (जहरी रूप) है जो हर आदमी के सामने बार-बार आता है। यह एक मअनवी हकीकत की मादूदी तमसील है। इस तरह इंसान को बताया जाता है कि खुदा ने यहां उसके खुशक वजूद को सरसब्ज व शादाब करने का वसीअ इतिजाम कर रखा है। जमीन की मिट्टी पानी को अपने अंदर दाखिल होने देती है उसी वक्त यह मुमकिन होता है कि बारिश उसे सरसब्ज व शादाब करने का जरिया बने। इसी तरह इंसान अगर खुदा की हिदायत को अपने अंदर उतरने दे तो उसका वजूद भी हिदायत पाकर लहलहा उठेगा।

खुदा की हिदायत से फैजयाब न होने की सबसे बड़ी वजह यह होती है कि इंसान खुदा की बातों में इल्हाद (उलट-फेर) करता है। खुदा की रहनुमाई उसके सामने आती है तो वह उसे सीधे मफहूम में नहीं लेता। बल्कि उसमें टेढ़ा निकाल कर उसे उलट देता है। इस तरह खुदा की रहनुमाई उसके जेहन का जुज (अंग) नहीं बनती। वह उसकी रूह को गिजा देने वाली साबित नहीं होती।

खुदा की रहनुमाई को सीधी तरह कुबूल करने वालों के लिए जन्नत का इनाम है और खुदा की रहनुमाई में टेढ़ा मफहूम (भाषार्थ) निकालने वालों के लिए जहन्नम का अजाब।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّ لَهُمْ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۝ لَا يَأْتِيهِمُ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۚ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝ مَا يَقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ ۚ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝

जिन लोगों ने अल्लाह की नसीहत का इंकार किया जबकि वह उनके पास आ गई, और वेशक यह एक जबरदस्त किताब है। इसमें बातिल (असत्य) न इसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, यह हकीम (तत्वदर्शी) व हमीद (प्रशंस्य) की तरफ से उतारी गई है। तुम्हें वही बातें कही जा रही हैं जो तुमसे पहले रसूलों को कही गई हैं। वेशक तुम्हारा रब मफिरत (क्षमाशील) वाला है और दर्दनाक सजा देने वाला भी। (41-43)

कुरआन एक जबरदस्त किताब है। और इसके जबरदस्त होने का सबूत यह है कि बातिल न आगे से इसमें आ सकता है और न पीछे से। यानी इसमें किसी तरफ से दखलअंदाजी का कोई इम्कान नहीं, न बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) इसमें कोई बिगाड़ पैदा किया जा सकता है और न बिलवास्ता (परोक्ष रूप में)।

यह एक इतिहाई गैर मामूली पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है। इस आलमे असबाब में इस पेशीनगोई के पूरा होने के लिए जरूरी है कि कुरआन की हामिल (धारक) एकतामरकै मुस्तकिल तौर पर मौजूद रहे। पिछले नबियों की तालीमात से इसकी अदम मुताबिकत (प्रतिकूलता) जाहिर न हो सकी। कोई शख्स कभी कुरआन का जवाब लिखने पर कादिर न हो। उलूम का इरतिका (विकास) इसकी किसी बात को कभी गलत साबित न करे। तारीख का उतार चढ़ाव कभी इस पर असरअंदाज न होने पाए। कुरआन की जवान (अरबी) हमेशा एक जिज्ञान के तौर पर बाक़ी रहे।

कुरआन के नुजूल के बाद की लम्बी तारीख बताती है कि ये तमाम असबाब हैरतअंगेज तौर पर इसके हक में जमा रहे हैं। इन तमाम वाक़ेयात का जमा होना इस कदर गैर मामूली है कि



दरख्त से एक फल का निकलना या मां के पेट से एक जिंदा वजूद का पैदा होना अपनी नौइयत के एतबार से वैसा ही वाक्या है जैसा मौजूदा दुनिया के अंदर से आखिरत की दुनिया का बरामद होना।

फल क्या है, वह बेफल का फल में तब्दील होना है। इंसान क्या है, वह बेइंसान का इंसान की सूरत इख्तियार करना है। यही आखिरत का मामला भी है। आखिरत भी दरअस्त ग़ैर आखिरत का आखिरत में तब्दील होने का दूसरा नाम है। पहली किस्म की तब्दीली हर रोज हमारे सामने वाक्या बन रही है। फिर इसी नौइयत के एक और वाक्या (मौजूदा दुनिया का आखिरत में तब्दील होना) नाकबिले कयास (असंभाव्य) क्यों हो।

आखिरत का दिन हकीकतों के आखिरी ज़ुहूर का दिन होगा। जब वह दिन आएगा तो तमाम झूठी बुनियादें ढह पड़ेंगी जिन पर लोगों ने मौजूदा दुनिया में अपनी जिंदगियों को खड़ा कर रखा था।

لَا يَسْمُرُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَكُونُ قَنُوطٌ ۖ وَلَكِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لِيَقُولَنَّ هَذَا إِلَىٰ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِنْ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِيٰ عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا ۖ وَلَنُنْزِقَنَّ إِلَيْكُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۖ

और इंसान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई तकलीफ पहुंच जाए तो मायूस व दिल शिकस्ता हो जाता है। और अगर हम उसे तकलीफ के बाद जो कि उसे पहुंची थी, अपनी महरबानी का मजा चखा देते हैं तो वह कहता है यह तो मेरा हक ही है, और मैं नहीं समझता कि कियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटाया गया तो उसके पास भी मेरे लिए बेहतर ही है। पस हम उन मुक़िरी को उनके आमाल से जरूर आगाह करेंगे। और उन्हें सज़ा अजाब का मजा चखाएंगे। (49-50)

मुसीबत का लम्हा इंसान के लिए अपनी दरयाफ्त का लम्हा होता है। चुनांचे जब मुसीबत पड़ती है तो वह खुदसरी (उददंडता) को भूलकर खुदा को याद करने लगता है। उस वक्त वह जान लेता है कि वह अब्द (बंदा, गुलाम) है और खुदा उसका माबूद।

मगर जब खुदा उसकी मुसीबत को उससे दूर कर देता है और उसे आसाइश (सुख-सम्पन्नता) का सामान अता करता है तो इसके बाद वह फ़ौरन अपनी साबिका (पूर्ववर्ती) हालत को भूल जाता है। वह मिली हुई नेमत को असबाब के साथ जोड़ देता है और उसे अपनी तदबीर और लियाक़त का नतीजा समझने लगता है। उसकी नफ़िसयात ऐसी हो जाती है गोया कि जिंदगी बस इसी दुनिया की जिंदगी है। इसके बाद न दुबारा उठना है और न खुदा की अदालत में

खड़ा होना है। मजीद यह कि उसकी आसूदाहाली (सम्पन्नता) उसे इस ग़लतफहमी में डाल देती है कि यहां जब मेरा हाल अच्छा है तो अगली दुनिया में भी जरूर मेरा हाल अच्छा होगा।

وَلَا تُغْنِيَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَاضُ وَنَايِبَانِيهِ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ۖ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ أَضَلِّ مَقَرٍّ ۖ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۖ

और जब हम इंसान पर फसल करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और अपनी कसबट फेर लेता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह लम्बी-लम्बी दुआएं करने वाला बन जाता है। कहो कि बताओ, अगर यह कुरआन अल्लाह की तरफ से आया हो, फिर तुमने इसका इंकार किया तो उस शख्स से ज्यादा गुमराह और कौन होगा जो मुखालिफत (विरोध) में बहुत दूर चला जाए। (51-52)

इंसान को नेमत इसलिए दी जाती है कि वह उसे खुदा का अतिय्या (देन) करार देकर उसका शुक्र अदा करे। मगर इंसान का हाल यह है कि वह नेमत पाकर सरकश बन जाता है। अलबत्ता जब इंसान पर कोई तकलीफ पड़ती है तो उस वक्त वह खुदा को पुकारने लगता है। मगर मजबूराना पुकार की खुदा के यहां कोई कीमत नहीं। इंसान की खूबी यह है कि वह नेमत के वक्त भी खुदा के आगे झुके और तकलीफ के वक्त भी।

इंसान की यही नफ़िसयात है जो उसे हक के इंकार पर आमादा करती है। हक किसी को मजबूर नहीं करता, वह इख्तियाराना झुकाव का तालिब होता है। चुनांचे जिन लोगों के अंदर इख्तियाराना झुकाव का माददा नहीं होता वे ऐसे हक को नजरअंदाज कर देते हैं जिसके नजरअंदाज कर देने से बजाहिर उनके ऊपर कोई आफ़त टूट पड़े वाली न हो।

سَأْتِيهِمْ أَيْتَانِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَّبِعِينَ لَهُمْ آتَاءُ الْحَقِّ ۖ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّخِيطٌ ۖ

हम उन्हें अपनी निशानियां दिखाएंगे आफ़ाक (वाह्य क्षेत्रों) में भी और खुद उनके अंदर भी। यहां तक कि उन पर जाहिर हो जाएगा कि यह कुरआन हक है। और क्या यह बात काफी नहीं कि तेरा रब हर चीज का गवाह है। सुन लो, ये लोग अपने रब की मुलाक़ात में शक रखते हैं, सुन लो, वह हर चीज का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (53-54)

दुनिया में जितने लोग भी उठे हैं सबकी कहानी हाल (वर्तमान) की कहानी है, किसी की कहानी मुस्तकबिल (भविष्य) की कहानी नहीं। क्योंकि किसी का मुस्तकबिल भी उसके हाल की तस्वीर करने वाला न बन सका। ऐसी दुनिया में डेढ़ हजार साल पहले यह पेशीनगोई की गई कि कुरआन के बाद जहिर होंगे वाले वाक्यात व हक्क कुरआन की तस्वीर करते चले जाएंगे। कुरआन आइंदा आने वाले तमाम जमानों में अपनी सदाकत (सच्चाई) को न सिर्फ बाकी रखेगा बल्कि मजिद वाजेह और मुदल्लल करता चला जाएगा। कुरआन हमेशा वक्त की किताब रहेगा।

यह बात हैतअमोज तौर पर सद फी सद उरुस्त साबित हुई है। इल्मी तहकीकत, तारीखी वाक्यात, जमानी इक्लाबात सब कुरआन के हक में जमा होते चले गए। यहां तक कि आज गैर मुस्लिम मुहक्किनी (शोधकर्ता) भी गवाही दे रहे हैं कि कुरआन अपनी नादिर खुसूसियात (अद्वितीय विशिष्टताओं) की बिना पर खुद इस बात का सुबूत है कि वह खुदा की किताब है। किसी इंसानी तस्नीफ (कृति) में ऐसी अबदी (शाश्वत) खुसूसियात पाई नहीं जा सकती।

इस खुली हुई हकीकत के बावजूद जो लोग कुरआन की सदाकत के आगे न झुकें वे सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि उनकी बेखोफी की नफिसयात ने उन्हें गैर संजीदा बना दिया है। क्योंकि गैर संजीदा इंसान ही से इस किस्म की गैर माकूल रविश जाहिर हो सकती है कि वह खुले-खुले शवाहिद (प्रमाणों) को देखे और इसके बावजूद उसका इकरार न करे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ اللَّهُ الْعَزِيزُ  
الْحَكِيمُ ﴿٢﴾ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٣﴾ تَكَادُ  
السَّمَوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ  
لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤﴾ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ  
أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿٥﴾

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारबान, निहायत रहम वाला है।  
ह० मीम०। अइन० सीन० काफ०। इसी तरह अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) व हकीम  
(तत्वदर्शी) 'वही' (प्रकाशना) करता है तुम्हारी तरफ और उनकी तरफ जो तुमसे पहले  
गुजरे हैं। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, वह सबसे ऊपर

है, सबसे बड़ा। करीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फरिश्ते अपने ख  
की तस्वीर करते हैं उसी की हम्द (प्रशंसा) के साथ और जमीन वालों के लिए माफी  
मांगते हैं। सुन लो कि अल्लाह ही माफ करने वाला, रहमत करने वाला है। और जिन  
लोगों ने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बनाए हैं, अल्लाह उनके ऊपर  
निगहबान है और तुम उनके ऊपर जिम्मेदार नहीं। (1-6)

अगर आदमी को लामहदूद (असीम) निगाह हासिल हो जाए तो वह देखेगा कि यहां एक  
खुदा है जो सारे जमीन व आसमान का मालिक है। उसकी ताकत इतनी जबरदस्त है कि  
कायनात उसकी हैबत से गोया फटी जा रही है। फरिश्ते जो बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) खुदा की  
खुदाई से बाख़बर हैं वे हर आन ख़शियत (ख़ौफ) में डूबे हुए उसकी हम्द व तस्वीर कर रहे  
हैं। फिर वह देखेगा कि खुदा अपनी कुदरत ख़ास से इंसानों में से कुछ अफराद को चुनता  
है और उन्हें बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में अपना कलाम पहुंचाता है ताकि वे तमाम इंसानों  
को हकीकते वाक्या से बाख़बर कर दें।

इंसान अगरचे इन हकीकतों को बराहेरास्त तौर पर नहीं देखता मगर वह अकल के जरिए  
बिलवास्ता तौर पर इनका इदराक (भान) कर सकता है। यही आदमी का अस्ल इस्तेहान है।  
इंसान की यह जिम्मेदारी है कि वह बसारात (आंख) से दिखाई न देने वाली चीजों को बसीरात  
(सूझबूझ) की नजर से देखे। वह पैग़म्बरों के कलाम में खुदा की आवाज सुने और उसके आगे  
अपने आपको झुका दे। वह देखे बग़ैर इस तरह मान ले गोया कि वह अपनी आंखों से सब  
कुछ देख रहा है।

कियामत के दिन किसी के लिए यह बात उज़्र (विवशता) न बन सकेगी कि उसने  
हकीकत को बराहेरास्त न देखा था। क्योंकि मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में हकीकत को  
बराहेरास्त दिखाना मलूब ही नहीं। अगर अस्ल पैग़ाम किसी शख्स तक पूरी तरह पहुंच जाए  
तो इसके बाद खुदा के नजदीक उस पर हुज़त कायम हो जाती है। हकीकत का दलील की  
जबान में जहिर हो जाना ही काफी है कि उसे इंकारे हक का मुजरिम करार देकर वह सज़ा  
दी जाए जो मुकिरीने हक के लिए मुक़द्दर है।

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ  
يَوْمَ الْجُمُعَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْحِكْمَةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴿٦﴾

और हमने इसी तरह तुम्हारी तरफ अरबी कुरआन उतारा है ताकि तुम मक्का वालों को  
और उसके आस-पास वालों को डरा दो और उन्हें जमा होने के दिन से डरा दो जिसके आने  
में कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह आग में। (7)

पैग़म्बर की दावत (आह्वान) का अस्ल निशाना यह होता है कि लोगों को इस हकीकत



**सूरह-42. अश-शूरा**

1279

पारा 25

से आगाह कर दिया जाए कि आखिरकार वे खुदा के सामने हाजिर किए जाने वाले हैं। इसके बाद लोगों के अमल के मुताबिक किसी के लिए अबदी (चिरस्थायी) जन्नत का फैसला होगा और किसी के लिए अबदी जहन्नम का।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी हकीकत से आगाह करने के लिए आए। आपकी बेअसत (प्रस्थापन) के दो दौर हैं एक बराहेरास्त (प्रत्यक्ष), दूसरा बिलवास्ता (परोक्ष)। आपकी बराहेरास्त बेअसत मक्का और इतराफे मक्का के लिए थी। इसकी तक्मील आपने खुद अपनी जिंदगी में फरमा दी। आपकी बिलवास्ता बेअसत बवास्तए उम्मत तमाम आलम के लिए है। आपकी यह दूसरी बेअसत जारी है और कियामत तक जारी रहेगी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले अरब के सामने अरबी जवान में अपना पैगाम पहुंचाया। आपके बाद आपकी उम्मत को भी आपकी नियावत (प्रतिनिधित्व) में इसी उसूल पर अपना दावती फरीजा अंजाम देना है। उसे हर कौम के सामने उसकी अपनी जवान में हक का पैगाम पहुंचाना है। जब तक किसी कौम को उसकी अपनी जवान में पैगाम न पहुंचाया जाए उस पर पैगामरसानी का हक अदा न होगा।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ  
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ آتَاخُذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ قَالَ  
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَى وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ  
مِنْ شَيْءٍ فَخُذْكُمْ إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता। लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाखिल करता है और जालिमों का कोई हामी व मददगार नहीं। क्या उन्होंने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बना रखे हैं, पस अल्लाह ही कारसाज है और वही मुर्दों को जिंदा करता है और वह हर चीज पर कादिर है। और जिस किसी बात में तुम इख़्तिलाफ (मतभेद) करते हो उसका फैसला अल्लाह ही के सुपुर्द है। वही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ मैं रजुअ करता हूं। (8-10)

इंसान के लिए अल्लाह तआला ने एक ग़ैर मामूली रहमत का दरवाजा खोला है जो किसी और के लिए नहीं खोला। वह है खुद अपने इरादे से अल्लाह की हिदायत को इख़्तियार करना। और इसके नतीजे में अल्लाह के ग़ैर मामूली इनाम का मुस्तहिक बनना। लोगों का मुक़ालिफ रास्ते इख़्तियार करना इसी आजदी की कीमत है। यह इख़्तिलाफ यकीनन एक नापसंदीदा चीज है मगर उस कीमती इंसान को चुनने की इसके सिवा कोई दूसरी सूरत नहीं।

खुदा ने अगरचे इंसान को आजाद पैदा किया है। मगर उसकी हिदायत के लिए इंसान

पारा 25

1280

**सूरह-42. अश-शूरा**

के अंदर और उसके बाहर इतना ज्यादा सामान रखा गया है कि अगर आदमी वाकई संजीदा हो तो वह कभी ग़लत रास्ता इख़्तियार न करे। इसी हालत में जो लोग ग़लत रास्ता इख़्तियार करें वे बहुत बड़े जालिम हैं। वे खुदा के यहां हरगिज माफी के कबिल न ठहरे।

अहले हक और अहले बातिल के दर्मियान दुनिया में जो इख़्तिलाफ पैदा होता है उसका आखिरी फैसला दुनिया में नहीं हो सकता। दुनिया का हाल यह है कि यहां हर आदमी अपने मुवाफ़िक अल्फ़ज पा लेता है। यहां यह मुमकिन है कि झूठ को भी सच के रूप में जहिर किया जा सके। मगर यह सिर्फ मौजूदा जिंदगी के मरहले तक है। जहां इंसान का मुक़ाबला इंसान से है। अगली जिंदगी में इंसान का मुक़ाबला खुदा से होगा। वहां किसी के लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि अपने आपको पुरफ़रेब अल्फ़ज के पर्दे में छुपा सके।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَمِنَ الْاَنْعَامِ  
اَزْوَاجًا يَذْرَؤْكُمْ فِيْهِۗ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْۡءٌ ۚ وَهُوَ السَّيِّئُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهُ  
مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ  
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

वह आसमानों का और जमीन का पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे जोड़े पैदा किए और जानवरों के भी जोड़े बनाए। उसके जरिए वह तुम्हारी नस्ल चलाता है। कोई चीज उसके मिस्ल (सदृश) नहीं और वह सुनने वाला, देखने वाला है। उसी के इख़्तियार में आसमानों और जमीन की कुंजियां हैं। वह जिसके लिए चाहता है ज्यादा रोजी कर देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है। बेशक वह हर चीज का इल्म रखने वाला है। (11-12)

जमीन और आसमान की सूरत में जो वाक्या हमारे सामने है वह इतना अजीम वाक्या है कि यह नाकाबिले कयास है कि उन माबूदों में से किसी माबूद ने उसे जुजुद अता किया हो जिनकी लोग खुदा के सिवा ताजीम व तकदीस (मान-सम्मान) करते हैं। इसी तरह इंसानों और जानवरों के अंदरूनी निजाम में उनकी नस्ल की बक्र का इंतजाम इतना पेचीदा है कि उसे हकीकी तौर पर न किसी इंसान की तरफ मंसूब किया जा सकता है और न खुदा के सिवा माबूदों में से किसी माबूद की तरफ। ये सब काम इतने ग़ैर मामूली हैं कि बेमिस्ल खुदा ही की तरफ उन्हें जाइज तौर पर मंसूब किया जा सकता है।

ख़ालिक की जो सिफ़त उसकी मख़सूत के मुशाहिदे के जरिए हमारे इल्म में आती हैं वही यह साबित करने के लिए काफी हैं कि यह ख़ालिक किस कदर अजीम है। वह समीअ और बसीर (सुनने, देखने वाला) है। वह हर किस्म के आला इख़्तियारात का मालिक है।

सूरह-42. अश-शूरा

1281

पारा 25

किसी को जो कुछ मिलता है उसी के दिए से मिलता है और किसी से जो कुछ छिनता है उसी के छीनने से छिनता है। वह अपनी मिसाल आप है, उसके जैसा कोई और नहीं।

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا  
بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى  
الشُّرَكِيِّ أَنْ يُدْعَى إِلَهُ مِمَّنْ خَلَقَ إِلَهُهُ مَنْ يُشَاقُّ وَيَهْدَى إِلَهُهُ مَنْ  
يُنِيبُ ۝

अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) मुकर्रर किया है जिसका उसने नूह को हुक्म दिया था और जिसकी 'वही' (प्रकाशना) हमने तुम्हारी तरफ की है और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन को कायम रखो और उसमें इख़्तेलाफ (मत भिन्नता, बिखराव) न डालो। मुशिकीन पर वह बात बहुत गिरां (भार) है जिसकी तरफ तुम उन्हें बुला रहे हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी तरफ चुन लेता है। और वह अपनी तरफ उनकी रहनुमाई करता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह होते हैं। (13)

तमाम पैगम्बर एक ही दीन लेकर आए। और वह दीने तौहीद है। मगर इन पैगम्बरों के मानने वाले बाद को अलग-अलग दीनी फिरकों में तक्सीम हो गए। इसकी वजह मर्कजे तवज्जोह में तब्दीली थी। पैगम्बरों के अस्ल दीन में मर्कजे तवज्जोह तमामतर खुदा था। हर एक की तालीम यह थी कि सिर्फ एक खुदा के परस्तार बने। मगर उनकी उम्मतों ने बाद को अपना मर्कजे तवज्जोह तब्दील कर दिया। वे खुदा के बजाए गैर खुदा के परस्तार बन गए।

कदीम अरब के लोग इब्तिदा में हजरत इब्राहीम की उम्मत थे। मगर बाद को अपने कुछ बुजुर्गों की अज्मत उनके जेहनों पर इस तरह छाई कि उन्हीं को उन्होंने अपना मर्कजे तवज्जोह बना लिया। यहां तक कि उनके बुत बनाकर वे उन्हें पूजने लगे। यहूद हजरत मूसा की उम्मत थे। मगर उन्होंने अपनी नस्ल को मख्सूस नस्ल समझ लिया। उनकी तवज्जोहात अपनी नस्ल की तरफ इतनी ज्यादा मायल हुई कि बिलआखिर खुदाई दीन उनके यहां नस्ली दीन बनकर रह गया। वे पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के सिर्फ इसलिए मुंकिर हो गए कि वह उनकी अपनी नस्ल में पैदा नहीं हुए थे। इसी तरह ईसाई हजरत ईसा की उम्मत थे। उन्होंने हजरत ईसा को खुदा का पैगम्बर मानने के बजाए उन्हें खुदा का बेटा फर्ज कर लिया। इस तरह बाद को उन्होंने जो दीन बनाया उसमें मसीह को खुदा का बेटा मानने ने सबसे ज्यादा अहमियत हासिल कर ली।

खुदा को अपने बंदों से जो दीन मल्लूब है वह यह है कि वह ख़ालिस तौहीद (एकेश्वरवाद) पर कायम हों। सिर्फ एक खुदा उनकी तमाम तवज्जोहात का मर्कज बन जाए।

यही इकामते दीन (दीन की स्थापना) है। इस मर्कजे तवज्जोह में तब्दीली का दूसरा नाम शिर्क

पारा 25

1282

सूरह-42. अश-शूरा

है। और जब लोगों में शिर्क आता है तो फ़ैरन तफरीक (विभेद) और इख़्तेलाफ शुरू हो जाता है। क्योंकि तौहीद की सूरत में मर्कजे तवज्जोह एक रहता है, जबकि शिर्क की सूरत में मर्कजे तवज्जोह कई बन जाते हैं।

पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन अगरचे अपने मल (मूल रूप) के एतबार से महफूज दीन है। मगर आपकी उम्मत महफूज उम्मत नहीं। उम्मत के लोगों के लिए बदस्तूर यह इम्कान खुला हुआ है कि वे नई-नई चीजों को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाएं। वे खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) तशरीह व ताबीर के जरिए अस्ल दीन में तब्दीलियां करें और फिर एक दीन को अमलन कई दीन बनाकर रख दें।

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًا لِبَيْنِهِمْ وَلَوْلَا كَلِمَةُ سُبُحَّتْ  
مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِنْ  
بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝

और जो लोग मुतफर्रिक (विभाजित) हुए वे इल्म आने के बाद हुए, सिर्फ आपस की ज़िद की वजह से। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक वक्त मुअय्यन (निर्धारित) तक की बात तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई वे उसकी तरफ से शक में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल दिया है। (14)

इल्म आने के बाद मुतफर्रिक होने का मतलब यह है कि दीने हक की दावत बुलन्द हो और फिर भी आदमी उससे अलग रहे। या उसका मुख़ालिफ बनकर खड़ा हो जाए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए अल्लाह तआला ने दीन को उसके ख़ालिस अंदाज में खोला। अब चाहिए था कि तमाम वे लोग जो खुदा के तालिब हैं वे आपके साथ जुड़ जाएं। मगर वे आपके साथ जुड़ने के लिए तैयार नहीं हुए। पिछले नबियों के साथ अपने आपको मंसूब करके वे लोगों के दर्मियान दीनदारी का मकाम हासिल किए हुए थे। उन्होंने समझा कि यही उनके लिए काफी है हालांकि जब दीने सही की दावत बुलन्द हो तो तमाम लोगों के लिए लाजिम हो जाता है कि वे अपने घरोंदों को ढा दें और दीने सही के साथ अपने आपको वाबस्ता करें। जो लोग ऐसा न करें वे खुदा के नजदीक मुजरिम हैं, चाहे वे गैर-दीनदार हों या बजहिर दीनदार।

दीने हक की दावत जब उठती है तो कुछ लोग 'बगी' की बुनियाद पर उसके मुंकिर बन जाते हैं। और कुछ लोग शक की बुनियाद पर उससे दूर रहते हैं। बगी से मुयाद हसद और तकब्बुर (घमंड) है। यह उन लोगों का मामला है जो माहौल में बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए हों। हक को मानने में उन्हें बड़ाई के मकाम से नीचे उतरना पड़ता है। चूँकि वे अपने आपको छोटा करने पर राजी नहीं होते इसलिए वे हक की दावत को छोटा करने में सरगर्म

हो जाते हैं। ताकि अपने मौक़िफ़ को जाइज साबित कर सकें।

शक और तरदुद (असमंजस) का मामला अक्सर अवामुन्नास (जन साधारण) के साथ पेश आता है। दाजी की बात उन्हें दलील की सतह पर वजनी मालूम होती है। मगर उन अकाविर (बड़ों) को छोड़ना भी उनके लिए मुश्किल होता है जिनकी अज्मत उनके जेहन पर पहले से कायम हो चुकी हो। ये दोतरफ़ तक्ज़े उनके लिए आख़िरी फैसले तक पहुंचने में रुकावट बन जाते हैं। पहले गिरोह ने अगर तकब्बुर की नफ़िसयात के तहत हक को नजरअंदाज किया था तो दूसरा गिरोह शक की नफ़िसयात के तहत उसे इस्त्रियार नहीं कर पाता। हक को कुबूल करने से यह भी महरूम रहता है और वह भी।

فَلِذَلِكَ فَادَعُْ وَاسْتَقِمْ كَمَا أَمَرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَقُلْ أَمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ وَأَمَرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ لَا حِجَةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝ وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتَجِيبَ لَهُ جُحُودُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝

पस तुम उसी की तरफ बुलाओ और उस पर जमे रहो जिस तरह तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। और कहो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूं। और मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दर्मियान इंसाफ करूं। अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब भी। हमारा अमल हमारे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और उसी के पास जाना है। और जो लोग अल्लाह के बारे में हुज्जत कर रहे हैं, बाद इसके कि वह मान लिया गया, उनकी हुज्जत उनके रब के नजदीक बातिल (झूठ) है और उन पर ग़ज़ब है और उनके लिए सज़ा अजाब है। (15-16)

यहां 'किताब' से मुराद वह अस्ल दीन है जो पैगम्बरों के ज़रिए भेजा गया। 'अहवा' से मुराद वे खुदसाज़्ज़ा स्वनिर्मित इजाफे हैं जो इंसानों ने खुद अपनी तरफ से दीने हक में किए। पैगम्बर को हुक्म दिया गया कि तुम बस अस्ल दीन पर जमे रहो। यहां तक कि दावती मस्तेहत की बिना पर भी तुम्हें ऐसा नहीं करना है कि लोगों के खुदसाज़्ज़ा दीन के साथ रियायत करने लगे। तुम्हारा काम अद्ल (इंसाफ) करना है। यानी मजहबी इज़्ज़ेलाफ़त का फैसला करके यह बताना कि हक क्या है और बातिल क्या। कौन सा हिस्सा वह है जो खुदा की तरफ से है और कौन-सा हिस्सा इंसानी आमेज़िश (मिलावट) के तहत दीन में शामिल कर लिया गया है।

'हमारे और तुम्हारे दर्मियान कोई झगड़ा नहीं' का मतलब यह है कि तुम्हारे झगड़ने के बावजूद हम ऐसा नहीं करेंगे कि हम भी तुमसे झगड़ने लगे। तुम मंफ़ी (नकारात्मक) रवैया इस्त्रियार करो तब भी हम यकतरफ़ा तौर पर अपने मुख़त (सकारात्मक) रवैये पर कायम रहेंगे। दाजी की जिम्मेदारी सिर्फ़ हक का पैग़ाम पहुंचाने की है। इसके अलावा जो चीज़ें हैं उन्हें वह खुदा के हवाले कर देता है।

जो लोग हक को कुबूल कर लें उन्हें तंग करना और उन्हें बेकार बहसों में उलझाना निहायत जालिमाना काम है। ऐसा करने वाले अपने आपको उस ख़तरे में मुक्तिला कर रहे हैं कि आख़िरत में उन पर खुदा का ग़ज़ब हो और उन्हें सज़ा अजाब में डाल दिया जाए।

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْبَيِّنَاتِ ۖ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۝ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا ۖ وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۚ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

अल्लाह ही है जिसने हक के साथ किताब उतारी और तराजू भी। और तुम्हें क्या ख़बर शायद वह घड़ी करीब हो। जो लोग उसका यकीन नहीं रखते वे उसकी जल्दी कर रहे हैं। और जो लोग यकीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और वे जानते हैं कि वह बरहक है। याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं वे गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं। (17-18)

जिस तरह मादूदी चीज़ों को तोलने के लिए तराजू होती है इसी तरह मअनवी हकीकतों को तोलने के लिए खुदा ने अपनी किताब उतारी है। खुदा की किताब हक और बातिल को एक दूसरे से अलग करने की कसौटी है। हर दूसरी चीज़ को खुदा की किताब पर जांचा जाएगा, न यह कि खुदा की किताब को दूसरी चीज़ों पर जांचा जाने लगे।

फैगम्बर के जमाने में जो लोग आपकी मुख़ालिफ़त कर रहे थे उनकी ग़लती यह थी कि उनकी कैमी रियायत और उनके अकाविर के अक्वाल (कथन) व आमाल से उनके यहां जो दीन बना था उसे मेयार मान कर उसी की रोशनी में वे खुदा की किताब को देखते थे। हालांकि उनके लिए सही बात यह थी कि वे कैमी रियायत और बुज़ुर्गों के अक्वाल व अफ़आल (कथनी-करनी) को खुदा की किताब की रोशनी में देखें। जो चीज़ खुदा की किताब के मेयार पर पूरी उतरे उसे लें और जो चीज़ खुदा की किताब के मेयार पर पूरी न उतरे उसे छोड़ दें।

जांचने का यह काम मौजूदा दुनिया में आदमी को खुद करना है। आख़िरत में यह काम खुदा की तरफ से अंज़ाम दिया जाएगा। अक्लमंद वह है जो कियामत में तौले जाने से पहले अपने आपको तौल ले। क्योंकि कियामत की तौल आख़िरी फैसले के लिए होगी न कि अमल की मोहलत देने के लिए।

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۚ مَنْ كَانَ يُرِيدُ  
حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۖ  
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝

अल्लाह अपने बंदों पर महरबान है। वह जिसे चाहता है रोजी देता है। और वह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। जो शख्स आखिरत की खेती चाहे हम उसे उसकी खेती में तरक्की देंगे। और जो शख्स दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ दे देते हैं और आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। (19-20)

दुनिया की जिंदगी इस्तेहान के लिए है। यहां हर आदमी को बक़द इस्तेहान जरूरी असबाब दिए जाते हैं। अब जो शख्स आखिरतपसंद हो वह मौजूदा दुनिया के असबाब को आखिरत की तामीर के लिए इस्तेमाल करेगा और इसके नतीजे में आखिरत में मजिद इजाफे के साथ अपना इनाम पाएगा।

इसके बरअक्स जो शख्स दुनियापसंद हो वह सिर्फ मौजूदा दुनिया के पेशनजर अमल करेगा। ऐसा शख्स यकीनन मौजूदा दुनिया में अपना फल पा सकता है। मगर आखिरत में वह सरासर महरूम रहेगा। जब उसने आखिरत के लिए कुछ किया ही न था तो कैसे मुमकिन है कि आखिरत में उसे कुछ दिया जाए।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ  
الْفَصْلِ لَفُتْنَىٰ أَيْدِيهِمْ وَأَنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ  
مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
فِي رَوْضَةٍ أَلْبَنَىٰ لَهُمْ ۖ وَإِشَاءُ ۖ وَنَظَرٌ ۖ وَنَظَرٌ ۖ وَنَظَرٌ ۖ وَنَظَرٌ ۖ وَنَظَرٌ ۖ  
ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ قُلْ لَا أَمْرَ لَكُمْ  
عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةُ فِي الْقُرْبَىٰ ۖ وَمَن يَقْرَفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حَسَنًا ۚ  
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝

क्या उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकर्र किया है जिसकी अल्लाह ने इजाजत नहीं दी। और अगर फैसले की बात तै न पा चुकी होती तो उनका फैसला कर दिया जाता। और बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। तुम जालिमों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे उससे जो उन्होंने कमाया। और वह उन पर जरूर पड़ने वाला है। और

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नत के बागों में होंगे। उनके लिए उनके रब के पास वह सब होगा जो वे चाहेंगे, यही बड़ा इनाम है। यह चीज है जिसकी खुशखबरी अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर कराबतदारी की मुहब्बत। और जो शख्स कोई नेकी करेगा हम उसके लिए इसमें भलाई बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, क़द्वी है। (21-23)

जब एक बात खुदा की किताब से साबित न हो, इसके बावजूद आदमी उसके हक होने पर इसरार करे तो इसका मतलब यह है कि वह दूसरों को खुदा के बराबर ठहरा रहा है। वह खुदा के सिवा दूसरों को यह हक दे रहा है कि वह इंसान के लिए उसका दीन वजअ करें।

यह एक बेहद सीन बात है। हकीकत यह है कि 'दीन' की नैइयत की कोई चीज मुकर्र करने का हक सिर्फ एक खुदा को है। खुदा के सिवा किसी और को यह हक देना खुला हुआ शिर्क है। और शिर्क एक ऐसा जुर्म है जो खुदा के यहां किसी तरफ माफ होने वाला नहीं।

'मैं तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर यह कि कराबतदारी की मुहब्बत' यह बात पैगम्बर की जवान से उस वक्त कहलाई गई जबकि आपके कबीला कुैश के लोग आपकी दावत की राह में सख़्ततरीन रुकावटें डाल रहे थे। इन हालात में इसका मतलब यह था कि अगर तुम मेरा दीन कुबूल नहीं करते तो न करो मगर कम से कम कराबतदारी (नातेदारी) का लिहाज करते हुए अजियतसरानी (उत्पीड़न) से तो बाज रखें। बअल्फ़ज दीगर, अगर तुम्हें मुझसे मजहबी इख़लाफ है तो अपने इख़लाफ में तुम अख़्लाक और शराफ़त की सतह से न गिर जाओ। इस तरह गोया बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में यह बताता गया कि आपकी दावत के मुख़ालिफ़ीन सिर्फ मुख़ालिफ़ीन नहीं हैं बल्कि वे अख़्लाकी मुजरिम भी हैं। वे अपने आपको अख़्लाक की सतह पर ग़लत साबित कर रहे हैं जिसकी अहमियत खुद उनके नजदीक भी मुसल्लम (सुस्थापित) है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ فَإِنْ يَشَأْ اللَّهُ يُخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۚ وَيَسِّرُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۚ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝

क्या वे कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। पस अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और हक (सत्य) को साबित करता है अपनी बातों से। बेशक वह दिलों की बातें जानता है। और वही है जो अपने बंदों की तौबा कुबूल करता है और बुराइयों को माफ करता है और वह



सूरह-42. अश-शूरा

1287

पारा 25

जानता है जो कुछ तुम करते हो। और वह उन लोगों की दुआएं कुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। और वह उन्हें अपने फल से ज्यादा दे देता है। और जो इंकार करने वाले हैं उनके लिए सज़ा अजाब है। (24-26)

इस दुनिया के लिए खुदा का कानून यह है कि यहां हक, हक के रूप में सामने आता है और बातिल, बातिल के रूप में नुमायां होता है। अगर एक झूठी रूह है तो उससे कभी सच्चा कलाम जाहिर नहीं हो सकता। यही वजह है कि यहां किसी गैर पैगम्बर के लिए मुमकिन नहीं कि वह पैगम्बर की जवान में कलाम कर सके। एक शख्स पैगम्बर न हो और झूठ बोलकर अपने को पैगम्बर बताए तो उसके कलाम में लाजिमन झूठे पैगम्बर का अंदाज पैदा हो जाएगा। कोई शख्स मस्नूई (बनावटी) तौर पर कभी सच्चे पैगम्बर के अंदाज में नहीं बोल सकता।

‘अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे’ इसका मतलब बदले हुए अल्फाज में यह है कि अगर तुम अल्लाह पर झूठ बांधते तो उस वक्त मशीयते खुदावंदी के तहत तुम्हारे दिल पर मुहर लग जाती। ऐसी हालत में खुद कानूने कुदरत के तहत यह होता कि तुम्हारी जवान उस पाकीजा रब्बानी कलाम के इन्हार से आजिज हो जाती जिसका खुला हुआ नमूना तुम्हारे कलाम में नजर आता है। हकीकत यह है कि पैगम्बर का आला कलाम खुद उसके पैगम्बरे खुदा होने का सुबूत है। अगर वह वाकई खुदा का पैगम्बर न होता तो उसकी जवान से कभी ऐसा आला कलाम जाहिर नहीं हो सकता था।

जो लोग हक की मुख़ालिफ़त करते हैं वे अपने दिल की आवाज के तहत ऐसा नहीं करते। बल्कि महज ज़िद और इनाद (द्वेष) के तहत उसके मुख़ालिफ़ बनकर खड़े हो जाते हैं। ऐसे लोग गोया खुद अपने जमीर की अदालत के सामने मुजरिम बन रहे हैं। उनके ऊपर खुदा की हुज्जत तमाम हो चुकी है, इल्ला यह कि आदमी तौबा करे और अल्लाह से माफी का ख्वास्तगार हो।

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذْ يَأْتُوا قَدِيرٌ ۝

और अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोजी को खोल देता तो वे जमीन में फ़साद करते। लेकिन वह अंदाजे के साथ उतारता है जितना चाहता है। वेशक वह अपने बंदों को जानने वाला है, देखने वाला है। और वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है और वह काम बनाने वाला है, कबिले तारीफ़ है। और उसी की निशानियों में से है आसमानों और जमीन का पैदा

पारा 25

1288

सूरह-42. अश-शूरा

करना। और वे जानदार जो उसने इनके दर्मियान फैलाए हैं। और वह उन्हें जमा करने पर कादिर है जब वह उन्हें जमा करना चाहे। (27-29)

जमीन पर इंसानी ज़िंदगी का इहिसार पानी पर है। मगर पानी तमामतर खुदा के इख़्तियार में है। खुदा अगर पानी फराहम न करे तो इंसान खुद से पानी हासिल नहीं कर सकता। इसी तरह रिक की तक्सीम भी खुदा की तरफ से होती है। इस तक्सीम में खुदा आदमी के जर्फ़ को देखता है। और हर एक को उसके जर्फ़ के बक़द अता करता है। अगर लोगों को उनके जर्फ़ से ज्यादा दिया जाने लगे तो लोग सरकश बन जाएं और जमीन में हर तरफ़ जुम व फ़साद पैदा जाए।

हम देखते हैं कि एक किसान जब दाने को बिखेरता है तो वह उसे समेटने पर भी कादिर होता है। यह इंसानी मुशाहिदा इस बात का करीना है कि खुदा भी इसी तरह अपनी बिखरी हुई मख़्लूक़ात को समेट कर अपनी अदालत में ला सकता है। जहां यकज़ाई तौर पर लोगों के मुस्तक़बिल का फैसला किया जाए। जिस ख़ालिक के लिए पैदा करके बिखेरना मुमकिन था उसके लिए मौत के बाद दुबारा समेटना क्यों न मुमकिन हो जाएगा।

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فِيمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचती है तो वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों ही से, और बहुत से कुसूरों को वह माफ़ कर देता है। और तुम जमीन में खुदा के काबू से निकल नहीं सकते। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई मददगार। (30-31)

मौजूदा दुनिया को असबाब के कानून के तहत बनाया गया है। यहां आदमी पर जब कोई मुसीबत आती है तो वह वाजेह तौर पर उसकी अपनी ही कोताही का नतीजा होती है। और कभी ऐसा होता है कि एक शख्स कोताही करता है मगर वह उसके बुरे अंजाम से बच जाता है।

दुनिया के ये वाक़ेयात इसलिए हैं कि आदमी उनसे सबक ले। जब वह देखे कि लोग जो कुछ पा रहे हैं वे अपने अमल के बक़द पा रहे हैं तो उससे वह यह नसीहत ले कि आखिरत में भी इसी तरह हर शख्स अपने अमल के मुताबिक अपना अंजाम पाएगा। इसी तरह जब वह देखे कि आदमी ने एक कोताही की मगर वह उसके अंजाम से बच गया तो वह उससे यह सबक हासिल करे कि खुदा निहायत महरबान है। अगर आदमी उसकी तरफ़ रज़ूअ हो तो वह अपनी रहमते ख़ास से उसे उसकी कोताहियों के अंजाम से बचा सकता है। ईमान जब गहरा हो तो आदमी का यही हाल हो जाता है। वह दुनिया के वाक़ेयात में आखिरत की तस्वीर देखने लगता है।

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ إِنَّ يَسْأَلُكَ رَبُّكَ فَيَقْطُلَنَّ  
لَوْ كَدَّ عَلَى ظَهْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقْهُمْ  
بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُبَادِلُونَ فِي الْآيَاتِنَا مَا لَهُمْ  
مِّنْ حَافِظٍ ۝

और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज समुद्र में चलते हैं जैसे पहाड़। अगर वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वे समुद्र की सतह पर ठहरे रह जाएं। वेशक इसके अंदर निशानियां हैं हर उस शख्स के लिए जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला है। या वह उन्हें तबाह कर दे उनके आमाल के सबब से और माफ कर दे बहुत से लोगों को। और ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं। (32-35)

इंसान समुद्र में अपनी कश्ती दौड़ाता है और फजा में अपने जहाज उड़ता है। यह सिर्फ इसलिए मुमकिन होता है कि खुदा ने फितरत के कानून को हमारे लिए साजगार बना रखा है। फितरत के कवानीन अगर हमसे साजगारी न करें तो न हमारी कश्तियां समुद्रों में दौड़ें और न हमारे जहाज हवाओं में उड़ें।

जिंदगी के हर वाक्य में नसीहत है मगर वाक्यात से नसीहत की खुराक लेने के लिए सब्र व शुक्र का मिजाज जरूरी है। जिंदगी में कभी तकलीफ पेश आती है और कभी आराम। तकलीफ के वक्त आदमी को जाहिरी हालात से ऊपर उठना पड़ता है ताकि वह वाक्य को दूसरे रूख से देख सके। और यह चीज सब्र के बगैर मुमकिन नहीं। इसी तरह आराम के वक्त इसकी जरूरत होती है कि बजाहिर अपनी कोशिशों से मिलने वाली चीज को खुदा की तरफ से मिलने वाली चीज समझा जाए। और यह वही शख्स कर सकता है जिसके अंदर वह आला शूऊर पैदा हो चुका हो जिसे शुक्र कहा जाता है।

निशानियों में झगड़ना यह है कि जब किसी वाक्य में खुदाई नसीहत के पहलू की निशानदही की जाए तो आदमी उसे न माने और वाक्य को दूसरे-दूसरे मअना पहनाने की कोशिश करे। ऐसे लोग खुदा की नजर में सरकश हैं और किसी की सरकशी सिर्फ मौजूदा दुनिया में चल सकती है, वह आखिरत में हरगिज चलने वाली नहीं।

فَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَاعِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ  
أَمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

पस जो कुछ तुम्हें मिला है वह महज दुनियावी जिंदगी के बरतने के लिए है। और जो

कुछ अल्लाह के पास है वह ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और वे अल्लाह पर भरोसा रखते हैं। (36)

आखिरत का चाहने वाला वही बन सकता है जो अल्लाह पर भरोसा करने वाला हो। जब भी आदमी आखिरत की तरफ बढ़ता है तो दुनिया के फायदे उसे खतरे में नजर आने लगते हैं। दुनिया की मस्लेहें उसे छूटती हुई दिखाई देती हैं। ऐसी हालत में जो चीज आदमी को आखिरत के रास्ते पर सावितकदम रखती है वह सिर्फ यह कि उसे खुदा के वादों पर भरोसा हो। उसे यकीन हो कि खुदा की खातिर वह दुनिया में जितना खोएगा उससे बहुत ज्यादा वह आखिरत में खुदा की तरफ से पा लेगा।

दुनिया की हर नेमत वकती है और आखिरत की नेमतें अबदी हैं जो कभी खत्म होने वाली नहीं। और अबदी नेमत के मुक़बले में वकती नेमत की कोई हकीकत नहीं।

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ  
يَغْفِرُونَ ۝ وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ  
بَيْنَهُمْ ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۚ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ  
يَنْتَصِرُونَ ۚ وَجِزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ  
عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۚ وَلَكِنْ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا  
عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيلٍ ۚ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ  
فِي الْأَرْضِ غَيْرَ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَلَكِنْ صَبْرٌ وَعَفْرُ  
إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝

और वे लोग जो बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो वे माफ कर देते हैं और वे जिन्होंने अपने ख की दावत (आह्वान) को कुबूल किया और नमाज कायम की और वे अपना काम आपस के मश्वरे से करते हैं। और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। और वे लोग कि जब उन पर चढ़ाई होती है तो वे बदला लेते हैं। और बुराई का बदला है वैसी ही बुराई। फिर जिसने माफ कर दिया और इस्लाह की तो उसका अज़्र अल्लाह के जिम्मे है। वेशक वह जालिमों को पसंद नहीं करता। और जो शख्स अपने मजलूम होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कुछ इल्जाम नहीं। इल्जाम सिर्फ उन पर है जो लोगों के ऊपर जुम करते हैं और जमीन में नाहक सरकशी करते हैं। यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अजब है।

और जिस शख्स ने सब्र किया और माफ कर दिया तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं।  
(37-43)

ईमान जब हकीकती मजनों में किसी को हासिल होता है तो वह उसके अंदर इक्लाब पैदा कर देता है। उसके अंदर एक नई शख्सियत उभरती है। यहां एक बंदाए खुदा की जिन खुसूसियात का जिक्र है वे सब वही हैं जो इस ईमानी शख्सियत के नतीजे में किसी के अंदर जाहिर होती हैं।

ऐसे शख्स के अंदर हकीकती वाक्या के एतराफ का मिजाज पैदा होता है। वह खुदा के खुदा होने और अपने बंदा होने की हैसियत का एतराफ करते हुए उसके आगे झुक जाता है। खुदा की एक पुकार बुलन्द हो तो उसके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वह उस पर लब्बेक न कहे। ईमानी शूऊर उसे सही और ग़लत के बारे में हस्सास (संवेदनशील) बना देता है। वह वही करता है जो करना चाहिए और वह नहीं करता जो नहीं करना चाहिए।

अपनी हैसियते वाकई का एतराफ उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) पैदा करता है जो उससे गुस्सा, जुल्म और सरकशी का मिजाज छीन लेता है। यही तवाजोअ उसे मजबूर करता है कि इज्तिमाई (सामूहिक) मामलात में वह दूसरों के मशिवरे से फायदा उठाए वह महज अपनी जाती राय की बुनियाद पर इकदाम से परहेज करे। दूसरों के साथ उसका रिश्ता खैरख्वाही का होता है न कि जिद और इस्तहसाल (शोषण) का।

ऐसा आदमी दूसरों के खिलाफ कभी जारिहियत नहीं करता। दूसरों के खिलाफ वह जब भी इकदाम करता है तो दिफाअ (प्रतिरक्षा) के तौर पर करता है और उतना ही करता है जितना उनके जुल्म को रोकने के लिए जरूरी हो। वह ऐन इश्तिआलओज (उत्तेजक) हालात में भी इसके लिए तैयार रहता है कि लोगों को माफ कर दे और उन्होंने उसके साथ जो बुराई की है उसे भूल जाए।

बंदाए मोमिन ये सारे काम अपने जब्बए ईमान के तहत करता है ताहम अल्लाह उसकी कद्रदानी इस तरह फरमाता है कि उसे अहले हिम्मत और उलुलअज्म (उत्साही) के खिताब से नवाजता है। और उसे अबदी नेमतों के बाग में दाखिल कर देता है।

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَائِيٍّ مِنْ بَعْدِهِ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَبًا رَأَوُا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِنْ سَبِيلٍ ۖ وَتَرَىٰ لَهُمُ الْبُغْضَاتِ عَلَيْهِمُ الْخُشْعِينَ مِنَ الدُّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَائِسِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَآهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۖ وَكَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَآءٍ يَتَصَرَّوْنَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۖ

और जिस शख्स को अल्लाह भटका दे तो इसके बाद उसका कोई कारसाज (संरक्षक) नहीं। और तुम जालिमों को देखोगे कि जब वे अजाब को देखेंगे तो वे कहेंगे कि क्या वापस जाने की कोई सूरत है। और तुम उन्हें देखोगे कि वे दोजख के सामने लाए जाएंगे, वे जिल्लत से झुके हुए होंगे। छुपी निगाह से देखते होंगे। और ईमान वाले कहेंगे कि ख़सारे (घाटे) वाले वही लोग हैं जिन्होंने कियामत के दिन अपने आपको और अपने मुतअल्लिकीन (संबंधियों) को ख़सारे में डाल दिया। सुन लो, जालिम लोग दाइमी (स्थायी) अजाब में रहेंगे। और उनके लिए कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह के मुकाबले में उनकी मदद करें। और खुदा जिसे भटका दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं। (44-46)

इस दुनिया में हिदायत को दलील के जरिए खोला जाता है। यही इस दुनिया के लिए खुदा का कानून है। इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में सिर्फ वह शख्स हिदायत पाता है जो इस सलाहियत का सुबूत दे कि वह दलील की जबान में बात को समझ सकता है। दलील के जरिए किसी बात का साबित हो जाना इसके लिए काफी है कि वह उसके आगे झुक जाए। जो लोग दलील से न मानें उन्हें इस दुनिया में कभी हिदायत नहीं मिल सकती। जो शख्स मौजूदा दुनिया में दलील के आगे नहीं झुकता वह अपने आपको उस ख़तरे में डालता है कि कियामत में उसे खुदाई ताकत के आगे झुकाया जाए। मगर कियामत का झुकना किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह आदमी को जलील करने के लिए होगा न कि उसे इनाम का मुस्तहिक बनाने के लिए।

اِسْتَجِيبُوا لِلرَّسُولِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمُ مِنْ مَلَكٍ يُؤْمِرُ ۖ وَمَا لَكُمُ مِنْ نَكِيرٍ ۚ فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهُمْ حَفِظًا ۖ إِنَّ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاءُ ۚ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَحَرَبْنَاهُ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَبَاقِدْ مَتَّ يَدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۖ

तुम अपने रब की दावत (आह्वान) कुबूल करो इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए खुदा की तरफ से हटना न होगा। उस दिन तुम्हारे लिए कोई पनाह न होगी और न तुम किसी चीज को रद्द कर सकोगे। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारा जिम्मा सिर्फ पहुंचा देना है। और इंसान को जब हम अपनी रहमत से नवाजते हैं तो वह उस पर खुश हो जाता है। और अगर उनके आमाल के बदले में उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुकी करने लगता है। (47-48)

मौजूदा दुनिया में आदमी का अस्ल इम्तेहान यह है कि जो सूरतेहाल भी उसके सामने आए, वह उसमें सही रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश करे। मगर इंसान ऐसा नहीं करता। उसे जब कोई कामयाबी मिलती है तो वह फ़ख़ व नाज की नफ़िसयात में मुब्तिला हो जाता है। और जब वह किसी मुसीबत में पड़ता है तो वह मंफ़ी जब्बात का इज़हार करने लगता है।

यही वे लोग हैं जो हक की दावत के मुकाबले में सही रद्देअमल पेश नहीं कर पाते। उनका ग़ैर हकीकतपसंदाना मिजज यहाँ भी उन्हें ग़ैर हकीकतपसंद बना देता है। हक की दावत का सही रद्देअमल यह है कि आदमी फ़ैसन उसकी हक़नियत (सत्यता) का एतराफ़ कर ले। मगर आदमी यह करता है कि वह उसे अपनी साख़ का मसला बना लेता है। वह समझता है कि दावत को मान कर मैं उसे पेश करने वाले के सामने छोट हो जाऊँगा। यह एहसास उसके लिए हक को कुल्ल करने की राह में रुकावट बन जाता है। वह उसकी सदाक़त पर यक़ीन करने के बावजूद अपनी जाती मस्तेहतों की बिना पर उसे नज़रअंदाज कर देता है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يُخْلِقُ مَا يَشَآءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذَّكَوْرَ ۗ اَوْ يَزْوِجُهُمْ ذَكَرًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَیَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِیْمًا ۚ اِنَّهُ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ ۝

आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है। वह जिसे चाहता है बेटियाँ अता करता है और जिसे चाहता है बेटे अता करता है या उन्हें जमा कर देता है बेटे भी और बेटियाँ भी। और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह जानने वाला है, कुदरत वाला है। (49-50)

दीन की असास (बुनियाद) इस तसव्वुर पर कायम है कि इस कायनात में हर किस्म का इख़्तियार सिर्फ़ एक ख़ुदा को हासिल है। उसके सिवा किसी के पास कोई इख़्तियार नहीं, चाहे वह ज़मीन व आसमान के निज़ाम को चलाता हो या एक इंसान को औलाद अता करना। आदमी जो कुछ पाता है ख़ुदा के दिए से पाता है और वही जब चाहता है उसे उससे छीन लेता है।

ख़ुदा के बारे में यह अक़ीदा ही आदमी के अंदर वह सही एहसास पैदा करता है जिसे 'अब्दियत' (बंदा होने का एहसास) कहा जाता है। और ख़ुदा के बारे में यह अक़ीदा ही आदमी को मजबूर करता है कि वह अपनी ज़िंदगी में उस रविश को अपनाए जिसका इलाही शरीअत में हुक्म दिया गया है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحِیًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رُسُلًا

كَيْوَحٰی بِاٰذِنِهِ مَا يَشَآءُ اِنَّهُ عَلِیٌّ حَكِیْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحٰیْنَ اِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ اَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِیْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِیْمٰنُ ۚ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نُّهْدِیْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا وَاِنَّكَ لَتَهْدِیْ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۗ اَلَا اِلٰی اللّٰهُ تُصِیْرُ الْاُمُوْرَ ۝

और किसी आदमी की यह ताकत नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे, मगर 'वही' (प्रकाशना) के जरिए से या पर्दे के पीछे से या वह किसी फरिश्ते को भेजे कि वह 'वही' कर दे उसके इज्ज (आज़ा) से जो वह चाहे। बेशक वह सबसे ऊपर है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ भी 'वही' की है, एक रूह अपने हुक्म से। तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है। लेकिन हमने उसे एक नूर बनाया, उससे हम हिदायत देते हैं अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं। और बेशक तुम एक सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कर रहे हो। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और ज़मीन में है। सुन लो, सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटने वाले हैं। (51-53)

मौजूदा दुनिया में कोई इंसान बराहारास्त ख़ुदा से हमकलाम नहीं हो सकता। इंसान का इज्ज (निर्वलता) इस किस्म के कलाम में मानेअ (रुकावट) है। चुनांचे पैगम्बरों पर ख़ुदा का जो कलाम उतरा वह बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में उतरा। बिलवास्ता ख़िताब के कई तरीके हैं उनकी मिसालें मुख़लिफ़ पैगम्बरों की ज़िंदगी में पाई जाती हैं।

एक आलिम जब कोई किताब लिखता है या एक मुफ़क्किर (विचारक) जब कोई कलाम पेश करता है तो उसके माजी (अतीत) में ऐसे असबाब मौजूद होते हैं जो उसके इल्मी और फ़िक्री कारनामे की तौजीह कर सकें। मगर पैगम्बर का मामला इससे बिल्कुल मुख़लिफ़ है। पैगम्बर की नुबुव्वत के बाद की ज़िंदगी उसकी नुबुव्वत से पहले की ज़िंदगी से सरासर मुख़लिफ़ होती है। ग़ैर पैगम्बर का हाल का कलाम उसकी माजी की ज़िंदगी का तसलसुल नज़र आता है। मगर पैगम्बर की ज़बान से नुबुव्वत के बाद जो कलाम जारी होता है वह उसके नुबुव्वत से पहले के कलाम से इतना ज्यादा मुमताज़ होता है कि पैगम्बर के माजी से उसकी तौजीह नहीं की जा सकती। यह एक वाजेह करीना है जो यह साबित करता है कि पैगम्बर का कलाम ख़ुदाई कलाम है न कि आम इंसानी कलाम।

पैगम्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़ुसूसियत हासिल है कि आपका दिया हुआ क़ुरआन और आपकी अपनी ज़बान से निकला हुआ कलाम, दोनों आज भी अपनी अस्ल हालत में मौजूद हैं। कोई शख्स जो अरबी ज़बान जानता हो और वह इन दोनों को तकाबुली (तुलनात्मक) तौर पर देखे तो वह दोनों के दर्मियान खुला हुआ फ़र्क